CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्राचीन भारतीय भूगोल

लेखक

डा० अवधबिहारी लाल अवस्थी

7599

कैलाश प्रकाशन

लखनऊ

मूल्य १५ रुपया

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पितृ- तुल्य

गुरुवर डा० बी० एन० पुरी

अध्यक्ष, प्राचीन इतिहास एवं पुरातत्व विभाग

लखनऊ विश्व विद्यालय

अवधबिहारी —

राज्य संग्रहालय पुस्तकालय
प्रो बी एन० पुरी संग्रह
लखनऊ

State Museum Library
7599
Lucknow

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्राचीन भारतीय भूगोल

(वैदिक युग से ईसा की सातवीं शताब्दी तक)

●

लेखक

डा. अवधबिहारी लाल अवस्थी

बी.ए. आनर्स, यम.ए., पी-यच.डी.,

अध्यापक, प्राचीन इतिहास एवं पुरातत्त्व विभाग
लखनऊ विश्वविद्यालय

●

कैलाश प्रकाशन

लखनऊ

प्रकाशक
CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
श्रीमती आशा अवस्थी
कैलाश प्रकाशन
७६, खुर्शेदबाग, लखनऊ–४.

कापीराइट C अवधबिहारी लाल अवस्थी

प्रथम संस्करण, १९७२ ई०

मुद्रक
साहु आर्ट प्रिंटर्स
१५५, हरीनगर,
लखनऊ–४.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पुण्य पद्मार्पित--

पूज्य विद्यावारिधि

डा० राजबली पाण्डेय

डी. लिट

की

पुण्य-पावन स्मृति में

सादर समर्पित

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्राचीन भारतीय भूगोल

विषय-सूची

अध्याय	विषय	पृष्ठ संख्या
१	प्राचीन भारतीय भूगोल जानने के साधन	१-१२
२	**वैदिक भूगोल**	१३-२६
	(सप्तसैंधव एवं मध्य तथा प्राच्य देश)	
३	**बुद्ध कालीन भूगोल**	२७-४५
	१६ महाजनपद, १० गणराज्य, नगर एवं व्यापारिक मार्ग	
४	पाणिनि एवं पतंजलि के ग्रंथों में भूगोल	४६-६१
५	महाभारत में वर्णित भूगोल	६२-१४६
	(भारत और मध्य एशिया)	
६	यूनानी इतिहासकारों के भौगोलिक विवरण	१४७-१५९
	(उ०प० सीमान्त प्रदेश, पंजाब और सिन्ध)	
७	पेरिप्लस आफ़ दि एरिथ्रियन सी में वर्णित भूगोल (समुद्रतटीय वर्णन)	१६०-१६५
८	टॉलमी का भारत वर्णन	१६६-१८५
	(वेलाकूल)	
९	अभिलेखों से प्राप्त भौगोलिक विवरण	१८६-२०३
१०	कर्मभूमि—रामायण में वर्णित भूगोल	२०४-२२४
११	भुवनकोश (पौराणिक भूगोल)	२२५-२६८
१२	कूर्म-संस्थान (बृहन्नारदीय पुराण, मार्कंडेय पु०, स्कन्द पु० एवं बृहत्संहिता)	२६९-२९३
१३	युअनच्वांग का भारत वर्णन	२९४-३१९
	(युअनच्वांग और कुमारिका खंड देश तालिका)	
परिशिष्ट १	भारतीयों की देश-विदेश यात्रा	३२०

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्राक्कथन

डा० अवध बिहारी लाल अवस्थी कृत प्राचीन भारतीय भूगोल तेरह अध्यायों में वर्णित प्राचीन भारतीय भूगोल, इसके साधनों और साक्ष्यों, का विशद विवेचन है। इसमें वैदिक भूगोल, बौद्ध भारत, पाणिनि-पंतजलि कालीन भारत और महाभारत पर प्रामाणिक ग्रंथों के आधार पर ही सामग्री का उपयोग किया गया है। महाभारतीय और रामायणीय भूगोल पर भी प्रथित विद्वानों—डा० मोतीचन्द्र, पार्जिटर और जयचन्द्र विद्यालंकार का ध्यान गया था। उनके प्रबन्धों और निबन्धों में इन दो महाकाव्यों की कुछ ही भौगोलिक सामग्री का विवेचन किया गया था। प्रस्तुत ग्रन्थ में डा० अवस्थी ने सम्पूर्ण महाभारत के विविध स्थानों से सामग्री बटोरते हुए स्थानों का विवेचन किया है। रामायणीय-भूगोल (अ० १०) से भी लेखक की मौलिकता ही परिलक्षित होती है। पुराणों का अध्ययन डा० अवस्थी का प्रिय विषय ही है और इसी से भुवनकोश (अ० ११) कूर्मसंस्थान (अ० १२) और युअनच्वांग का भारत वर्णन (अ० १३) नामक अध्याओं में पौराणिक अध्ययन की गहन छाप लगी है। इतनी विशद सामग्री का विवेचन इसके पहले अभी तक सामने नहीं आया है। अवस्थी की पहली भूगोल की पुस्तक—**प्राचीन भारत का भौगोलिक स्वरूप** (१९६४)—से भूगोल-विषयक लेखक की जिस अभिरुचि और अध्ययन का परिचय मिला था, उसका परिपाक इस ग्रन्थ में दृष्टव्य है।

विद्वान लेखक ने साहित्यिक तथा पुरातात्विक प्रमाणों के आधार पर वैदिक काल से लेकर ई० सातवीं शती तक के ऐतिहासिक भूगोल का विवेचन किया है। भारत के प्राकृतिक भूगोल का तथा विभिन्न युगों में इस देश में स्थापित जनपदों, नगरों, यात्रा-मार्गों आदि का सप्रमाण विवेचन किया गया है। वैदिक साहित्य, रामायण, महाभारत, पाणिनीय अष्टाध्यायी तथा पुराण-साहित्य में प्रचुर भौगोलिक सामग्री उपलब्ध है। डा० अवस्थी ने उस सब का उपयोग कर कालक्रमानुसार भारतीय भूगोल का विवरण

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रस्तुत किया है। यूनानी, रोमक तथा चीनी यात्रियों ने भारत के सम्बन्ध में विविध वर्णन किये हैं। उनमें से उपयुक्त अंशों को छाँट कर लेखक ने अनेक जनपदों तथा नगरों की स्थिति का निर्धारण किया है। महाभारत तथा पुराणों के भूगोल पर पूर्ववर्ती अनेक लेखकों द्वारा स्थापित अभिज्ञानों का खंडन किया गया है।

भारतीय विश्वविद्यालयों में ऐतिहासिक भूगोल के अध्ययन की व्यवस्था है। डा० अवस्थी का यह ग्रन्थ इस दिशा में निःसंदेह उपयोगी सिद्ध होगा।

प्रो० कृष्णदत्त बाजपेयी
टगोर प्रोफ़ेसर एवं अध्यक्ष
प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग,
सागर विश्वविद्यालय

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रस्तावना

'प्राचीन भारत का भौगोलिक स्वरूप' नामक पुस्तक १९६४ में लिखी गई थी। पुस्तक की लोगों ने सराहना की और वह संस्करण समाप्त हो गया। हिन्दी भाषा को गर्व हो सकता है कि मातृभाषा के चरणों पर यह प्राचीन भारतीय भूगोल अर्पित है। इसमें रामायण, महाभारत, पुराण, वृहत्संहिता और अभिलेखों का विवेचन किया गया है। रामायण में 'कर्मभूमि' का प्रयोग भारत भूमि के लिए ही हुआ है। यह बात इसी ग्रन्थ में बतायी गई है। महाभारत और पुराणों का विवेचन भी किया गया है। वृहत्संहिता की कूर्म-विभाग देश-सूची (अ० १४) का मार्कण्डेय पुराण व वृहन्नारदीय पुराण से मिलान भी किया गया है।

यहाँ पहली बार विद्वानों का उस पौराणिक उद्धरण की ओर ध्यान दिलाया गया है जिसमें यह बताया गया है कि भारतीय लोग इन्द्रद्वीप, (अंडमान), नाग द्वीप (निकोबार) सौम्य (सुमात्रा), वरुण (बोर्नियो), आदि द्वीपों को गए थे। इन समुद्रद्वीपों—द्वीपान्तर—ने भारत के साथ मिलकर वृहद्भारत का निर्माण किया था। भारत के लोग देश-विदेश की यात्रा अत्यन्त प्राचीन काल से करते थे (दृष्टव्य परिशिष्ट १)।

वैदिक, बौद्ध, पाणिनि-पतंजलि, ग्रीक लेखक, पेरिप्लस-टॉलमी और युअनच्वांग के भौगोलिक विवरणों में इनके विशेष अध्येताओं के ग्रन्थों का सहारा लिया गया है। लेखक उनका ऋणी है। युअनच्वांग की देश-तालिका में पौराणिक (कुमारिकाखंड) तालिका से तुलना की गई है। मानचित्रों का देना अत्यन्त आवश्यक है। शायद आगे के ग्रन्थ में इसकी व्यवस्था हो सके। अगले ग्रन्थ में ही भौगोलिक-शब्द-कोश के साथ मानचित्रों को देना अभीष्ट है।

इस ग्रन्थ का मुख्य उद्येश्य भारतीयों को भारत का परिचय कराना मात्र ही है। साथ ही, प्राचीन भूगोल विद्या के अस्तित्व की प्रतिष्ठा करना है। हिन्दुओं ने इसकी उपेक्षा नहीं की थी। ब्रह्मचारी, विद्यार्थी (चरक), वानप्रस्थी, सन्यासी और गृहस्थ (तीर्थिक) देश के भिन्न-भिन्न भागों में घूमते रहते थे। जहाँ ठहरते थे अपनी यात्रा के अनुभवों को सुनाते रहते थे। समाज-समज्या (गोष्ठियों, सम्मेलन) में भिन्न-भिन्न देशों और दिशाओं से आकर लोग विभिन्न तीर्थों और क्षेत्रों का महत्व बताते थे। ये माहात्म्य

पुराणों और उप-पुराणों में भरे हैं । इन माहात्म्यों में संस्कृति की 'एन्टी-
CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
किटीज़' छिपी पड़ी है। रामायण-महाभारत में शैलोदा और सीता नदियों की घाटी में आज भी सन्यासी भ्रमण करने जाते हैं। पशुपतिनाथ के पास एक साधू ने अपनी उँगली दिखलाई थी जो पानी में डुबोने से पत्थर की हो गई थी। आज आवश्यकता है कि प्राचीन भूगोल विद्या का स्वतन्त्र रूप से अन्य विषयों की भाँति पठन-पाठन हो जिससे पुराने, परन्तु विस्मृत स्थान नव-जीवन पा सकें। सरकार का उद्देश्य हो कि वह कनिंघम की भाँति देश का सम्यक सर्वेक्षण कराये। बुन्देलखंड में प्राचीन अभिलेख, मूर्तियाँ और मन्दिर अब भी अज्ञात अवस्था में पड़े हैं। वहाँ इतना भय और आतंक है कि वहाँ कोई जाना ही नहीं चाहता है। चन्देलों पर आधे दर्जन पुस्तकें हो गयी हैं परन्तु कालिन्जर, अजयगढ़, मदनपुर आदि स्थान आतंक के अन्तराल में छिपे पड़े हैं। यदि उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश की सरकारें उन जंगलों में अपने सर्वेअर्स आदि को भेज दें तो इतिहास जीवित हो जाय। इसी प्रकार यदि हिमांचल प्रदेश और जम्मू-काश्मीर की सरकारें ध्यान दें तो भी देश प्रकाश में आए। गोंडा-बस्ती के उत्तर नैपाली तराई में अब भी कोई अशोक का स्तम्भ मिल सकता है। पर स्तम्भ चलकर हमारे पास नहीं आ सकता है। रुद्रदामन I के लेख में नीवृत देश का उल्लेख है और इसी प्रकार धंग के खजुराहो लेख में बताया गया है कि उसने हिमालय के दक्षिण दूसरे कल्पग्राम को बसाया था। चन्देलों पर शोधकर्ताओं ने इस पर ध्यान ही नहीं दिया। एपीग्रेफिका इन्डिका के विद्वान एडिटर ने ही इस पर ध्यान नहीं दिया था, फिर ये शोधकर्ता कैसे ध्यान देते। गहडवाल लेखों में हलदोय पट्टल, बावन, केसोरा आदि स्थान क्रमशः हरदोई, बावन (हरदोई जिला), और खसौरा हैं। रोमा नियोगी को क्या पता। गुप्त वंश पर धड़ा-धड़ पुस्तकें आ रही हैं। परन्तु प्रयाग स्तम्भ के 'पुष्पपुर' (दंडैग्राहयतैव कोटकुलजं पुष्पाह्वये···) पर लोग मौन हैं। यदि चन्द्रगुप्त द्वितीय का मन्त्री वीरसेन राजधानी (पाटलिपुत्र) से आया था, तो उसे 'कवि पाटलीपुत्रक:' क्यों कहा गया। इसी प्रकार शुंग, मुख (मुखर) भी जातियाँ थीं। अस्तु, स्पष्ट है कि प्राचीन भारतीय इतिहास का अध्ययन भूगोल को जाने बिना हो ही नहीं सकता है।

सत्येषु यतितव्यं सत्यं हि परमं बलं

कृपाकांक्षी लेखक प्रो० बाजपेयी का उनके दो शब्दों तथा डा० पुरी के आर्शीवाद के लिए अनुगृहीत है।

अवधबिहारी लाल अवस्थी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अध्याय १

प्राचीन भारतीय भूगोल जानने के साधन

परिच्छेद १

भारत-भूमि

यह कहना कि हिन्दुओं को अन्य विषयों और विद्याओं की अपेक्षा भूगोल के क्षेत्र में अल्प ज्ञान था, अत्यन्त भ्रामक होगा। भूगोल भारतीयों का अति प्रिय विषय था।

भूगोल, भूगोलक शब्द का ही संक्षिप्त पर्याय है, जिसे पृथ्वी के लिए प्रयुक्त किया जाता था। पृथ्वी गोल थी। अस्तु इस वृत्ताकार पृथ्वी को ही भूगोल अथवा भूगोलक की संज्ञा दी गई थी।

इस नाम से ही इस विषय की वस्तु-सामग्री और स्वरूप की भी व्याख्या हो जाती है। भागवत पुराण पृथ्वी, लोकस्थिति, द्वीपादिकों, वर्षों और देशों तथा नगर-ग्राम, नद-नदी, गिरि-समुद्रादि की विशिष्टता, नाम-रूप-मान तथा लक्षणों के आधार पर वर्णन करता है। अस्तु स्पष्ट है कि हिन्दू चिन्तक नाम, स्वरूप तथा विस्तार और उनकी विशिष्टताओं का विशेष ध्यान रखते हुए भौगोलिक वर्णन प्रस्तुत करता है। विष्णु पुराण भी भूमण्डल—सागर, द्वीपों, वर्षों, पर्वतों, वनों, नदियों और नगरों—का वर्णन परिमाण अर्थात विस्तार-परिमाण तथा स्थिति के अनुसार करता है।

इस प्रकार भौगोलिक वर्णन शुष्क और नीरस न होकर रोचक होते थे। प्रत्येक भौगोलिक नाम की व्याख्या की गई है। यह व्याख्या कथा शैली पर आधारित है। कथाएँ प्राचीन परंपराओं की परिचायिका ही हैं। इन्हीं परंपराओं में हिन्दू संस्कृति का स्वरूप भी अक्षुण्ण रहा है। अस्तु प्राचीन भारतीय भूगोल को नाम-संस्कृति ही कहना समीचीन होगा क्योंकि हिन्दू-भूगोल-वृत्तों में नामों के माध्यम से ही हिन्दू संस्कृति की व्याख्या की गई है।

आज जब हम किसी प्राचीन उल्लिखित देश, नगर, नदी, पर्वत आदि की ठीक पहचान नहीं कर पाते हैं तो बिना सोचे-विचारे कह पड़ते हैं कि, "यह

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वृत्त काल्पनिक है, झूठ है, निराधार है।" यह हमारी अज्ञता है न कि उन मनीषियों का भूगोल वृत्त जो आखों देखे अपने लोक-चरण, पर्यटन और प्रत्यक्ष पर आधृत था। घर पर बैठे-बैठे श्री नन्दलाल डे, बी. सी. ला अथवा कनिंघम की पुस्तकों में यदि कोई स्थान, प्रदेश आदि नहीं प्राप्त होता है तो तुरन्त उसके अस्तित्व पर संदेह करने लगते हैं। ठीक है कि नदियों के प्रवाह वदलते रहते हैं, नगर नष्ट होते रहे हैं, अथवा उनके नाम ही बदल दिए गए। ऐसी अवस्था में बिना देश भ्रमण किये हुए प्राचीन वृत्तों पर सन्देह करना अथवा उन्हें काल्पनिक बताना उन निस्पृह लेखकों के प्रति न्याय नहीं है। उनकी कल्पना का क्षेत्र दर्शन और साहित्य भी व्यवहार, अनुभव और सत्य से सम्बलित था।

प्राचीन भारत में भी लोगों के भौगोलिक ज्ञान का मूल स्रोत देश-भ्रमण था। वे तीर्थयात्रा करते हुए विभिन्न अंचलों में अवस्थित क्षेत्रों, नदियों और तीर्थों का दर्शन करते थे। ये तीर्थिक ही लोक-चर थे। भूगोल की प्रियता का पता तो हमें इसी से ज्ञात होता है कि इस विषय पर जन-प्रिय कथानक भी प्रचलित थे। ऐसा ही एक प्रसंग हमें महाभारत से प्राप्त होता है। लाक्षागृह-दाह से बचकर पाँचों पांडव अपनी माता कुन्ती के साथ इतस्ततः वनों में घूम रहे थे। बकासुर का बध करने के बाद वे पांडव एक ब्राह्मण के घर में ब्रह्म-विद्या का अध्ययन करते हुए रहने लगे। वहीं एक अन्य ब्राह्मण भी घूमता हुआ आया। वह सुन्दर और पुण्य कथाएँ कह रहा या। उसकी कथाओं का वर्ण्य-विषय अनेक देशों, तीर्थों, नदियों तथा नानाश्चर्यमय स्थानों और नगरों का वर्णन ही था :

कथयामास देशांश्च तीर्थानि सरितस्तथा।
राज्ञश्च विविधाश्चर्यान् देशांश्चैव पुराणि च ॥

आदिपर्व, १६४-६

भगवान् राम मुनि विश्वामित्र के साथ पैदल ही लोकदर्शन करते हुए अयोध्या से मिथिला तक गये थे। रास्ते में प्रत्येक नई जगह पर वह स्वाभाविक रूप से पूछते जाते थे—"यह क्या है··· ?" वनवास-यात्रा भी अयोध्या से प्रयाग-चित्रकूट-दण्डक-किष्किंधा-मलय होते हुए लंका तक पैदल ही की थी। इस पुनीत-महाकाव्य से भी भारत-दर्शन होता है। अस्तु स्पष्ट है कि भूगोल समाज-गोष्ठी का भी प्रिय विषय था।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भूगोल का महत्व ही इसकी प्रसिद्धि का कारण था। भौगोलिक ज्ञान का यह महत्व आज भी कम नहीं है। देश के प्राचीन स्वरूप तथा पुरावृत्त को बिना भूगोल का अध्ययन किये हुए समझना सरल नहीं है। प्राचीन इतिहास और संस्कृति का अध्ययन बिना प्राचीन भूगोल को जाने हुए हो ही नहीं सकता। मानव-लीला को समझने के लिए उस रंगमंच का भी जानना नितान्त आवश्यक ही है जिस पर यह अभिनीत हुई है। विशेषत: भारतीय इतिहास यहाँ के भूगोल की सुनिर्मिति है। यहाँ की निसर्ग देवी, धरित्री, विशिष्ट स्वरूपा तथा चित्रमयी नटी, ने यहाँ के मनुष्य और उसके स्वरूप, इतिहास और संस्कृति, को एक अपने अभीष्ट ढंग और ढाँचे पर गढ़ा। इसीलिए यह अमृत है। स्वयं प्राणवंत होकर जन-मन की प्रेरिका शक्ति है।

प्राचीन भारतीय भूगोल के अंग प्रत्यंग को देव और नर रूप में भी माना और पूजा गया। वैदिक युग से ही पृथ्वी देवी और माँ थी। नदियाँ स्तुत्या थीं। नगाधिराज हिमवान और तत्पत्नी मेना ने ही पार्वती-गिरिजा को जन्म दिया था। हिमालय धातु-वनस्पति और अपने शान्त-मनोरम रूप से सभी को अपनी ओर आकृष्ट करता रहा है। वही स्वर्गारोहण की सीढ़ी (निसेनी) है। वत्सला भारत-भूमि के पुष्पित वनों, पर्वतों और नदियों ने ही इसे सुजला, सुफला और शस्य-श्यामला बनाया है। इसका सागरीय परिधान रत्नजटित है जिसके बार्डर (वेलाकूल) पर एला, लवंग, नारियल की लताओं की सुन्दर बेल कढ़ी हुई है। इन्हीं तत्वों ने भारतीय गौरव की सृष्टि की। निस्सन्देह यह देव-निर्मित देश है जिसकी 'विलसत काश्मीर ललाटिका' केसर कुंकुम से सुशोभित है। ऐसी कर्मभूमि पृथ्वी के समक्ष कौन नतमस्तक नहीं होगा।

परिच्छेद २

प्राचीन भारतीय भूगोल जानने के साधन

वैदिक साहित्य—भारतीय विचारधारा के अनुसार जीवन का ही नहीं प्रत्युत जगत का मूल भी वेद है (वेदमूलमिदं जगत)। वेद भूविद्या के स्थान पर भूत-विद्या का प्रतिपादन करते हैं। ऋग्वेद से भौगोलिक सामग्री यथेष्ट मात्रा में प्राप्त होती है। इस युग में आर्यों की क्रीड़ा भूमि अफ़गानिस्तान, पंजाब और ब्रह्मावर्त क्षेत्र था। यही सप्त-सिंधव कहलाता था। नदी-स्तुति से नदियों और उनके महत्व का ज्ञान प्राप्त होता है। 'अरण्यानि' का उल्लेख हुआ है। हिमवन्त भी मूर्तिमान् था। देश विभिन्न जन-जातियों का आवास

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

था। कुछ पश्चिमोत्तर सीमान्त प्रदेश में तथा कछ परुष्णी के आस-पास बसी हुई थीं। सरस्वती और यमुना के मध्य भरत जन फैले हुए थे। वेदमाता सरस्वती पुण्यतमा यज्ञस्थली थी। उत्तर वैदिक साहित्य—साम, यजुः और अथर्व संहिताओं, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद् तथा सूत्र ग्रन्थों से भी वैदिक भारत का भूगोल ज्ञात होता है। इस युग में भूगोल का मुख्य केन्द्र सीमान्त प्रदेश और पंजाब से पूर्व की ओर खिसक कर मध्यदेश में विशेषकर कुरु-पांचाल में स्थित हो गया था। अथर्व वेद में पृथ्वी को माँ की संज्ञा दी गई है। इस प्रकार वैदिक साहित्य से पृथ्वी, नदियों, पर्वतों, वनों और क्षेत्रों का ज्ञान प्राप्त होता है। वे हमारे प्रारम्भिक देवता थे।

बौद्ध साहित्य—पाली और संस्कृत बौद्ध साहित्य भी प्राचीन भारतीय भूगोल सम्बन्धी प्रचुर सामग्री प्रस्तुत करता है। प्राचीन पाली साहित्य-त्रिपिटक विशेषकर विनयपिटक और सुत्तपिटक प्राचीन भारत के भौगोलिक परिचय का महत्वपूर्ण ज्ञान-साधन है। अंगुत्तर निकाय नामक ग्रन्थ से हमें बुद्धकालीन सोलह महाजनपदों का ज्ञान होता है। महावस्तु और मिलिन्दपञ्हों नामक ग्रन्थों से भी भूगोल-विषयक सामग्री प्राप्त होती है। दीपवंस, महावंस तथा उन पर बुद्धघोष कृत भाष्य-ग्रन्थों से भी बुद्ध-कालीन भारत का भौगोलिक ज्ञान होता है। जातक कथाएं भी भौगोलिक सामग्री प्रस्तुत करती हैं।

इसी प्रकार संस्कृत बौद्ध साहित्य भी भौगोलिक अध्ययन के लिए अति उपादेय है। इनसे हमें वृहत्तर भारत, भारत के सांस्कृतिक प्रसार, तथा वहाँ भी भारतीय नामों के प्रचलन का वृत्तान्त ज्ञान होता है। महावस्तु, ललितविस्तर, दिव्यावदान और मंजुश्री मूलकल्प से भूगोल विषयक सामग्री प्राप्त होती है।

जैन साहित्य—जैन साहित्य भी प्राचीन भारतीय भूगोल के ज्ञान का स्रोत है। जैन भगवती सूत्र भी सोलह महाजनपदों की नाम-तालिका प्रस्तुत करता है। कल्पसूत्र, उत्तराध्यानसूत्र, तथा अवश्यकसूत्र आदि ग्रन्थों से भौगोलिक ज्ञान होता है। जम्बुद्दीवपण्णत्ति से जम्बूद्वीप तथा भारतवर्ष का भौगोलिक परिचय प्राप्त होता है। इससे जम्बूद्वीप के वर्ष-विभागों का ज्ञान होता हैं। इसके अतिरिक्त जिनप्रभसूरी विरचित विविधतीर्थ कल्प नामक ग्रन्थ से भी भौगोलिक ज्ञान प्राप्त होता है।

रामायण—प्राचीन भारतीय भूगोल के प्रति महत्वपूर्ण ज्ञान साधन संस्कृत महाकाव्य—रामायण और महाभारत—हैं। रामायण कोसल जनपद के सम्राट दाशरथि राम का जीवन वृत है। कोसल-सरयू अयोध्या के अतिरिक्त विदेह

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

और मिथिला का, जो उनके प्रारम्भिक जीवन के घटनास्थल हैं, विशेष ज्ञान प्राप्त होता है। ऋतुओं, पर्वतों और नदियों का वर्णन बाहुल्यता से प्राप्त होता है। वनवास की प्रिय वासस्थली चित्रकूट और मन्दाकिनी नदी का विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है। दण्डक, किष्किन्धा और पम्पा भी विशेष घटना-स्थल थे। दक्षिण समुद्र, सेतु तथा लंका और वहाँ से वापसी के मार्ग में पड़ने वाले देशों का भी वर्णन प्राप्त होता है। रामायण के किष्किन्धा काण्ड (अ० ४०) से विभिन्न दिशाओं में स्थित देशों और द्वीपान्तर—सुवर्ण द्वीप (सुमात्रा), यव द्वीप (जावा) आदि—का परिचय प्राप्त होता है।

महाभारत—महाभारत हिन्दू संस्कृति का विश्वकोश तथा प्राचीन भारतीय भूगोल का अक्षय और अप्रतिम भण्डार है। यह प्राचीन भूगोल का अति महत्वपूर्ण ज्ञान-स्रोत है। इसमें हमें भीष्मपर्वान्तर्गत जम्बूखण्ड विनिमाण पर्व प्राप्त होता है। इसका उद्देश्य ही जनपदों, नदियों पर्वतों तथा अन्य भूमि-सम्बन्धी भौगोलिक तत्वों का वर्णन करना है—

नदीनां पर्वतानां च नामधेयानि सर्वशः।
तथा जनपदानां च ये चान्ये भूमिमाश्रिताः॥

सप्तद्वीपवती मही, सप्तार्णवाः, वर्षपर्वतों के अतिरिक्त भारत का राष्ट्र-कीर्तन भी प्राप्त होता है। यह कितनी अनुपम और अप्रतिम राष्ट्र-भक्ति है जो इस राष्ट्रीयगान से हमारे तन-मन-मस्तिष्क को स्वदेशानुराग और तदनुरूप स्वधर्म की ओर उन्मुख करता है। देखिये यह महायोगी भरत के चारित्र्य से मुद्रांकित क्षेत्र (भारत भारत) सभी का प्रिय और पवित्र देश था (भीष्मपर्व—अध्याय ९, श्लोक ५-९) :

अत्र ते कीर्तयिष्यामि वर्षं भारत भारतम्।
प्रियमिन्द्रस्य देवस्य मनोर्वैवस्वतस्य च।
पृथोस्तु राजवैन्यस्य तथेक्ष्वाकोर्महात्मनः।
ऋषभस्य तथैलस्य नृगस्य नृपतेस्तथा।
कुशिकस्य च दुर्धर्षं गाधेश्चैव महात्मनः।
सोमकस्य च दुर्धर्षं दिलीपस्य तथैव च।
अन्येषां च महाराज क्षत्रियाणां बलीयसाम्।
सर्वेषामेव राजेन्द्र प्रियं भारत भारतम्।

धन्य है आर्ष मनीषी की इस कमनीय, जीविका—शक्तिदायिनी कल्पना

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

को कि यह भारत सभी का प्रिय राष्ट्र था। आज इस राष्ट्र-कीर्तन की महान् आवश्यकता है।

इसके अतिरिक्त पांडु और उनके पुत्रों की चतुर्दिक् दिग्विजयों, कर्ण-विजय और अर्जुन-तीर्थयात्रा तथा धौम्य द्वारा तीर्थ-वर्णन से भी हमें भौगोलिक ज्ञान प्राप्त होता है। अन्त में महाप्रस्थान के पूर्व इस देश की प्रदक्षिणा से भौगोलिक ज्ञान के अतिरिक्त पुनः राष्ट्र-प्रेम और इसकी महनीयता का बोध होता है :

उदीचीं पुनरावृत्य ययुर्भरतसत्तम।
प्रादक्षिण्यं चिकीर्षन्तः पृथिव्या योगधर्मिणः॥

महाप्रस्थानिक पर्व, १-४६

यह ही भारतीय मौलिक एकता का प्रत्यक्ष प्रमाण है। इससे बढ़कर देश-भक्ति का उदाहरण व्यास के अतिरिक्त और कौन प्रस्तुत कर सकता कि वे योगधर्मी तथा त्यागधर्मी महात्मा पाण्डव उत्तराखण्ड को जाने के पूर्व इस भारत-मही की प्रदक्षिणा करना नहीं भूले।

महाभारत का ही अन्तिम अंश **हरिवंश पुराण** भी प्राचीन भारतीय भूगोल पर महत्वपूर्ण प्रकाश डालता है। इसमें भी सप्तद्वीपा पृथ्वी, नानादेशों, जनपदों, नगरों पर्वतों तथा नदियों का वर्णन प्राप्त होता है। पर्वतों और नदियों का वर्णन देश-भागों के अनुसार (विष्णुपर्व पु०, अ० १०९) किया गया है।

पाणिनीय अष्टाध्यायी यद्यपि एक व्याकरण ग्रन्थ है परन्तु फिर भी अष्टाध्यायी में प्रचुर भौगोलिक सामग्री प्राप्त होती है। इसमें हमें जनपदों, संघों या गणों, नगरों, नदियों पर्वतों आदि का ज्ञान होता है। अनुश्रुति के आधार पर पाणिनि मुनि प्रारम्भ में विद्याभ्यास करने में मन्द थे। विक्षुब्ध होकर शिवाराधन और तपश्चर्या द्वारा उन्होंने शिव-प्रसाद प्राप्त किया। स्कन्द पुराण से ज्ञात होता है कि उन्होंने गोपर्वत र तपस्या द्वारा वैयाकरणता प्राप्त की। निस्सन्देह वे तपस्वी साधक थे और महान् यत्न से ही वे इस शब्द-शास्त्र का प्रणयन कर सके जिनके शब्द-सूत्र नाम संस्कृति के परिचायक भौगोलिक नाम-सूत्र हैं।

उनके समय में लगभग आठ व्याकरण ग्रन्थ प्रचलित थे। पाणिनि मुनि ने उन सबका एक समन्वय-समाहार कर माहेश्वर व्याकरण की ही प्रतिष्ठा की। अस्तु इस शब्द शास्त्र के महान ग्रन्थ ने भी मौलिक एकता के मूलमन्त्र का प्रचार किया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इन्हीं पर लिखे गये **पतंजलि के महाभाष्य** से भी भौगोलिक सामग्री प्राप्त होती है। जनपदों, नगरों, नदियों, पर्वतों और वनादिकों की सूची महाभाष्य से प्राप्त होती है।

पुराण—पुराण प्राचीन भूगोल के महत्वपूर्ण ज्ञान-स्रोत हैं। इनमें भुवनकोश खण्ड के अन्तर्गत पृथ्वी, इसके भूखण्ड-सप्तद्वीप-प्रत्येक द्वीप के उपविभाग जिन्हें वर्ष कहा गया है, सप्त-समुद्र, वर्षपर्वत, नदियों और जनपदों का ज्ञान होता है। जम्बूद्वीप के ही उपविभाग भारतवर्ष, इसके नव-भेदों (भारतवर्ष का नौ खण्डों में विभाजन), कुलपर्वतों (भारतवर्ष की प्रमुख पर्वत श्रेणियों), उनसे प्रवाहित होने वाली नदियों और जनपदों का वर्णन प्राप्त होता है। भुवन कोश के अतिरिक्त भी माहात्म्यों और तीर्थयात्राओं से भी भौगोलिक सामग्री प्राप्त होती है। मार्कण्डेय, स्कन्द, ब्रह्माण्ड, विष्णु, वामन तथा वायु पुराणों से विशद भौगोलिक वृत्त प्राप्त होता है। मत्स्य, विष्णु, कूर्म, अग्नि और भागवत आदि पुराणों से भी भौगोलिक सामग्री प्राप्त होती है। स्कन्द पुराण के माहेश्वर खंड के उपखंड कौमारिका खंड में अत्यन्त महत्वपूर्ण और विस्तृत देश-तालिका प्राप्त होती है। सांख्य-सृष्टि, सप्तद्वीप, मर्यादा गिरि, और द्वीपों के उप-विभाग वर्षों का वर्णन है। जम्बूद्वीप के वर्ष विभागों में ही नाभिखण्ड-भरतखण्ड भारतवर्ष भी आता है। भारतवर्ष एक विचित्र देश है जिसकी विशिष्टता है कि :

कृतं त्रेता द्वापरं च तिष्यं युगचतुष्टयम् ।
अत्रैवैषा युगावस्था चतुर्वर्णश्च वै जनः ।
चत्वारि त्रीणि च द्वे च तथैवेकं शरच्छतम् ।
जीवन्त्यत्र नरा देवि कृतत्रेतादिषु क्रमात् ।

स्कन्द पु० ७-१-२-९—११

निश्चयतः इस देश की चातुर्युगी और चातुर्वर्ण्य व्यवस्थाएँ प्रमुख विशिष्टताएँ हैं। भागवत पुराण (५-१९-१०) भी 'वर्णाश्रमवती भारती प्रजा' का उल्लेख करता है। राजर्षि प्रियव्रत के पौत्र आग्नीध्र पुत्र नाभि से सुशासित यह देश नाभिखण्ड कहा गया (अजनाभ-भागवतपुराण)। नाभि पौत्र और महायोगी ऋषभ के ज्येष्ठ पुत्र तथा ब्रह्मदर्शी, परमयोगी राजर्षि भरत के नाम से यह देश भारत कहलाता है :

नाभेः पुत्रश्च ऋषभ ऋषभाद्भरतोऽभवत् ।
तस्य नाम्ना त्विदं वर्षं भारतं चेति कथ्यते ॥

स्कन्दपुराण १-२-३७-५७

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

यह पुण्यभूमि राजर्षियों और तपस्वियों की पावनस्थली रही है। अस्तु इसकी कर्मभूमि संज्ञा उपयुक्त ही है। इसी कर्म-भूमि में मनुष्य को सभी स्वप्न, आकांक्षाएँ और आदर्श प्रत्यक्ष सिद्ध होते हैं :

अत्र धर्मार्थकामानां मोक्षस्य च उपार्जनम्।
अन्यत्र भोगभूमिश्च सर्वत्र कुरुनंदन ॥

स्कन्द पुराण १-२-३७-५८

'हिमाद्रि-जलधि-अन्तः' स्थित यह देवनिर्मित देश देवताओं का भी स्पृहणीय देश था—

तदेतत्भारतं वर्षं सर्वबीजं वरानने।
तत्कर्मभूमिनान्यत्र संप्राप्तिः पुण्यपापयोः ॥
देवानामपि देवेशि सदैवैष मनोरथाः।
अपि मानुष्यमाप्स्यामो भारते प्रत्युतक्षितौ ॥

स्कन्द पुराण ७-१-११-१४–१५

एतादृश देव-गान भागवत पुराण (५-१९-२१) में भी पाते हैं :

अहो अमीषां किमकारि शोभनं प्रसन्न एषां स्विदुत स्वयंहरिः।
यैर्जन्म लब्धं नृषु भारताजिरे मुकुन्दसेवौपयिकं स्पृहा हि नः ॥

विष्णु पुराण (२-४-२४) में भी इस कर्म-मही भारत की देव-गीतिका उपलब्ध होती है :

गायन्ति देवाः किलगीतकानि धन्यास्तु ते भारत भूमि भागे।
स्वर्गापवर्गास्पद मार्गभूते भवन्ति भूयः पुरुषः सुरत्वात् ॥

पुराणों में भारतवर्ष के कूर्म-स्वरूप का परिचय (भारतो···कूर्मरूपेण संस्थित : स्कन्द पुराण (७-१-११-१८) दिया गया है। इसका विशेष वर्णन मार्कंडेय पुराण में मिलता है।

बृहत्संहिता—पुराणों में भी भूगोल के साथ ही साथ ग्रहमंडलों-ज्योतिष का वर्णन प्राप्त होता है। इसी कारण वराहमिहिर की बृहत्संहिता में ज्योतिष और भूगोल का एक ही साथ वर्णन प्राप्त होता है। बृहत्संहिता (अध्याय १४) भी प्राचीन भारतीय भूगोल का अत्यन्त महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। इसमें हमें भौगोलिक सामग्री—देश-जनपद, नगर, नदी और पर्वतों का उल्लेख देश विभाग में स्थिति के आधार पर प्राप्त होता है। यह सूचना हमें इसके अध्याय १४ से जिसे 'कूर्म विभाग' की संज्ञा दी गयी है प्राप्त होती है। अन्य अध्यायों में भी भौगोलिक विवरण मिलते हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वृहत्संहिता के इस 'कूर्म-विभाग' अंश में भारतवर्ष को नौ भागों में विभक्त किया गया है। इस विभाजन का मूल मध्यदेश (गंगा यमुना धारी) था। दक्षिणसमुद्र (याम्योदधि) और लंका से लेकर उत्तर में हिमालय तथा पश्चिमोत्तर के देशों तथा जनपदों का वर्णन प्राप्त होता है। पूर्व में लौहित्य और उदयगिरि तक विस्तृत था।

पाश्चात्य विद्वानों और पर्यटकों को भी भारत अपने सुन्दर स्वरूप से आकृष्ट करता रहा है। श्री रैगोज़िन साहब का कथन है कि पाश्चात्य जगत के मस्तिष्क में भारत सदैव रहस्य, रमणीयता, भव्यता और शान्ति का सुषमागार रहा है। यह एक निराली ही दुनिया है, जिसका रूप मोहक है। यह रूप-लावण्य उसके निसर्ग, विशेषकर पर्वतीय सुषमा और गौरव हिमालय की देन है। वस्तुतः भारत का निर्माता हिमालय ही है। (वेदिक इण्डिया, पृ० २-३)। मैक्समूलर ने भी इस देश-महान की महनीयता और पवित्रता पर हृदयोद्‌गार व्यक्त किये हैं (इण्डिया एण्ड ह्वाट इट कैन टीच अस)।

धर्मशास्त्रों (स्मृतिग्रन्थ), नीतिग्रन्थों, नाटयदर्पण और नाटक तथा कथा-साहित्य, काव्यग्रन्थों और कोशों से भी भौगोलिक सामग्री प्राप्त होती है।

मनुस्मृति का पवित्रतम देश-खंड मध्यदेश-आर्यावर्त है जो शिष्ट आचार का मुख्य अधिष्ठान था। ब्रह्मर्षि देश, जिसमें कुरु-पांचाल आदि जनपद सम्मिलित थे, का भी उल्लेख हुआ है।

कौटिल्य के अर्थशास्त्र में भी जनपदों, संघों-गणों और नगरादिकों का ज्ञान प्राप्त होता है। बार्हस्पत्य अर्थशास्त्र भी भौगोलिक ज्ञान का एक उपादेश ग्रन्थ है। मृच्छकटिक नाटक (अंक ६, पृ० ४२८) में दाक्षिणात्य जातियों का उल्लेख है।

नाट्य शास्त्र (अध्याय १४,१५) से भी देशों और दिशाओं तथा उनकी विशिष्टताओं का ज्ञान होता है।

राजशेखर कृत काव्य मीमांसा प्राचीन भारतीय भूगोल के ज्ञान का अति प्रसिद्ध और सुन्दर ग्रन्थ है। इसके अध्याय, १७ में भारतवर्ष के पाँच स्थलों (देश-विभाग)—पूर्व देश, पश्चाद्देश, उत्तरापथ, दक्षिणापथ तथा मध्य देश-का वर्णन, उनमें स्थित जनपदों, नदियों पर्वतों और प्रत्येक देश विभाग की उपज के साथ ही प्राप्त होता है। इससे राजशेखर का भूगोल विषयक पाण्डित्य ही परिलक्षित होता है। उन्होंने भारतवर्ष के नवद्वीपों का भी उल्लेख किया है जो परस्पर समुद्र की स्थिति के कारण अगम्य ही थे। भारतवर्ष ही नवां

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

द्वीप कुमारी द्वीप है। स्कन्द पुराण ने भी इसे कुमारिका खण्ड की संज्ञा दी है। वामन पुराण में इसे ही कुमारद्वीप कहा गया है।

अमर कोश और हेमचन्द्र के अभिधान चिन्तामणि में भौगोलिक सामग्री प्राप्त होती है।

कालिदास के ग्रन्थों, दण्डिन के दशकुमारचरित, नैषध आदि काव्य-ग्रन्थों तथा कल्हण की राजतरंगिणी से भी भौगोलिक सूचनाएँ प्राप्त होती हैं। तन्त्र साहित्य से भी देश-विभाग और भौगोलिक ज्ञान प्राप्त होता है। महामयूरी से भी भौगोलिक ज्ञान प्राप्त होता है।

विदेशी साहित्य से प्राचीन भारतीय भूगोल सम्बन्धी अत्यन्त महत्वपूर्ण सामग्री प्राप्त होती हैं।

यूनानी लेखक—भारत का पश्चिमी जगत के साथ घनिष्ठ, सांस्कृतिक और व्यापारिक सम्बन्ध रहे हैं। ऐतिहासिक युग में सिकन्दर के आक्रमण के पूर्व ही कुछ विद्वान सिन्धु तटीय प्रदेश के भौगोलिक निरीक्षण के लिए भेजे गये थे। कुछ यूनानियों ने फारसी राजदरबार में ही भारत के विषय में भौगोलिक सूचनाएँ संकलित की थीं। स्वयं सिकन्दर के साथ कई विद्वान भूगोल लेखक भी आये थे जिनके विवरणों से हमें उत्तरी पश्चिमी भारत के विषय में तत्कालीन भौगोलिक ज्ञान प्राप्त होता है। इनमें नियार्कस तथा स्ट्रेबो, डायोडोरस, कर्टियस, प्लिनी और एरियन के उद्धरण प्राचीन भूगोल का वर्णन करते हैं। मौर्यकालीन यूनानी राजदूत मेगस्थनीज के विवरणों—'इण्डिका'—में देश, इसके नगरों आदि के विषय में ज्ञान प्राप्त होता है।

एरतॉस्थनीज ने भूगोल विषय पर महत्वपूर्ण ग्रन्थ भी लिखा। प्लिनी का भौगोलिक वर्णन हमें उसके ग्रन्थ 'नेचुरल हिस्ट्री' से प्राप्त होता है।

"पेरीप्लस ऑफ़ एरीथ्रियन सी" के लेखक ने भारतीय समुद्रतट की यात्रा की थी। उसने अपना यह ग्रन्थ अरब सागर, लाल सागर तथा फ़ारस की खाड़ी में व्यापार करने वाले नाविकों के निर्देश के लिए लिखा था। अस्तु यह ग्रन्थ भारतीय समुद्रतट के भौगोलिक परिचय का महत्वपूर्ण साधन है। इस ग्रन्थ का रचना काल ईसा की प्रथम शताब्दी (८५ ई० या ८० ई० के आस-पास) माना गया है।

इसी प्रकार 'टॉलमी' नामक प्रसिद्ध भूगोलवेत्ता ने भी १५० ई० के आस-पास अति प्रसिद्ध भौगोलिक ग्रन्थ की रचना की। यह ग्रन्थ विवध सूत्रों से प्राप्त सूचनाओं का संकलन है। लेखक का अपना व्यक्तिगत यात्रा-अनुभव

CC-0. Agamnigam Digital Preseyation Foundation, Chandigarh

नहीं था। इसीलिए इसके भूगोल-वृत्तों पर सन्देह किया गया हैं (एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका, जिल्द २०)। फिर भी यह भारत के प्राचीन भूगोल का विशेषकर समुद्र-तटीय सम्बन्धी ज्ञान के लिए महत्वपूर्ण है। इस से भारतीय क्षेत्रों और जातियों का भी परिज्ञान होता है।

प्राचीन भारतीय भूगोल पर चीनी यात्रियों के वृत्तान्त भी महत्वपूर्ण प्रकाश डालते हैं। इनमें फ़ाहियान और युएन च्वांग अति प्रसिद्ध चीनी बौद्ध यात्री थे, जो बुद्धतीर्थों, मठों और विहारों का दर्शन करते हुए देश के विभिन्न भागों में गये थे।

युएनच्वांग नामक चीनी यात्री ने प्रायः (६२९ ई० ६४५ ई०) सम्पूर्ण भारत का पर्यटन और अध्ययन किया था। उसका भारत वर्णन प्राचीन भारतीय भूगोल का अति प्रसिद्ध ग्रन्थ है। उसने भारतीय देश-विभाग, देश-वर्णन और उन क्षेत्रों की विशिष्टताओं तथा नगरों, नदियों पर्वतों, आदि का भी वर्णन किया है। उसके भूगोल-वृत्त का अनुमोदन आभिलेखिक साक्ष्यों से भी हो जाता है। श्री कनिंघम साहब का भौगोलिक ग्रन्थ (ऐन्शेन्ट इण्डियन ज्यॉग्रफी) युएनच्वांग के वर्णनों तथा अपने व्यक्तिगत पर्यवेक्षण के आधार पर अत्यधिक प्रसिद्ध ग्रंथ है। युअनच्वांग के विवरण काल्पनिक नहीं कहे जा सकते, सम्भवतः कहीं भ्रम, भ्रान्ति अथवा भूल हो गई हो। यह सभी से सम्भव है, हम लोगों को भी दिशा-भ्रम हो जाता है, वह तो एक विदेशी पर्यटक ही था। एक विदेशी का एतादृश प्रयत्न स्तुत्य ही है कि उसने हमें तत्कालीन भारत का बहुमूल्य परिचय दिया। उसके वर्णन की पुष्टि भारतीय साक्ष्यों से भी होती है। अरब लेखकों ने भी भारतीय भूगोल पर अपने विचार व्यक्त किये हैं।

मुस्लिम लेखकों में अलबरूनी का भारतवर्णन तत्कालीन भूगोल-परिचय का महत्वपूर्ण साधन है। यह महमूद गजनवी के समय का प्रसिद्ध विद्वान था।

इसी युग के कथा साहित्य कथासरितसागर, वृहत्कथामंजरी और सोमदेव के चम्पूकाव्य यशस्तिलक से भी अति महत्वपूर्ण भौगोलिक सामग्री प्राप्त होती है।

सोमेश्वर के अभिलषितार्थ चिन्तामणि (मानसोल्लास) से भी जनपदों और भारत के वनों का महत्वपूर्ण उल्लेख प्राप्त होता है। इसकी सूचनाओं से भूगोल का हमारे आर्थिक और राजनैतिक जीवन से अटूट सम्बन्ध ज्ञात होता है।

इस बहुविध साहित्य के अतिरिक्त प्राचीन भारतीय भूगोल का अध्ययन देश के विभिन्न अंचलों से प्राप्त अभिलेखों के द्वारा हो सकता है। हखामनीय

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लेखों से उत्तरी पश्चिमी सीमान्त प्रदेश के भूगोल पर प्रकाश पड़ता है। मौर्य लेखों से भारत के विभिन्न देशों और नगरों का ज्ञान प्राप्त होता है। सुदूर दक्षिण के द्रविड राज्य-चोल, पाण्ड्य, सत्यपुत्र, केरलपुत्र तथा ताम्रपर्णी का ज्ञान होता है। इसी प्रकार साम्राज्य और प्रान्तों तथा उनके नगरों का भी बोध होता है। शक महाक्षत्रप रुद्रदामन प्रथम के जूनागढ़ शिलालेख से जनपदों की महत्वपूर्ण तालिका प्राप्त होती है। यहीं यौधेयगण का भी परिचय होता है। इसी प्रकार गौतमीपुत्र शातकर्णी की नासिक प्रशस्ति (वासिष्ठीपुत्र पुलुमावी के १९वें राज्यवर्ष का लेख) हमें जनपदों और पवर्तों की महत्वपूर्ण तालिका प्रस्तुत करता है। गुप्त लेखों से, विशेषकर समुद्र-गुप्त के प्रयाग-लेख से आर्यावर्त और दक्षिणापथ के राज्यों तथा गणों और द्वीपान्तर विशेषतया सिंहल का उल्लेख प्राप्त होता है। इसी प्रकार अन्य लेखों से भी भौगोलिक ज्ञान प्राप्त होता है।

इस प्रकार प्राचीन भारतीय भूगोल वास्तव में भारतीय प्राच्य विद्या का एक महत्वपूर्ण और मनोरम विषय है जो नाम-सूत्रों द्वारा प्राचीन भारतीय संस्कृति का निरूपण करता है।

"महाभारत से प्राप्त देशों और गणों की सूची ईसा पूर्व युग के इतिहास के लिये महत्वपूर्ण है। इसी प्रकार वराहमिहिरका भूगोल वृत्त ईसा की पांचवी शताब्दी तथा युएनच्वांग का विवरण ईसा की सातवीं शताब्दी के पूर्वार्ध युग के इतिहास का महत्वपूर्ण साधन है। स्कन्द पुराण के कुमारिका खण्ड के अध्याय ३९ में वर्णित देश-तालिका में ईसा की नवी शताब्दी भारत का चित्र पाते हैं।" (हिस्ट्री ऑफ़ मेडिवल हिन्दू इण्डिया, जिल्द २, पृ० ३९) अल्बरूनी के ग्रन्थ में ईसा की ११ वी शताब्दी का चित्र प्राप्त होता हैं।

———

पाठ्य-ग्रन्थ

१—हिस्टारिकल जाग्रफ़ी ऑफ़ ऐंशेंट इण्डिया —डॉ. बी.सी. ला
२—ऐंशेंट इण्डियन जाग्रफ़ी —सर अलेग्ज़ेण्डर कनिंघम
३—प्राचीन भारत का भौगौलिक स्वरूप —डॉ. अवधबिहारी लाल अवस्थी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अध्याय २

वैदिक भूगोल

परिच्छेद १

ऋग्वैदिक भारत--सप्तसैन्धव देश

ऋग्वेद पृथ्वी का सबसे प्राचीन ग्रन्थ है। सप्तसैन्धव इस युग का प्रसिद्ध प्रमुख क्षेत्र तथा आर्यों का प्रिय देश था। यहीं आर्य संस्कृति का विकास हुआ। इन्द्र ने वृत्र को मार कर, उसके द्वारा रक्षित उसकी पत्नियाँ जो जल-धारायें थी और जिनका द्वार निरुद्ध था, उन्हें मुक्त किया। इस प्रकार इन्द्र ने 'सप्त सिन्धून्' के प्रवाह को भी मुक्त किया (ऋक् १—३३—११,१२)।

यहाँ 'सप्त सिन्धून' से हमारा तात्पर्य सात नदियों से हैं। मैक्समूलर के अनुसार पंजाब की पांच नदियाँ शतद्रु या शुतुद्रि, (सतलज), विपाश (व्यास), परुष्णी (रावी), असिक्नी (चिनाब) और वितस्ता (झेलम) तथा सिन्धु और सरस्वती हैं। कुछ विद्वान-लासें, ह्विटने आदि सरस्वती के स्थान पर कुभा को रखते हैं। यह भी विचार है कि 'आक्सस' (वक्षु) भी इन नदियों में सम्मिलित रही होगी। परन्तु पं० जी०सी० अवस्थी (वेदधरातल, पृ० ६८६) का विचार है कि 'सप्त सिन्धवः' में सरस्वती नदी नहीं आ सकती। क्योंकि ऋग० ८-५४-४ में सप्तसिंधवः और सरस्वती शब्द साथ-साथ आये हैं।…" पंजाब की नदियाँ इत्यादि मानने वालों के मत में जो देश लिया जायगा, वह छोटा होगा। इससे उसका लेना ठीक नहीं। ऋग्वेद(१०-७५-१) में नदियाँ साथ-साथ होकर तीन प्रकार से, अर्थात् पृथ्वी, अन्तरिक्ष और द्युलोक में बहीं। बहने वाली नदियों के बीच में सिंधु नाम की नदी अपने बल से सम्पूर्ण नदियों का अतिक्रमण करके बहती है। पुराणों में गंगा का तीनों लोकों में होना वर्णन किया गया है। और गंगा के सात भेदों में सिन्धु का भी नाम है। इससे सप्त सिंधु का गंगादि सात नदी अथवा बहने वाला जल अर्थ जो सायणाचार्य करते हैं वही ठीक हैं।"…परन्तु हखामनीय (ईरानी) शासकों के लेखों में 'सप्तहिन्दु' इसी सप्त सिन्धु देश के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। अतः इसका इन सात नदियों और उनसे अभिसिंचित प्रदेश पंचनद-सिन्धु ही सही है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शतुद्रि—यह पंजाब की सबसे पूर्वी नदी आधुनिक सतलज है।

विपाश—ऋग्वेद (३-३३-१) में 'विपाट-छुतुद्री' समास-पद आया है। इससे इन दोनों नदियों के संगम का बोध होता है। विपाश आधुनिक व्यास ही है जो सतलज में गिरती है। 'विपाट-छुतुद्रि संभेद' बृहद्देवता ४-१ में प्राप्त होता है।

परुष्णी (इरावती)—पंजाब की आधुनिक रावी नदी है। इसका उल्लेख नदी स्तुति में हुआ है। इसी नदी के तट पर दाशराज्ञ युद्ध हुआ था। इसे 'महानदी' (८-७४-१५) कहा गया है।

असिक्नी—यही नदी बाद में चन्द्रभागा कही गई। आजकल इसे चनाव कहते हैं।

वितस्ता—नदी स्तुति में उल्लिखित इस नदी को आजकल झेलम कहते हैं।

सिन्धु—आधुनिक सिन्ध नदी ही है।

सरस्वती—यह इस युग की परम पवित्र नदी (नदीतमा, २-४१-१६) कही गई है। इसके ही तटों पर वैदिक यज्ञों का विकास हुआ था। यह समुद्र गामिनी नदी थी। इसका तादात्म्य आधुनिक सरसुती से किया गया है जो भटनेर के पास रेगिस्तान में लुप्त हो जाती है। कुरुक्षेत्र में बहने वाली सरस्वती को प्राची सरस्वती कहा गया है। अस्तु ऋग्वैदिक सरस्वती हरहुती मालुम पड़ती है।

दृषद्वती—यह सरस्वती की ही प्रसिद्ध सहायक नदी है जो उसी के समानान्तर बहती हुई उसमें गिरती है। कुछ लोगों ने इसको वर्तमान घग्घर नदी, जो अम्बाला और सरहिन्द के बीच बहती है, बताया है। कनिंघम साहब इसको रक्षी नदी मानते हैं, जो थानेश्वर के दक्षिण-पूर्व बहती है। दृषद्वती का तादात्म्य प्रसिद्ध चित्रंग या चौतंग या चितंग से किया गया है।

सरस्वती और दृषद्वती नदियों का मध्यान्तर क्षेत्र ब्रह्मावर्त कहलाता था। इस प्रकार दृषद्वती ब्रह्मावर्त की दक्षिणी सीमा थी।

आपया—सरस्वती की एक शाखा नदी है जो थानेश्वर के समीप होकर बहती थी।

इन 'सप्त-सिन्धून्' के अतिरिक्त अन्य नदियों के भी नाम प्राप्त होते हैं। इन में कुछ तो पश्चिम की ओर ईरान के पठार से बहती हुई सिन्ध में आकर मिलती हैं। कुछ काश्मीर में बहती हुई उत्तर में इससे मिलती हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कुभा—पश्चिम की ओर से मिलने वाली सहायक नदियों में सर्वप्रसिद्ध कुभा या काबुल नदी है।

सुवास्तु—कुभा या काबुल की सहायक नदी स्वात ही है।

मेहत्नू—यह भी सिन्धु की सहायक नदी है जो गोमल और कुर्रम से पहले मिलती है। वेद धरातल में इसको आज की सवान नदी बताया गया है। ज़िमर इसे क्रुमु की सहायक मानते हैं। कुभा के दक्षिण में क्रुमु (आधुनिक कुर्रम) और गोमती (आधुनिक गोमल) सिन्धु से आकर मिलती हैं।

ऋग्वेद (५-५३-९) में कहा गया है :—हे मरुतो आपको रसा, अनतिभा, कुभा, क्रुमु और सिन्धु निकृष्टरमण न करावें और पुरीषिणी सरयु भी मत रोकें। ऋग्वेद (१०-७५-६) में उल्लेख है कि "हे सिन्धो आप गोमती और क्रुमु से मिलने के लिए उतरीं। पहले तृष्टामा, उसके बाद मेहत्नू से मिलीं। इस प्रकार इन सिन्धु की सहायक नदियों का ज्ञान होता है।"

रसा—यह धारा वैदिक भारत के उत्तर पश्चिम सीमान्त पर बहती थी। कहीं-कहीं पर इसको पृथ्वी के सिरों पर स्थित कल्पित धारा के रूप में उल्लिखित किया गया है जहाँ वायु मंडल को भी घेरे रहती है। इसका तादात्म्य जेक्सर्टेस से किया गया है। यह अवेस्ता की रन्हा नदी है।

'वेद धरातल' में इसे सिन्धु की सहायक नदी आधुनिक शेवक नदी बताया गया है जो काश्मीर प्रान्त की नदी है।

श्वेती (श्वेतया)—सिन्धु की शाखा नदी है जिसका उल्लेख नदीस्तुति में हुआ है। आजकल इसे काश्मीर में गिलगित नदी कहते हैं (वेद धरातल, पृ० ६७८)। नन्दलाल डे इसे स्वात का नाम बताते हैं।

सुसर्तु—यह सिन्धु की सहायक नदी है जिसका उल्लेख नदी स्तुति में हुआ है। पं०जी०सी० अवस्थी ने इसकी पहचान काश्मीर की नदी 'सुरु' से की है जो दक्षिण से उत्तर बहती हुई सिन्धु में मिलती है।

तृष्टामा—यह सिन्धु की सहायक नदी है जिसे आजकल जासकर नाम से पुकारते हैं। यह काश्मीर के लद्दाख प्रान्त में बहती है।

गंगा, यमुना और सरयू का भी उल्लेख प्राप्त होता है।

गंगा का उल्लेख नदी स्तुति में हुआ है। यह आज भी पवित्र नदी है। ऋग्वेद में इसका उल्लेख कम ही हुआ है।

यमुना का उल्लेख तीन बार हुआ है। यह इस युग के राजनैतिक जीवन में भी प्रसिद्ध हो चुकी थी। इसके ही तट पर सुदास को युद्ध करना पड़ा था।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सरयू का तादात्म्य आधुनिक अवध प्रान्त की सरजू से किया गया है। परन्तु यह अफगानिस्तान की नदी हरयू (आधुनिक हरिरुद) ही अधिक सयुक्तिक लगती है।

मरुद्वृधा—नदी स्तुति में उल्लिखित इस नदी को असिक्नी और वितस्ता नदियों की संयुक्त धारा माना गया है। डा० स्टाइन इसे काश्मीर की मरुबर्दवान मानते हैं। भण्डारकर स्मृति ग्रन्थ (१९१७, पृ० २३, २४) में भी यही स्वीकार किया गया है।

सुषोमा—नदी स्तुति में उल्लिखित इस नदी को सिन्धु का ही नाम माना गया है। डा० स्टाइन इसे काश्मीर की नदी सोहान मानते हैं।

इसी प्रकार डा० स्टाइन असिक्नी का तादात्म्य अन्स नामक काश्मीर की नदी से करते हैं।

आर्जीकीया—नदी यास्क के अनुसार व्यास का ही नामान्तर है।

इस प्रकार इन नदियों के वर्णन से हमें ऋग्वेदिक भारत की भौगोलिक सीमाओं का ज्ञान होता है। इन नदियों का अभिसिंचित प्रदेश आधुनिक अफ़गानिस्तान, पंजाब, सिन्ध और बलोचिस्तान ही था। इसे हम स्थूलरूप से सप्त सिन्धव देश के नाम से भी जानते हैं। इन नदियों की स्तुतियों से निस्सन्देह सिद्ध होता है कि ऋग्वेद के मंत्रों का उद्घोष तथा उद्भव इसी क्षेत्र में हुआ था। यदि आर्य बाहर से आये थे तो उन्होंने अपने उस मूल देश के प्रति कोई श्रद्धा-स्मृति से स्तुति क्यों नहीं की। अस्तु आर्य इसी पावन देश के सुसंस्कृत लोग थे।

ऋग्वेदिक जन

यह प्रदेश कई वैदिक जनों में बँटा हुआ था। इन जनों में परस्पर भौमिक विस्तार के लिए युद्ध भी हो रहे थे। दशराज युद्ध (दस राजाओं का युद्ध) ऋग्वेदकालीन भारत की प्रमुख घटना है। यह युद्ध भरत जन के राजा सुदास तथा अन्य दस जातियों में परुष्णी के तट पर हुआ। इन दस जातियों में पाँच तो प्रसिद्ध और मुख्य जन, अनु, द्रुह्यु, तुरवश, यदु और पूरु थे। पाँच जन सिन्धु नदी के पश्चिमी भाग से सम्बन्ध रखते थे। ये अलिन, पक्थ, भलान, शिव और विषाणिन थे। पहले विश्वामित्र सुदास के पुरोहित थे। परन्तु बाद में इन्हें हटाकर सुदास ने वशिष्ठ को पुरोहित बनाया। इसी कारण विश्वामित्र ने इन दस जातियों को सुदास के विरुद्ध युद्ध के लिए संघटित किया। इस युद्ध में सुदास विजयी हुए। अनु और द्रुह्यु राता तो परुष्णी में डूब कर मर गये। पूरु राजा पुरकुत्स भी मृत्यु को प्राप्त हुआ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इसके अतिरिक्त सुदास को यमुना-तटवासी तीन जनों—अज, शिग्रु और यक्षु—के नेता भेद के साथ भी युद्ध करना पड़ा। इसमें भी सुदास ही विजयी हुए।

इनके अतिरिक्त कुछ अन्य जनों का उल्लेख प्राप्त होता है :

भरत—ऋग्वैदिक युग में सरस्वती और यमुना नामक नदियों के बीच स्थित भूखण्ड में बसे हुए थे। सरस्वती, दृषद्वती और आपया नदियां उनकी यज्ञस्थली थीं।

तृत्सु—ये परुष्णी (रावी) के पूर्व बसेहुए थे। गेल्डनर के अनुसार ये भरतों के राजवंशीय लोग थे।

भरत और तृत्सुओं को परुष्णी और यमुना के तटों पर विभिन्न विरोधी जनों के साथ युद्ध करना पड़ा।

पूरु—सरस्वती के दोनों ओर बसे हुए थे। द्रुह्यु, तुर्वस और अनु लोग असिक्नी (चिनाब) और परुष्णी (रावी) के बीच रहते थे। अनु परुष्णी के किनारे बसे थे। यदु और तुर्वस लोगों का घनिष्ठ सम्बन्ध था। इन दोनों जनों की बस्तियाँ दक्षिणी पंजाब में थीं।

गान्धारी—सुदूर उत्तर-पश्चिम सीमान्त के जन थे जो काबुल नदी की घाटी में बसे हुए थे। ये अपने ऊनी माल के लिए प्रसिद्ध थे।

पक्थ—यह जन क्रुमु नदी के उद्गम स्थान पर पार्वत्य प्रदेश में बसा था। ज़िमर के अनुसार वे पूर्वी अफ़गानिस्तान में बसे हुए वर्तमान पख्तूनों के पूर्वज ही थे।

अलिन—वर्तमान काफ़िरिस्तान के निवासी थे। पक्थों के साथ इनका घनिष्ठ सम्बन्ध है।

भलान—ज़िमर के अनुसार, पक्थों के दक्षिण पूर्वी काबुलिस्तान में रहते थे। सम्भवतः ये बोलन के निवासी थे।

विषाणिन—ये भलानों के और नीचे क्रुमु और गोमती के मध्यान्तर क्षेत्र में बसे थे।

शिव—सिन्धु के पास ही, सिन्धु और वितस्ता के बीच भूखण्ड में रहते थे।

अज जन अथवा देश यमुना के तट पर बसा हुआ था। 'वेदधरातल' में इसका तादात्म्य आजकल के इटावा और जालौन जिलों से किया गया है।

शिग्रुओं का देश यमुना तट पर "इटावा से लेकर धौलपुर तक चला गया था। इसकी राजधानी भेदपुर मध्यभारत की ग्वालियर कमिश्नरी के

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भिण्ड जिले में भदावर के नाम से आज भी प्रसिद्ध है (वेद धरातल, पृ० ६४९-५०)" ।

यक्षु लोग भी समीप ही यमुना के तट पर बसे हुए थे ।

दानस्तुति में एक जाति के लिए चेदि का उल्लेख हुआ है । यह देश यमुना से नर्मदा तक फैला था । साधारणतया इसको आजकल का अधितस मानते हैं ।

मत्स्य आधुनिक अलवर-जैपुर-भरतखण्ड में बसे हुए थे ।

परिच्छेद २

उत्तर वैदिक कालीन भूगोल

'पृथिवी विश्वस्य धारिणी' (मुण्डक २-१-३)

ऋग्वैदिक युग के बाद जब हम उत्तर वैदिक युग में आते हैं, तो सामवेद यजुर्वेद, अथर्ववेद तथा ब्राह्मण ग्रन्थों (ऐतरेय ब्राह्मण, शतपथ ब्राह्मण आदि) से ऐसी सभ्यता का दर्शन होता है जिसमें ऋग्वेदकालीन जातियों के स्थान पर नये जनपदों का उल्लेख मिलता है । ऋग्वेद युग का भूगोल और राजनैतिक जीवन सप्तसैन्धव प्रदेश में केन्द्रीभूत था, जहाँ पंच जनों का प्रभुत्व था । इस युग में सभ्यता और जीवन का विकास पूर्व की ओर बढ़ता जाता था जिससे **कुरु देश** का महत्व स्थिर हुआ । परीक्षित और जनमेजय द्वारा सुशासित यह समृद्ध और सभ्य क्षेत्र था । इस क्षेत्र के दक्षिण में खाण्डव (वन) और उत्तर में तूर्घ्न (तैत्तिरीयारण्यक, ५-१७ के अनुसार यह कुरुक्षेत्र का उत्तरी भाग था । इसकी पहचान नहीं हो सकी है ।) तथा पश्चिम में परीणह से घिरा था । इसके निकट ही **पञ्चाल** जनपद भी इसी युग में प्रसिद्ध बन गया और इस प्रकार प्रसिद्ध मध्यदेश का अधिष्ठान यह कुरु-पाञ्चाल क्षेत्र ही था जो संस्कृति, धर्म और ब्रह्म-विद्या का प्रथित प्रतिष्ठान बन गया । इसके साथ ही साथ **कोसल** (अवध प्रान्त, उ० प्र०), **विदेह** (उत्तरी बिहार) और **अंग-मगध** (दक्षिण बिहार) भी प्रसिद्ध हो गये ।

दक्षिण की ओर आन्ध्र, पुलिन्द, शबर, नैषध और विदर्भ का भी उल्लेख मिलता है । इससे स्पष्ट है कि उत्तर वैदिक काल में भौमिक प्रसार पूर्व और दक्षिण की ओर हो रहा था । इस भौगोलिक प्रसार से ही पूर्व की ओर आर्य संस्कृति और वैदिक धर्म का भी प्रसार सिद्ध होता है । ऐतरेय ब्राह्मण में में विदेघ माधव की कथा मिलती है । इससे ज्ञात होता है कि विदेह के राजा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विदेय माधव अपने पुरोहित गोतम राहूगण के साथ सरस्वती के तट से कोसल होते हुए सदानीरा के उस पार यज्ञ की अग्नि ले गये थे। वहाँ उन्होंने जो बस्ती बनायी, कालांतर में उसे ही विदेह(तिरहुत) कहा गया। इससे सरस्वती के तट (ब्रह्मावर्त) से पूर्व की ओर ब्राह्मणधर्म (आर्य संस्कृति) का प्रसार भी सिद्ध होता है।

इस युग में समुद्र का उल्लेख सिद्ध करता है कि लोग समुद्र से परिचित थे। शतपथ ब्राह्मण (१-६-३-११) में पूर्व सागर और पश्चिम सागर के उल्लेख मिलते हैं। संभवतः पूर्व सागर, बंगाल की खाड़ी और पश्चिम सागर अरब सागर था।

देश-भाग

इस युग में प्रसिद्ध भूखडों–आर्यावर्त, ब्रह्मावर्त, मध्यदेश और दक्षिणापथ–का उल्लेख किया गया है। इनके अतिरिक्त ऐतरेय ब्राह्मण में पंच-स्थल-विभागों का भी उल्लेख मिलता है :—

१—ध्रुवा **मध्यमा** प्रतिष्ठा दिश अथवा **मध्यदेश**

२—**प्राची** दिश अथवा प्राच्य (पूर्वी देश)

३—**दक्षिण** दिश अथवा दक्षिण देश

४—**प्रतीची** दिश अथवा पश्चिम देश

५—**उदीची** दिश अथवा उदीच्य या उत्तरी देश

इन देश-विभागों की सीमाएँ नहीं निर्धारित की जा सकती हैं। प्रश्नोपनिषद (१-६) में 'प्राचीदिशं' और 'प्राच्यान्', दक्षिणां, प्रतीचीं और उदीचीं का उल्लेख मिलता है।

आर्यावर्त—इसका विस्तार पूर्व समुद्र से लेकर पश्चिम समुद्र तक और हिमालय से पारियात्र (विन्ध्य पर्वत का पश्चिमी भाग)तक था। इसका वर्णन सूत्र ग्रन्थों, स्मृतियों, पुराणों और अभिलेखों में भी मिलता है। यह अति पवित्र देश था।

आर्यावर्त ही आर्य राष्ट्र था। "आर्य राष्ट्र का आदर्श यजुर्वेद की इस प्रार्थना में ठीक-ठीक चित्रित हुआ है—हे ब्रह्मन्, इस राष्ट्र में ब्रह्मवर्चसी—विद्या के तेज से सम्पन्न ब्राह्मण पैदा हों, शूरवीर, बाण फेंकने में निपुण, निरोग महारथी राजन्य पैदा हों, दुधार गौवें, बोझा ढोने को समर्थ बैल, तेज घोड़े, रूपवती (कुलीन) युवतियाँ, विजयी रथी, सभाओं में जाने योग्य जवान तथा यजमानों के वीर (सन्तान) पैदा हों! जब हम कामना करें, पानी बरसे!

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हमारी औषधियाँ फलों से भरपूर हो पकें। हमारा योग (समृद्धि) और क्षेम (कुशल) सम्पन्न हो।" (भा०इ०रू०, जिल्द १, पृ० २५२-२५३)।

ब्रह्मावर्त—यह भूखंड सरस्वती और दृषद्वती नदी के मध्य में स्थित था।

मध्यदेश—मध्य देश का उल्लेख वैदिक ग्रन्थों में नहीं मिलता है। परन्तु ऐतरेय ब्राह्मण के 'मध्यमा प्रतिष्ठा दिश' को ही मध्य देश माना गया है। इसमें कुरु, पाञ्चाल, वश और उशीनर नामक जनपद सम्मिलित थे।

दक्षिणापथ—यह दक्षिणी भारत का दूसरा नाम है (वेदिक इण्डेक्स)। पं० गिरीशचन्द्र अवस्थी के अनुसार, "यह शब्द देशवाची है। विन्ध्य के दक्षिण भाग का नाम था (वेद धरातल, पृ० ३३८)"।

मुण्डक उपनिषद (२-१-९) में कहा गया है—

अतः समुद्रा गिरयश्च सर्वेऽस्मात्स्यन्दन्ते सिन्धवः सर्वरूपाः।

पर्वत

अर्थात् परमेश्वर से सभी समुद्र और पर्वत उत्पन्न हुए हैं जिनसे अनेक नदियाँ निकली हैं।

क्रौञ्च—यह पर्वत मानसरोवर के दक्षिण में है। हरद्वार से मानसरोवर जाने के लिए हंस-क्रौंचरन्ध्र को पार करके जाते हैं। यह हिमालय का एक शिखर है जो कैलास के दक्षिण में है (वे० ध०, पृ० २५१)।

त्रैकाकुद (या त्रिककुद)—त्रिककुद हिमालय में एक पहाड़ है जिसे इस समय त्रिकोत कहते हैं (वे० इ०)। यह तीन चोटी वाला हिमालय का एक शिखर है (पाणिनि अष्टाध्यायी, ५-४-१४७ का सूत्र है 'त्रिककुत्पर्वते')। यह अंजन (त्रैकाकुद) के लिए प्रसिद्ध था।

पारिपात्र (पारियात्र)—बौधायन इसका उल्लेख मध्यदेश की दक्षिणी सीमा के रूप में करते हैं। यह मालवा में विन्ध्य-श्रेणी का पश्चिमी भाग है।

महामेरु—तैत्तिरीय आरण्यक में यह एक बड़े पर्वत के रूप में उल्लिखित है। यह सुमेरु ही है।

मैनाक--हिमालय का एक पर्वत है।

हिमवान्—यह हिमालय का नाम है। केनोपनिषद (३-१२) में उमा को हैमवती (हिमवान् की पुत्री) कहा गया है।

नदियां

गंगा—इसका उल्लेख शतपथ ब्राह्मण में मिलता है। भरत दौःषन्ति ने गंगा और यमुना पर विजयें प्राप्त की थीं। तैत्तिरीय आरण्यक में गंगा और

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

यमुना के बीच बसने वालों के प्रति विशेष सम्मान दिया गया है। अपनी पृथिवी-विजय के बाद भरत ने गंगा-तट पर ५५ अश्वमेध यज्ञ किये थे। यह गंगा ही है।

यमुना—ऐतरेय ब्राह्मण में इसका उल्लेख भरत की विजयों के सम्बन्ध में हुआ है। इसके किनारे शाल्व लोग रहते थे। यह वर्तमान यमुना ही है।

रेवा—यह नर्मदा का एक नाम है। रेवोत्तर का उल्लेख शतपथ ब्राह्मण में मिलता है।

वरणावती—इसका उल्लेख अथर्व वेद में मिलता है। यह स्वात प्रान्त की कोई नदी थी (वे० ध०, पृ० ५९१)।

सदानीरा—शतपथ ब्राह्मण में इसे कोशल और विदेह के बीच सीमा बनाते हुए कहा गया है। यह वर्तमान गण्डक नदी है।

सरयू—उत्तर वैदिक साहित्य में उल्लिखित सरयू नदी अवध की सरयू ही है।

जनपद और जातियाँ

प्रश्नोपनिषद (४-५) में देशदिगन्तरों का उल्लेख 'नाना देश और दिशाओं' को सूचित करता है। ऋग्वैदिक युग की जातियों के जीवन में उत्तर वैदिक युग में महत्वपूर्ण सुधार हुए। हम देख चुके हैं कि ऋग्वैदिक युग के दशराज्ञ युद्ध में जातीय-संघ बने थे जिससे सिद्ध होता है कि उस युग में संघ-वृत्ति (गणाः संघातवृत्तयः) मौजूद थी। ऋग्वेद के पंच-जनों, जो पंजाब में बसी हुई थीं, का महत्व कम हो गया। पुरु और भरत जातियाँ कुरु के साथ मिल गयीं और भरत जाति का महत्व समाप्त हो गया यद्यपि भरत का नाम साहित्य और संस्कृति में प्रसिद्ध बन गया। भरत दौःषन्ति प्रसिद्ध सम्राट था जिसने गंगा और यमुना के तटों पर अश्वमेध यज्ञों को किया। कुरु-पाञ्चाल के समान ही इस युग में कोसल, काशी और विदेह राज्यों में घनिष्ठता थी। इन तीनों राज्यों का एक ही पुरोहित था। काशी का राजा अजातशत्रु (अजातशत्रुं काश्यं, बृ० उ०) और विदेह के जनक दार्शनिक सम्राट थे।

मध्य देश—इस क्षेत्र में कुरु, पाञ्चाल, वश और उशीनर सम्मिलित थे।

कुरु—इस युग में कुरु-पाञ्चाल क्षेत्र अधिकाधिक प्रसिद्ध था। यहाँ की भाषा, व्यवहार, आचार और दर्शन ही इस क्षेत्र की प्रसिद्धि का मूल कारण था। ऐतरेय ब्राह्मण में कुरु-पाञ्चाल के देश को मध्य देश के नाम से उल्लिखित किया गया है (ऐतरेय ३८-३, 'मध्यमायां दिशि कुरुपञ्चालानां राजानः)।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अथर्ववेद में वर्णन है कि राजा परीक्षित के समय यह देश सम्पन्न राष्ट्र था। परीक्षित के पुत्र जनमेजय ने आसन्दीवत में अश्वमेध किया था। आसन्दीवत एक नगर था जिसे अहिस्थल भी कहा गया है (वे० ध०, पृ० ५७)। संभवतः इसे ही हस्तिनापुर कहा गया।

कुरु देश वर्तमान उत्तर प्रदेश में उत्तरी दोआब गंगा-यमुना के बीच क्षेत्र में मेरठ, दिल्ली और थानेसर (कर्नाल, हरियाना) में बसा था। इसके पूर्व में उत्तर पाञ्चाल, उत्तर में हिमालय की तलहटी, पश्चिम में यमुना और दक्षिण-पश्चिम में सरस्वती सीमाएँ थीं। इसकी राजधानी हस्तिनापुर (वर्तमान मेरठ प्रान्त का एक स्थान) थी।

पञ्चाल—वेदिक इण्डेक्स के अनुसार ऋग्वेदकालीन क्रिवि जाति को ही शतपथ ब्राह्मण में पंचाल कहा गया है। शतपथ ब्राह्मण में क्रैव्य-पञ्चाल राजा का उल्लेख है जिससे क्रिवि को पञ्चाल का पुराना नाम माना गया है। परन्तु पं० गिरीशचन्द्र अवस्थी ऐसा नहीं मानते है। उनका कहना है कि क्रिवि किसी जाति का नाम नहीं है। वेबर और गेल्डनर का विचार है कि ऋग्वेद की पांच जातियों का ही यह देश था। परन्तु वेदिक इण्डेक्सकार ऐसा नहीं मानते हैं।

पञ्चाल देश में उत्तर प्रदेश के बरेली, बदायूँ, फ़र्रुख़ाबाद और पड़ोस के भाग सम्मिलित थे। इस युग को इसके दो भागों का पता न था।

इसकी राजधानी अहिच्छत्र थी जहां इस समय उ० प्र० के बरेली प्रान्त में आंवला के निकट रामनगर स्थित है। परिचक्रा (शतपथ ब्राह्मण में उल्लिखित) भी इस देश का एक नगर था।

बृहदारण्यक उपनिषद से ज्ञात होता है कि वैदेह जनक की दार्शनिक सभा में कुरु-पाञ्चाल के ब्राह्मण सम्मिलित हुए थे। इससे इस क्षेत्र की विशिष्टता का ज्ञान होता है। यहां की भाषा भी श्रेष्ठ मानी जाती थी।

केशिन्—शतपथ ब्राह्मण में उल्लिखित इस जाति को पाञ्चालों की एक शाखा बताया गया है (वे० ध० पृ० २५९)।

शृंजय—ऋग्वैदिक युग में शृंजयों का तृत्सुओं के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध था। शतपथ ब्राह्मण में भी इनका उल्लेख मिलता है।

वश—ऐतरेय ब्राह्मण में इनका उल्लेख है। यह कुरु, पांचाल और उशीनर के साथ मध्य देश में रहते थे। यही देश आगे चल कर वत्स देश कहलाया जिसकी राजधानी कौशाम्बी थी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उशीनर—पं गिरीशचन्द्र अवस्थी के अनुसार यह देश सतलज से पश्चिम और सतलज से पूर्व यमुना तक विस्तृत था। इसका कुछ भाग वाहीक में था और कुछ इसके बाहर था (वे० ध०, पृ० ६८-६९)।

मत्स्य—ऋग्वेद के अतिरिक्त इसका उल्लेख शतपथ, गोपथ और ऐतरेय ब्राह्मण में मिलता है। शतपथ ब्राह्मण में मत्स्य देश के राजा का उल्लेख अश्वमेध करने वालों की सूची में मिलता है। यह अलवर-भरतपुर-जयपुर क्षेत्र का प्राचीन नाम था। यह भी मध्यदेश में स्थित था और ब्रह्मर्षि देश (मनु के अनुसार ब्रह्मर्षि देश में कुरु, मत्स्य, पंचाल, और शूरसेनों का देश सम्मिलित था) का एक भाग था।

शाल्व—शतपथ ब्राह्मण में इनका उल्लेख है। मन्त्र पाठ के अनुसार यह देश यमुना के निकट था। इसकी पहचान अलवर से की गयी है।

काशी—इसका उल्लेख कोशल और विदेह के साथ हुआ है। यद्यपि यह मध्य देश का एक देश था परन्तु फिर भी इसका अधिकांशतः लगाव प्राच्य के साथ था। यहां का राजा अजातशत्रु (काश्य अजातशत्रु) एक दार्शनिक सम्राट था। काशी ही इसकी राजधानी थी।

प्राच्य

कोशल—बाद के ग्रन्थों, महाभारत और पुराणों तथा काव्यमीमांसा, में कोशल को पूर्व देश से सम्बद्ध किया गया है (प्रा० भा० भौ० स्व०, पृ० ३५-३६)। यह अवध का ही क्षेत्र था। यहां ही सरयू नदी बहती थी। अयोध्या (अथर्ववेद, १०-३-३१) यहां का नगर था।

विदेह—यह उत्तरी बिहार में एक प्रसिद्ध राज्य था जिसे अब तिरहुत या मिथिला कहते हैं। इसके पश्चिम में सदानीरा नदी कोशल से इसे अलग करती थी। इसके पूर्व में कौशिकी (कोसी) नदी, उत्तर में हिमालय (नेपाल) और दक्षिण में गंगा नदी बहती थी। संभवतः इसकी राजधानी जनकपुर (मिथिला) थी।

मगध—यह दक्षिण बिहार का एक देश था। ऋग्वेद में उल्लिखित कीकट प्रदेश मगध में सम्मिलित था। वैदिक साहित्य में इसे व्रात्यों से सम्बन्धित कर इसकी निन्दा की गयी है। यह अंग देश का पड़ोसी देश था। इसमें पटना, गया और शाहाबाद के प्रान्त सम्मिलित थे।

अंग—यह देश सोन और गंगा के तट पर बसा था। इसमें मुंगेर-भागलपुर प्रान्त सम्मिलित थे। इसकी राजधानी चम्पा (चम्पापुर, भागलपुर प्रान्त) थी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वंग—ऐतरेय ब्राह्मण में इनका उल्लेख मिलता है। यह नाम बौधायन धर्म सूत्र में भी है। इसकी पहचान पूर्वी बंगाल से की गयी है।

दक्षिणापथ

दक्षिण दिशा से सम्बन्धित सत्वन्त, विदर्भ विषय और कुन्ति देश हैं।

सत्वन्त—दक्षिण दिशा में स्थित यह राज्य भोज राजाओं के अधीन था। पुराणों और हरिवंश के अनुसार सत्वन्त और भोज यदु वंश की शाखाएँ थीं।

विदर्भ—यह आधुनिक बरार है। इसकी राजधानी कुण्डिनपुर थी जिसकी पहचान अमरावती (मध्य प्रदेश) प्रान्त में वार्धा नदी के तट पर स्थित कोण्डिन्य से की गयी है।

निषध—शतपथ ब्राह्मण (३-३-२-१-२) में दक्षिण के एक राजा को नैषध कहा गया है। इससे निषध देश का ज्ञान होता है। निषध देश विदर्भ के ही निकट बसा था। लासन के अनुसार यह बरार के उत्तर-पश्चिम सतपुड़ा पहाड़ के किनारे नल का राज्य था। पुराणों में इसे विन्ध्य पर्वत पर स्थित बताया गया है।

प्रतीच्य (पश्चिमी देश)

प्रतीची दिशा में नीच्य और अपाच्य को स्थित बताया गया है (वे० इ०)। इनकी पहचान नहीं हो सकती है।

नीच्य को पंजाब तथा सिन्ध नदी के किनारे स्थित बताया गया है (वे० इ०)। पं० गिरीशचन्द्र अवस्थी के अनुसार ये मध्य देश के पश्चिम स्थित थे (वे० ध०, पृ० ३९०)। **बाह्लीक देश** को महाभारत के अनुसार सिन्धु और सतलज के बीच का क्षेत्र कहा गया है।

अम्बष्ठ्य—ऐतरेय ब्राह्मण में इनका उल्लेख है जिसकी पहचान यूनानी इतिहासकारों के अबेस्टन्वाय से की गयी है। यह जाति सिकन्दर के आक्रमण के समय निचली चिनाब (एकीसाइन्स=असिक्नी) के तट पर बसी थी (वे० ए०, पृ० २५८)।

उदीच्य

उदीच्य शब्द के दो अर्थ हैं—

(१) उत्तरी

(२) पश्चिमोत्तर

उदीच्य के अन्तर्गत उत्तर कुरु, उत्तर मद्र, मूजवन्त, महावृष, गान्धारी, बाह्लीक, केशिन, केकय और कम्बोज देश स्थित थे। मद्र देश को भी इसी भूखंड में रखा जा सकता है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उत्तर कुर—यह देश हिमालय के उत्तर स्थित था (उत्तरस्यां दिशि परेण हिमवन्तं जनपदाः उत्तर कुरवः, ऐतरेय ब्रा०, ३८-३, ८-१४)। इसकी ठीक-ठीक पहचान नहीं हो सकी है।

उत्तर मद्र—वहीं ऐतरेय ब्रा० में यह देश भी हिमालय के उस पार स्थित बताया गया है। इसकी भी पहचान ठीक-ठीक नहीं हो सकी है।

मद्र—इसका उल्लेख बृहदारण्यक उपनिषद में (३-३-१; ३-७-१) आता है। यह पंजाब में रावी और चिनाब नदियों के बीच स्थित देश था जिसकी राजधानी साकल या स्यालकोट थी।

केकय—शतपथ ब्राह्मण और छान्दोग्य उपनिषद में केकय के राजा अश्वपति का उल्लेख है। यह देश उत्तर पश्चिम में सिन्धु और वितस्ता (झेलम) के बीच स्थित था।

काम्बोज—यह उत्तर-पश्चिम का प्रसिद्ध देश था जिसकी पहचान पं० जयचन्द्र विद्यालंकार (भारत भूमि), डा० मोतीचन्द्र (उपायनपर्व) और डा० वासुदेव शरण अग्रवाल (पाणिनिकालीन भारतवर्ष, पुराणम्) पामीर-बदख्शां क्षेत्र से करते हैं। परन्तु डा० रायचौधरी (पोलिटिकल हिस्ट्री ऑफ़ ऐन्शेन्ट इण्डिया) ने इसकी पहचान काश्मीर के दक्षिण स्थित छिभाल प्रदेश से की हैं जिसकी राजधानी राजपुर (रजौरी) थी।

गन्धार (गान्धारी)—ऋग्वेद में उल्लिखित गान्धारी जाति का ही यह देश था जो सिन्धु नदी के दोनों ओर बसा हुआ था। रावलपिंडी और पेशावर के प्रान्त इसमें सम्मिलित थे।

इस क्षेत्र की अन्य जातियों और देशों के विषय में ज्ञान नहीं है।

उपर्युक्त देशों के अतिरिक्त अन्ध्र, पुण्ड्र, शबर, पुलिन्द और मूतिबों का उल्लेख मिलता है जिन्हें दस्यु कहा गया है (ऐ० ए०, पृ० २६०)।

अन्ध्र, शबर और पुलिन्द दक्षिण भारत की जातियाँ थीं।

अन्ध्र—कृष्णा और गोदावरी नदियों के बीच बसी हुई थीं।

शबर—यह एक आटविक जाति थी। वायु पुराण (१-४५-१२६) के अनुसार पुलिन्द्र और शबर, विन्ध्य पर्वत पर स्थित बताये गये हैं। ये गोदावरी नदी की सहायक नदी सबरी की घाटी में बसे हुए थे (अली, ज्या० पु०, पृ० १५६)।

पुलिन्द—प्रो० अली के अनुसार गोदावरी की दो सहायक नदियों, प्रानहिता और बन्दिआ के बीच भूखंड में पुलिन्द जनपद बसा था (ज्या० पु०, पृ० १५६)।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पुण्ड्र—यह जाति पूर्वी देश में उस क्षेत्र में बसी थी जिसे पौण्ड्र या पुण्ड्र-वर्धन (उत्तरी बंगाल) कहा जाने लगा।

मूतिबों के विषय में निश्चित ज्ञान नहीं है।

निषाद—यह एक वन्य जाति थी जो विन्ध्य पर्वत पर रहती थी।

स्पष्ट है कि इस युग में ऋग्वेद की जातियों के स्थान पर नये देशों का परिचय बढ़ा। इसी युग में सरस्वती के भी लुप्त होने की घटना घटी। विचारों के क्षेत्र में भी मरणशील मनुष्य अमृतत्व की खोज में ऊँची उड़ानें लेने लगा।

——

पाठ्य ग्रन्थ

पं० गिरीश चन्द्र अवस्थी·········वेद धरातल।

डा० मजूमदार एवं पुसलकर·········'वेदिक एज' (भारतीय विद्या भवन बम्बई)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अध्याय ३

बुद्धकालीन भूगोल

पाली बौद्ध साहित्य के अन्तर्गत, अधिकांशतः धार्मिक साहित्य ही है। विशेषतः इसमें भूगोल सम्बन्धी ग्रन्थों का अभाव है, फिर भी उनमें बिखरी हुई भौगोलिक सामग्री है। त्रिपिटक-विनयपिटक, सुत्तपिटक और अभिधम्म पिटक—तथा नवांगो, सुत्त, गेय्य, वैय्याकरण, गाथा, उदान, इतिवुत्तक, जातक, अब्भुतधम्म और वेदल्ल—का भी उल्लेख प्राप्त होता है। इस साहित्य में 'बुद्धवचनम' का ही संग्रह है। बौद्ध त्रिपिटक पांच निकायों में बंटे हुए थे।

भगवान बुद्ध और उनके शिष्य एक स्थान से दूसरे स्थान को धर्म का प्रचार करते हुए घूमते थे। उनमें विभिन्न व्यक्तियों, राजादिकों का कथा रूप में उल्लेख हुआ है। इस प्रकार इन धार्मिक उपदेश-कथाओं और जातकों में अत्यधिक भौगोलिक सामग्री प्राप्त होती है। इस सामग्री पर ब्राह्मण और जैन साहित्य से भी प्रकाश पड़ता है। पाली अंगुत्तर निकाय से हमें **षोडशं महाजनपदों** की सूची प्राप्त होती है।

ऐसी ही एक सूची हमें जैन भगवती सूत्र से भी प्राप्त होती है। बुद्धघोष रचित भाष्यों और सैंहलक पाली ग्रन्थ-महावंस और दीपवंस-से भी भौगोलिक ज्ञान प्राप्त होता है। विनयपिटक में ही मध्य देश की भौगोलिक सीमाओं का उल्लेख होता है। दीघ, मज्झिम और अंगुत्तर निकायों से भी मध्य देश सम्बन्धी भौगोलिक ज्ञान प्राप्त होता है। मिलिन्दपञ्हों नामक पाली ग्रन्थ से भी भूगोल विषयक सामग्री प्रात होती है।

पाली बौद्ध साहित्य में अधिकांशतः मध्यदेश (मज्झिम देश) के नगरों, राज्यों, नदियों, वनों तथा पर्वतादिकों का उल्लेख प्राप्त होता है। यह सामग्री हमें विनयपिटक और सुत्तपिटक के दीघ, मज्झिम तथा अंगुत्तर निकायों से प्राप्त होती है। इस प्रारम्भिक बौद्ध साहित्य से मध्य देश का ही महत्व प्राधान्य मालुम होता है। मध्य देश के पूर्वी अंचल में ही बुद्ध ने बोधि प्राप्त कर आजीवन उसका प्रचार करते हुए इसी क्षेत्र में अपनी जीवन-लीला समाप्त की। उनके शिष्यों ने भी इसी भूखण्ड में उनके सिद्धान्तों का प्रचार करते हुए भ्रमण किया। मध्यदेश के बाहर अथवा उसके पड़ोस में बसे हुए जनपदों

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

का भी उन्हें ज्ञान था। अतएव काम्बोज-गान्धार उत्तरी पश्चिमी सीमान्त में तथा दक्षिण में अस्सक, माहिस्सती (अवन्ति दक्षिणापथ) और विदर्भ तथा पूर्वी समुद्रतट पर बसे हुए कलिंग, वंग और पुण्ड्र जनपदों का भी उल्लेख प्राप्त होता है। बौद्धधर्म के प्रचार के साथ ही साथ भौगोलिक सीमाओं का भी विस्तार होता रहा।

बौद्ध साहित्य के अनुसार हमारे देश को जम्बूद्वीप अथवा भारतवर्ष की संज्ञा दी गई थी। चाइल्डर्स साहब (पाली कोश, पृ० १६५) के अनुसार जम्बूद्वीप भारतवर्ष ही का पर्याय था। अशोकीय लेखों से भी (लघुशिला लेख १) ज्ञात होता है कि जम्बूद्वीप उसका कार्यक्षेत्र था। बौद्ध अनुश्रुति भी अशोक को जम्बूद्वीप का सम्राट कहती है।

बुद्ध घोष के अनुसार सम्पूर्ण जम्बूद्वीप का क्षेत्रफल १०,००० योजन था। "इसमें ४००० योजन तक समुद्र था और ३००० योजन तक हिमवन्त के जंगल फैले थे, शेष ३००० योजन में मनुष्य रहते थे।" गंगा, यमुना, अचिरावती, शरभू और मही नामक पाँच बड़ी-बड़ी नदियाँ इस क्षेत्र को सींचती हुई समुद्र में गिरती हैं (स्पेन्स हार्डी-मैनुअल बुद्धिज्म ज्यॉगफी ऑफ़ अर्ली बुद्धिज्म-ला, पृ० १७)। जम्बूद्वीप में ५०० द्वीप हैं। प्राचीनकाल में जम्बूद्वीप में १,९९,००० राज्य थे, मध्य काल में कभी इसमें ८४,००० और कालान्तर में ६३,००० राज्य तथा हाल में १०० राज्य के आसपास थे। गौतमबुद्ध के समय इस महाद्वीप में ९६,००,००० नगर और ९९,००,००० बन्दरगाह तथा ५६ समृद्ध नगर थे। दीघनिकाय में चक्कवत्तीसाह नाद सुत्तन्त के प्रसंग में बुद्ध ने कहा था कि जम्बू द्वीप सशक्त और समृद्ध देश होगा जिसमें नगर, गाँव, पुर और पत्तन अधिक निकटस्थ बसेंगे।...यह जम्बूद्वीप घास-फूस के जंगलों के समान ही जनसंख्या में घना बसेगा। इस भारतवर्ष देश के ८४,००० नगरों में केतुमती (बनारस) अति प्रसिद्धि होगा। अंगुत्तर निकाय से ज्ञात होता है कि जम्बूद्वीप में वनोद्यानों और आगमों, नदियों-तडागों का बाहुल्य था। पाञ्चसूदनी से ज्ञात होता है कि जम्बूद्वीप में स्वर्ण समृद्धि थी" (ज्यॉग्रफी ऑफ अर्ली बुद्धिज्म, पृ० १७)।

इस प्रकार पालीबौद्ध साहित्य से भी जम्बूद्वीप की महनीयता और समृद्धि का ही ज्ञान होता है।

बौद्ध साहित्य के अनुसार जम्बूद्वीप पृथ्वी का एक द्वीप ही है। यहाँ सात द्वीपों के स्थान पर आठ द्वीपों की परिकल्पना की गयी है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भारतीय स्वरूप के विषय में महागोविन्द में इसे उत्तर में चौड़ा और दक्षिण में 'संकटमुखम्' कहा गया है। इससे यह बैलगाड़ी के मुखस्वरूप (सामने के स्वरूप) की भाँति लगता है जिसमें पीछे की ओर अर्थात् उत्तर में अधिक चौड़ा तथा आगे की ओर दक्षिण में संकरा है।

बुद्धकाल में भारतवर्ष तीन मण्डलों-महामण्डल और अन्तर्मण्डल तथा पाँच प्रदेशों—मध्य देश, उत्तरापथ, अपरान्तक, दक्षिणापथ और प्राच्य में बंटा था।

मज्झिम देश (मध्य देश)

बुद्ध-पद-चारिका—मध्य देश ही भगवान बुद्ध का कार्यक्षेत्र था। उन्होंने इसी भूखण्ड में घर-घर, नगरों, गाँवों और जनपदों में अपने धर्म का उपदेश दिया था। तथागत घूमते हुए पश्चिम में मथुरा और कुरु जनपद के थुल्लकेट्ठित नगर से आगे नहीं गये थे। पूरब में कजंगला नगर के मुखेलुवन और पूर्व दक्षिण की सललवती नदी तक तथा दक्षिण में सुँसुमारगिरि के पास तक ही गये थे। उत्तर में उसीरध्वज पर्वत (हरिद्वार के आसपास कनखल की पहाड़ियाँ) तथा कोलिय राज्य में स्थित सापुग निगम तक पहुँचे थे।

सीमायें—मध्य देश की सीमाओं में विभिन्न युगों में परिवर्तन होता रहा। बौधायन-धर्म सूत्र (१-१-२-९) में आर्यावर्त विनशन (सरस्वती नदी के अदृश्य होने का स्थान-पटियाला) के पूर्व और बिहार प्रदेश के कालकवन के पश्चिम तथा हिमालय के दक्षिण और पारिपात्र पर्वत (विन्ध्याचल का पश्चिमी भाग-मालवा-पर्वत-माला) के उत्तर स्थित बताया गया है। यह आर्यावर्त और मध्यदेश एक ही हैं। वशिष्ठ सूत्रों में हिमालय और विंध्याचल एवं पूर्वी पश्चिमी समुद्रों के बीच का भूखण्ड ही आर्यावर्त था। मनु ने आर्यावर्त और मध्यदेश को एक ही बताया है। उनके अनुसार इस देश की स्थिति हिमालय और विन्ध्य के मध्यस्थ पश्चिम में विनशन से प्रयाग तक विस्तृत क्षेत्र है) हिमवत-विन्ध्ययोर्मध्यम् यत् प्राक विनशनादपि प्रत्यगेव प्रयागाश्च मध्यदेशः·······)। राजशेखर ने काव्यमीमांसा (अध्याय १७) में आर्यावर्त-मध्यदेश को अन्तर्वेदी कहा है—विनशन-प्रयागयोः गंगायमुनयोश्च अन्तरम् अन्तर्वेदी। विनय पिटक में मध्यदेश की सीमाएँ—पूर्व में कजंगला निगम, पूर्व दक्षिण में सललवती नदी (हजारीबाग और वीरभूमि में आधुनिक सिलई नदी), दक्षिण में सेतकण्णिक निगम और पश्चिम में थूण नामक ब्राह्मणों का ग्राम (आधुनिक थानेश्वर) तथा उत्तर में उसीरध्वज पर्वत—बतायी गई हैं। महावग्ग के अनुसार भी मज्झिम देश की यही सीमायें हैं। परन्तु दिव्यावदान इसकी सीमा पूर्व में पुण्ड्रवर्धन तक बताता है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इस प्रकार बौद्ध अनुश्रुति में मज्झिम देश का विस्तार इतना बताया गया है कि बुद्धकालीन सोलह महाजनपदों में से चौदह तो मध्य देश के ही अन्तर्गत स्थित बताये गए हैं। केवल गान्धार और काम्बोज ही उत्तरापथ में सम्मिलित थे। परन्तु अस्सक और अवन्ति भी मज्झिम देश के बाहर ही दक्षिणापथ में बसे थे।

सोलह महा जनपद

अङ्ग—अंग जनपद वर्तमान भागलपुर और मुंगेर जिलों में उत्तर में कोसी नदी तक फैला हुआ था। इसकी राजधानी चम्पा–राजा चम्प द्वारा बसायी जाने के कारण—गंगा और चम्पा नदी के संगम पर बसी थी। आजकल भागलपुर के निकट चम्पा नगर और चम्पापुर ही प्राचीन राजनगर चम्पा के आधुनिक रूप हैं। महापरिनिर्वाण सूत्र के अनुसार चम्पा बुद्ध युग में भारत के छः बड़े नगरों में से थी। महाभारत और हरिवंश में इसे मालिनी कहा गया है। चम्पा से व्यापारी नदी और समुद्रमार्ग से सुवर्णभूमि (लोअर बर्मा) को जाते थे।

बुद्ध के समय अंग राज्य अपने स्वांतन्त्र्य से हाथ धो बैठा था। अब वह मगध के अधीनस्थ राज्य था।

अंग राज्य में ८०,००० गांव थे। आपण-अंग का एक प्रसिद्ध व्यापारिक केन्द्र था। महागोविन्द सुत्त से ज्ञात होता है कि अंग भारत के सात बड़े राजनीतिक भागों में से एक था। चम्पा की गग्गरा रानी ने गग्गरा-पुष्क-रिणी खुदवाई थी। अंग जनपद का एक अन्य नगर अश्वपुर था।

मगध—दक्षिण बिहार प्रदेश के पटना, गया और शहाबाद प्रान्तों के अन्तर्गत फैला हुआ था। इसकी राजधानी गिरिव्रज (प्राचीन राजगृह) थी। यह पहाड़ियों से घिरी होने के कारण ही गिरिव्रज कहलाती थी। विमानवत्थु में इन पर्वतश्रेणियों को इसिगिलि (ऋषिगिरि) वेपुल्ल, वेभार, पाण्डव और गृद्धकूट बताया गया है। महाभारत के अनुसार ये पहाड़ियाँ वराह, वृषभ, ऋषिगिरि, चैत्यक और विपुल नाम की थी। बौद्ध लेखक इसे बिम्बिसार पुरी के नाम से भी पुकारते हैं। युअनच्वांग के अनुसार इसका नाम कुशाग्रपुर था। इस नगर से होकर तपोदा नदी बहती थी।

मगध राज्य के अन्तर्गत ८०,००० गांव थे। सेनानी निगम मगध का एक रमणीय वन प्रदेश था। एकनाला, नालक ग्राम, खारमुमत और अन्धक विन्द इस जनपद के प्रसिद्ध नगर थे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वज्जि और मगध जनपदों के बीच सीमा पर गंगा नदी बहती थी। उस पर दोनों राज्यों का समान अधिकार था। अजातशत्रु ने इसे जीत कर मगध में मिला लिया था। अजातशत्रु ने ही कोशल को युद्ध में हरा कर काशी का राज्य प्राप्त किया था। अंग को बिम्बिसार ने ही जीता था। इस प्रकार बुद्ध के समय में मगध एक सशक्त राष्ट्र बन गया था।

मगध बुद्ध का विशेष-विहार क्षेत्र था। राजगृह में वेलुवन प्रसिद्ध बुद्ध विहार था। राजगृह में ही प्रथम बौद्ध संगीति हुई थी। राजगृह के पास ही नालन्दा का एक छोटा ग्राम था। मगध का राजवैद्य जीवक कौमारभृत्य, जो कि भारत प्रसिद्ध वैद्य तक्षशिला का स्नातक था, बुद्ध का परम-भक्त-सेवक था। बाद में मगध की राजधानी पाटलिपुत्र हो गई थी। अश्वघोष के अनुसार (बुद्ध चरित, २१-२, १०-२) राजगृह भी पाँच पर्वतों के बीच स्थित नगर था।

काशी—काशी का जनपद पूर्वी उत्तर प्रदेश के आधुनिक बनारस प्रान्त तथा मिर्जापुर और गाजीपुर, आजमगढ़ व बलिया के कुछ भागों में बसा हुआ था। बुद्ध पूर्व युग में यह एक सशक्त और समृद्ध राज्य था। बुद्ध काल में इसकी राजनैतिक शक्ति क्षीण हो गई थी। यह उस समय कोशल के अधीनस्थ था। आगे चलकर कोशल के भी अधिकार से निकल कर यह मगध के हाथों में चली गयी। मगध सम्राट अजातशत्रु ने इसे अपने अधीन कर लिया था।

काशी की राजधानी वाराणसी वरुणा और असी नाम की नदियों के संगम पर बसी थी। गंगा भी इसके पाद प्रक्षालन करती थी। इसका विस्तार १२ योजन कहा गया है। समय-समय पर सुरुन्धन, सुदर्शन, ब्रह्मवर्धन, पुष्पवती, मौलिनी, रम्यनगर अथवा केतुमती इसके नाम थे। वाराणसी विद्या-सदन, शिल्प और व्यवसाय का प्रसिद्ध केन्द्र था। इसका व्यापारिक सम्बन्ध श्रावस्ती, तक्षशिला राजगृह आदि नगरों से स्थापित था। काशी के चित्र वस्त्र अति प्रसिद्ध थे।

वाराणसी के समीप ही मृगदाय (सारनाथ) में भगवान बुद्ध ने धर्म चक्र प्रवर्तन किया था। अस्तु मृगदाय-सारनाथ बौद्ध धर्म का एक महातीर्थ है।

कोशल—आधुनिक अवध-प्रदेश में ही बसा हुआ था। श्रावस्ती और साकेत इसके प्रसिद्ध राजनगर थे। महाकाव्यों में इसकी राजधानी अयोध्या का उल्लेख मिलता है। अयोध्या सरयू के किनारे स्थित थी। बुद्ध-युग में इसकी प्रसिद्धि न थी। कहा जाता है कि श्रावस्ती नामक ऋषि के नाम पर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ही श्रावस्ती नगर का नाम पड़ा था, परन्तु पपञ्चसूदनी के अनुसार 'सब कुछ होने के कारण' (=सर्व+अस्ति) इसका नाम श्रावस्ती होना बताया गया है। इक्ष्वाकु राजा श्रावस्त से बसायी जाने के कारण ही इस नगर की श्रावस्ती संज्ञा प्रचलित हुई।

श्रावस्ती अति समृद्ध एवं सुन्दर नगर था जिसकी आबादी ७ करोड़ थी। भगवान बुद्ध की यह अतिप्रिय वासस्थली थी। अनाथपिण्डिक नामक श्रेष्ठी, जो कि बुद्ध भक्त था, का नाम जेतवन-दान से साहित्य और कला में अमर हो गया है।

श्रावस्ती के श्रेष्ठी अनाथपिण्डिक भगवान बुद्ध के निवास के लिए जेतवन लेना चाहता था। परन्तु राजकुमार जेत ने उस उद्यान को उतनी मुद्राओं पर भी जितनी कि फर्श पर बिछाई जा सकें, उद्यान को ने बेचने की बात कही। श्रेष्ठी ने उतनी ही मुद्राओं के बदले वन खरीद लिया। सुदत्त-अनाथपिण्डिक ने छकड़ों में कार्षापण भरवा कर उद्यान भूमि पर बिछा दिया। इस श्रद्धा भक्ति से प्रभावित होकर जेत ने स्वयं एक द्वार तोरण और भण्डार बनवाया। भरहूत स्तूप में इस दान दृश्य को सुन्दर-स्पष्ट ढंग से रूपांकित किया गया है। साथ ही उत्कीर्ण लेख :

"जेतवन अनथपेडिको देति कोटि संथतेन केता"

बौद्ध ग्रंथ में भी उल्लिखित है :

अनाथपिण्डिको गहपति सकटेहि हिरञ्ञं
निब्बाहापेतुं जेतवनं कोटिसंथारं संथरापेसि"

अर्थात् अनाथपिण्डिक ग्रहपति शकटों (बैलगाड़ियों) में हिरण्य (सुवर्ण मुद्रा) लदवाकर जेतवन में कोटिमुद्राओं की तरह बिछवा रहे हैं। शिल्पांकित दृश्य में बैलगाड़ी और उस पर से उतारे गए सिक्कों का फर्श पर बिछाया जाना स्पष्ट दिखलाई पड़ता है। नामपट्टिका देना भरहूत शिल्प की विशेषता है। बोध गया और सांची में भी इस दृश्य को अंकित पाते हैं। यहां गन्ध कुटी और कोशम्बकुटी अति प्रसिद्ध बुद्ध वासस्थल थे।

कोशल राज्य दो भागों, उत्तर कोशल और दक्षिण कोशल, में विभक्त था। दोनों भागों के मध्य सरयू नदी बहती थी। उत्तरी भाग को उत्तर कोशल और दक्षिणी भाग को दक्षिण कोशल कहते थे।

कोशल जनपद में अनेक प्रसिद्ध निगम और ग्राम थे। साकेत और श्रावस्ती के अतिरिक्त सेतव्य, उक्कट्ठा, दण्डकप्पन, नलकपान, पंकधा और तोरणवत्थु

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आदि इस जनपद के प्रसिद्ध नगर थे। यहां भगवान ने समय-समय पर उपदेश दिया था।

कोशल की उत्तरी सीमा पर स्थित शाक्यों का कपिलवस्तु राज्य भी इस समय कोशल के ही अधीनस्थ था।

वज्जि—वज्जि जनपद एक संघ राज्य था जहाँ गणतान्त्रिक शासन प्रचलित था। अट्ठ-कुल अथवा आठ जातियों का यह एक संघ था जिसमें वज्जी-लिच्छवि, विदेह प्रमुख थे। यह उत्तरी बिहार और नैपाल की तराई में स्थित था।

इसकी राजधानी वैशाली इस समय भी बिहार प्रदेश के मुजफ्फरपुर शहर से लगभग २२मील दूर स्थित वैशाली के ही नाम से प्रसिद्ध प्राचीन स्थान है। वैशाली समृद्ध नगर था जिससे राजगृह और कपिलवस्तु को मार्ग जाते थे। नगर के बीच में संथागार था। वैशाली के पास ही महावन में कूटागार शाला नामक विहार था। यहीं पर सर्वप्रथम महाप्रजावती गौतमी तथा अन्य महिलायें भिक्षुणी हुई थी। यहीं बौद्धों की दूसरी संगीति भी हुई थी।

बुद्ध के समय यहां अति सशक्त और संघटित राज्य था जिसमें मगध महामात्य वर्षकार ने फूट का बीजारोपण कर अजातशत्रु द्वारा इसकी विजय करवायी थी।

खुदाई से प्राप्त अभिलेखों से इसकी प्राचीनता सिद्ध हो चुकी है। पास ही कोल्हुआ में अशोक का सिंहस्तम्भ है। बनिआ गांव, प्राचीन बनिज गांव, व्यापारिक वस्ती का परिचायक है। चारों ओर से नदी की धारा के चिह्न अब भी विद्यमान हैं।

मल्ल—यह भी गणतन्त्र जनपद था और दो भागों में विभक्त था—

पावेय्यका मल्ल (पावा के मल्ल) और

कोसीनारका मल्ल (कुशीनारा के मल्ल)।

इनकी क्रम से राजधानियां पावा और कुशीनारा थीं। पावा का तादात्म्य देउरिया के पडरौना से किया गया है। कुछ लोग फ़ाज़िलनगर-सठियाँव भी मानते हैं। कुशीनारा देवरिया प्रान्त का आधुनिक कुशीनगर या कसिया ही है। यहीं भगवान बुद्ध ने अपना शरीर छोड़ा था। इसका प्राचीन नाम कुशावती भी था।

राजगृह से कुशीनगर तक आने के मार्ग की सूचना बुद्ध की अन्तिम यात्रा से प्राप्त होती है। बुद्ध के परिनिर्वाण के बाद यहां धातुस्तूप बने थे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चेदि—यह जनपद यमुना के पास कुरु राज्य के निकट स्थित था। इसे आधुनिक बुन्देलखण्ड ही बताते हैं। सोत्थिवती नगर इसकी राजधानी थी जो इसी नाम की नदी (शुक्तिमती=केन) के किनारे बसा था। सहजाति और त्रिपुरी इसके अन्य नगर थे। डा० मीराशी ने इसकी पहचान बघेलखंड से की है।

वत्स—सोलह महाजनपदों में और बुद्ध युग में यह एक प्रसिद्ध राष्ट्र था जिसकी राजधानी कौशाम्बी थी। कुशाम्ब से बसायी होने के कारण ही उसका यह प्रसिद्ध नाम था। इस समय उसका प्राचीन अवशिष्ट रूप इलाहाबाद से ३० मील दूर यमुना के किनारे स्थित कोसम नामक ग्राम में पाते हैं। कौशाम्बी बुद्धकालीन भारत की प्रसिद्ध नगरी थी। यहां घोषिताराम, कुक्कुटाराम और पावारिकाराम प्रसिद्ध तीन बौद्ध विहार थे। बुद्ध युग में यहां उदयन शासन कर रहे थे।

सुंसुमारगिरि के भग्गोंका राज्य भी वत्स जनपद के ही अधीनस्थ था।

कुरु—कुरु-शासित क्षेत्र ही कुरु राज्य कहा गया। उत्तर वैदिक युग में इसकी प्रतिष्ठा और प्रसिद्धि स्थापित हो चुकी थी। अन्तर्वेदी के उत्तरी भाग में वर्तमान कर्नाल, पानीपत, सोनपत आदि स्थान तथा मेरठ और अम्बाला प्रान्तों के कुछ भाग इसी में सम्मिलित थे। इसकी राजधानी इन्द्रप्रस्थ थी जो सात योजन में फैला हुआ था। कम्मासदम्म और थुल्ल कोट्ठित अन्य प्रसिद्ध नगर थे। सरस्वती और दृषद्वती इस राज्य की प्रसिद्ध पवित्र नदियाँ थीं।

कुरु, कुरुजाङ्गल और कुरुक्षेत्र इसके तीन भाग थे।

कुरुजाङ्गल का वन्य भाग सरस्वती के किनारे स्थित काम्यक वन से लेकर दक्षिण में यमुना तटीय खाण्डव वन तक फैला हुआ था। कुरु हस्तिनापुर के आसपास गंगा के किनारे स्थित था और कुरुक्षेत्र सरस्वती के दक्षिण तथा दृषद्वती के उत्तर स्थित प्रदेश था।

पंचाल—यह जनपद शूरसेन और कोसल जनपदों के बीच स्थित था। इसके पश्चिमोत्तर में कुरु राज्य और दक्षिण-पूर्व में वंस (वत्स) राज्य था। गंगा नदी इसको दो भागों में बांटती थी—एक भाग था उत्तर पंचाल और दूसरा भाग था दक्षिण पंचाल।

उत्तर पंचाल कुरु राज्य से सटा हुआ था। इसलिए दोनों राज्यों में कई बार युद्ध हो चुके थे। महाभारत के समय में भी द्रोण के कहने पर अर्जुन ने उत्तर पंचाल को जीता था, जब यहाँ द्रुपद राज्य करते थे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उत्तर पंचाल की राजधानी अहिच्छत्र (बरेली से लगभग २० मील दूर आंवला के पास रामनगर) और दक्षिण पंचाल की राजधानी काम्पिल्य (कम्पिल, फ़र्रुखाबाद प्रान्त, यू० पी०) थी। इस जनपद में आधुनिक एटा, मैनपुरी, फरुखाबाद, बदायूँ, उन्नाव, कानपुर, हरदोई, शाहजहांपुर और पीली-भीत तथा बरेली के भूभाग सम्मिलित थे।

संकिस्स या संकस्स (संकाश्य) भी इस जनपद का प्राचीन और प्रसिद्ध नगर था, जहां भगवान बुद्ध लोक में उतरे थे। संकस्स इस समय संकिसा है जो उत्तर प्रदेश में फर्रुखाबाद जिले में उत्तर रेलवे के मोटा स्टेशन से करीब ५ मील दूर स्थित है। यह काली नदी (इक्षु) के तट पर स्थित था। इस समय यह नदी रेलवे स्टेशन और गांव के बीच बहती हुई मिलती है। यहां पर अशोक स्तम्भ का गज-शीर्ष मिला है। यहां पर तीन मार्ग मिलते थे। पहला मार्ग प्रसिद्ध उत्तरापथ मार्ग था जिस पर ही सोरेय्य (सोरों, जिला एटा) और कण्णकुज्ज (कान्यकुब्ज=कनौज) स्थित थे। इन्हीं दोनों स्थानों के बीच संकस्स स्थित था। दूसरा मार्ग संकाश्य से साकेत होता हुआ श्रावस्ती तक जाता था। तीसरा मार्ग वह था जो सोरेय्य (सोरों) से चल कर संकाश्य, कण्णकुज्ज, उदुम्बरनगर और अग्गलपुर होता हुआ सहजाति (आधुनिक भीटा, इलाहाबाद से ८-९ मील दूर) तक जाता था।

कण्णकुज्ज (कान्यकुब्ज) और सोरेय्य (सोरों, एटा जिला में कासगंज से पहले यन० ई० आर० पर स्टेशन और पवित्र स्थान) भी पंचाल के प्रसिद्ध नगर थे।

मत्स्य (मच्छ)—यह जनपद कुरु राज्य के दक्षिण और शूरसेन के पश्चिम में स्थित था। इसके पूर्व में यमुना नदी थी जो उसे दक्षिण पंचाल से विभक्त करती थी। संभवतः चम्बल नदी उसकी दक्षिणी सीमा थी। इस जनपद में आधुनिक अलवर, भरतपुर, धौलपुर और करौली (जयपुर के निकट) सम्मि-लित थे। इसकी राजधानी विराट नगर (वैराट, जयपुर प्रान्त) थी।

शूरसेन—यह मच्छ जनपद के दक्षिण-पश्चिम और कुरु राज्य के दक्षिण में स्थित था। इसके पूर्व में पंचाल और दक्षिण में दशार्ण (दसण्ण=पूर्वी मालवा) था। इसकी राजधानी मथुरा थी। यह रमणीय और समृद्ध नगर था जो अपने व्यापार के लिए भी प्रसिद्ध था। यह उत्तरापथ के तक्षशिला से मार्गों द्वारा जुड़ा था। दक्षिणापथ को भी यहाँ से मार्ग जाता था।

अस्सक—यह महाजनपद गोदावरी के तट पर बसा हुआ था। इस प्रकार यह जनपद दक्षिणापथ में स्थित था। अस्सक जातक के अनुसार

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अस्सक राज्य की राजधानी पोतन नगरी थी। प्रसिद्ध सात राज्यों में अस्सक भी एक राज्य था जैसा महागोविन्द सुत्त और महावस्तु से ज्ञात होता है। राजधानी पोटलि (या पोतलि) अथवा पोतन, पोदन (या पौदन्य) की पहचान आधुनिक बोधन से की गयी है। यह औरंगाबाद के निकट गोदावरी और मंजिरा नदियों के संगम पर स्थित है।

अवन्ति—यह महाजनपद नर्मदा नदी की घाटी में विस्तृत था (दृष्टव्य-स्कन्द पुराण का अवन्ति खण्ड)। इसका एक भाग—अवन्ति दक्षिणापथ—दक्षिणापथ में सम्मिलित था जिसकी राजधानी माहिस्सती (माहिष्मती=आधुनिक मान्धाता अथवा माहेश्वर—इन्दौर) थी।

अवन्ति के उत्तरी भाग की राजधानी उज्जयिनी (आधुनिक उज्जैन) थी जो विभिन्न व्यापारिक मार्गों पर स्थित एक प्रसिद्ध नगर था। यहाँ एक मार्ग भरुकच्छ (भड़ोच) और सुप्पारा (सुपारा, थाना जिला, महाराष्ट्र) से उज्जैनी आता था। श्रावस्ती से प्रतिष्ठान तक जाने वाले मार्ग—दक्षिणापथ मार्ग—पर भी यह एक महत्वपूर्ण पड़ाव था।

काम्बोज (कम्बोज)—यह महाजनपद उत्तरी पश्चिमी भारत के सीमान्त पर गन्धार से सटा हुआ देश था। इसकी पहचान के विषय में बहुत मतभेद है। (पुराणम्, काशी, १९६४, ६-१, पृ० २०७-२२९)। डा० अग्रवाल, डा० मोतीचन्द्र और पं० जयचन्द्र विद्यालंकार के अनुसार कम्बोज जनपद पामीर-बदख्शाँ क्षेत्र में स्थित था। यही मत लासेन का भी था। डा० रायचौधरी और डा० डी० सी० सरकार के अनुसार इसकी स्थिति गन्धार के निकट ही होनी चाहिए। महाभारत के अनुसार राजपुर आधुनिक रजौरी कम्बोज में सम्मिलित था। यह स्थान पूंछ के दक्षिण या दक्षिण-पूर्व में स्थित था। कम्बोज की पश्चिमी सीमा काफ़िरिस्तान (कपिश) को छूती थी। डा० सरकार के अनुसार यह जनपद दक्षिण अफगानिस्तान में बसा था (पुराणम—१९६४, ६-१, पृ० २१९)। डा० राधाकुमुद मुकर्जी ने उसे काबुल नदी की घाटी में रखा है (अशोक, पृ० १६८, फुटनोट १)। डा० भरत सिंह उसे बिलोचिस्तान से लगा ईरान का प्रदेश मानते हैं (बुद्धकालीन भारतीय भूगोल, पृ० ४५६-४५७)। पामीर-बदख्शां क्षेत्र में स्थिति अधिक समीचीन है।

गान्धार—यह महाजनपद उत्तरी पश्चिमी सीमान्त पर स्थित था जहाँ रावलपिंडी और पेशावर तथा कुछ पास के क्षेत्र सम्मिलित थे। डा० भरत सिंह ने इसे स्वात नदी से झेलम नदी तक का प्रदेश माना है जिससे उसमें

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पश्चिमी पंजाब (के रावलपिंडी–पेशावर प्रान्त) और पूर्वी अफगानिस्तान के भाग सम्मिलित थे।

तक्षशिला (तक्कसिला, तखसिला) इसकी राजधानी थी। यह विद्या और व्यापार का प्रसिद्ध केन्द्र था। इसकी पहचान रावलपिंडी से पश्चिम टैक्सिला रेलवे स्टेशन से की गई है।

पोक्खरवती (पुष्कलावती) पश्चिमी गन्धार की राजधानी थी।

इन सोलह राज्यों के अतिरिक्त भी बुद्ध कालीन भारत में कुछ अन्य राज्य विद्यमान थे। ये निम्नांकित हैं—

वंग—अंगुत्तर निकाय (जिल्द १, पृ० २१३) में वंगा (वंग जनों) का उल्लेख है। महावंस (६-१...) में भी वंग के राजा सीहबाहु का उल्लेख है। दीपवंस (पृ० ५४) और मिलिन्दपञ्हों (पृ० ३५१, बम्बई संस्करण) में भी वंग का उल्लेख है। यह जनपद पूर्व देश में स्थित था जिसकी पहचान पूर्वी बंगाल से की गई है।

इस राज्य का मुख्य नगर वद्धमान (वर्धमान) (आधुनिक बर्दवान) था।

सुह्म—यह दक्षिण-पूर्व का प्रसिद्ध जनपद था जिसके समुद्र तट पर ताम्रलिप्ति नामक बन्दरगाह स्थित था। यहाँ से जहाज लंका तथा अन्य द्वीपों को जाते थे। इसकी पहचान आधुनिक तामलुक (मिदनापुर प्रान्त) से की गयी है।

दसण्ण (दसार्ण)—इसका उल्लेख जातकों में मिलता है। यह रामायण, महाभारत, पुराणों और अभिलेखों में भी उल्लिखित प्रसिद्ध राज्य है जिसकी पहचान पूर्वी मालवा से की गयी है। इसकी राजधानी विदिशा (मध्य प्रदेश) थी (मेघदूत, पूर्व मेघ २३-२५) थी।

कलिंग—महापरिनिब्बाण-सुत्त और दीघनिकाय के महागोविन्दसुत्त में कलिंग राज्य और इसकी राजधानी दन्तपुर का उल्लेख है। कनिंघम दन्तपुर की पहचान गोदावरी-तट पर स्थित राजमहेन्द्री से करते हैं। डा० रायचौधरी के अनुसार यह गंजाम जिले का दन्तवक्त्र ही है। डे (ज्या० डि०, पृ० ५३) इसकी पहचान पुरी से करते हैं।

उक्कल (उत्कल)—बुद्ध काल में इसे महानदी और सुह्म जनपद के बीच स्थित माना गया था। यह आधुनिक उड़ीसा का उत्तरी भाग है।

मद्द (मद्र)—मद्द रट्ठ (मद्र राष्ट्र) उत्तरापथ का एक प्रसिद्ध राष्ट्र था। बिम्बिसार की एक रानी (खेमा) मद्र देश की कन्या थी। यह राज्य

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पश्चिमी पंजाब में रावी और चिनाब नदियों के बीच स्थित था। सागल (आधुनिक स्यालकोट) इसकी राजधानी थी।

केकय—इस जनपद का उल्लेख कई जातकों में मिलता है। यह मद्र राज्य का पड़ोसी राज्य था जिसमें झेलम, शाहपुर और गुजरात प्रान्त के भाग सम्मिलित थे (प्रा० भा० भौ० स्व०, पृ० ९०)।

सिवि (शिवि)—इसका उल्लेख जातकों और महावस्तु में मिलता है। यह भी उत्तरापथ का जनपद है जहाँ यूनानी इतिहासकारों द्वारा उल्लिखित सिब्वाय जाति बसी थी। इसकी राजधानी शिवपुर (वर्तमान शोरकोट, जिला झंग, पश्चिमी पंजाब) थी।

सिन्धु-सौवीर—सिन्धु नदी की निचली घाटी में ये प्रसिद्ध जनपद थे। दीघनिकाय के महागोविन्द सुत्त में सोवीर देश और उसकी राजधानी रोरुक (आधुनिक रोहरी, सिन्ध प्रदेश) का उल्लेख है। इस समय जो सिन्ध प्रान्त है उसका पुराना नाम सौवीर था। सिन्धु जनपद सिन्धु नदी के पूर्वी किनारे पर पंजाब में सिन्धु-सागर द्वीप था (पाणिनिकालीन भारतवर्ष, पृ० ५०)। सिन्धु देश घोड़ों के लिये प्रसिद्ध था।

गण राज्य

इन राज्यों के अतिरिक्त महापरिनिर्वाण सुत्त और पाली साहित्य के अन्य ग्रन्थों में भी गण राज्यों के नाम मिलते हैं। ये निम्नलिखित हैं—

कपिलवस्तु के शाक्य (कपिलवत्थु वासी सक्या)—शाक्यों का राज्य उत्तर में हिमालय, पूर्व में रोहिणी नदी और पश्चिम तथा दक्षिण में राप्ती से घिरा हुआ था। इसकी राजधानी कपिलवस्तु थी जो गौतम बुद्ध के जन्मस्थान लुम्बिनी बन से आठ मील पश्चिम की ओर रोहिणी नदी के पश्चिमी किनारे पर स्थित था। वर्तमान समय में इसके भग्नावशेष नैपाल की तराई में बस्ती जिले (उत्तर प्रदेश) के शोहरतगढ़ स्टेशन से बारह मील उत्तर तौलिहवा बाजार के निकट तिलौराकोट नाम से विद्यमान है।

शाक्य जनपद में चातुमा, सामगाम, उलुम्प, सक्कर, शीलवती और खोमदुस्स प्रसिद्ध ग्राम एवं नगर थे।

सिद्धार्थ गौतम का जन्म कपिलवस्तु के ही शाक्य राजवंश में हुआ था।

ऐसा प्रतीत होता है कि यह जनपद कोशल महाजनपद के अधीनस्थ ही था। इसे कोशल नरेश विडूडभ (विरुद्धक) ने आक्रमण करके नष्ट कर दिया था। शाक्य लोग इक्ष्वाकु वंश की एक शाखा से उत्पन्न हुए थे तथा वे शाक-वन में बसने के कारण शाक्य कहलाये।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अलकप्प के बुली (अलकप्पका बुलयो)—अलकप्प के बुलियों का भी एक स्वतन्त्र राज्य था, परन्तु यह अधिक शक्तिशाली नहीं था। वह १० योजन विस्तृत था। इसका सम्बन्ध वेठद्वीप के राजवंश से था। श्री बील के अनुसार वेठद्वीप का द्रोण ब्राह्मण शाहाबाद (बिहार प्रदेश) के मसार नामक स्थान से वैशाली जाने वाले मार्ग में रहता था। अतः अलकप्प वेठदीप से बहुत दूर न रहा होगा। सम्भवतः बुलियों का राज्य आधुनिक शाहाबाद और मुजफ्फरपुर के बीच स्थित था। अलकप्प के बुलियों को बुद्ध धातु (अस्थि शेष) का एक अंश मिला था, जिस पर उन्होंने स्तूप बनवाया था।

केसपुत्त के कालाम—यह भी एक छोटा सा स्वतन्त्र राज्य था। इसकी राजधानी केसपुत्त पांचालक केसिनों से सम्बन्धित की गयी है। गौतम बुद्ध के उपाध्याय आचार्य आलार कालाम का सम्बन्ध भी इन्हीं कालामों से था।

सुंसुमार के भग्ग—भर्ग (भग्ग) की राजधानी सुंसुमार गिरि थी। भर्ग राज्य आधुनिक मिर्जापुर जिले का गंगा से दक्षिणी भाग और कुछ आस पास का प्रदेश है। इसकी सीमा गंगा-टोंस-कर्मनाशा नदियाँ एवं विंध्याचल की पहाड़ियाँ रही होंगी। सुंसुमारगिरि मिर्जापुर जिले का वर्तमान चुनार कस्बा माना जाता है।

महाभारत में भर्ग नामक जनपद का उल्लेख मिलता है। राजा भर्गभूमि के नाम पर इसका भी नाम भर्गभूमि पड़ा (गरुड़पुराण अध्ययन, पृ० १५)।

रामगाम के कोलिय (रामगामका कोलिया)—दीघनिकाय पर बुद्धघोष कृत टीका के अनुसार कोलिय वंश की उत्पत्ति शाक्य कन्या और काशी के राजा राम के सम्बन्ध से हुई थी। दिव्यावदान (बौद्ध संस्कृत ग्रंथ) में भी कोलियों को इक्ष्वाकुवंशी कहा गया है।

इनकी राजधानी रामग्राम थी। प्रसिद्ध विद्वान ए० सी० कार्लायल ने वर्तमान रामपुर-देवरिया को रामग्राम बताया है जो मुंडेरा से लगभग दो मील दक्षिणपूर्व मरवा ताल के किनारे है। किन्तु महावंस के अनुसार रामग्राम अचिरावती (राप्ती) नदी के किनारे था और बाढ़ के समय वहाँ का स्तूप टूट गया था। सम्भवतः गोरखपुर के निकटस्थ रामगढ़ से ही रामग्राम का तादात्म्य किया जा सकता है।

रोहिणी नदी इस जनपद को शाक्य राज्य से पृथक करती थी। बौद्ध ग्रंथों से ज्ञात होता है कि रोहिणी नदी के पानी के लिये दोनों गणतन्त्रों में प्रायः झगड़ा भी होता था।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कोलिय राज्य रोहिणी के पूर्व उसकी दक्षिणी घाटी में और रोहिणी तथा राप्ती के संगम के आगे राप्ती के दक्षिण में था। अतः गोरखपुर की सदर तहसील का दक्षिणी भाग और बांसगाँव तहसील का पश्चिमी भाग राम जनपद में सम्मिलित था।

मल्ल—पावा के मल्ल (पावेय्यका मल्ल) और कुशीनारा के मल्ल (कोशीनारका मल्ल)

प्रसिद्ध बौद्ध ग्रन्थ महापरिनिर्वाण सूत्र के अनुसार मल्लों को वासिष्ठ कहा गया है। दिव्यावदान के अनुसार मल्ल इक्ष्वाकु से उत्पन्न नौ क्षत्रिय कुलों में से एक कहे गए हैं। बाल्मीकि रामायण के अनुसार लक्ष्मण के छोटे पुत्र चन्द्रकेतु को कारुपथ (बस्ती का पूर्वोत्तर भाग और गोरखपुर का पश्चिमोत्तर भाग) का पूर्वी भाग राज्य करने को दिया गया था। चन्द्रकेतु की उपाधि मल्ल थी (चन्द्रकेतोश्च मल्लस्य मल्लभूम्या निवेशिता)। उससे शासित भूमि मल्ल राष्ट्र कहलाई। राजधानी चन्द्रकान्ता थी। परन्तु बाद में कुशावती (कुशीनगर) के नाम से प्रसिद्ध हुई जिसको भगवान राम के सुपुत्र कुश ने बसाया था।

भगवान बुद्ध के समय मल्ल राष्ट्र दो भागों में विभाजित था और इनकी राजधानियाँ क्रम से कुशीनगर और पावा में थीं।

कुशीनगर देवरिया प्रान्त का आधुनिक कसिया ही है। जहाँ भगवान बुद्ध का महापरिनिर्वाण हुआ था। पावा का तादात्म्य पडरौना से किया गया है (सर अलेग्ज़ेन्डर कनिंघम)। परन्तु कार्लायल ने इसका तादात्म्य फ़ाज़िलनगर-सठियाँव (चेतियाँव) से किया था। पावा की कुशीनगर से दूरी और दिशा को ध्यान में रख कर कार्लायल का मत ही युक्तिसंगत लगता है।

यह गणतन्त्र जनपद था जिसके पश्चिमोत्तर में शाक्य, पश्चिम में कोलिय, दक्षिण में मौर्य तथा पूर्व में वज्जि राष्ट्र थे। मल्ल राष्ट्र में गोरखपुर जनपद और सारन का अधिकांश भाग सम्मिलित था।

पिप्पलीवन के मोरिय (पिप्पलीवनिया मोरिया)—इतिहास प्रसिद्ध मौर्य के मूल पूर्वज ये ही गणमूलक मोरिय थे। इनकी राजधानी पिप्पलीवन थी। इन्होंने भगवान बुद्ध के परिनिर्वाण होने पर उनके अवशेष भाग की प्राप्ति हेतु मल्लों के पास सन्देश भेजकर कहा था—"भगवान भी क्षत्रिय थे, हम भी क्षत्रिय हैं—"

अथ खो पिप्पलिबनिया मोरिया कोसिनारकानं।
मल्लानं दूतं पाहेसुं भगवापि खत्तियो मयम्पि खत्तियो॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अतः ये क्षत्रिय थे और इन्होंने भगवान की अवशिष्टि पर स्तूप बनवाया था। पिप्पलीवन के भग्नावशेष आजकल गोरखपुर के कुसुम्ही स्टेशन से ११ मील दक्षिण उपधौली नामक स्थान में प्राप्त हुए हैं।

विदेह राष्ट्र—विदेह राष्ट्र की राजधानी मिथिला थी। बुद्धकाल में यह वज्जि महाजनपद के अन्तर्गत था। पहले यह राजतन्त्र था। परन्तु आगे चल कर यहाँ की क्रान्ति ने इस प्रकार की राजपद्धति का अन्त कर वहाँ गणमूलक शासन पद्धति को जन्म दिया। इसकी राजधानी मिथिला थी जो आजकल मुज़फ़्फ़रपुर और दरभंगा जिलों के उत्तार में नैपाल की सीमा पर जनकपुर नामक स्थान पर स्थित था।

वैशाली के लिच्छवि (वेसालिका लिच्छवी)—वैशाली वज्जी जनपद की राजधानी थी जो इस समय बिहार प्रदेश के मुज़फ़्फ़रपुर रेलवे स्टेशव से लगभग २१ मील दूर अपने प्राचीन नाम से प्रसिद्ध है। वज्जी जनपद एक संघ राज्य था जिसके अन्तर्गत लिच्छवियों का गणतन्त्र सम्मिलित था। वैशाली अति समृद्धिशाली नगरी थी। वैशाली में ही बौद्धों की दूसरी धर्म सभा हुई थी। आज भी मीलों की परिक्रमा में फैले हुए उसके खंडहर अतीत-गौरव की स्मृति दिलाते हैं।

राजा विशाल ने ही वैशाली की स्थापना की थी। बुद्ध-पूर्व युग के वैशाली के राजाओं का (वैशालका नृपाः, गरुड़ पुराण, १-१३८-१३) उल्लेख हुआ है।

नगर

जिस समय भगवान बुद्ध का परिनिर्वाण कुशीनगर (कसिया) में होने वाला था, आनन्द ने भगवान् से कहा—"भन्ते (श्रीमन्)। इस क्षुद्र नगर में मत निर्वाण प्राप्त करें। अन्य भी महानगर हैं, जैसे चम्पा, राजगृह, श्रावस्ती, साकेत, कौशाम्बी और वाराणसी। वहाँ आप निर्वाण प्राप्त करें। (परिनिर्वाण सूत्र, पृ० ११७-११८, विषय-परिच्छेद ४७, २०५)।

राइज़डेविड्स ने ई० पू० ७वीं शताब्दी के निम्नांकित नगरों की तालिका (बुद्धिस्ट इण्डिया, पृ० २५-३०) दी है—

अयोध्या, वाराणसी, चम्पा, कम्पिल, मधुरा (मथुरा), मिथिला, राजगृह, रोरुक, सागल, साकेत, सावत्थी, उज्जेनी, वैसाली।

अयोज्झा (अयोध्या)—यह नगर सरयू नदी के तट पर कोसल राज्य में स्थित था। कहीं-कहीं अयोध्या को गंगा के तट पर भी स्थित कहा गया है

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(बु० भा० भू०, पृ० २५२-२५३)। डा० भरतसिंह कहते हैं कि "वर्तमान अयोध्या गंगा नदी के तट पर स्थित नहीं है, अतः हम जब तक पालि के विवरण को गलत न मानें, बुद्धकालीन अयोध्या को हम वर्तमान अयोध्या से नहीं मिला सकते (बु० भा० भू०, पृ० २५३)। अयोध्या एक ही थी और सरयू को ही पवित्रता के कारण गंगा कहते होंगे अथवा पालिविवरणों में ही कुछ प्रमाद है। राइजडेविड्स भी गंगा तट पर अयोध्या की स्थिति गलत मानते हैं।

सावत्थी (श्रावस्ती)—यह कोशल की राजधानी और भगवान बुद्ध का प्रियवास-स्थान था। अचिरावती (राप्ती) के तट पर स्थित यह इस समय गोण्डा-बहराइच (उत्तर प्रदेश) सीमा पर स्थित सहेत-महेत नाम का गाँव है।

वाराणसी (बनारस)—बरुणा और गंगा के संगम पर गंगा के उत्तर तट पर स्थित है। वस्तुतः वरुणा और असी नदियों के बीच स्थित क्षेत्र को वाराणसी कहा गया है। बुद्ध के कुछ पूर्व काल में जब काशी स्वतन्त्र राज्य था, वाराणसी का विस्तार १२ लीग या लगभग ८५ मील था। यह समृद्ध नगर विद्या और कला का केन्द्र था। वाराणसी में सुन्दर काशी के बने हुए कपड़े—कासिक (काशिक)—प्रसिद्ध थे। यह व्यापारिक मार्गों का भी केन्द्र था जहाँ तक्षशिला तक से भी व्यापारी आते-जाते थे। राजगृह से तक्षशिला तक जाने वाला मार्ग यहीं से होकर जाता था। वाराणसी से प्रयाग-प्रतिष्ठान तक गंगा और फिर यमुना द्वारा नावों से कौशाम्बी तक गमनागमन होता था।

वाराणसी के निकट ही सारनाथ (ऋषिपत्तन) के मिगदाय में बुद्ध ने अपना प्रथम उपदेश दिया था। इसलिए यह स्थान चार प्रसिद्ध बौद्ध तीर्थ स्थानों में से एक है।

चम्पा—चम्पा नदी के तट पर स्थित यह नगर अंग देश की राजधानी थी। भागलपुर जिले के चम्पापुर से इसकी पहचान की गयी है। यहां गग्गरा पुष्करिणी प्रसिद्ध थी जिसे रानी गग्गरा ने खुदवाया था। इसी झील के किनारे सुगन्धित चम्पा के वृक्ष लगे थे। महाभारत (अनुशासन पर्व, ४२-१५) में इसे चम्पा के वृक्षों से घिरा हुआ (चम्पा चम्पकमालिनी) कहा गया है। यहाँ के व्यापारियों ने ही सुदूरपूर्व में चम्पा नामक बस्ती को बसाया। ये व्यापारी सुवर्ण भूमि (लोअर बर्मा) और इसके आगे जाते रहते थे। यह समृद्ध नगर बुद्धकालीन प्रसिद्ध छः नगरों में से एक था।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कम्पिल्ल—यह उत्तर पांचाल की राजधानी थी जो गंगा के तट पर स्थित थी। कम्पिल्ल नगर की पहचान उत्तर प्रदेश के फरुखाबाद जिले में फतेहगढ़ से २८ मील उत्तर-पूर्व गंगा के समीप स्थित कम्पिल से की गयी है।

कोसाम्बी (कौशांबी)—यह वंस या वत्स राज्य की राजधानी यमुना तट पर स्थित थी। यह इस समय कोसम गाँव है जो इलाहाबाद से ३० मील दूर स्थित है। यहाँ खुदाई करने से इसकी प्राचीनता सिद्ध होती है (प्रो० जी० आर० शर्मा, कौशाम्बी)।

यह वत्सराज (उदयन) की राजधानी वत्सपट्टन भी कहलाती थी (कनिंघम, ए० ज्या०, पृ० ३३१)।

यह प्रसिद्ध व्यापारिक केन्द्र था जो अन्य देशों और नगरों से मार्गों द्वारा जुड़ा हुआ था। कोसल और मगध की राजधानियों (क्रमशः) श्रावस्ती और राजगृह से जुड़ा हुआ था। एक मार्ग उज्जेनी से कौशाम्बी होता हुआ कुशी-नारा तक जाता था। कौशाम्बी से राजगृह तक नदी द्वारा गमनागमन होता था।

मथुरा—यह शूरसेनों की राजधानी और प्रसिद्ध व्यापारिक नगर था जहाँ से होकर उत्तरापथ मार्ग गुजरता था।

मिथिला—यह उत्तरी बिहार के तिरहुत खंड में विदेह की राजधानी थी जो इस समय जनकपुर (नैपाल, दरभंगा और मुज़फ्फरपुर प्रान्तों की सीमा पर स्थित) है (पोलिटिकल हिस्ट्री ऑफ़ ऐन्शेन्ट इण्डिया पृ० ५८)।

वैशाली—यह वज्जि राज्य की राजधानी और उस युग का प्रसिद्ध नगर था जो इस समय मुज़फ्फरपुर (बिहार) से लगभग २२ मील दूर अपने पुराने नाम से प्रसिद्ध है। यहाँ प्राचीन किले का ध्वंसावशेष विस्तृत क्षेत्र में फैला है। नगर चारों ओर प्राचीन अवशिष्टों से सुशोभित अपनी प्राचीनता की स्मृति दिलाता है। सबसे उल्लेखनीय अशोक स्तम्भ और और इसके ही निकट एक स्तूप है जिसके शिखर पर एक कोठरी में बोधिसत्व की प्रतिमा प्रतिष्ठित हैं। पुष्करिणी और अम्बपाली का बन आज भी प्रसिद्ध हैं।

उज्जेनी—यह अवन्ति की राजधानी और उस युग का प्रसिद्ध नगर था जहाँ से मार्ग भिन्न-भिन्न देशों को जाते थे। रामायण और महाभारत तथा जातकों में इसका उल्लेख मिलता।

राजगृह—यह मगध की राजधानी और उस युग का अत्यन्त प्रसिद्ध नगर था। इसकी पहचान बिहार प्रदेश में स्थित आधुनिक राजगिरि से की

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गयी है। तत्कालीन प्रसिद्ध नगरों से यह जल-थल मार्गों द्वारा जुड़ा हुआ था। एक मार्ग श्रावस्ती को जाता था।

रोरुक—यह सौवीर राज्य की राजधानी और प्रसिद्ध नगर था जहाँ देश के प्रत्येक भाग से व्यापारी आते रहते थे।

तक्षशिला—यह गान्धार जनपद की राजधानी तथा विद्या और व्यापार का प्रथित केन्द्र था। यहाँ से एक मार्ग—उत्तरापथ मार्ग—मध्यदेश को जाता था।

व्यापारिक मार्ग

बृहदारण्यक उपनिषद में कुरु-पाञ्चाल के ब्राह्मणों को विदेह में जनक की सभा में पाते हैं। इससे सिद्ध होता है कि मध्यदेश और पूर्व देश के बीच मार्ग प्रचलित थे। इसी प्रकार, इसी उपनिषद में मद्रदेश में घूमते हुए चरकों (अध्ययन के लिए घूमने वालों) को उल्लिखित पाते हैं (मद्रेषु चरकाः, ३-३-१)। अर्वा (घोड़ों) का असुरों से सम्बन्ध था (बृहदारण्यक उप०, १-१-२)। इससे यह संकेत मिलता है कि अर्वा वाले देश-अरब-से इस युग का भारत परिचित था। इसी से यह सिद्ध होता है कि उपनिषद युग में भी लोग देश के विभिन्न भागों में यात्रा करते रहते थे।

बुद्ध-युग में भी हम बुद्ध और उनके अनुयायी भिक्षुओं तथा जैन भिक्षुओं को एक स्थान से दूसरे स्थान को आते-जाते पाते हैं। बौद्ध और जैन साहित्य में व्यापारियों को भी एक नगर से दूसरे नगर में अपना माल लेकर क्रय-विक्रय करते हुए पाते हैं। इस प्रकार थल और जल मार्गों द्वारा विभिन्न नगर जुड़े हुए थे। जैन साहित्य से ज्ञात होता है कि आनन्दपुर (बृहत्कल्प-भाष्य वृत्ति १-१०९०), महुरा=मथुरा (आवश्यक चूर्णि ७, पृ० २८१) और दसन्नपुर=दशार्णपुर (निसीथचूर्णि ५-३४) प्रसिद्ध थलपट्टन थे। भरुय-कच्छ (भड़ोच) और तामलित्ति प्रसिद्ध बन्दरगाह थे।

बौद्ध साहित्य में व्यापारियों, सात्थवाह, को यात्रा करते हुए पाते हैं। जातकों से ज्ञात होता है कि न केवल चम्पा से ही, किन्तु काशी से भी, जल मार्ग द्वारा सीधे सीलोन तक यात्रा होती थी (दास, एकोनामिक हिस्ट्री आफ़ ऐन्शेन्ट इण्डिया, पृ० १२१)

देश के अन्दर भी शूर्पारक (सोपारा, थाना जिला, महाराष्ट्र) से भिन्न भिन्न नगरों को मार्ग जाते थे। सावत्थी से राजगृह, सावत्थी से दक्षिण भारत को प्रतिष्ठान (पैथान) तक, और पश्चिम में सावत्थी से मथुरा होते हुए

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पंजाब में तक्षशिला तथा सिन्धु-सौवीर में रोरुक तक मार्ग जाते थे। निम्न-लिखित मार्ग थे—

१—उत्तरापथ मार्ग (राजगृह-तक्षशिला मार्ग)—यह महामार्ग बुद्ध-युग का प्रधान मार्ग था, जो पूर्व से पश्चिम तक (पुब्बन्ता अपरन्तं) जाता था। मगध की राजधानी राजगृह से चल कर यह मार्ग उत्तर पश्चिम में गन्धार राष्ट्र की राजधानी तक्षशिला तक जाता था। एक शाखा मार्ग कोशल की राजधानी श्रावस्ती से चलकर साकेत होता हुआ संकाश्य नगर के पास इस महामार्ग में मिलता था। इसे प्राचीनकाल का ग्रान्ड ट्रंक रोड कह सकते हैं।

राजगृह से चलकर वैशाली, नालन्दा, पाटलिपुत्र, वाराणसी, प्रयाग, कान्यकुब्ज, संकाश्य, सोरों और वेरंजा होता हुआ मथुरा तक जाता था। मथुरा से आगे इन्द्रप्रस्थ और सागल होता हुआ तक्षशिला तक जाता था।

तक्षशिला से आगे चल कर यही मार्ग पश्चिमी और मध्य एशिया तक जाता था।

२—राजगृह-श्रावस्ती मार्ग—दूसरा प्रसिद्ध मार्ग राजगृह से श्रावस्ती तक जाने वाला मार्ग था। इस मार्ग पर श्रावस्ती से आगे चलकर सेतव्या, कपिलवस्तु, कुशीनारा, पावा, वैशाली, पाटलीपुत्र, नालन्दा और अन्त में राज-गृह स्थित थे।

३. दक्षिणापथ मार्ग--इस युग का तीसरा प्रसिद्ध मार्ग दक्षिण को जाता था। यह मार्ग श्रावस्ती से चलकर दक्षिण में प्रतिष्ठान तक जाता था। यह मार्ग श्रावस्ती से चलकर साकेत, कौशाम्बी, विदिशा, गोनद्ध, उज्जेनी, और माहिष्मती होते हुए प्रतिष्ठान तक जाता था।

गंगा, यमुना और अन्य नदियों द्वारा भी इनके तटवर्ती स्थानों के बीच गमनागमन होता था। आज भी गोंडा, बस्ती और गोरखपुर की नदियों द्वारा माल लाया-ले जाया जाता है।

इस प्रकार बुद्ध कालीन राज्यों, नगरों और मार्गों का विवरण तत्कालीन समृद्धि का परिचय देते हैं।

पाठ्य-ग्रन्थ

डा० बी० सी० ला--इण्डिया ऐज़ डिस्क्राइब्ड इन अर्ली पाली एण्ड जैन टेक्स्ट्स

राइज़ डैविड्स, टी० डब्लू०--बुद्धिस्ट इण्डिया

डा० भरत सिंह--बुद्धकालीन भारत

डा० अंगने लाल--संस्कृत बौद्ध साहित्य में भारतीय जीवन (अध्याय १)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अध्याय ४

पाणिनि और पतंजलि के ग्रंथों में भूगोल

परिच्छेद १

पाणिनि कालीन भूगोल

भूगोल नाम संस्कृति है और पाणिनि मुनि इस विषय के सर्वश्रेष्ठ व्याख्याता हैं। पाणिनीय अष्टाध्यायी के सूत्रों में संकलित शब्द-सामग्री से देश, पर्वत, समुद्र, वन, नदी, नगर और ग्रामादिकों का परिचय प्राप्त होता है। अष्टाध्यायी में भूगोल-विषयक सामग्री नाम-सूत्रों द्वारा ही प्राप्त होती है। इन नाम-शब्दों के संचयन में अवश्य ही उन्होंने देश के विभिन्न भागों का भ्रमण किया होगा। उनके समय में विद्यार्थियों, विद्वानों और विचारकों का पर्यटन करना ही चरक-धर्म था। अन्यथा विविध क्षेत्रों, और उनकी भौगोलिक, भाषा-साहित्य सम्बन्धी, शासकीय तथा जीवन-वृत्ति-स्वभाव सम्बन्धी विशिष्टताओं का प्रशस्त परिचय मिलना सम्भव नहीं था।

"व्याकरण का सम्बन्ध भाषा से है और भाषा का सम्बन्ध स्थान-नामों से। प्रत्येक भाषा में शब्दों के मुख्यतः दो भाग होते हैं, नाम और आख्यात। आख्यात का सम्बन्ध धातुओं से है जिनका संग्रह पाणिनि ने धातुपाठ की १९४४ धातुओं के रूप में किया है। नाम अर्थात् संज्ञायें तीन प्रकार की होती हैं—(१) वस्तुओं के नाम, (२) मनुष्य-नाम (३) स्थान-नाम। मनुष्य-नाम और स्थान नाम भी भाषा के अभिन्न अंग है।" मनुष्य-नाम आदर्श चरित्र-परिचायक अथवा विचार-वृत्ति के प्रतीक होते हैं। इनमें देश की अतीत परम्पराएँ और इतिहासवृत्त भी छिपा रहता है। स्थान-नाम भी अधिकांशतः इन्हीं महापुरुषों के चरित्र अथवा राष्ट्रीय चेतना से प्रभावित होकर बनते रहे हैं। भाषा-शास्त्र इन नामों की, संज्ञाओं की व्युत्पत्ति-प्रवृत्ति व्याख्या करता है। अस्तु व्याकरणशास्त्र भारतीय भूगोल से सम्बद्ध पदों का विश्लेषण करता हुआ इसका अति महत्वपूर्ण ज्ञान साधन है। महामुनि पाणिनि के पूर्व भी कम से कम आठ व्याकरण शास्त्र प्रसिद्ध और प्रचलित थे। उनमें माहेश्वर-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

व्याकरण सर्वश्रेष्ठ होने के कारण ही प्रथमत: उन्हीं माहेश्वर सूत्रों का निबन्धन किया है। उन्हीं के समकालीन मुनि कात्यायन थे जिन्होंने वार्तिक लिखी है। कालांतर में पतंजलि मुनि ने भी अष्टाध्यायी पर महाभाष्य लिखा। अस्तु यह महाभाष्य भी भूगोल विषयक सामग्री प्रस्तुत करता है।

जैसा कहा गया है कि पाणिनि मुनि द्वारा शब्द-संकलन अवश्य ही लोक पर्यटन द्वारा हुआ होगा। उनके प्राप्त जीवन वृत्त से भी यही परिलक्षित होता है। वह शलातुर के रहने वाले थे और इसीलिए वे शालातुरीय कहलाते थे। शलातुर की पहचान काबुल और सिन्धु नदियों के संगम (ओहिन्द उद्भांड-पुर) से चार मील उत्तर पश्चिम की ओर स्थित लहुर गांव से की गयी है। सोमदेव के कथासरित सागर और क्षेमेन्द्र की वृहत्कथामंजरी से ज्ञात होता है कि पाणिनि आचार्य वर्ष के एक मंद-बुद्धि शिष्य थे। इससे विक्षुब्ध होकर पाणिनि हिमालय पर तप करने चले गये। वहां शिव को प्रसन्न कर उन्होंने नया व्याकरण प्राप्त किया (प्राप्तं व्याकरणं नवम्)। स्कन्द पुराण से ज्ञात होता है कि पाणिनि ने गो पर्वत (काश्मीर का एक पर्वत) पर तप द्वारा शिव-प्रसाद से वैयाकरणों में श्रेष्ठता और मुख्यता प्राप्त की—

यत्र पाणिनिना लेभे वैयाकर्णिकाग्यता ॥

गो पर्वत एक अति प्रसिद्ध शिवक्षेत्र था।

अनुश्रुति से ही ज्ञात होता है कि उन्होंने पाटलिपुत्र में सम्मान प्राप्त किया था। अस्तु देश के पश्चिमोत्तर प्रदेश से लेकर उनका परिचय प्राच्य-प्रदेश तक परिलक्षित होता है।

भौगोलिक विस्तार—उनकी भौगोलिक सूचनायें भी इसी तथ्य का अनुमोदन करती हैं। पश्चिमोत्तर में उन्होंने कापिशी, (काबुल से लगभग ५० मील उत्तर) और काम्बोज जनपद (पामीर के आसपास) से लेकर पूर्व में सूरमस जनपद (आसाम की सुरमा घाटी) तक और उत्तर में हिमालय से लेकर दक्षिण में अश्मक (गोदावरी तटवर्ती) जनपद तक विस्तृत क्षेत्र का सुचित्र प्रस्तुत किया है। समुद्र तट और उसके निकटस्थ द्वीपों (अनुसमुद्र द्वीपों) का भी उल्लेख प्राप्त होता है।

देश भाग—पाणिनि ने भारत के दो देश विभागों–उदीच्य और प्राच्य—का उल्लेख किया है। इनके ही मध्य में भरत जनपद स्थित था जिसे प्राच्य भरत भी कहा गया है।

गंधार और वाहीक मिलकर उदीच्य कहलाता था। वाहीक सिन्धु और उसकी पांच सहायक नदियों द्वारा अभिसिंचित प्रदेश-पंचनद अथवा पंजाब ही

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

था। तक्षशिला से काबुल तक का क्षेत्र गन्धार कहलाता था। प्राच्य सामान्यतः मध्यदेश अथवा आर्यावर्त के पूर्व स्थित माना गया है। पाणिनि के अनुसार गान्धार में मगध तक एक ही भाषा-शिष्टभाषा-का क्षेत्र फैला हुआ था जिसमें प्राच्य और उदीच्य दो स्वाभाविक भाग थे।

पर्वत

अष्टाध्यायी में पर्वत श्रेष्ठ हिमवत और हेमवती का उल्लेख हुआ है। हिमालय की श्रेणियों-अंतर्गिरि और उपगिर-का उल्लेख हुआ है। आधुनिक भूगोल वेत्ता भी हिमालय को तीन श्रेणियों में विभक्त मानते हैं। महाभारत भी इनका उल्लेख करता है कि अर्जुन ने अंतर्गिरि, वहिर्गिरि और उपगिरि प्रदेशों की विजय की थी। पाणिनि ने केवल दो ही भागों का उल्लेख किया है। उपगिरि से तराई की पहाड़ियां और उनके ऊपर का पार्वत्य प्रदेश अंतर्गिरि से ही सूचित होता है (डा० अग्रवाल)। पार्वत्य प्रदेश—विशेषतः हिमवंत प्रदेश की कुछ प्रसिद्ध भौगोलिक प्रक्रियायों-यथा हिमानी (बर्फ का ढेर), हिमश्राथ (बरफ का पिघल कर बहना) और उपत्यका (घाटी) तथा अधीत्यका (पठार) का भी पाणिनि ने उल्लेख किया है।

त्रिककुत्—अथर्ववेद में भी इस त्रिककुद (तीन चोटियों वाले) पर्वत का उल्लेख हुआ है। डा० कीथ इसकी पहचान उत्तरी पंजाब और काश्मीर के बीच किसी चोटी से करते हैं। डा० अग्रवाल इसका तादात्म्य सुलेमान पर्वत से करते हैं, क्योंकि यह भी अंजन के लिए प्रसिद्ध था। इसी के पास की तिहरी पर्वतों की दीवार त्रिककुद कहलाती थी (जयचंद्र विद्यालंकार—भारत भूमि, पृ० १२९)

विदूर—यह वैदूर्य मणि का उत्पत्ति स्थान था। पार्जिटर महोदय के अनुसार (मार्कण्डेय पुराण) हम वैदूर्य की पहचान सतपुड़ा से करते हैं। डा० अग्रवाल इसे दक्षिण का बीडर मानते हैं।

इसके अतिरिक्त अष्टाध्यायी के किंशुलकादि गण में छः पहाड़ों के नाम और प्राप्त होते हैं ये हैं—किंशुलकागिरि, शाल्वकागिरि, अंजनागिरि, भंजनागिरि, लोहितागिरि और कुक्कुटागिरि।

डा० अग्रवाल के अनुसार "ये नाम अत्यन्त अपरिचित हैं……।" उन्होंने किंशुलकागिरि की पहचान मक्रानपर्वतश्रृंखला से, जो हिंगुलाज देश अथवा हिंगुला नदी के नाम से अब भी प्रसिद्ध है, की है और शाल्वकागिरि सिंध-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बिलोचिस्तान की सीमा पर उत्तर-दक्षिण फैला हुए हाला गिरि बताया है। सुलेमान पर्वत की पहचान अंजनागिरि से की है। लोहितगिरि हिंदकुश का ही पुराना नाम है। भंजनागिरि का तादात्म्य सुलेमान और हिंदुकुश के बीच स्थित कोहेबाबा से किया है। कुक्कुटागिरि की पहचान भंजनागिरि के पश्चिम स्थित कुछ नीची उन श्रेणियों से की गई है जो हेरात और हरिरूद (सरयू) नदी के उत्तर समानांतर चली गई हैं। बाह्लीक या बल्ख के दक्षिण उपरिश्येन पर्वतमाला ही कुक्कुटागिरि था जैसा कि डा० अग्रवाल ने प्रतिपादित किया है।

कपिशा-गान्धार तथा त्रिगर्त (कांगड़ा-शिमला) की पर्वतीय आयुध जीवी जातियों का भी उल्लेख किया है (पा०भा०, पृ० ४५-४६)।

वन

अष्टाध्यायी से पुरगावण, मिश्रकावण, सिध्रकावण, शारिकावण, कोटरावण तथा अग्रेवण नामक छः वनों के नाम प्राप्त होते हैं।

पुरगावन—डा० अग्रवाल के अनुसार पुरगावन पाटलिपुत्र के समीप था क्योंकि गणरत्न महोदधि के अनुसार पुरगा पाटलिपुत्र की यक्षिणी थी और यह वन उसी के नाम पर प्रसिद्ध हुआ।

मिश्रकावन—संभवतः यह मिश्रिख (सीतापुर प्रान्त, उ० प्र०) के आसपास का वन था जो नैमिषारण्य का ही एक भाग था।

अन्य वनों की ठीक ठीक पहचान नहीं हो सकती है।

नदियाँ

सुवास्तु—यह आधुनिक स्वात है जिसकी एक शाखा गौरी नदी (आधुनिक पंजकोरा) है।

स्वात का ही निचला भाग मशकावती कहलाता था। इसी मशकावती के तट पर मसागा (मस्सग) नामक नगर बसा था।

सिंधु—यह आधुनिक सिंधु है। यह नदी कैलास के पश्चिमी भाग से निकल कर पंजाब और प्राचीन सिंधु-सौवीर में बहती हुई समुद्र में गिरती है।

विपाश—यह सिंधु की सहायक नदी व्यास है।

सिद्य और उद्ध्य—ये छोटी दो बरसाती नदियां थीं। उद्ध्य इरावती (रावी) की छोटी सहायक नदी थी। इसकी पहचान उझ (जम्मू और गुरदासपुर में बहनेवाली) से की गयी है।

इरावती—यह पंजाब की रावी नदी है।

चन्द्र भागा—यह पंजाब की चिनाब है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

देविका—यह मद्र देश में बहने वाली एक प्रसिद्ध नदी थी जिसके किनारे धानों की विशेष खेती होती थी (दाविका कूलाः शालयः)। वामनपुराण (अ० ८४) के अनुसार यह रावी की सहायक नदी थी। इसकी पहचान देग नदी के साथ की गयी है जो जम्मू की पहाड़ियों से निकलकर स्यालकोट और शेखूपुरा के जिलों में होती हुई रावी में मिल जाती है।

पुष्करावती—गौरी और सुवास्तु की मिली धारा को पुष्करावती कहते थे।

उदुंबरावती—यह व्यास और रावी के बीच में त्रिगर्त (कांगड़ा) प्रदेश में बहती थी जहाँ औदुंबर जाति बसी थी।

वीरणावती—यह वरणावती नदी थी जिसके तट पर यूनानी लेखकों द्वारा उल्लिखित ऑरनोस नामक पहाड़ी दुर्ग स्थित था।

शरावती—इसकी पहचान कुरुक्षेत्र की घग्घर नदी से की गयी है। यह उदीच्य और प्राच्य देशों की सीमा बनाती थी।

इक्षुमती—यह गंगा की एक सहायक नदी है जो फ़रुखाबाद में बहती है। इसे ईखन कहते हैं।

अजिरवती—यह, अचिरवती या राप्ती नदी थी जिसके किनारे प्राचीन काल में श्रावस्ती नगर बसा हुआ था।

सरयू—यह कोसल जनपद (अवध) की सरयू ही है।

चर्मण्वती—यह यमुना नदी की एक सहायक नदी है जिसे अब चंबल कहते हैं।

रुमण्वत—संभवतः यह रूमा (या लूनी नदी) थी जो सांभर झील से निकलती है।

रथस्या (या रथस्पा)—यह रामगंगा नदी थी जो पंचाल में बहती थी।

जनपद

बुद्ध कालीन सोलह महाजनपदों में से पाणिनि की अष्टाध्यायी में नौ नाम मिलते हैं—मगध, काशि, कोसल, वृजि, कुरु, अश्मक, अवंति, गंधार और कंबोज। इस जनपदों की सूची में काँबोज से मगध तक और दक्षिण में अश्मक-अवंति तक का प्रदेश आ जाता है।

कांबोज—"कांबोज की ठीक पहचान भारत के उत्तर पश्चिमी भूगोल के लिए महत्त्वपूर्ण है। गंधार, कपिश, बाल्हीक और कंबोज—इन चार महाजनपदों का एक चौगड्डा था। मध्य एशिया और अफ़गानिस्तान के नक्शे में इनकी

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भौगोलिक स्थिति स्पष्ट हो जाती है। ......हिंदुकुश के उत्तर-पूर्व में कंबोज, उत्तर-पश्चिम में बाल्हीक, दक्षिण-पूर्व में गंधार और दक्षिण-पश्चिम में कपिश था। आधुनिक 'पामीर' और 'बदख्शाँ' का सम्मिलित प्राचीन नाम कंबोज जनपद था और उसी से सटा हुआ 'दरवाज़' का इलाका था जिसकी पहचान डा० मोतीचन्द्र ने द्वारका से की है।" (पा० भा०, पृ० ६०-६१; जयचन्द्र विद्यालंकार-भारत भूमि और उसके निवासी, पृ० २९७- ३०३; डा० मोती चन्द्र, उपायन पर्व, पृ० ४३)। प्रो० लासें ने कंबोज की पहचान काशगर के दक्षिणी प्रदेश से की थी।

प्रकण्व—इस नाम के देश की पहचान आधुनिक फ़रगना से की गई है। इसे यूनानी इतिहासकार हेरोडोटस द्वारा उल्लिखित परिकनिओई जाति के देश से कर सकते हैं।

गन्धार—यह जनपद "कुनड़ या काश्कर नदी से तक्षशिला तक फैला हुआ था। पश्चिमी गन्धार की राजधानी पुष्कलावती थी जहां इस समय स्वात और काबुल नदियों के संगम पर चारसद्दा है। यहां के बने हुए पांडु-कंबल (श्वेत कंबल) प्रसिद्ध थे।

सुवास्तु और गौरी नदियों के बीच स्थित उड्डियान (उद्यान) देश गन्धार का ही एक भाग था।

केकय—यह जनपद सिन्धु नदी के पूर्व गन्धार जनपद (गन्धर्वों का देश) से मिला हुआ स्थित था। इसमें वर्तमान झेलम, शाहपुर और गुजरात (पश्चमी पंजाब) के प्रान्त सम्मिलित थे।

रामायण काल में इसकी राजधानी राजगृह या गिरिव्रज (आधुनिक जलालपुर) थी (जयचन्द्र विद्यालंकार–भारतीय इतिहास की रूप रेखा, जिल्द १, पृ० २०१)। पं० गिरीशचन्द्र अवस्थी के अनुसार इसकी राजधानी गिरि-व्रज आधुनिक गजनी थी (वेद धरातल, पृ० २०४)।

मद्र—मद्र जनपद **वाहीक देश** (सिन्धु और शतुद्रि के बीच स्थित) का उत्तरी भाग था। इसकी राजधानी शाकल (वर्तमान स्यालकोट) थी। पाणिनि के समय मद्र के दो भाग थे—पूर्व मद्र और अपर (पश्चिमी) मद्र। पूर्व मद्र रावी नदी से लेकर चनाव तक और पश्चिमी मद्र चनाब से झेलम नदी तक का प्रदेश था।

उशीनर—पाणिनि के अनुसार उशीनर वाहीक का जनपद था। डा० अग्रवाल के अनुसार रावी और चनाब के बीच का निचला भूभाग जो मद्र के

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दक्षिण में था उशीनर प्रदेश कहलाता था। यह भी दो भागों में बँटा था, आजकल के झंग मघियाना वाला उत्तरी हिस्सा उशीनर जनपद कहलाता था और दक्षिण में शोरकोट के चारों ओर के इलाके का नाम शिबि जनपद होना चाहिये। शिबि और उशीनर देशों के बीच निकट का सम्बन्ध था।

उशीनर जनपद गो-धन से भरा-पूरा था।

अंबष्ठ—इनकी पहचान यूनानी लेखकों द्वारा उल्लिखित 'संबस्टई' या 'अबस्टनॉय' से की गई है। ये लोग चनाव नदी के निचले भाग में बसे हुए थे।

सिन्धु—सिन्धु नदी के पूर्व स्थित सिंध सागर द्वाब का पुराना नाम सिंधु देश था। भारतीय साहित्य में सिंधु-सौवीर जनपदों का जोड़ा प्रसिद्ध था। इससे इनकी निकट की स्थिति का परिचय मिलता है।

सौवीर—वर्तमान सिंधु प्रान्त या सिंध नदी की निचली घाटी का पुराना नाम सौवीर जनपद था। इसकी राजधानी रोरुव (रौरुक), वर्तमान रोहरी (लाहोर-करांची लाइन पर रेलवे जंक्शन) थी।

बीच का सौवीर ब्राह्मण जनपद था और निचला भाग सौवीरकूल था।

ब्राह्मणक—अष्टाध्यायी में ब्राह्मणक नामक देश का उल्लेख है। यह यूनानी लेखकों का ब्राह्मणनोई या **'ब्राखमनोई'** ही है। राजशेखर ने काव्य मीमांसा में इसे 'ब्राह्मणवाह' और स्कन्दपुराण में इस वम्भणवाहक बताया गया है। यह सिन्ध प्रान्त आधुनिक बहमनाबाद ही है।

शौद्रायण—यह इसी जनपद से मिला हुआ देश था जिसकी पहचान यूनानी इतिहासकारों द्वारा उल्लिखित सोड्रई से की जा सकती है। सोड्रई सिन्ध नदी के पूर्वी तट पर बसे हुए थे।

पारस्कर—डा० अग्रवाल के अनुसार यह थर-पाकर प्रान्त का प्राचीन नाम था।

कच्छ—"सिंध के ठीक दक्षिण में कच्छ जनपद है।"

त्रिगर्त—पाणिनि ने त्रिगर्त देश के आयुधजीवी संघों का उल्लेख किया है। रावी, व्यास और सतलज, इन तीन नदियों के बीच का प्रदेश त्रिगर्त कहलाता था। इसी का पुराना नाम जालंधरायण भी था और स्कन्दपुराण के अनुसार भारत के ७२ देशों में जालन्धर देश भी एक प्रदेश था। अब भी त्रिग्रर्त-कांगड़ा का प्रदेश जालन्धर कहलाता है।

पाणिनि ने त्रिगर्त के ६ संघ राज्यों का उल्लेख किया है जो सभी आयुध-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जीवी थे। काशिका (पाणिनीय सूत्रों का भाष्य) में इनके नाम ये हैं—कौंडोपरथ, दांडकि, क्रौष्टकि, जालमानि, ब्राह्मगुप्त और जानकि।

कुलिंद—"सतलज नदी के दक्षिण टोंस नदी तक का प्रदेश प्राचीन समय में कुलिंद कहलाता था। पाणिनि ने कुलुन का उल्लेख किया है। कुलिंद, कुलुन और कुणिन्द एक ही नाम के रूपान्तर हैं, जिन्हें टालमी कुलिंद्रीन कहा है।"

कलकूट—यह और सभापर्व में उल्लिखित कालकूट एक ही हैं जिसे कुलिंद प्रदेश में स्थित बताया गया है। यह टोंस (तमसा) और यमुना के प्रदेश (देहरादून, कालसी) में पड़ता है।

भारद्वाज—मार्कण्डेय पुराण में भी भारद्वाज जनपद का उल्लेख मिलता है जिसकी पहचान पारजीटर द्वारा गढ़वाल प्रदेश से की गई है।

रंकु—"संभवतः यह अलकनंदा और पिंडर के पूर्व का प्रदेश था जहाँ मल्ला-जुहार और मल्ला-दानपुर की भाषा रंका कहलाती है।

कुरु—यह तीन भागों में विभक्त था—कुरुजांगल, कुरु और कुरुक्षेत्र। कुरुजांगल वन्य प्रदेश था जो सरस्वती के तटवर्ती काम्यकवन से लेकर यमुना के किनारे स्थित खाण्डव वन तक फैला हुआ था। कुरु राष्ट्र या कुरु गंगा-यमुना के बीच स्थित मेरठ कमिश्नरी का इलाका था जिसकी राजधानी हस्तिनापुर थी। कुरुक्षेत्र की स्थिति सरस्वती नदी के दक्षिण और दृषद्वती के उत्तर में थी। साधारण रीति से, इस प्रकार, कुरु राज्य में आधुनिक थानेश्वर, दिल्ली और ऊपरी गंगा द्वाब का अधिकांश भाग सम्मिलित था।

साल्व—इसकी स्थिति उत्तरी राजस्थान और दक्षिणी पंजाब में कहीं थी। डा० अग्रवाल के अनुसार अलवर से उत्तरी बीकानेर तक फैला हुआ प्रदेश ही साल्व देश था।

पाणिनि की अष्टाध्यायी में साल्व, साल्वेय और साल्वावयव का उल्लेख मिलता है। तीनों राज्य पंजाब के मध्य भाग और उत्तर-पूर्व में बिखरे हुए थे और भौगोलिक दृष्टि से एक दूसरे के साथ सटे हुए न थे।

साल्वावयव के अन्तर्गत ६ रजवाड़े थे—

१—उदुंबर	४—युगंधर
२—तिलखल	५—भूलिंग
३—मद्रकार	६—शरदंड

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उदुंबर—इस जाति के पुराने सिक्के कांगड़ा जिले में व्यास और रावी के बीच पाये गये हैं। पठानकोट में भी उदुंबरों के सिक्के पाये गये हैं अतः उदुंबरों का राज्य व्यास के उत्तर और रावी के दक्षिण की संकरी घाटी में स्थित था।

तिलखल—व्यास नदी का दक्षिणी प्रदेश, जो आज भी तिलों की खेती का प्रधान क्षेत्र है, तिलखल राज्य था।

मद्रकार—अष्टाध्यायी में मद्र और भद्र पर्याय हैं। मद्रकार का ही दूसरा नाम भद्रकार ज्ञात होता है। सम्भव है घग्घर के तट पर बीकानेर के उत्तर-पूर्वी कोने में स्थित भद्र नामक स्थान मद्रकारों की प्राचीन राजधानी रही हो।

युगंधर—यह राज्य संभवतः अम्बाला जिले में सरस्वती से यमुना तक फैला हुआ था। सम्भवतः युगंधर वर्तमान जगाधरी (अम्बाला प्रान्त) ही है।

भूलिंग—टॉलमी ने लिखा है कि अरावली के उत्तर-पश्चिम में बोलिंगाई जाति रहती थी। इनकी पहचान भूलिंगों से हो सकती है।

शरदंड—बाल्मीकि रामायण के अनुसार अयोध्या और कैकय राज्यों के बीच शरदंडा नाम की एक नदी बहती थी। इसी नदी की घाटी में स्थित राज्य को शरदंड राज्य कहा गया है। डा० अग्रवाल शरदंडा नदी की पहचान शरावती नदी से करते हैं जो कुरुक्षेत्र की नदी थी। शरावती को दृषद्वती भी कहते थे। आजकल इसका नाम चितांग है।

अश्मक—यह गोदावरी-तट-देश था जिसकी राजधानी प्रतिष्ठान (आधुनिक पैठण) थी।

भौरिक—डा० अग्रवाल कहते हैं कि वैजयंती कोश के अनुसार बंगाल का समतट प्रदेश (दक्षिणी बंगाल) भौरिक कहलाता था।

"इस प्रकार उत्तर में कंबोज, दक्षिण में अश्मक, पश्चिम में सौवीर और पूर्व में सूरमस—इन चार खूंटों के बीच का भूप्रदेश पाणिनि की भौगोलिक परिधि के अंतर्गत था। इतना स्पष्ट है कि पाणिनि का परिचय प्राच्य की अपेक्षा उदीच्य के भूगोल से अधिक घनिष्ठ था" (पा० भा०, पृ० ७६)।

सूत्रों के अतिरिक्त गणपाठ में निम्नलिखित जनपदों के नाम आये हैं—

बर्बर—यह सिंधु सागर संगम के समीप स्थित था जहाँ बर्बरिक नाम का बन्दरगाह था।

कश्मीर—आधुनिक काश्मीर ही है।

उरश—यह आधुनिक हज़ारा प्रान्त (पश्चिमी पाकिस्तान) ही है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दरद—यह उत्तर-पश्चिमी काश्मीर का गिलगित हुंजा प्रदेश है।

गब्दिका--डा० अग्रवाल के अनुसार "धौलाधार से ऊपर चंबा राज्य में गद्दियों का गद्देरन प्रदेश प्राचीन गब्दिका ज्ञात होता है।"

किष्किंधा--डा० अग्रवाल के अनुसार "यह गोरखपुर के पास का प्राचीन खुखुंदो था।"

पटच्चर—इसकी पहचान वर्तमान पटौदी (राज्य) प्रान्त से की गई है जो सरस्वती के दक्षिण में स्थित था। डे के अनुसार (जा०डि०, पृ० १५०) इसमें इलाहाबाद और बांदा जिलों के भाग सम्मिलित थे।

यकृल्लोम--यह "शूरसेन जनपद के दक्षिण जालोन, उरई, कौंच और कालपी का प्रदेश था।"

सर्वसेन--यह एक सूखा प्रदेश था।

नगर

कापिशी--यह कापिश प्रान्त (कोहिस्तान-काफ़िरिस्तान) की राजधानी थी। काबुल से उत्तर-पूर्व हिंदुकुश के दक्षिण आधुनिक बेग्राम प्राचीन कापिशी है जो घोरबंद और पंजशीर नदियों के संगम पर स्थित थी। यहां की बनी हुई कापिशायन मधु प्रसिद्ध थी।

सौवास्तव--यह सुवास्तु या स्वात नदी की घाटी का प्रधान नगर था।

वरणा--इसकी पहचान अस्सकेनाय (आश्वकायन) के दुर्ग-नगर एओरनस से की गई है।

वार्णव--इसकी पहचान बन्नू (पश्चिमी पंजाब) से की गई है।

तक्षशिला--यह पूर्वी गन्धार की राजधानी थी जो अपनी समृद्धि और विद्या, कला तथा संस्कृति के लिए प्रसिद्ध थी। यह उत्तरपथ राजमार्ग पर स्थित व्यापारिक केन्द्र था।

शलातुर—यह पाणिनि का जन्म-स्थान था जिसकी स्थिति सिन्धु-कुभा संगम के कोने में ओहिन्द से चार मील पश्चिम में थी। इस समय यह लहुर कहलाता है।

शर्कर--यह सिन्ध प्रान्त का सक्खर है।

संकल--कठ जाति का नगर था।

अरिष्टपुर--यह शिबि राज्य का नगर था।

गौड़पुर--यह प्राचीन गौड (बंगाल) का एक नगर था।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कपिस्थल--यह कर्नाल (हरियाना प्रदेश) का वर्तमान कैथल नगर था।

कत्रि--सम्भव है कि यह कत्यूर (अल्मोड़ा, उ० प्र०) हो।

हस्तिनापुर--यह हस्तिनापुर (जिला मेरठ) है।

नड्वल--यह मारवाड़ का नाडौल (पृथ्वीराज विजय १०-५०) नगर था।

सांकाश्य--यह संकिसा (फ़र्रुखाबाद जिला उ० प्र०) था।

आसंदीवत्--यह जनमेजय पारिक्षित की राजधानी थी। यह कुरुक्षेत्र के पास स्थित अहिस्थल था।

वलभी (पाणिनि ४-२-८२) पश्चिमी भारत का अति प्रसिद्ध नगर था, जो आगे चलकर सौराष्ट्र के मैत्रकों की राजधानी थी।

उज्जयिनी (पाणिनि ४-२-१२७) अवन्ति की राजधानी थी।

परिच्छेद २

पतंजलि कालीन भारत

भाष्यकारों में पतंजलि मुनि का नाम अत्यधिक महत्वपूर्ण है। उन्होंने पाणिनीय अष्टाध्यायी पर महाभाष्य लिखा जो एक व्याकरण का ही ग्रन्थ है। परन्तु इससे भी तत्कालीन भौगोलिक परिचय मिलता है। पतंजलि पुष्य-मित्र शुंग के समकालीन थे जब देश पर यवनों के आक्रमण हो रहे थे और उत्तर-पश्चिम में वे बस भी गये थे।

पतंजलि के महाभाष्य में आर्यावर्त की मर्यादा को सुरक्षित बनाये रखने का प्रयत्न किया गया था। महाभाष्य का भौमिक विस्तार उत्तर-पश्चिम में यवन-कम्बोज-गन्धार से लेकर पूर्व में अंग-मगध-कलिंग तक और पश्चिम में सिन्धु-सौवीर-सौराष्ट्र तथा दक्षिण में चोल-पाण्ड्य-केरल तक विस्तृत था। हम इस विस्तृत भूखंड में स्थित पवर्तों, नदियों और नगरों का भी उल्लेख पाते हैं।

देश विभाग--पतंजलि के महाभाष्य में निम्नांकित देश-भागों का उल्लेख मिलता है--

१--उदीच्य

२--प्राच्य या प्राग्देश

३--आर्यावर्त

आर्यावर्त--यह शिष्टों का देश था जो हिमालय के दक्षिण, 'आदर्श' के

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पूर्व और कालकवन के पश्चिम में स्थित था। इसकी दक्षिणी सीमा पारियात्र पर्वत थी। **आदर्श** की पहचान अदर्शन या विनशन से की गई है जहाँ पर सरस्वती नदी पटियाला प्रान्त में लुप्त होकर अदृश्य हो जाती है। **पारियात्र** विन्ध्य मेखला का पश्चिमी भाग है। डे के अनुसार कालकवन राजमहल की पहाड़ियाँ हैं। परन्तु चकलदर के अनुसार कालकवन बौद्ध साहित्य का कालकाराम है जो साकेत के पड़ोस में स्थित था। इस प्रकार आर्यावर्त और मध्यदेश एक ही थे।

प्राच्य देश—इसे ही प्राग्देश भी कहते थे। यह आर्यावर्त या मध्य देश के पूर्व स्थित था। इसमें अंग, वंग, पुण्ड्र, सुह्म और कलिंग सम्मिलित थे।

पश्चिम देश—यद्यपि पतंजलि इस देश-विभाग का नामोल्लेख नहीं करते हैं। परन्तु वे इस भूखंड से परिचित थे जैसा कि सिन्धु-सौवीर के उल्लेख से सिद्ध होता है।

दक्षिणापथ—वैयाकरण होने के नाते यह उनका कर्तव्य था कि दक्षिण के भाषा-प्रयोग पर ध्यान देते और वह बताते हैं कि दक्षिणापथ में बड़ी बड़ी झीलों के लिए सरसी शब्द का प्रयोग होता था (आर० जी० भंडारकर के ग्रन्थों का संग्रह, जिल्द ३, पृ० १४)।

पर्वत-नदियाँ और वन

महाभाष्य में निम्नलिखित पर्वतों का उल्लेख है—

हिमवंत—महाभाष्य में निम्नलिखित पर्वतों का उल्लेख हुआ है। **हिमानी** (बर्फ़ का ढेर, ग्लेशियर), **हिमश्राथ** (बर्फ़ का पिघलना), उपत्यका (घाटी), अधित्यका (पठार) के भी उल्लेख मिलते हैं।

पारियात्र—विन्ध्य का पश्चिमी भाग है।

क्रौञ्च पर्वत—यह हिमालय का पूर्वी भाग जो आसाम के उत्तर में स्थित है।

वन

खाण्डव—यह यमुना के किनारे स्थित था जहां खाण्डवप्रस्थ (या इन्द्रप्रस्थ=दिल्ली) बसाया गया था।

नदियाँ

उत्तर पश्चिम भारत की नदियों में पतंजलि **मशकावती** और **उदुम्बरावती** का उल्लेख करते हैं जिनका उल्लेख अष्टाध्यायी में भी है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पंचनद क्षेत्र की नदियों में से पतंजलि केवल सिन्धु की सहायक नदी शुतुद्रि (सतलज) का उल्लेख करते हैं।

इसके अतिरिक्त गंगा, यमुना और सरस्वती का भी उल्लेख है।

इक्षुमती--यह गंगा की सहायक नदी काली है जो ईखन भी कहलाती है। इसी के किनारे संकाश्य (संकिसा) स्थित था।

दाविका--यह देविका ही है जिसका उल्लेख पाणिनि भी करते हैं। पार्जिटर इसकी पहचान डीग से करते हैं। डा० बी० सी० ला के अनुसार यह मद्र देश में बहती थी।

रथस्या--यह एक पवित्र नदी थी जिसकी पहचान डे महोदय राप्ती से करते हैं।

गोमती--संभवतः यह आर्यावर्त की गोमती नदी थी, जो गंगा में गिरती है।

अन्य नदियों--द्रुमती, यवमती--के विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं है।

जनपद

कम्बोज--प्राचीन प्रसिद्ध जनपद है, जिसका उल्लेख बौद्ध साहित्य और पाणिनि की अष्टाध्यायी में भी हुआ है। (विवरण पीछे देखिये)।

कश्मीर--महाभाष्य में काश्मीर-राज्ञी का उल्लेख है। डा० पुरी कहते हैं कि जातक (नं० ४०६) के अनुसार यह गन्धार राज्य में सम्मिलित था।

गन्धार--इसमें काबुल (कुभा) नदी के दक्षिण-तटवर्ती भूभाग जो इसके और सिन्धु नदी के संगम तथा आगे सिन्धु के पूर्व स्थित प्रदेश था जिसमें आधुनिक रावलपिंडी और पेशावर के प्रान्त सम्मिलित थे।

केकय, साल्व, उदुम्बर--विवरण पीछे देखिये।

बोध--इनका सम्बन्ध साल्वों से था, जिनका स्थान पूर्वी पंजाब में था।

दार्व्य--आरियल स्टाइन (राजतरंगिणी, जिल्द १, पृ० ३२, जिल्द २ पृ० ४३२) के अनुसार यह राज्य वितस्ता (झेलम) और चन्द्रभागा (चनाब) के बीच स्थित था।

वसात (या वसाति)--इसकी पहचान यूनानी इतिहासकारों के ओस्स-डिओइ से की गई है। चनाब और सतलज की संयुक्त धारा जहाँ सिन्धु से मिलती है उसके समीप कहीं वसातियों का राज्य था। इनका उल्लेख महा-भारत (सभापर्व ५१-१५) में भी मिलता है। महाभाष्य में उल्लिखित सिन्धु-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सौवीर, मद्र, उशीनर, शिबि, अम्बष्ठ, त्रिगर्त, पारस्कर, और ब्राह्मणक जनपदों का विवरण पाणिनीय अष्टाध्यायी के अनुसार ही है। (विवरण पीछे देखिये)।

वाहीक--यह क्षेत्र सतलज और सिन्धु नदियों के बीच स्थित था। शाकल (स्यालकोट) को वाहीक ग्राम कहा गया है।

जिन्हव--पतंजलि ने इक्ष्वाकु जनपद के साथ साथ जिन्हव (जिन्हवो नाम जनपदः) का भी उल्लेख किया है। इसकी पहचान नहीं की जा सकती है।

मध्यदेश के जनपद--कुरु, पंचाल, कोसल और काशी आर्यावर्त के प्रसिद्ध जनपद थे।

कुरु—विवरण पीछे देखिए।

पंचाल—यह हिमालय की तलहटी से लेकर चम्बल नदी तक फैला था। गंगा नदी इसके दो भाग करती थी—उत्तरी पंचाल और दक्षिणी पंचाल। अहिच्छत्र, कान्यकुब्ज काम्पिल्य और संकाश्य इसके प्रसिद्ध नगर थे।

कोसल—यह वर्तमान अवध है। सम्भवतः साकेत ही इसकी राजधानी थी। अयोध्या भी इसका प्रसिद्ध और पवित्र नगर था जहाँ पुष्यमित्र शुंग का अभिलेख मिला है। अयोध्या का घोषार्ककुण्ड शुंगवंशीय राजा घोष के नाम से सम्बन्धित है (स्कन्द पुराण)।

काशी—इसकी राजधानी वाराणसी गंगा तट पर स्थित (अनुगंगां वाराणसीं) थी।

प्राग्देश (प्राच्य) के जनपद

मगध—दक्षिण बिहार में गंगा के दक्षिण स्थित था। इसकी राजधानी पाटलिपुत्र सोन नदी के तट पर स्थित (अनुशोणम् पाटलिपुत्रम्) था।

अंग—इसका उल्लेख वंग के साथ (अंग वंग) मिलता है। यह बौद्ध युग में प्रसिद्ध राज्य था।

वंग—यह पश्चिमी और मध्य बंगाल है जिसमें पार्जिटर के अनुसार मुर्शिदाबाद, नदिया, जसोर, राजशाही के भाग, पबना, और फ़रीदपुर के प्रान्त सम्मिलित थे।

विदेह और वृजि—बुद्ध-काल में वज्जि संघ में ही विदेह भी सम्मिलित थे। पतंजलि इन दोनों राज्यों का पृथक पृथक उल्लेख करते हैं। इसमें नैपाल की तराई (वृजि) और उत्तरी बिहार के मुज़फ़्फरपुर तथा दरभंगा के प्रान्त सम्मिलित थे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पुण्ड्र—यह उत्तरी बंगाल में बसा राज्य था जिसकी राजधानी पुण्ड्रनगर (महास्थान) थी।

सुह्म--यह दक्षिण-पश्चिमी बंगाल था जिसकी राजधानी ताम्रलिप्ति थी। इस देश का यह नाम (सुह्म) वलि पुत्र सुह्म के नाम पर पड़ा (विष्णु पुराण, ४-१८-१३)।

कलिंग--इस देश का भी यह नाम बलि-पुत्र कलिंग के नाम पर ही पड़ा (विष्णु पुराण, ४-१८-१३)। यह जनपद महानदी और गोदावरी नदियों के बीच स्थित था।

कुन्ति--महाभाष्य में इसका उल्लेख अवन्ति के साथ हुआ है। यह मध्य देश का देश है जिसकी पहचान ग्वालियर प्रान्त के कोंतवार क्षेत्र से की गई है (वेद धरातल, पृ० १४४-१४५)।

अवन्ति--यह बुद्ध-युग का प्रसिद्ध जनपद था जिसकी राजधानी उज्जैनी थी।

दशार्ण--इसकी पहचान पूर्वी मालवा से की गई है जिसकी राजधानी विदिशा थी।

सुराष्ट्र--यह पश्चिम देश का प्रसिद्ध राज्य है जिसे सौराष्ट्र या सिरस्ट्रीन (टॉलमी) भी कहा गया है।

दक्षिणापथ के जनपद

विदर्भ--यह दक्षिण का प्राचीन और प्रसिद्ध जनपद था जिसकी पहचान आधुनिक बरार से की गई है। इसकी राजधानी कुण्डिन (आधुनिक कौण्डिन्य-पुर-अमरावती) थी।

चोड (चोल)--यह कारोमण्डल तट का प्राचीन नाम था। इसकी राजधानी कांची थी।

पाण्ड्य--यह दक्षिण में मलय पर्वत पर ताम्रपर्णी नदी की घाटी में बसा हुआ प्रसिद्ध प्राचीन देश था जिसमें आधुनिक तिनेवली और मदुरा के प्रान्त सम्मिलित थे।

केरल--दक्षिण में आज भी इस नाम का देश वहीं स्थित है जहां प्राचीन काल का केरल स्थित था। मलाबार तट पर मलाबार, ट्रावनकोर, और कनारा के प्रान्त इसमें सम्मिलित थे।

कडेर--इसकी पहचान नहीं की जा सकी है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नगर

महाभाष्य में निम्नलिखित प्रसिद्ध नगरों का उल्लेख मिलता है—

तक्षशिला--यह उदीच्य में स्थित गन्धार की राजधानी थी।

मथुरा--उत्तर-पथ के राजमार्ग पर स्थित व्यापारिक मंडी थी।

सांकाश्य (संकिशा और काम्पिल्य) नामक नगरों का उल्लेख (महाभाष्य, २-१-४१, सिद्धिशुष्कपक्वबन्धैश्च सूत्र) में होता है—

'काम्पिल्य सिद्धः और सांकाश्य सिद्धः।

ये दोनों ही नगर प्रसिद्ध और पवित्र स्थान थे।

कान्यकुब्ज--यह आधुनिक कनौज है।

साकेत--कोसल का प्रसिद्ध नगर था जहां यवनों ने आक्रमण किया था।

वाराणसी--काशी की राजधानी थी।

कौशाम्बी--वत्स देश की राजधानी थी। यहाँ मित्र कुल के सिक्के प्राप्त हुए हैं।

हस्तिनापुर--(जिला मेरठ) कुरु राज्य का मुख्य नगर था।

उज्जयिनी--अवन्ति देश की राजधानी तथा प्रसिद्ध प्राचीन नगर था।

माहिष्मती--यह भी दक्षिण अवन्ति की राजधानी थी जिसका सम्बन्ध हैहय वंशीय क्षत्रियों से रहा था। नर्मदा तट पर स्थित यह आधुनिक महेश्वर या महेश ही है जो इन्दौर से ४० मील दक्षिण में स्थित है।

नासिक्य--यह आधुनिक नासिक है।

कांचीपुर--यह द्रविड़ देश में स्थित चोल राज्य की राजधानी थी।

इस प्रकार स्पष्ट है कि महाभाष्य प्राचीन भारतीय भूगोल के अध्ययन का महत्वपूर्ण साधन है।

पाठ्य-ग्रन्थ

डा० वासुदेव शरण अग्रवाल—पाणिनि कालीन भारतवर्ष

डा० बी० यन० पुरी—इण्डिया इन दि टाइम ऑफ़ पतञ्जलि

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अध्याय ५

महाभारत में वर्णित भूगोल

महाभारत हिन्दू संस्कृति और सभ्यता का विश्वकोश ही है। इसे प्राचीन भारतीय भूगोल का कोश भी कह सकते हैं और इस दृष्टिकोण से अभी तक इसका सम्यक विवेचन नहीं हो सका है। केवल भीष्मपर्व के जम्बूखण्ड विनिर्माण पर्व (अध्याय ९) में ही भारतवर्ष के गौरव ('भारत-कीर्तन'), पर्वतों, नदियों और जनपदों की विस्तृत तालिका दी गई है। अन्य स्थलों से भी समेट कर भौगोलिक विवरणों के लिए एक स्वतन्त्र ग्रन्थ की आवश्यकता है। केवल सभापर्व के उपायनपर्व के कुछ अध्यायों की सामग्री से ही डा० मोतीचन्द्र का एक सुन्दर ग्रन्थ प्रकाशित हो चुका है (महाभारत-उपायनपर्व, लखनऊ, १९४५)।

इस प्रकार महाभारतीय भूगोल का विशेष महत्व है। इसमें (हमने गीता प्रेस संस्करण का ही प्रयोग किया है)।

निम्नलिखित अंशों या अध्यायों का महत्व हैं—

१—भुवनकोश-वर्णन—(भीष्मपर्व में जम्बूखण्ड विनिर्माण पर्व, अध्याय ९ तथा भूमि पर्व)।

२—दिग्विजय-वर्णन—महाभारत में महाराज पांडु, कृष्ण, कर्ण और पांडव वीरों—अर्जुन, भीम, सहदेव तथा नकुल (सभापर्व)—की दिग्विजयों में प्राप्त देश तालिकाएँ भौगोलिक ज्ञान में अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। इसमें अर्जुन की उदीच्य-विजय, भीम द्वारा प्राच्य-विजय, सहदेव की दक्षिणविजय और नकुल की पश्चिम विजय से देश के उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम में स्थित देशों तथा जातियों का वर्णन मिलता है। इसी पर्व में ही उपायन पर्व है।

३—तीर्थ-यात्राएँ—विभिन्न व्यक्तियों की तीर्थ यात्राओं के अतिरिक्त पांडवों, विशेषकर अर्जुन की तीर्थयात्रा का विवरण महत्वपूर्ण हैं। पांडवों के पुरोहित धौम्य, ऋषि द्वारा विभिन्न दिशाओं में स्थित तीर्थों का वर्णन (तीर्थ-यात्रा पर्व) भौगोलिक दृष्टिकोण से अत्यन्त महत्वपूर्ण है (आरण्यक पर्व, अ० ८०-१५३)।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

४—कृष्ण, भीम और अर्जुन की मगध यात्रा भी मध्यदेश और पूर्व देश के बीच गमनागमन पर विशेष प्रकाश डालता है। ये तीनों हिमालय की तराई में होते हुए विदेह पहुँचे और वहां से सीधे मगध को उतर आये।

भौमिक विस्तार—महाभारत के अध्ययन से उत्तर पश्चिम में पूर्वी अफ़गानिस्तान और वक्षु नदी की घाटी, यवन, शक, पह्लव, बर्बर, दरद, खस, कम्बोज और काश्मीर–से लेकर पूर्व में प्राग्ज्योतिष और लौहित्य तक तथा उत्तर में हिमवन्त से लेकर दक्षिण में कन्यातीर्थ (केप कुमारी) और सिंहल तक विस्तृत था। इसी प्रकार पश्चिम में प्रभास (सौराष्ट्र-काठियावाड़) से लेकर ताम्रलिप्ति तक महाभारत का भौमिक विस्तार हो चुका था। अर्जुन का विजित क्षेत्र हमको मध्य एशिया तक ले जाता है। प्राचीन भारत के गण राज्यों, विशेषकर पजाब में बसी हुई गणजातियों, का वर्णन मिलता है।

युधिष्ठिर के पूर्व भारत टूटा हुआ तथा बिखरा हुआ था। कृष्ण ने अर्जुन आदि की सहायता से इसे एक सुदृढ़ धरणि-बन्ध में बांध दिया। इस प्रकार भारत का वृहत्क्षेत्र (विशाला बहुलाभूमिः, सभापर्व १५-४) एकता के सूत्र में बँध गया था, जिसकी परिक्रमा करने के बाद पांडव इसे छोड़ कर महाप्रस्थान पर चले गए। नीचे हम जम्बूखण्ड विनिर्माणपर्व (भीष्मपर्व अ० ४–१३ गीता प्रेस संस्करण) के आधार पर ही भारतवर्ष का वर्णन दे रहे हैं। इसे यहाँ भूमिपर्व भी कहा गया है जिसमें भूमि और इसके द्वीपों का वर्णन मिलता है।

भूमि—धृतराष्ट्र ने संजय से कहा कि "यह भूमि बहुत गुणों वाली है (बहुगुणा भूमिः, ४-५)। इसलिये तुम इस भूमि के गुणों, तथा विभिन्न देशों और नगरों का वर्णन करो जहाँ विभिन्न राजा लोग कुरुक्षेत्र में युद्ध करने आए हैं (४-६-७)।" धृतराष्ट्र ने संजय से यह भी कहा कि "नदियों, पर्वतों तथा जनपदों के नामों को बताइये (५-१)।" संजय ने कहा कि यह सत्य ही है कि भूमि पर ही सब कुछ पैदा होता है और भूमि में ही सब कुछ विलीन हो जाता है। भूमि ही सभी प्राणियों की प्रतिष्ठा और भूमि ही सबका परम आश्रय है (४-२०)। भूमि ही माता, पिता और स्वर्ग है (९-७६)। भूमि की स्तुति और वन्दना करना चाहिए (स्तोतव्या पृथिवी, अनुशासन पर्व ९१-२५), क्योंकि वह सभी प्राणियों की माँ है (अनुशासन पर्व ३४-२१)।

द्वीप संस्थान (१२-६९)

द्वीप-संस्थान का वर्णन करते हुए संजय ने द्वीपों की स्थिति और वहाँ

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

स्थित 'वर्षों' तथा पर्वतों और लोगों का वर्णन किया है (१२-३९)। यहीं पौराणिक विद्वानों (पौराणिक बुधाः, १२-४२) का भी उल्लेख है, जिससे इस भौगोलिक विवरण पर पुराणों का प्रभाव स्पष्टतः परिलक्षित होता है। पौराणिक परम्परा का अनुसरण करते हुए ही यहाँ महाभारत में भुवन-कोश का वर्णन किया गया है। पौराणिक-भुवनकोश के अनुसार भूमि सात द्वीपों में विभक्त थी और ये सातों द्वीप सात समुद्रों से घिरे हुए थे। परिमाण में ये द्वीप और समुद्र अपने से पहले द्वीप या समुद्र से दुगुने थे। महाभारत भी ऐसा ही उल्लेख करता है। जम्बूखण्ड, (जम्बूद्वीप) के वर्णन के बाद शाकद्वीप, कुशद्वीप, शाल्मलिद्वीप, क्रौञ्च द्वीप, (११-२-३) आदि सप्तद्वीपों (११-४) और उनके समुद्रों का भी वर्णन किया गया है।

जम्बू द्वीप—यह १८६०० योजन विस्तार वाला द्वीप जम्बूपर्वत से सुशोभित और लवणसमुद्र से घिरा हुआ है।

इसमें बहुत से जनपद हैं। यह मणि-मूंगों और बहुत सी धातुओं से युक्त पर्वतों से सुशोभित हैं, जहाँ सिद्ध पुरुष निवास करते हैं (११-५-७)।

सुदर्शन द्वीप--जम्बूखण्ड विनिर्माण पर्व में जम्बूद्वीप को सुदर्शन द्वीप कहा गया है। यह द्वीप चक्र की भाँति गोलाकार स्थित है। नाना प्रकार की नदियों, पर्वतों, जनपदों और नगरों तथा पुष्पफलों से युक्त वृक्षों से भरा हुआ यह सम्पन्न (सम्पन्नधनधान्यवान्) द्वीप है (५-१३-१५)।

इसमें ६ वर्ष—पर्वत पूर्व से पश्चिम की ओर पूर्वी तथा पश्चिमी समुद्रों को छूते हुए स्थित हैं। उनके नाम--हिमवान्, हेमकूट, निषध, नील, श्वेत और शृङ्गवान—हैं (६-३-४)। इनके बीच सहस्रों योजन विस्तृत क्षेत्र में बहुत से वर्ष और जनपद हैं जिनमें नाना जातियों के प्राणी निवास करते हैं।

जम्बूद्वीप के वर्ष--जम्बूद्वीप के निम्नलिखित वर्ष (खण्ड) हैं--**भारतवर्ष**, इससे आगे (हिमालय के उत्तर) **हैमवत वर्ष**, हेमकूट पर्वत से आगे **हरिवर्ष** है। हरिवर्ष नील पर्वत के दक्षिण तथा निषध पर्वत के उत्तर स्थित है (६-७-८)। नीलपर्वत से उतर **श्वेतवर्ष** और श्वेतवर्ष के उत्तर **हिरण्यकवर्ष** है। पुनः **ऐरावत** और **इलावृत** वर्ष हैं (६-३७-३८)। ये ही जम्बूद्वीप के सात वर्ष हैं। इस वर्णन के साथ ही साथ बताया गया है कि हेमकूट पर्वत ही कैलास है (६-४१)। इसके उत्तर में मैनाक पर्वत है (६-४२) जिसकी पहचान काराकोरम पर्वत से होनी चाहिए। निषध पर्वत को गन्धर्वों (गन्धार के निवासियों) का निवास स्थान (गन्धर्वा निषधे, ६-५२) कहा गया है। अतः निषध

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पर्वत की पहचान काबुल (परोपनिसडाय) के निकटस्थ हिन्दूकुश की पहाड़ियों से हो सकती हैं। संक्षेप में हम यह कह सकते हैं कि पुराणों और महाभारत के अनुसार जम्बूद्वीप आधुनिक एशिया ही था।

चार द्वीप

मेरु पर्वत के आसपास चार द्वीप--भद्राश्व, केतुमाल, जम्बूद्वीप और उत्तर कुरु--बताये गये हैं (६-१३)। जम्बूद्वीप को ही सुदर्शन द्वीप भी कहते थे (७।१८-२०); क्योंकि सुदर्शन नामक महान् जम्बूवृक्ष था। इन अन्य द्वीपों की पहचान इस समय नहीं हो सकती है।

महाभारत कालीन भारत--महाभारत के समय राष्ट्र छोटे छोटे अनेक राज्यों में बँटा था। पांडु और धृतराष्ट्र के समय कुरु राष्ट्र की उन्नति हुई थी। पांडु ने दिग्विजय द्वारा शक्ति बढ़ाई थी। उनकी मृत्यु के बाद अन्धे धृतराष्ट्र के समय दुर्योधन ने कलह और अनीति से अव्यवस्था पैदा कर दी। कृष्ण ने युधिष्ठिर को सम्राट बनने की प्रेरणा देते हुए तत्कालीन राजनैतिक भूगोल पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया--

इस समय मगध में जरासंध सम्राट था, जिसका सेनापति शिशुपाल, चेदि-नरेश था। करूष (बिहार प्रदेश का शाहाबाद प्रान्त), कलिंग, कामरूप आदि-सभी दिशाओं के राजा उस मगध-राज्य के आधीन थे। पौण्ड्रक वासुदेव वंग, पुण्ड्र और जंगली तथा पर्वतीय (नाग आदि) जातियों-किरातों का स्वामी था। उदीच्य में भोज जाति की १८ शाखाएँ राज्य करती थीं, वे भाग कर पश्चिम (सौराष्ट्र) में चले गये थे। इसी प्रकार शूरसेन, भद्रकार, बोध, शाल्व, पटच्चर, सुस्थल, सुकुट्ट आदि दक्षिण को भाग गये थे। अस्तु स्पष्ट है कि इस युग में जरासंध के भय से आतंक का राज्य था जिसका अन्त कर कृष्ण ने धर्मराज्य की स्थापना करायी। इस के फलस्वरूप 'भारती' शक्ति की स्थापना से पुनः भारत गौरव के शिखर पर चढ़ गया।

नीचे हम भीष्म पर्व के आधार पर भारत का वर्णन देते हैं--

भारतवर्ष

इदं तु भारतं वर्षं यत्र वर्तामहे वयम्।
पूर्वैः प्रवर्तितं पुण्यं तत् सर्वं श्रुतवानसि ।। भीष्मपर्व १२-५२

जहाँ हम रहते हैं वह पुण्य भूमि भारत है। वहीं हमारे पूर्वजों ने पुण्य कर्म किए थे।

कुलपर्वताः--इसमें सात कुलपर्वत हैं--महेन्द्र, मलय, सह्य, शुक्तिमान्,

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ऋक्षवान्, विन्ध्य और पारियात्र (९-११)। इनके आसपास हजारों अन्य पर्वत हैं।

महेन्द्र—पूर्वी घाट की पर्वतीय श्रृंखला।

सह्य--पश्चिमी घाट की पहाड़ियाँ।

मलय--पश्चिमी घाट का दक्षिणी भाग मलय कहलाता है।

ऋक्षपर्वत--सतपुड़ा।

शुक्तिमान्--हैदराबाद और गोलकुंडा की पहाड़ियाँ।

विन्ध्य--विन्ध्याचल।

पारियात्र--विन्ध्याचल का पश्चिमी भाग है। (दृष्टव्य-प्राचीन भारत का भौगोलिक स्वरूप पृ० १९-२२)

नदियाँ

महाभारत में दी हुई नदियों की तालिका निम्नलिखित है—

गंगा, सिन्धु, सरस्वती, गोदावरी, नर्मदा, बाहूदा, (धवला, धुमेला या बूढ़ी राप्ती) महानदी, शतद्रू (सतलज), चन्द्रभागा (चिनाब), यमुना, दृषद्वती (चितंग), विपाश (व्यास), वेत्रवती (बेतवा), कृष्णवेणा (कृष्णा और वेणा की मिली हूई धारा), इरावती (रावी), वितस्ता (झेलम), पयोष्णी (विदर्भ=बरार में बहने वाली ताप्ती की सहायक नदी), देविका (आधुनिक दीग, जो रावी की सहायक नदी है), वेदस्मृता (वेसुला, मालवा की नदी है), वेदवती, त्रिदिवा, इक्षुला, कृमि, करीषिणी, चित्रवाहा, चित्रसेना, गोमती (गंगा की सहायक, नैमिष गोमती), धूतपापा (गंगा की सहायक), वन्दना, कौशिकी (कोसी, बिहार प्रदेश), लोहित (आसाम में ब्रह्मपुत्र का ऊपरी भाग), सरयू (अवध की सरजू), चर्मण्वती (चम्बल), शरावती, पयोष्णी, वेणा (दक्षिण की नदी, जो कृष्णा की सहायक नदी है), भीमरथी (भीमा, जो कृष्णा की सहायक नदी है), कावेरी, चुलुका, सिन्धु (मध्य प्रदेश की सिन्धु), महेन्द्रा, पाटलावती, असिक्नी (=चन्द्रभागा या चिनाब), घृतवती, सदानीरा (गण्डक), गौरी (पंजकोरा), कम्पना, हिरण्वती (कुरुक्षेत्र के पास बहने वाली), विदिशा (विदिशा के पास बहने वाली नदी, मध्य प्रदेश), शोण (गंगा की सहायक सोन नदी), रोही (रोहिण, राप्ती की सहायक नदी जो शाक्यों और कोलियों के राज्यों की सीमा बनाती थी), तमसा (टोंस, देहरादून के पास बहने वाली, उ० प्र०), वराणसी (वरणा+असी, बनारस, उ० प्र० की नदियाँ), पर्णाशा (बनास, राजस्थान), कृष्णा, मन्दाकिनी,

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वैतरणी, शुक्तिमती (चेदि देश की नदी) लोहित्य (ब्रह्मपुत्र), करतोया, कुमारी, ऋषिकुल्या, आदि। ये सभी गंगा के समान पवित्र माताएँ मानी गईं हैं (९।१४-३७)।

यह नदी-सूची बहुत ही विस्तृत है। इसमें पौराणिक नदी-तालिकाओं का प्रभाव स्पष्ट है। पुराणों में जिन पर्वतों से ये निकलती हैं उन पर्वतों के सम्बन्ध से वर्णन मिलता है, जो यहाँ पर नहीं मिलता है। इनके विशेष अध्ययन के लिए देखिए, 'रिवर्स ऑफ़ इण्डिया' (बी. सी. ला)।

जनपद-सूची

नदियों की भांति ही जनपद-तालिका भी विस्तृत है और इसमें उनकी देश भाग-स्थिति का ध्यान नहीं रखा गया है। जनपद-सूची के अन्त में यह कहा गया है—"ये तथा और भी पूर्व और उत्तर दिशा के जनपदों (जनपदाः प्राच्योदीच्याः) का संक्षिप्त विवरण दिया है।" यह तालिका मध्य देश से प्रारम्भ होती है (तत्रेमे कुरुपाञ्चाला········९।३९-४०)। यहां मध्य देश का उल्लेख नहीं है। परन्तु पौराणिक सूचियों में ये पंक्तियाँ मध्य देश से सम्बद्ध हैं। "दक्षिणा जनपदा" (दक्षिण के जनपदों, ९-५८) का भी उल्लेख है। इन उल्लेखों से सिद्ध होता है कि इस जनपद-सूची का संकलन करने वाला देश-विभागों से परिचित था।

इस जनपद-सूची में कई जनपद बार-बार आये हैं और कई जनपद ऐसे हैं जिनकी स्थिति के विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं है। डा० सरकार (जाग्रफ़ी आफ़ ऐन्शेन्ट ऐण्ड मेडिवल इण्डिया, पृ० २१) ने भी कुछ जनपदों का उल्लेख किया है (६।३९-४०)। हम केवल उन्हीं जनपदों का वर्णन करेंगे जो प्रसिद्ध हैं और जिनकी स्थिति भी ज्ञात है—

कुरु, पाञ्चाल, शाल्व, माद्रेय, जांगल, शूरसेन, पुलिन्द, बोध, माल, मत्स्य, कुन्ति, कोसल, चेदि, करूष, भोज, सिन्धु (सिन्धु-पुलिन्द), उत्तमाश्व, दशार्ण, मेकल, उत्कल, कोसल, गोध, मद्र, कलिंग, काशि, अपरकाशि, जठर, कुक्कुर, अवन्ति, अपरकुन्ति, गोमन्त, विदर्भ, अश्मक, पाण्डुराष्ट्र, गोपराष्ट्र, अधिराज्य, मल्लराष्ट्र, वारवास्य, चक्राति, शक, विदेह, मगध, अंग, वंग, यक्रल्लोम, मल्ल, माहिक, वाल्हिक, वाटधान, आभीर, कालतोय, अपरान्त, चर्ममण्डल, अटवी, स्वराष्ट्र, केकय, कुन्दापरान्त, माहेय, कक्ष, सामुद्रनिष्कुट, अन्ध्र, अन्तर्गिरि, बहिर्गिरि, समन्तर, प्रावृषेय, भार्गव, पुण्ड्र, भर्ग, किरात, यामुन, शक, निषाद, निषध, आनर्त, नैॠत, कुन्तल, कोसल, तिलभार, मधु-

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मन्त, काश्मीर, सिन्धु-सौवीर, गान्धार, अभिसार, उलूत, बाल्हिक, दार्वी, वानव, दर्व, उरग, सुदामा, करीषक, कुलिन्द, वनायव, दश, पार्श्वरोम, कुशबिन्दु, कच्छ, गोपालकक्ष, जांगल, कुरुवर्णक, किरात, बर्बर, वैदेह, ताम्रलिप्तक, ओण्ड्र, म्लेच्छ, सेसिरिध्र और पार्वतीय (६।३९-५७)। "जो दक्षिण दिशा के अन्य जनपद हैं उनको जानो (अथापरे **जनपदा दक्षिणा**, ६-५८)—

द्रविड, केरल, भूषिका, वनवासिक, कर्णाटक, महिषक, मूषक, कुन्तल, कौकुट्टक, चोल, कोंकण, मालव, कुकुर, विन्ध्य-चुलिक, पुलिन्द, करट, ऋषिक, विदर्भ, काक, तंगण और परतंगण, आदि।

उत्तराश्चापर (उत्तर और पश्चिम के) म्लेच्छ—यवन, चीन और काम्बोज (ये उग्र म्लेच्छ थे), हूण, पारसीक, रमण-चीन, शूद्राभीर, दरद, काश्मीर, खाशीर और पह्लव, आदि।

किरातों (किरात जातियों) के जनपद—आत्रेय, भरद्वाज, स्तनपोषिक, प्रोषक, और कलिंग आदि।

तोमर, हन्यमान और करभंजक। ये प्राच्य, उदीच्य, दक्षिण, और पश्चिम तथा मध्यदेश के जनपदों की तालिका (६।३९-६९) है, जिसमें दो सौ से ऊपर जनपदों का उल्लेख है। कहीं कहीं, एक जनपद का कई बार नाम आया है। बहुत से नए नाम हैं और कुछ नामों में 'क्रिटिकल एडिशन' वाले महाभारत में भी सन्देह है।

इस देश-सूची से ही महाभारत का भौगोलिक महत्व सिद्ध होता है। यह भी ज्ञात होता है कि इन जनपदों का वर्गीकरण करने का भी प्रयत्न किया गया था। हमें दिग्विजय के अनुसार जनपद-वर्णन विभिन्न दिग्विजयों के वर्णन से मिलता है। महाभारत के अन्य अध्यायों में भी देशों और दिग्विभागों का उल्लेख मिलता है—

१—पांडु विजय (आदिपर्व ११२।२४-२९)

नागपुर (हस्तिनापुर) के राजा पांडु की विजय भी सम्पूर्ण मही-विजय (आदि पर्व ११२-२१, ३२,३३) कही गयी है। परन्तु विजित-देशों में **काशी, दशार्ण** (=पूर्वी मालवा), **मगध** राष्ट्र और इसकी राजधानी राजगृह (दक्षिणी बिहार), मिथिला के **विदेहों** (उत्तरी बिहार), **पुण्ड्र** (उत्तरी बंगाल) और **सुह्म** (दक्षिणी पश्चिमी बंगाल) नामक देशों का ही उल्लेख किया गया है। यह भौगोलिक विवरण निस्सन्देह बुद्ध-पूर्व युग का है।

अन्त में पाण्डु राज्य छोड़ कर हिमालय पर चले गए जहाँ **हिमवन्त गिरि के महाशालवन में** (आदिपर्व, ११२-८) निवास करने लगे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

२—**व्युषिताश्व की दिग्विजय**—एक पौराणी कथा है कि महाराज व्युषिताश्व ने **प्राच्य, उदीच्य, पाश्चात्य और दाक्षिणात्य दिशाओं** को जीतकर अश्वमेध यज्ञ की थी (आदि पर्व १२०-१२)।

३—**कर्ण दिग्विजय** (वनपर्व अ० २५४)

कर्ण ने भी दिग्विजय की जिसमें निम्नलिखित नगरों और देशों का उल्लेख है—

द्रुपदपुर (वनपर्व २५४-१)

यह दक्षिण पांचाल के राजा द्रुपद की राजधानी काम्पिल्य थी।

फिर उत्तर दिशा में जाकर हिमालय पर स्थित देशों (**हैमवतिकान्**, वनपर्व २५४-६) को जीता।

नेपाल विषय (वनपर्व २५४-७) आधुनिक नैपाल।

यहाँ से आगे कर्ण पूर्व-दिशा की ओर बढ़े जहाँ निम्नलिखित देशों को जीता--

अंग, वंग, कलिंग, शुण्डिक, मिथिला, मगध, कर्कखण्ड, आवशीर, योध्य और अहिक्षत्र (वनपर्व २५४।८-९)।

फिर पूर्व दिशा को जीतने के बाद उन्होंने वत्सभूमि, मृत्तिकावती, मोहनपत्तन, त्रिपुरी और कोसल (दक्षिण कोसल) को जीता। उन्होंने दक्षिण दिशा की भी विजय की (वनपर्व २५४-१४-१५)। पश्चिम दिशा में अवन्ति, वृष्णिसंघ, यवनों और बर्बरों को जीता। इस विजय के बाद उसने निम्नलिखित गणों को जीता--

आटविक, भद्र, रोहितक (योधेय गण), आग्रेय, और मालव आदि (वनपर्व २५४।१९-२०)।

४--**कृष्ण विजय**--कृष्ण के पराक्रम का वर्णन करते हुए बताया गया है कि कृष्ण ने निम्नलिखित देशों को जीता था--

अंग, वंग, कलिंग, मगध, काशि, कोसल, वात्स्य (वत्स), गार्ग्य, करुष, पौण्ड्र, (इनमें अधिकांशतः, पूर्व देशीय जनपद हैं); अवन्ति, दक्षिणात्य, पार्वतीय, दशेरक, काश्मीर, उरस, मुद्गल, काम्बोज, वाटधान, चोल, पाण्ड्य, त्रिगर्त, मालव, दरद, खश, शक और यवन (कालयवन)।

द्रौपदी स्वयंवर (आदिपर्व १८५।६-२३) दक्षिण पंचाल की राजधानी में नाना जनपदों के राजा सम्मिलित हुए थे। ये जनपद निम्नलिखित हैं--

कम्बोज, गान्धार, कलिंग, ताम्रलिप्त, मद्र, शिबि-उशीनर, पटच्चर,

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कारूष, वृष्णि-गण, सिन्धु देश, बाह्लीक, वत्स, कोसल और चेदि का शिशुपाल, तथा मगध का जरासंध।

दिग्विजय पर्व--सार्वभौम पद प्राप्त करने के लिए दिग्विजय करना आवश्यक था। अतः—

१—अर्जुन **उदीची** (उत्तर) दिशा को जीतने गये;

२—भीम ने **प्राची** (पूर्व) दिशा की विजय की;

३—सहदेव **याम्या** (दक्षिण) और

४—नकुल प्रतीची (पश्चिम) दिशा को जीतने गए।

इन विजयों के वर्णन में विभिन्न देशों की विभिन्न दिशाओं में स्थिति का भी ज्ञान होता है। इन्हीं देशों के पराजित राजा युधिष्ठिर की सभा में भेंटें ले आए थे, जिससे उन देशों की उपजों का भी ज्ञान होता है।

उत्तर दिग्विजय (अर्जुन)—पहले अर्जुन हिमालय की तलहटी में गढ़वाल-टेहरी (कुलिन्द विषय) होते हुए किरातों और कामरूप (प्राग्ज्योतिष=गौहाटी) तक जीतते हुए समुद्र के निकट तक चले गए (सभापर्व अ० २६)। फिर वे हिमालय पर चढ़े। अन्तर्गिरि, बहिर्गिरि और उपगिरि (हिमालय की तीन श्रेणियों) में रहने वाले पार्वत्यों को जीतकर **उलूक**, मोदापुर और सुदामा, पंचगण देशों, देवप्रस्थ, पौरव राज्य, उत्सवसंकेत-गण, काश्मीर, त्रिगर्त, दार्व, अभिसार, उरग (उरस), सिंहपुर, बाह्लीक, दरद, काम्बोज, लोह, परमकाम्बोज, ऋषिक् और अन्य उत्तर के लोगों को जीता। इस प्रकार अर्जुन ने हिमवन्त प्रदेश को जीता (सभापर्व, अध्याय २७)।

हिमवन्त से आगे श्वेत पर्वत पार कर किम्पुरुष देश, हाटक देश और गन्धर्व रक्षित देश को भी जीता। पुनः हेमकूट (कैलास पर्वत) को पार कर हरिवर्ष, निषध पर्वत पर पहुँच कर इलावृत और फिर मेरु तक विजय प्राप्त की। मेरु पर्वत आधुनिक पामीर ही है।

यहाँ से वह पश्चिम की ओर मुड़े तथा केतुमाल वर्ष को जीतते हुए फिर इलावृत वर्ष में आ पहुँचे। यहाँ से पूर्व जाकर मेरु और मन्दर पर्वत के बीच बहने वाली शैलोदा नदी के किनारे बांसों के पेड़ों से होते हुए खश, झष, नद्योत, प्रघस, दीर्घवेणिक, पशुप, कुलिन्द, तंगण और परतंगण नामक जातियों को जीत कर माल्यवान् पर्वत पर गए जहाँ भद्राश्व वर्ष को भी जीता। फिर नीलगिरि पार रम्यक वर्ष, और हिरण्यक वर्ष (ईरान ?) को जीता। इस प्रकार अर्जुन ने उत्तर में स्थित हिमालय के पार मध्य एशिया तक देशों की विजय की।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इस दिग्विजय वर्णन में उल्लिखित जनपदों में निम्नलिखित जनपद प्रसिद्ध हैं—

कुलिन्द विषय
कालकूट
शाकलद्वीप
प्राग्ज्योतिष-किरात-चीन
सागरानूप

उपर्युक्त सभी देश हिमालय की तराई (उपगिरि) में स्थित होना चाहिए।

कुलिन्द-विषय—इस प्रदेश में सम्पूर्ण गढ़वाल-टेहरी क्षेत्र और सहारनपुर प्रान्त का उत्तरी पहाड़ी भाग भी सम्मिलित था। इसमें सतलज, यमुना, टोंस और गंगा के उत्तरी भाग जो पहाड़ी हिस्सों में हैं सम्मिलित थे। यही टालमी का 'कुलिन्द्रिनि' और सिक्कों वाले कुनिन्दों का देश है। डे (ज्याग्रिफ़िकल डिक्शनरी, पृ० १०६) के अनुसार इसमें कुलूत देश भी सम्मिलित था।

महाभारत के अनुसार भी कुलिन्दोपत्यकाः=कुलिन्द की पहाड़ी घाटियाँ (भीष्म पर्व ९-५५) पार्वतीय (भीष्म पर्व ९-५७) देश था। महाभारत में इसका बहुत ही सुन्दर वर्णन मिलता है। अर्जुन को देखने के लिए युधिष्ठिर, भीम, नकुल, सहदेव और द्रौपदी गन्धमादन पर्वत (बद्रीनारायण) की ओर गए। गंगाद्वार (हरद्वार) होते हुए (वनपर्व १४०-७) वे सुबाहु-विषय (सुबाहु के राज्य) में पहुँचे (वनपर्व १४०-२४)। यही कुलिन्द-विषय था—

"यह कुलिन्द-राज सुबाहु का राज्य था, जहाँ सैकड़ों **किरात, तंगण**, एवं कुलिन्दों का निवास था। यह देवताओं से सेवित देश हिमालय के निकट (उपगिरि) ही था। यहाँ बहुत ही आश्चर्यमय वस्तुएँ भरी पड़ी हैं (वनपर्व १४०।२५-२९)।

वे सभी लोग वापसी में भी जब उसी मार्ग से लौटे तो फिर सुबाहु-विषय से होकर निकले। यहाँ सुबाहु को किरातों का राजा कहा गया है (किरात-राज्ञो विषयं सुबाहोः, वनपर्व १४०-११)। कुलिन्द देश में कई भू-भाग सम्मिलित थे (देशान् कुलिन्दस्य च भूमिरत्नान्, वनपर्व १४०-१२)। ये निम्नलिखित थे—

१. **किरात**—सुबाहु स्वयं किरात था। किरात हिमालय की एक पर्वतीय जाति थी (हिमवद् दुर्गनिलयाः किराता रणकर्कशाः। द्रोण पर्व ४-७)

२. **तंगण-विषय**—यह भी गढ़वाल में स्थित था। इसकी राजधानी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तंगणपुर जोषीमठ (पौड़ी) के निकट ही गढ़वाल में स्थित था (एपीग्रेफ़िका इंडिका, ३१, पृ० २८६)।

३. **कुलिन्द**—ये कुलिन्द और कुणिन्द या कुनिन्द एक ही हैं।

कुलिन्दों और तंगणों को पत्थर से लड़ने वाला कहा गया है (पाषाण-पाणयः, द्रोणपर्व १२१-१४; पाषाणयोधिनाम्, द्रोणपर्व १२१-१५; १२१।४२-४३)।

ये कुलिन्द-लोग पाण्डवों की ओर से हैमवत (हिमालय में उत्पन्न होने वाले) हाथियों पर सवार होकर कौरवों के विरुद्ध लड़े थे (कर्णपर्व ८५।४-५)। धनुष-बाणों, तोमर और अन्य आयुधों से भी वे युद्ध करते थे। कुलिन्द राजकुमार लड़ता हुआ मारा गया था (कर्ण पर्व ८५-६-८)। अश्वमेध से सम्बन्धित अश्व की रक्षा करते हुए अर्जुन ने किरातों और तंगणों को भी पराजित किया था (आश्वमेधिक पर्व ८३-४)।

कालकूट—सभा पर्व के अनुसार कालकूट कुलिंद प्रदेश में था (सभा पर्व २६-३-४)।……जब अर्जुन, कृष्ण और भीम जरासंध का बध करने मगध को गए थे, तो मार्ग में कालकूट से होकर गए थे। डा० अग्रवाल के अनुसार इसकी पहचान यामुनदेश, यमुना-प्रान्त (देहरादून, कालसी) से की गई है (पाणिनि कालीन भारतवर्ष, पृ० ६९-७०)।

शाकलद्वीप—इसकी पहचान वर्तमान 'संगल तिब' (कनिंघम-ऐंशेंट ज्याग्रफ़ी, पृ० १५१) से की जा सकती है; क्योंकि संगल तो साकल है और 'तिब' भी द्वीप या दीप, 'दिब' का अपभ्रंश रूप मालूम होता है। साकल की पहचान मद्र देश की राजधानी स्यालकोट से की गई है। अतः सम्भव है कि शाकल या शाकल द्वीप एक ही हों।

प्राग्ज्योतिष—प्राग्ज्योतिष नाम का दुर्ग-पुर (प्राग्ज्योतिषं नाम बभूव दुर्गं पुरं, उद्योग पर्व ४८-८०) या हिमालय के पूर्वी छोर पर स्थित कामरूप (आसाम) ही प्राग्ज्योतिष कहलाता था। इस देश के साथ किरात और चीन भी सम्बन्वित थे। महाभारत युद्ध में यहां के राजा भगदत्त की सेना में चीनी भी सम्मलित थे। कालिका पुराण (अ० ३८) के अनुसार प्राग्ज्योतिष की पहचान गौहाटी से की गई है।

सागरानूप—अर्जुन ने केवल हैमवतीय प्रदेश-उदीच्य—की विजय की थी। अस्तु 'सागरानूप' प्रदेश हिमालय के उस सिरे (छोर) पर स्थित था जहाँ यह पूर्वी समुद्र को छूता था। यहाँ किरात बसे हुए थे (कर्णपर्व ५-१५)।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हिमवन्त प्रदेश—ऊपर देशों के अतिरिक्त अर्जुन ने हिमालय की तीनों श्रेणियों को भी जीता जहाँ पर्वतीय लोग बसे थे—

१—अन्तर्गिरि

२—बहिर्गिरि

३—उपगिरि

"हिमालय के भूगोल से सम्बन्धित दो महत्वपूर्ण नाम अन्तर्गिरि और उपगिरि थे। ......हिमालय की पश्चिम से पूर्व की ओर फैली हूई तीन शृंखलाएँ हैं। मैदानों की तरफ से सबसे पहले तराई की भूमि आती है। इस मैदान को नैपाल में तराई, नैनीताल में भाभर और देहरादून में दून कहते हैं। हिमालय की इस उपत्यका या बहिः शृंखला का नाम उपगिरि था। ...... हिमालय की बीच की शृंखला का प्राचीन नाम बहिर्गिरि था। इससे ऊपर उठकर हिमालय की तीसरी शृंखला है जिसका प्राचीन संस्कृत नाम अंतर्गिरि था (पाणिनि कालीन भारतवर्ष, पृ० ४३-४४)।

अन्तर्गिरि—यह एक जनपद भी था (भीष्म पर्व ९-४९), जैसा कि पुराणों से भी ज्ञात होता है। इसे प्राच्य का जनपद कहा गया है (ब्रह्मांड, पू० १६-५३; मत्स्य, ११३-४४; वामन, १३-४४; वायु, १-४५-१२२; मार्कंडेय, ५४-४२)।

बहिर्गिरि—यह भी एक जनपद था (भीष्म पर्व ९-५०) जिसे पुराणों में प्राच्य (पूर्व देश) का जनपद बताया गया है (ब्रह्मांड, पू० १६-५३; मत्स्य, ११३-४४; वायु, १-४५-१२२; मार्कंडेय, ५४-४२)। महाभारत के अनुसार यह पर्वतीय जनपद था जिसे अर्जुन ने जीता था (सभापर्व २७-३)।

उपगिरि—यह भी एक पर्वतीय जनपद था जिसे अर्जुन ने जीता था (सभापर्व २७-३)। परन्तु महाभारत की जनपद-सूची (भीष्म पर्व अ० ९) में इसका उल्लेख नहीं है। इस सूची के (कुलिन्दोपत्यकाः, भीष्म पर्व ९-५५) में यदि हम उपत्यक शब्द को कुलिन्द से अलग कर जनपद मानें तो हिमालय की तराई में स्थित जनपद मानकर उसका उपगिरि से तादात्म्य कर सकते हैं।

उलूक (उलूत)—यह उत्तर का एक जनपद था (सभापर्व २७-५)। महाभारत की जनपद-सूची में उलूत नामक जनपद का उल्लेख है (भीष्म पर्व ९-५४) और उलूत जनपद का उल्लेख ब्रह्मांड पुराण (पू० १६-४८) में

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उदीच्य के जनपद रूप में मिलता है। अतः उलूक और उलूत एक ही मालूम पड़ते हैं। डा० मोतीचन्द्र इसकी समता कुलूत (वर्तमान कुलू घाटी) से करते हैं (उपायन पर्व, पृ० ५५)।

पंचगण—(सभा २७-१२) उत्तर दिशा का एक जनपद था, जिसे अर्जुन ने जीता था। उदीच्य का यह कोई गण-संघ था जिसकी पहचान नहीं हो सकती है। इसमें कई देश सम्मिलित थे (देशान् पंचगणान्; सभा पर्व २७-१२)।

पौरवक—नाम का एक जनपद था (भीष्म पर्व ५०-४८) जिसे पर्वतीय कहा गया है। इसकी राजधानी पौरवपुर थी (सभा पर्व २७।१५-१६)। सम्भवतः यह वही राज्य था जहाँ सिकन्दर के समय पुरु राज्य कर रहा था। बृहत्संहिता में भी पौरव (१४-२७) को उत्तर दिशा में स्थित जनपद बताया गया है। इसका उल्लेख त्रिगर्तों और अम्बष्ठों के साथ (त्रैगर्त पौरवाम्बष्ठ-पारता……, बृ० सं० १६-२२) किया गया है। इससे इसकी स्थिति पोरस के राज्य में ही सिद्ध होती है। डे (जाग्रफ़िकल डिक्शनरी पृ० ५५) के अनुसार इसकी स्थिति झेलम के पूर्व थी जिसमें पश्चिमी पंजाब का गुजरात जिला शामिल था।

काश्मीर (भीष्म पर्व ९-५३, ६७)—काश्मीर मण्डल एक पुण्य देश माना गया था जहाँ ऋषियों का निवास था (वनपर्व १३०।१०-११)। अर्जुन ने इसे जीता था (सभा पर्व २७-१७)। चन्द्रभागा (चनाब) और वितस्ता (झेलम) नदियाँ इसमें बहती थीं (अनुशासन पर्व २५।७-८)।

त्रिगर्त—यह एक प्रसिद्ध जनपद था (भीष्म पर्व ९-६१), जिसे अर्जुन ने उत्तरी दिग्विजय में जीता था (सभा पर्व २७-१८)। नकुल ने भी अपनी पश्चिम दिग्विजय में इसे जीता था (सभा पर्व ३२-७)। त्रिगर्त देश के पांच भाई वीर थे (त्रिगर्ता भ्रातरः पंच, उद्योग पर्व, १६६-९)। सम्भव है कि पंचगण राज्य, जिसका ऊपर उल्लेख हो चुका है, त्रिगर्त राज्य ही का दूसरा नाम था। त्रिगर्त एक गण राज्य और संघ राज्य था। इसे **संशप्तक गण** कहा जाता था और यह आयुधजीवी संघ था।

यह रावी और सतलज के बीच जालन्धर के आसपास बसे हुए थे। आधुनिक कांगड़ा ही प्राचीन काल में त्रिगर्त था (उपायन पर्व पृ० ९४)।

दार्व—दर्व (भीष्मपर्व ९-५४) एक पश्चिमोत्तर का जनपद था। जिसे अर्जुन ने त्रिगर्तों के बाद जीता था (सभा २७-१८)। स्वात नदी की सहायक

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नदी पंजकोरा की घाटी को दार्व कहते थे। यह सीमान्त जाति थी जिसका मुख्य केन्द्र दिर था (ज्याग्रफ़ी ऑफ पुराणाज़, पृ० १४३)। पुराणों में इसे पर्वतीय (पर्वताश्रयी, मार्कंडेय पु० ५४-५७) कहा गया है।

अभिसार (भीष्म पर्व, ९-५४)—यह एक पर्वतीय जनपद था, जिसे अर्जुन ने जीता था। त्रिगर्त राज्य जीतने के बाद अर्जुन ने दर्व और अभिसार को जीता था (सभापर्व २७-१९)। अभिसार देश (का राजा) महाभारत युद्ध में भी शामिल हुआ था (कर्ण पर्व १४-२)।

साहित्य में प्रायः दार्वाभिसार (दार्व और अभिसार) का उल्लेख मिलता है जिससे इन दोनों राज्यों का सामीप्य ज्ञात होता है। दार्वाभिसार को काश्मीर के निकट स्थित बताया गया है। सिकन्दर के आक्रमण के समय यह राज्य तक्षशिला और पौरव राज्य के निकट ही उत्तरी सीमा पर स्थित था। डे (जाग्रफ़िकल डिक्शनरी, पृ० १) के अनुसार यह पेशावर जिले का उत्तरी पूर्वी भाग था। डा० स्टाइन (राजतरंगिणी, जिल्द १, पृ० ३२-३३, २१५; १-१८०, ५-२१७ पर टिप्पणी) अभिसारी राज्य को झेलम और चनाब के मध्य में स्थित मानते हैं, जिसमें राजपुर या रजौरी भी सम्मिलित था। पं० जयचन्द्र विद्यालंकार के अनुसार पीर पंजाल श्रृंखला के नीचे हिमालय के बाहरी भाग में झेलम से चिनाब तक छिभाल ही अभिसार प्रदेश था (भारतभूमि और उसके निवासी, पृ० १४४)। प्राचीन अभिसार देश में छिभाल लोग रहते हैं, इसीलिए इसे छिभाल कहते हैं।

उरग (भीष्म पर्व ९-५४)—यह एक उत्तर-पश्चिम का प्रसिद्ध जनपद था जिसे अर्जुन ने अभिसारी राज्य-विजय के बाद जीता था (सभा पर्व २७-१९)। डा० स्टाइन के अनुसार 'उरशा' और 'उरगा' एक ही थे जिसकी पहचान हज़ारा जिले (पश्चिमी पंजाब) से की गई है (राजतरंगिणी-अंग्रेजी-, जिल्द १, पृ० २१५-२१६)। इसका उल्लेख काश्मीर के साथ किया गया है। (काश्मीरकानौरसिकान्=काश्मीर और औरसिक-उरसा वाले, द्रोण पर्व ११-१६)।

सिंहपुर—उरग देश के बाद अर्जुन ने सिंहपुर राज्य को जीता था जो चित्रायुधों से सुरक्षित था (सभा पर्व २७-२०)। स्टाइन (राजतरंगिणी, १, पृ० २१६) ने इसकी पहचान साल्ट रेंज से की है। बृहत् संहिता (५-४२) में सिंहपुरक का उल्लेख दरदों और बर्बरों के साथ हुआ है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बाह्लीक—यह उत्तरा-पथ का अत्यन्त प्रसिद्ध जनपद था। (भीष्म पर्व ९-५४)। अर्जुन ने इसकी विजय की थी (सभापर्व २७-२२)। 'जाग्रफ़िकल इनसाइक्लोपीडिया' (इंडियन एकेडेमी, वाराणसी, १९६७, पृ० ४९) में कहा गया है कि महाभारत (८, अ० ४४) के अनुसार ये रावी और आपगा के पश्चिम में बसे थे और इनकी राजधानी शाकल या स्यालकोट थी।...... (मिलाइये, जाग्रफ़िकल इनसाइक्लोपीडिया पृ० ४९ और डे-जाग्रफ़िकल डिक्शनरी पृ० १५)।

बाह्लीक और बाहीक एक नहीं थे। वाहीक सिन्धु और पंचनद (पंजाब की पाँच नदियाँ) से अभिसिंचित प्रदेश था जो सिन्धु और सतलज नदियों के बीच में स्थित था (कर्ण पर्व ४४।५-७)। महाभारत (कर्ण पर्व, ८, अ० ४४ में) वाहीक देश का वर्णन है जहाँ का राजा शल्य था। उसे मद्र देश का भी राजा कहा गया है। कर्ण पर्व (अ० ४४) में जो वाहीक देश की निन्दा की गई है, उसे वाहेयिका गाथा कहा गया है (कर्ण पर्व ४४-२६)। यहीं वाहीकों को ही पाञ्चनदों का नाम (कर्ण पर्व ४४-१६) दिया गया है।

महाभारत में पंचनद (पंजाब) के जनपदों और जातियों के साथ ही बाह्लीकों का भी उल्लेख मिलता है (द्रोणपर्व, १५७।२८-३०; १९२।३३)। बाह्लीकों को पर्वतीय देशों-जो घोड़ों के लिए प्रसिद्ध था—के साथ (वनायुजान् पर्वतीयान् काम्बोजनथ बाह्लीकान्, द्रोणपर्व ३६-३६; १२१-२७) उल्लिखित किया गया है। अन्य स्थल पर देश-सूची में बाह्लीक व मद्र का एक ही साथ उल्लेख किया गया है (कर्ण पर्व ५६-७०)। अतः बाह्लीक और बाहीक एक न थे। बाहीक देश सिन्धु के पूर्व स्थित था और सिन्धु के उस पार 'कंबोज के पश्चिम, वंक्षु के दक्षिण और हिन्दुकुश के उत्तर-पश्चिम का प्रदेश बाह्लीक जनपद था", जिसकी पहचान बलख से की गई है। स्कन्द पुराण (१-२-३९-१५५) के अनुसार बाह्लीक देश में ४ लाख ग्राम थे। काव्यमीमांसा के अनुसार यह उत्तरापथ का राज्य था।

काम्बोज—यह उत्तरापथ का प्रसिद्ध जनपद था। जिसका उल्लेख दरदों के साथ हुआ है (दरदान् सह काम्बोजैः, सभापर्व २७-२३)। अर्जुन ने इसकी विजय की थी। इसकी राजधानी राजपुर (वर्तमान रजौरी) थी जिसे कर्ण ने जीता था (द्रोण पर्व ४-५)। यह देश अच्छे प्रकार के घोड़ों के लिए प्रसिद्ध था (सभा पर्व ५३-५; भीष्म पर्व ७१-१३)। युधिष्ठिर की राजसूय यज्ञ में काम्बोज नरेश (भेंड़ की) ऊन, बिल में रहने वाले चूहे आदि के रोएँ तथा बिल्लियों की रोमावली से बने हुए सुन्दर कपड़े और मृग चर्म भेंट में लाये

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

थे। इसके अलावा इन लोगों ने सुन्दर घोड़े, ऊँट और खच्चर भी दिए थे (सभा ५१।३-४) । यह पामीर-बदख्शाँ क्षेत्र था ।

ऐसा लगता है, कि इस देश में कई गण जातियाँ रहती थीं जिन्हें 'काम्बोज के गण' (काम्बोजानां च ये गणाः, द्रोण पर्व ९१-३९) कहा गया है।

यह बहुत ही लड़ाकू, वीर और कुशल धनुर्धर थे (द्रोण पर्व, ११९-१४, २०) । इसीलिए ये दुर्जय माने गए थे (द्रोणपर्व ११९-५२) ।

यवन-काम्बोज—अशोकीय अभिलेखों की भाँति महाभारत में भी इनका उल्लेख यवनों के साथ (यवनकाम्बोजान्, द्रोणपर्व १२०-१) । किया गया है। बाल्हीक (बलख) या बैक्ट्रिया के यवनों ने आक्रमण कर उत्तरी पश्चिमी सीमान्त क्षेत्रों में अधिकार कर लिया था। आगे चलकर शक और पार्थियन (पारद) लोगों ने भी अपने अपने राज्य स्थापित किए। ये सभी, शककाम्बोज-बाह्लीकायवनाः पारदास्तथा, (द्रोण पर्व, १२१-१३) एक साथ उल्लिखित किए गए हैं।

काम्बोजों को यवनों के साथ युद्ध करते हुए भी पाते हैं (सभापर्व ४-२२, २३) ।

दरद—इसे अर्जुन ने जीता था (सभा २७-१३) और ये युधिष्ठिर के लिए भेंटें भी लाए थे (सभा पर्व ५२-१३) । इसे उदीच्य में स्थित बताया गया है (वायु पुराण १-४५-११८) । यह यूनानी लेखकों का दरदई (मेक्रिन्डिल-टालमी, पृ० ४६) है। यह दरद देश आधुनिक दरदिस्तान ही है जिसे सिन्धु-तट पर गिलगिट-चिलास क्षेत्र में स्थित माना गया है (पाणिनि कालीन भारतवर्ष, पृ० ५०) । बृहत्संहिता (१४-२९) इसे काश्मीर और अभिसार के साथ ईशान कोण (उत्तरपूर्व) में स्थित बताती है। ऐसा प्रतीत होता है कि बाह्लीक राजा ने पृथ्वी को विदीर्ण कर दिया था (येन दारिता मही) इसीलिए इसका दरद नाम पड़ा (सभा पर्व ४४-८) । पहले दरद लोग क्षत्रिय थे। परन्तु बाद में ब्राह्मणों के साथ ईर्ष्या करने से वृषल हो गए थे (अनुशासन पर्व ३५-१७, १८) ।

लोह—यह एक प्राचीन देश था, जिसे अर्जुन ने जीता था (सभा पर्व २७-२५) । डा० मोतीचन्द्र इन्हें ताजिकों के देश में बसाते हैं (उपायन पर्व पृ० १९) । डे इसकी पहचान अफ़गानिस्तान से करते हैं (जाग्रफ़िकल डिक्शनरी, पृ० ११५) । स्कन्दपुराण में लोहपुर नाम के एक भारतीय प्रदेश का उल्लेख

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

किया गया है, जिसमें ९ लाख ग्राम सम्मिलित थे। इसकी पहचान पश्चिमी पंजाब के लाहोर क्षेत्र से की गई है (स्टडीज़ इन स्कन्दपुराण, पार्ट १, पृ० ३६)।

परमकाम्बोज—इस देश को भी अर्जुन ने जीता था (सभा पर्व २७-२५)। पं० जयचन्द्र विद्यालंकार इसकी पहचान याग़नोब घाटी से करते हैं जहाँ के निवासी (याग़नोबी लोग) गलचा भाषा बोलते हैं (भारत भूमि और उसके निवासी, पृ० ३१३)। यह घाटी पामीर के उत्तर ज़रफ़शान नदी के निकट स्थित है, जहाँ बोखारा की पहाड़ी रियासतें पामीर से इसे अलग करती हैं (उपायन पर्व, पृ० १३)।

ऋषिक—अर्जुन ने इस देश को जीता था (सभा पर्व २७।२६-२७)। पं० जयचन्द्र विद्यालंकार ने इनकी पहचान मध्य एशिया की यूची जाति से की है। डा० मोतीचन्द्र मानते हैं कि इसकी पहचान अपोलोडोरस द्वारा उल्लिखित 'एसिआइ' से की जानी चाहिए जिसका संस्कृत रूप 'इसि' या 'आर्षिक है (उपायन पर्व पृ० १८)।

उत्तर-ऋषिकान् (सभा पर्व २७-२५) ठीक 'ता-यूची' का परिचायक है (उपायन पर्व पृ० १९)।

किम्पुरुष देश—यह भी एक उदीच्य का पर्वतीय प्रदेश था जिसे अर्जुन ने जीता था। इसे श्वेत पर्वत के उस पार स्थित बताया गया है (सभा पर्व २८-१)। डा० मोतीचन्द्र श्वेतपर्वत की पहचान सफेद कोह से करते हैं जो गजनी के निकट अफ़गानिस्तान के मैदानों के ऊपर झुका हुआ है। (उपायन पर्व, पृ० १२-१३)। यह जम्बूद्वीप का एक वर्ष था।

इन पर्वतीय लोगों को खस जाति के ही निकट स्थित पाते हैं (कलापग्राम-कांश्चैव तथा किंपुरुषान् खसान्) खस तो काश्मीर के खस ही थे (सरकार, जाग्रफ़ी ऑफ़ ऐंशेन्ट इंडिया, पृ० ६३)।

हाटक देश (सभा पर्व २८-३)—इस देश को गुह्यकों का निवास स्थान कहा गया है। यह मानसरोवर के निकट स्थित था (सभा पर्व २८।४-५)। डे ने इसकी पहचान हूण देश से की है (जाग्रफ़िकल डिक्शनरी, पृ० ७४)।

गन्धर्व देश—यहां के निवासी गन्धर्व कहलाते थे और इसकी राजधानी गन्धर्व नगर थी। यह (हेमकूट=कैलास) से अधिक दूर न था।

अन्य विजित क्षेत्र—इलावृत, मेरुक्षेत्र, केतुमाल, भद्राश्व आदि—जम्बूद्वीप के ही वर्ष थे। इन सभी क्षेत्रों की पहचान कठिन है। परन्तु इतना निश्चित

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

है कि अर्जुन ने हिमालय और हेमकूट के उस पार वर्तमान मध्य एशिया को भी जीता था। वे पवित्र उत्तर कुरु देश तक गए थे (सभा पर्व २८-७-१६)। उत्तर कुरु के निवासियों ने क्षौम (रेशमी वस्त्र) और मृगचर्म (अजिन) अर्जुन को भेंट में दिए थे। इस प्रकार अर्जुन उत्तर दिशा की विजय कर इन्द्रप्रस्थ लौट आये। वे अपने साथ बहुत सा धन, बहुत से रत्न और घोड़े ले आए थे (सभा पर्व ३०।१७-२०)।

पूर्व देश विजय—भीम ने पूर्व दिशा (प्राची दिशं) की विजय की। इस विजय-यात्रा में उन्होंने निम्नलिखित देशों को जीता। पहले उन्होंने—पञ्चाल, गण्डक-तट देश, विदेह और दशार्ण देशों को जीता (सभा पर्व २९।४-५)। फिर वे प्राची दिशा की ओर बढ़े (सभा पर्व २९-७) और पूर्व देश को जीता (सभा पर्व २९-९)। मध्य देश के पूर्व में ही पूर्व देश स्थित है। पञ्चाल मध्य देश अथवा अन्तर्वेदी का ही प्रदेश माना जाता था। कुरुराज्य से पूर्व की ओर चलने पर पंचालों का मित्र-राज्य (आदि पर्व १-१५४) पड़ता था। इसीलिए भीम ने उसे सामनीति से वश में किया।

पञ्चाल—कुरु राज्य से मिला हुआ यह राज्य मध्यदेश का ही जनपद था (भीष्म पर्व ९-३९)। पञ्चाल में ही द्रौपदी स्वयंवर हुआ था (आदि पर्व २-११०; १८५।६-२३)। द्रौपदी के पिता, राजा द्रुपद, **उत्तरी पञ्चाल** के शासक थे (आदि पर्व १२९-४३)। द्रुपद और द्रोण सहपाठी-मित्र थे (आदि, १२९-४२)। पढ़ने के बाद एक बार द्रोण अपने सखा द्रुपद के यहाँ गए। परन्तु द्रुपद ने द्रोण का अनादर करते हुए कहा, "बड़े बड़े राजाओं की मैत्री तुम्हारे ऐसे धनहीन व्यक्ति के साथ नहीं होती। ......जो राजा नहीं है वह राजा का मित्र नहीं हो सकता" (आदि पर्व १३०।४-११)। दुःखी होकर द्रोण चले गए। उन्होंने कौरवों के यहाँ नौकरी कर ली। भीष्म ने उनका बहुत ही सत्कार किया। कौरव और पांडवों की शिक्षा के बाद अपने शिष्यों—राजकुमारों से कहा—"जो पंचालराज द्रुपद को बन्दी बनाकर मेरे पास लायेगा, वही मेरी परम गुरु दक्षिणा होगी।" यह सुनकर सभी राजकुमार शिष्य द्रोण के साथ पंचाल देश में जा पहुँचे। कौरव असफल रहे। परन्तु अर्जुन, भीम, नकुल और सहदेव ने द्रुपद की सेना के छक्के छुड़ा दिए और अन्त में द्रुपद को पकड़ कर बन्दी बना लिया। द्रुपद द्रोण के सामने बन्दी बनाकर लाए गए। इस प्रकार उसका अभिमान नष्ट हो गया था। अब द्रुपद बन्दी थे और द्रोण उसके सम्पूर्ण राज्य के स्वामी। द्रोण ने द्रुपद से कहा—

पंचाल-विभाजन—"तुम इस राज्य का आधा भाग मुझ से ले लो और

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मुझसे दोस्ती कर लो। तुम भागीरथी (गंगा) के दक्षिण प्रदेश के राजा हो और मैं गंगा के उत्तरी भाग का राजा हूँ" (राजासि दक्षिणे कूले भागीरथ्याहमुत्तरे। आदि पर्व १३७-७०)।

इस प्रकार गंगा पंचाल को दो भागों में विभक्त करती थी—उत्तर पंचाल और दक्षिण पंचाल। हरिवंश (हरिवंशपर्व, २०-७३) से ज्ञात होता है कि द्रुपद का पैतृक राज्य, आहिच्छत्र-राज्य था। परन्तु अर्जुन ने इसे जीतकर द्रोण को काम्पिल्य के सहित आहिच्छत्र राज्य दे दिया। (हरिवंश, हरि० २०-७४)। द्रोण ने दोनों ही राज्यों-आहिच्छत्रं और काम्पिल्यं (उभयं) को लेकर काम्पिल्य तो द्रुपद को लौटा दिया। इस प्रकार यहाँ भी पंचाल के उभय भागों का उल्लेख है।

दक्षिण पंचाल (सभा पर्व १४-२७)—दीनमन होकर द्रुपद गंगा के किनारे 'जनपदों' से समृद्ध **माकन्दी** और राजधानी **काम्पिल्य** (पुरोत्तमम् काम्पिल्यं) से युक्त दक्षिण पंचाल में शासन करने लगे जो दक्षिण में चर्मण्वती (चम्बल) नदी तक विस्तृत था—

माकन्दीमथ गंगायास्तीरे जनपदायुताम्।
सोऽध्यावसद् दीनमनाः काम्पिल्यं च पुरोत्तमम्॥
दक्षिणांश्चापि पञ्चालान् यावच्चर्मण्वती नदी॥

आदि पर्व १३७।७३-७४।

इस प्रकार द्रुपद दक्षिण-पंचाल के राजा थे (आदि पर्व १८४-१)। पांडव लोग लाक्षागृह में जलने से बचकर बनों में घूमते हुए पंचाल-नगर में गए और वहाँ उन्होंने द्रौपदी का वरण किया (आदि पर्व अ० १८३ से अ० १८५)। द्रुपद-पुर प्रासादों और प्राकार-परिखा, द्वार-तोरण से सुशोभित था। इसी नगर (काम्पिल्य) को ही पंचालनगर (आदि पर्व २-११३) भी कहा गया है। काम्पिल्य इस समय कम्पिल (फ़रुखाबाद प्रान्त) के नाम से प्रसिद्ध है।

माकन्दी—यह भी दक्षिण पंचाल का नगर था जो गंगा तट पर बसा था। दिव्यावदान में एक भिक्षु, (माकन्दिक परिव्राजक, सं० बौ० भारतीय जीवन पृ० ४८) और माकन्दिक नामक उदयन के मन्त्री (सं० बौ० भा० जी०, पृ० ६८) का उल्लेख है। इन व्यक्तियों का सम्बन्ध माकन्दी से ही था। पांडवों ने धृतराष्ट्र और कौरवों से जिन पाँच ग्रामों—अविस्थल, वृकस्थल, माकन्दी, वारणावत तथा पाँचवा अन्य कोई भी स्थान (उद्योगपर्व ७२-१५, १६)—को माँगा था उसमें माकन्दी भी एक स्थान था। **एकचक्रा** (आदिपर्व

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१५६।१-२), आधुनिक चक्रनगर जो इटावा से १६ मील दक्षिण-पश्चिम स्थित है) भी पांचाल देश का एक नगर था।

उत्तर-पंचाल—पंचाल देश में गंगा के उत्तरी भाग को उत्तरी पंचाल या अहिच्छत्र-विषय (द्रोण पर्व १३७-७६) अथवा आहिच्छत्र राज्य (हरिवंश) कहा गया है। इसकी राजधानी अहिच्छत्र (वर्तमान रामनगर, बरेली जिले में आंवला के निकट थी)। पहले अहिच्छत्रा नगरी में द्रुपद राज्य करते थे (आदि पर्व १६५-२१)। बाद में वहाँ द्रोण का अधिकार हो गया।

गण्डक-तट देश—यह उत्तर प्रदेश और बिहार के सीमा-क्षेत्र में स्थित गोरखपुर प्रान्त का छित्तौनी घाट के आसपास का क्षेत्र और गण्डकी के उस पार बावा (चम्पारन प्रान्त) के आस पास का चम्पारन (चम्पारण्य) आदि क्षेत्र सम्मिलित था।

विदेह (विदेहाः, भीष्म पर्व ९-५७)—इसी उपर्युक्त गण्डकी-तट देश से आगे उत्तरी बिहार में दरभंगा प्रान्त और नैपाल की तराई में विदेह राज्य था जिसकी राजधानी जनकपुर (प्राचीन मिथिला) थी। इस पूर्व-विजय के पहले भी भीम, अर्जुन और कृष्ण के साथ मगध को गण्डकी पार कर मिथिला होते हुए गए थे (सभा पर्व २०-२७,२८)।

पांडु ने भी मिथिला के विदेहों को जीता था (आदि पर्व ११२-२८)। भीम-विजय में ही आगे चलकर (सभा पर्व ३०-१३) विदेह के राजा जनक पर उसकी विजय बतायी गई है।

दशार्ण—यह देश दक्षिण में विन्ध्य पर्वत पर स्थित पूर्वी मालवा है। परन्तु यहाँ इसकी पहचान देसार्ने (क्लासिकल अकाउन्टस् ऑफ़ इण्डिया, पृ० ३०८) या पूर्वी दशार्ण (पेरिप्लस के लेखक और टालमी द्वारा उल्लिखित) से की जानी चाहिए। डा० आर० सी० मजूमदार के अनुसार यह देसार्ने उड़ीसा या इसका कोई भाग था (क्लासिकल अकाउन्ट्स ऑफ़ इण्डिया, पृ० ३१२)। पांडु ने भी इसे जीता था (आदिपर्व ११२-२५)। यहाँ से भीम फिर पूर्व की ओर मुड़े (सभा पर्व २९-७)।

पुलिन्दनगर—पूर्व देश की ओर जाने पर (सभा पर्व २९-९) भीम पुलिन्दनगर पहुँचे (सभा पर्व २९-१०)। पुलिन्द एक वन्य जाति मानी गयी है जिसका सम्बन्ध विन्ध्य पर्वत से था। डे के अनुसार, कामरूप के उत्तर और सिलहट के पूर्व पुलिन्द देश है (जाग्रफिकल डिक्शनरी पृ० १६१)। परन्तु यह पहचान ठीक नहीं लगती है। दशार्ण के पास ही छोटा नागपुर की पहाड़ियों में बसने वाले ये लोग थे।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चेदि राष्ट्र (भीष्म पर्व ९-४०)—चेदि-राज शिशुपाल ने भी भीम का स्वागत किया। यह सुन्दर देश (रम्यं चेदि विषयं रमणीयं, आदि पर्व ६३-२) था। जहाँ का राजा वसु-उपरिचर था। यह देश इस धार्मिक राजा के शासन काल में धनधान्य से सम्पन्न देश था और जनता धर्मशील थी (आदि पर्व ६३।८-१२) :—

> **अर्थवानेष देशो हि धनरत्नादिभिर्युतः।**
> **वसुपूर्णा च वसुधा वस चेदिषु चेदिप ॥**

यह विस्तृत जनपद (स्फीतो जनपदो, आदि ६३-२५) था। चेदिराज वसु के पचास पुत्र थे जिन्हें भिन्न भिन्न राज्यों पर शासक बनाया गया। उनमें बृहद्रथ मगध का राजा हुआ। इसी प्रकार अन्य पुत्र अन्य राज्यों के शासक हुए। यह कुरु राज्य से मिले हुए उत्तम देशों—पांचालाश्चेदि-मत्स्याश्च शूरसेना पटच्चराः, विराटपर्व १-१२) में था। इसकी राजधानी के समीप ही शुक्तिमती नदी बहती थी और इस नदी के पास ही कोलाहल गिरि था (आदि पर्व ६३।३५-३६)। शुक्तिमतीपुरी (वनपर्व २२-५०) इसकी राजधानी (चेदिपुर, सभापर्व ४४-९) थी। यह चेदि देश यमुना से नर्मदा तक फैला हुआ था (वे० ध० पृ० ३१६)। शुक्तिमती नगरी वर्तमान् चन्देरी (ललितपुर से १८ मील पश्चिम) और शुक्तिमती नदी बेतवा का ही दूसरा नाम है तथा पड़ोस की पहाड़ियाँ कोलाहल गिरि है (वे० ध० पृ० ३१७)।

कुमार-विषय (सभा पर्व, ३०-१)—डे कुमार देश की पहचान रीवा (मध्य प्रदेश) के निकटस्थ क्षेत्र से करते हैं (जाग्रफिकल डिक्शनरी, पृ० १०६)। यहाँ के राजा भी युधिष्ठिर की सभा में भेंट ले आए थे (सभा पर्व ५२-१४)।

कोसल (भीष्म पर्व, ९-४०, ४१, ५२)—यह एक प्रसिद्ध जनपद था।

इसे पूर्व देश का राज्य (पूर्वाश्च कोसलान्) कहा गया है जो सरयू (सरजू) के उस पार (उत्तीर्य सरयूं, सभा पर्व २०-२८) स्थित था। बृहत्संहिता (१४-७) में भी इसे पूर्व में स्थित बताया गया है। यह काशि राज्य से सटा हुआ था। इसीलिए काशी और कोसल को एक साथ उल्लिखित पाते हैं (काशिकोसलान्, सभापर्व, पृ० ७९३; द्रोणपर्व, १२५-५३) यहाँ दाशरथि राम राज्य करते थे (वनपर्व ९९।४०-४१, १४८।१५-१६, २९१-६०, सभापर्व पृ० ७९५)। इसकी राजधानी **अयोध्या** (सभापर्व ३०-२) थी जो एक प्रसिद्ध और पवित्र स्थान था (आदि पर्व (७६-३६-४२)। यहाँ ऋषभ-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तीर्थ और कालतीर्थ प्रसिद्ध तीर्थ थे (वनपर्व ८५।१०-११)। यह सुन्दर नगर था (रम्यां अयोध्यां नगरीं, वनपर्व ६६।२१-२२) जहाँ इक्ष्वाकुकुल के राजा राज्य करते थे। इक्ष्वाकु-कुल में ही श्रावस्त के पुत्र श्रावस्तक ने **श्रावस्ती** नाम की नगरी को बसाया था (वन पर्व, २०२-३,४)। इसमें अवध प्रान्त (उत्तर प्रदेश) शामिल था। यह समृद्ध जनपद सरयू के किनारे स्थित था और उसकी राजधानी अयोध्या को स्वयं महाराज मनु ने बसाया था (रामायण, बालकांड ५-५, ६)।

गोपाल-कक्ष (सभा पर्व ३०-३)—यह पूर्वीय देश था जिसे भीम ने जीता था। जनपदों की तालिका में भी इसका उल्लेख है (भीष्म ९-५६)। ब्रह्मांड पुराण (पू० भा०, अ० पा० २, १६-५४) में गोप (गोपपार्थिवा:) नामक पूर्वीय देश का उल्लेख है। महाभारत के गोपालकक्ष और गोप को एक ही मान सकते हैं। इसकी स्थिति उत्तर कोसल (बहरायच-गोंडा) और मल्ल (गोरखपुर-देवरिया) के निकट होनी चाहिए। गोरखपुर प्रान्त में ही गोपाल-पुर नामक एक छोटी रियासत थी और अब भी वहाँ गोपालपुर ग्राम है। गोपालकक्ष, गोपपार्थिव या गोप प्रदेश की पहचान गोपालपुर से हो सकती है।

उत्तर कोसल (सभा पर्व ३०-३)—अयोध्या को जीतने के बाद गोपाल-कक्ष और फिर उत्तर कोसल देश की विजय की। रामायण (उत्तरकांड, १०७-७) के अनुसार रामपुत्र लव उत्तर कोसल के राजा हुए तथा कुश (दक्षिण) कोशल में राजा बने (उत्तरकांड, १०७।१७-२१)। लव की राज-धानी **श्रावस्ती** पुरी थी और अयोध्या के सूनी हो जाने पर ही इसकी प्रसिद्ध हुई (उत्तरकांड १०८-५)। इसमें बहरायच और गोंडा सम्मिलित थे।

मल्ल (भीष्म ९-४४, ४६)—यह एक प्राचीन और प्रसिद्ध राज्य था। जनपद-सूची में मल्लराष्ट्र (भीष्म ९-४४) और मल्ला: (भीष्म ९-४६) के उल्लेख हैं। बुद्ध युग में यह एक गण राज्य था जिसके दो विभाग थे—(कोसीनारका मल्ला और पावेय्यका मल्ला:)। रामायण (उत्तार काण्ड ११२-९) के अनुसार लक्ष्मण के पुत्र चन्द्रकेतु मल्ल ने मल्लभूमि (मल्ल देश) में चन्द्रकान्ता नगरी को बसाया था। इसकी गणना उत्ताम देशों में की गई हैं (विराट पर्व १-१३)। इसमें देवरिया और गोरखपुर का कुछ भाग सम्मि-लित थे।

जलोद्भवं (हिमवत:पार्श्वं, सभापर्वं ३०-४)—इसे भी पूर्वीय देश कहा गया है जो हिमालय के निकट स्थित था। सम्भवत: यह नैपाल की तराई में मल्ल राष्ट्र से मिला हुआ कोई देश था।

CC-0. Agamnigam Digital Preseyation Foundation, Chandigarh

भल्लाट (सभा पर्व ३०-५)—यह देश भी एक पर्वतीय जनपद था, जो शुक्तिमन्त पर्वत के निकट स्थित था। कल्कि पुराण (३-७-३५) से ज्ञात होता है कि कल्कि (नारायण) **भल्लाट नगर** जीतने गए थे (कल्कि पु०, ३-८-१)। भल्लाटेश्वर (भल्लाट के राजा) शशिध्वज भल्लाटनगर छोड़ कर (कल्कि पुराण, ३-१५-४) विष्णुभक्त हो गया और वह **कोकामुख तीर्थ** में तपस्या करते हुए सुदर्शन चक्र से निहत होकर वैकुण्ठ चला गया (कल्कि पु० ३-१५-१५)। इसकी पहचान कठिन है। परन्तु कोसी नदी के ऊपरी भाग में बिहार और नैपाल की सीमा के निकट ही इस जनपद को स्थित होना चाहिए। सम्भवतः यहाँ भल्लात नामक फलों के होने के कारण ही इसे भल्लाट देश कहते थे।

काशी—यह एक प्राचीन राज्य था। यहाँ के राजा (काशिप) ने अपनी पुत्री का विवाह जनमेजय के साथ किया था (आदिपर्व ४४-८,९)।

भीम ने काशिराज को भी पराजित किया (सभापर्व ३०-६)। काशी मध्य देश का ही प्रसिद्ध जनपद था। परन्तु यहाँ पर इसकी गणना पूर्वीय देशों में की गई है। इसकी राजधानी वाराणसी थी (उद्योग पर्व ५०-४१)। काशी की राजधानी वाराणसी में भीष्म ने कन्याओं का अपहरण किया था (आदि पर्व १०२-३,४)।

क्रथ—यह दक्षिण देश का राज्य था (काव्यमीमांसा, पृ० ९३-२८)।

क्रथकैशिक दक्षिणापथ के दो राज्य थे। अतः ऐसा प्रतीत होता है कि यहाँ काशी का क्रथ के साथ उल्लेख गलत है। कैशिक को ही काशी समझकर लिखा गया है। क्रथ-कैशिक विदर्भ देश के हा भाग थे (प्राचीन भा० भौ० स्व०, पृ० ६०-६१)।

मत्स्य—भीम ने इसे भी जीता था (सभा पर्व ३०-८)। मत्स्य मध्यदेश का राज्य था न कि पूर्व देश का। इस पूर्वी मत्स्य देश की पहचान तिरहुत के दक्षिणी भाग से की गई है जिसमें वैशाली सम्मिलित थी (जाग्रफिकल डिक्शनरी, पृ० १२९)।

मलद (सभा पर्व ३०-८)—राजशेखर के अनुसार भी (काव्यमीमांसा पृ० ९३।२०-२२) मलद पूर्व देश का राज्य था जिसकी पहचान पूर्वी बंगाल के माल्दा प्रान्त से की गई है (प्रा० भा० भौ० स्व०, पृ० ४३)।

पशुभूमि (सभा पर्व, ३०-९)—यह "पशुपतिनाथ का निकटवर्ती स्थान (नैपाल) है जिसे भीम ने जीता था (महाभारत की नामानुक्रमणिका पृ० १९१)।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मदधार (सभा पर्व ३०-९) और **सोमधेय** (सभा पर्व ३०-१०)--को जीतने के बाद भीम ने वत्सभूमि को जीता (सभा पर्व ३०-३१)।

वत्सभूमि (सभा पर्व ३०-१०)—वत्सभूमि यमुना के किनारे सुन्दर वनों व आश्रमों से युक्त पुण्य देश था जहाँ तपस्वी लोग रहते थे (उद्योग पर्व १८६-१९-२५)। इसके निकट ही प्रयाग था (उद्योग पर्व १८६-२७)। यह कौशाम्वी देश था जिसे कुशाम्ब (आदि पर्व ६३-३१) ने बसाया था। इस प्रान्त में अम्बा नाम की प्रसिद्ध बरसाती नदी बहती थी (उद्योग पर्व १८६-३९-४१)।

भर्ग—यह प्रसिद्ध जनपद था (भीष्म पर्व ९-५१) जिसे भीम ने जीता था (सभा पर्व, ३०-११)। यह बुद्धकालीन भग्गगण-राज्य ही था। यह वत्स देश के निकट ही मिर्जापुर प्रान्त में चुनार के निकट स्थित था। बुद्ध युग का यही सुंसुमार गिरि का भग्ग राज्य था।

निषाद (भीष्म पर्व ९-५१)—प्रयाग के आगे शृंगवेरपुर (सिंगरोर) से थोड़ी ही दूर पर गंगा के किनारे निषाद (गुह) का राज्य था (रामायण, अयोध्या काण्ड अ० ५०)। निषाद नामक एक वन्य जाति थी जो विन्ध्याचल पर निवास करती थी (शान्ति पर्व, ५९-९७)। बृहत्संहिता (१४-१०) में निषाद राष्ट्र को दक्षिण-पूर्व में स्थित बताया गया है। डा० कर्न ने इसका अनुवाद 'आदिवासियों का क्षेत्र' किया है। बृहत्संहिता में ही दूसरे स्थान पर 'निषाद-संघ' (बृ० सं०, ५-७६) का भी उल्लेख है जिसका अर्थ डा० कर्न ने 'वन्य कबीले' किया है। शक महाक्षत्रप रुद्रदामन प्रथम के जूनागढ़ शिला लेख में निषाद देश का उल्लेख मिलता है।

एकलव्य निषादराज हिरण्यधनुष का पुत्र था जो द्रोण के पास धनुर्विद्या सीखने गया था (आदि, १३१-३१) परन्तु उन्होंने उसे निषाद समझकर शिष्य नहीं बनाया। निषाद काले रंग की वन्य जाति थी (आदि १३१-३९)। दक्षिण दिशा की विजय में भी सहदेव ने निषादभूमि (सभा पर्व ३१-५) को जीता था। यहाँ यह निषाद भूमि रामायण के निषाद गुह का ही राज्य था। पुनः, शूर्पारक (सोपारा) दण्डकारण्य और समुद्रद्वीपों के साथ भी निषादों को जीता (सभा पर्व ३१।६५-६७)। ये निषाद रुद्रदामन के जूनागढ़ शिला लेख वाले ही हैं।

दक्षिण मल्ल (सभा पर्व ३०-१२)—मार्कण्डेय पुराण (५७-४३, ४४) के अनुसार मल्ल और मल्लक प्राच्य में स्थित थे। दक्षिण मल्ल की ठीक ठीक

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पहचान नहीं हो सकती। इस क्षेत्र में भोगवन्त पर्वत, शर्मक, वर्मक, शक और बर्बर देशों की स्थिति अज्ञात है।

किरात (सभा पर्व ३०-१५)—इन्हें इन्द्रपर्वत के निकट स्थित बताया गया है। राजगिरि (राजगृह) के निकट इन्द्र शैल गुहा है (जाग्रफ़िकल डिक्शनरी, पृ० ७९)। अतः यह वन्य जाति यहीं पर्वतों पर बसने वाली रही होगी।

सुह्म (सभा पर्व ३०-१६)—पांडु ने भी सुह्म को जीता था (आदि, ११२-२९)। बृहत्संहिता (१४-५) में भी सुह्म की स्थिति पूर्व विभाग में बताई गई है और दूसरी जगह भी इसका वर्णन ओड्र, वंग और कलिंग के साथ किया गया है (बृ० सं०, १६-१)। पुराणों के अनुसार ययाति वंशीय राजा बलि के चौथे पुत्र अणु के ५ पुत्र थे—अंग, वंग, कलिंग, सुह्म और पुण्ड्र। इन्हीं के नाम पर उक्त पाँचों देश भी इन नामों से प्रसिद्ध हुए (विष्णु पु०, ४-१८-१३, १४)। महाभारत के टीकाकार नीलकंठ ने सुह्म की पहचान राढ से की गई है। राढ बंगाल का वह भाग था जो गंगा के पश्चिम में पड़ता है और जहाँ तामलुक, मिदनापुर तथा हुगली और बर्दवान के प्रान्त शामिल थे (जाग्रफिकल डिक्शनरी पृ० १६४ राढ, सुह्म पृ० १८५)। यह दक्षिण-पश्चिमी बंगाल था जो समुद्र तट और ओड्र (उड़ीसा) की उत्तरी सीमा से मिला हुआ था। दशकुमार चरित के अनुसार दामलिप्त या तामलिप्त सुह्म देश की राजधानी थी। महाभारत की जनपद तालिका में ताम्रलिप्तक (भीष्मपर्व ९-५७) जनपद का उल्लेख है। आगे इसी सूची में फिर सुह्म (सभा पर्व ३०-२५) और ताम्रलिप्त (सभा पर्व ३०-२४) का उल्लेख है। सुह्म को सागर-वासियों के निकट रखा गया है (सभा पर्व ३०-२५) जिससे इनकी स्थिति समुद्र के निकट सिद्ध होती है।

प्रसुह्म (सभा पर्व ३०-१६)—इसकी पहचान नहीं हो सकती है। काव्य-मीमांसा की पूर्व देश-सूची में सुह्म के बाद ब्रह्मोत्तर का नाम दिया गया है। संभवतः प्रसुह्म और ब्रह्मोत्तर एक ही थे। कहीं कहीं सुह्मोत्तर (मत्स्य पु० ११४-४४) भी नाम मिलता है। सुह्मोत्तर-सुह्म के उत्तर का भूखंड—प्रसुह्म कहलाता था।

दण्ड और दण्डधार (दण्डं दण्डधारं च, सभा पर्व ३०-१७)—सुह्म और प्रसुह्म जीतने के बाद भीम मगध की ओर चले (सभा पर्व ३०-१६)। उन्होंने मार्ग में स्थित दण्ड और दण्डधार तथा अन्य राजाओं को जीता (सभा पर्व

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

३०-१७)। दण्डभुक्ति (वर्धमान भुक्ति, उत्तर राढ, एपिग्रेफिका इंडिका, जिल्द २४, भाग १, १९३७, पृ० ४६-४७; बी० सी० ला०—हि० जा० ए० इ०, पृ० २१५) ही दण्ड-देश है। पूर्व देश में ही चम्पा से नजदीक दण्ड तीर्थ भी था (वनपर्व ८५-१५)।

मगध (भीष्म पर्व ९-४५, ५०)—यह प्राचीन भारत का प्रसिद्ध जनपद था जिसकी राजधानी गिरिव्रज को भीम ने जीता था (सभा पर्व, ३०-१६, १७)। गंगा और शोण नदियाँ इसकी पश्चिमी सीमा बनाती थीं (सभा पर्व २०-२९)। मागध क्षेत्र में गोधन (गायों और पशुओं) और जल से परिपूर्ण गोरथ गिरि (आधुनिक बराबर की पहाड़ियाँ) मागध पुर (मगध की राजधानी) के समीप ही था (सभा पर्व २०-३०)। इस पहाड़ी से गिरिव्रज दिखलाई पड़ता था (सभा पर्व २०-३०; २१-१)।

गिरिव्रज पाँच पहाड़ियों—वैहार-विपुल, वराह, वृषभ, ऋषिगिरि और चैत्यक—से घिरा हुआ था (सभा पर्व २१-२, ३)। सुत्तनिपात की अट्ठकथा में (पृ० ३८२) इनके नाम ये हैं—पाण्डव, गिज्झकूट, वेभार, इसिगिलि और वेपुल्ल पब्बत। अश्वघोष ने बुद्धचरित (२१-२) में गिरिव्रज को पाँच पर्वतों के बीच स्थित नगर' कहा है। महाभारत का विपुल ही पाली ग्रन्थों का वेपुल्ल है। महाभारत में दिए हुए इन पहाड़ियों के नामों में बौद्ध साहित्य के नामों से अन्तर है। महाभारत में 'इन पर्वतों की वृक्ष वनस्पति और उन पर स्थित ऋषियों के आश्रमों का विशेष वर्णन मिलता है(सभा पर्व, २१।४-२१)।

गिरिव्रज (आदि, २-१३४) के अतिरिक्त बार्हद्रथपुर (सभा पर्व २४-४४) और राजगृह (आदि पर्व ११२-२७) भी मगध की राजधानी के नाम थे। प्राचीन काल में मगध की राजधानी राजगृह में अम्बुवीचि नाम के राजा राज्य करते थे (आदि २०३-१७)। गिरिव्रज और मथुरा के बीच ९९ योजन दूरी थी (सभा पर्व १९-२३, २४, २५)।

रामायण के अनुसार राजा वसु ने गिरिव्रज की स्थापना की थी। इसीलिए यह वसुमती के नाम से प्रसिद्ध हुई। इसके चारों ओर पाँच श्रेष्ठ पर्वत सुशोभित हैं। मागधी या सोन नदी इन पाँचों पर्वतों के बीच माला की तरह शोभित होती हुई मगध की दक्षिण पश्चिमी सीमा है। (बालकाण्ड ३२।८-१०)।

अंग-वंग (सभा पर्व २१।७)—मगध जीतने के बाद भीम ने कर्ण को पराजित किया (सभा ३०।१८-१९)। कर्ण का राज्य ही अंग देश था

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(विष्णु पु० ४-१८-२८, २९) । महाभारत (सभा पर्व ४४-९) में कर्ण को 'वंगांगविषयाध्यक्षं' अर्थात् वंग और अंग का राजा कहा गया है । जनपद-सूची में अंग-वंग का एक ही साथ उल्लेख है (भीष्म पर्व ९-४६) । अंग-वंग में भी दर्शनीय तीर्थ थे (आदि पर्व २१४-९) ।

वगांग विषयों (सभा पर्व ४४-९) की समीपता के कारण ही इन जनपदों का प्रायः एक साथ उल्लेख मिलता है ।

अंग (भीष्म ९-५०)—यह पूर्व देश का प्रसिद्ध जनपद था जिसका उल्लेख मगध के साथ भी हुआ है (भीष्म, ९-५०) । इससे ज्ञात होता है कि अंग और मगध भी निकटवर्ती जनपद थे । दुर्योधन ने कर्ण को अंग विषय का राजा बनाया था (आदि पर्व १३५-३६; १३६-४, ७, १७) । इसकी राजधानी चम्पा गंगा के किनारे स्थित थी (वनपर्व ३०८-२६) । यह तीर्थ भी था (वनपर्व ८५-१४) । इसे मालिनी भी कहते थे (शान्ति पर्व, ५।६-७) । चम्पकमालिनी (चम्पा के फूलों से सुशोभित होने वाली) होने के कारण यह चम्पा (चम्पा चम्पकमालिनी) कहलाती थी (अनुशासन पर्व ४२-१६) ।

श्री राम और लक्ष्मण विश्वामित्र के साथ अयोध्या से सिद्धाश्रम (वक्सर, बिहार प्रदेश) जा रहे थे । पहले दिन उन्होंने सरयू के किनारे ही रात बिताई (बालकांड, अ० २१ और २२) । दूसरे दिन प्रातः होते ही नित्य कर्म करने के बाद आगे चल पड़े । जाते जाते वे सरयू और गंगा के संगम पर पहुँचे जहाँ एक पुण्य आश्रम स्थित था (बालकांड, २३-५-१३) । इसके निकट ही शिव-नेत्र से जल कर कामदेव नष्ट हो गया । जहाँ अनंग ने अपना शरीर छोड़ा वही प्रदेश अंग देश के नाम से प्रसिद्ध हुआ । (स चांगविषयः श्रीमान् यत्रांगं स मुमोच ह । बालकांड, १३-१४) । इस प्रकार अंग देश छपरा—सारन प्रान्तों से ही प्रारम्भ होता था । इसमें भागलपुर और मुंगेर के जिले सम्मिलित थे । राज दशरथ के मित्र लोमपाद अंग के राजा थे (वनपर्व ११०-४१, ४२) जिसकी राजधानी चम्पा थी (वनपर्व ११३-१५) ।

पर्वतीय-प्रदेश—अंग के निकट ही यह पर्वतीय प्रदेश था जिसे भीम ने जीता (सभा ३०-२०) । वह एक जनपद था (भीष्म पर्व ९-५६) । श्रीकृष्ण ने भी पर्वतीय प्रदेश को जीता था (द्रोण पर्व ११-१६) । युधिष्ठिर की सभा में पार्वतीय लोग भेंटें लाए थे (सभापर्व ५२-७) । कई पर्वतीय देशों का उल्लेख है । यहाँ पर यह प्रदेश बिहार प्रदेश का कोई पर्वतीय क्षेत्र होगा ।

मोदागिरि—पर्वतीय प्रदेश को जीतने के बाद ही भीम ने मोदागिरि

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(मुंगेर) को जीता (सभा पर्व ३०-२१)। पुराणों में उल्लिखित और प्राच्य में स्थित मुद्गरक देश (ब्रह्मांड, पू० भा० १६-५३, मार्कण्डेय पु०, ५४-४२) मोदागिरि देश है।

पुण्ड्र—पुण्ड्र (वृहत्संहिता १४-७) पूर्व देश का प्रसिद्ध जनपद था (भीष्म पर्व ९-५१)। राजा वलि के पुत्र पुण्ड्र के नाम पर ही यह देश भी पुण्ड्र कहलाया। पुण्ड्र (विष्णुधर्मोत्तर १-९-४) या पौण्ड्र (मत्स्य १६२-७३) को प्राच्य में स्थित वताया गया है। लिंग पुराण (पूर्वभाग, ५४-५७) में कहा गया है कि यहाँ वर्षा होती है और बिजली चमकती है तथा शीतकाल वाला अन्न पैदा होता है (पौंड्राः वृष्टयः सर्वा वैद्युताः शीतसस्यदाः)।

महाभारत (सभा ३०-२२) में पुण्ड्र देश को कोसी नदी की कछार में स्थित बताया गया है (पुण्ड्राधिपं···कौशिकीकच्छ निलयं) कहा गया है। इसकी पहचान उत्तरी बंगाल में दीनाजपुर के आस पास के क्षेत्रों से की गई है। इसकी राजधानी पुण्ड्रवर्धन नगर (आधुनिक महास्थान) थी। वंग समुद्र के निकट स्थित देश था (आश्वमेधिक पर्व ८२-२९)।

वंग (भीष्म पर्व ९-४६)—पौण्ड्र राजा वासुदेव को वंग और पुण्ड्र का शासक बताया गया है (सभा पर्व १४-२०)। इससे बंगाल के एक उस राज्य का परिचय मिलता है जिसमें पुण्ड्र और वंग प्रान्त थे। वंग में भी तीर्थ थे (आदि पर्व २१४-९) जिन्हें अर्जुन ने देखा था। भीम ने इस देश को जीता था (सभा ३०-२३)। श्रीकृष्ण ने भी इसे जीता था (द्रोण ११-१५)। कर्ण ने भी जीत कर इसे अपना करद राज्य बना लिया था (कर्ण ८-२९)। वंग देश की सेना में (समुद्र के पास रहने वाले) म्लेच्छ भी सम्मिलित थे (आश्वमेधिक पर्व ८२-३०)। गंगा के डेल्टा के पूर्वी भाग को वंग और इसके मध्य भाग को उपवंग तथा पश्चिमी भाग को अंग कहतें थे। डा० भाउदाजी के अनुसार ब्रह्मपुत्र और पद्मा नदियों के बीच भूखंड को वंग कहते थे। महाभारत के समय यह देश पुण्ड्र, सुह्म और ताम्रलिप्त से पृथक था। बंगाल पाँच भागों में विभक्त था—पुंड्र या उत्तरी बंगाल, समतट या पूर्वी बंगाल, कर्णसुवर्ण या पश्चिमी बंगाल, ताम्रलिप्त या दक्षिण बंगाल और कामरूप या आसाम (ह्वेनसांग)। कनिंघम के अनुसार बंगाल चार भागों में बँटा था—गंगा के उत्तर में स्थित बरेन्द्र और वंग तथा गंगा के दक्षिण में स्थित राढ और बाग्डी। ·········बंग पूर्वी बंगाल है" (जाग्र० डि०, पृ० २२)।

ताम्रलिप्त और सुह्म (सभापर्व ३०-२५) को भीम ने जीता। ताम्रलिप्ति सुह्म देश की ही राजधानी थी। जनपद-सूची (भीष्म पर्व ९-५७) में

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भी ताम्रलिप्तक को एक पृथक जनपद बताया गया है। बृहत्संहिता (१४-७) और पुराणों (वायु, १-४५-१२३; ब्रह्मांड, पू० भा०, १६-५४; मार्कंडेय, ५४-४४) में भी ताम्रलिप्तक प्राच्य का जनपद था। भागवत पुराण (९-२३-३) के अनुसार सुह्म भी एक प्राच्य जनपद था। ताम्रलिप्त मिदनापुर जिले का तामलुक नामक स्थान था। ताम्रलिप्त का राजा युधिष्ठिर की सभा में भेंटें लाया था (सभा पर्व, ५२-१८)।

कर्वट (सभा पर्व, ३०-२४)—भीम ने कर्वट देश के राजा को जीत लिया था। बृहत्संहिता (१४-५) में भी कर्वट को सुह्म के साथ ही पूर्व देश में स्थित बताया गया है। वृहत संहिता (१६-१३) में इनको आटविक, बधिक आदि नृशंस लोगों के साथ रखा गया है। मार्कण्डेय पुराण (५५-११) में कर्वटाशन नामक जनपद को कूर्म रूपी भारत के मुख की ओर (पूर्व में) स्थित बताया गया है। इसकी ठीक ठीक पहचान नहीं की गई है। समुद्रतटीय कर्वटों या कैवर्तों (केवट, नाविकों) की कोई बस्ती रही होगी।

सामुद्रिक म्लेच्छ (सभा पर्व ३०-२५)—ये कर्वटों के निकट ही समुद्रतट और पड़ोस के द्वीपों में रहने वाले अल्प-संस्कृत लोग थे जिनको भी भीम ने जीता था। इन्हें ही सागरानूप में रहने वाला म्लेच्छ कहा गया है (सभा पर्व ३०-२७)।

लौहित्य (सभा पर्व ३०-२६)—ब्रह्मपुत्र नदी का ही प्राचीन नाम लौहित्य नदी था (सभा पर्व ९-२२; बृहत्संहिता १६-१६)। बृहत्संहिता (१४-६) में भी इसे पूर्व देशीय जनपद कहा गया है। यह ब्रह्मपुत्र की घाटी में स्थित भारत की पूर्वोत्तर सीमान्त भूमि-नेफ़ा-में स्थित लोहित प्रान्त ही है।

इस प्रकार भीम पूर्व देश की विजय समाप्त कर राजधानी को वापस लौट आए।

दक्षिण-दिग्विजय

सहदेव ने दक्षिण दिशा की विजय की (सभा पर्व, अध्याय ३१)। ये सभी देश युधिष्ठिर की राजधानी (खाण्डव प्रस्थ=इन्द्र प्रस्थ या देहली) से दक्षिण दिशा की ओर जाने में पड़े। मोटे तौर से, वह मथुरा (शूरसेन) भरतपुर (मत्स्य), झांसी (चर्मण्वती कूल), बीना (वेणा तट) होते हुए नर्मदा के आगे दक्षिणापथ की ओर गये (सभा पर्व ३१-१७)। दक्षिणापथ में माहिष्मती (दक्षिण अवन्ति की राजधानी), त्रैपुर (जबलपुर प्रान्त) होते हुए सुराष्ट्र (काठियावाड़) में जा पहुँचे। यहां पश्चिमी समुद्र-तट पर स्थित शूर्पा-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रक (सोपारा, थाना प्रान्त, महाराष्ट्र), संजयन्ती (वैजयन्ती) होते हुए उन्होंने महाराष्ट्र (दण्डक, करहाट, और ताम्रद्वीप) को जीतकर द्रविड, चोल, पाण्ड्य, केरल आदि देशों को जीत लिया। सहदेव ने लंका विजय के लिए भीम के पुत्र घटोत्कच को भेजा। उसने रामसेतु पार कर दक्षिण समुद्र के उस पार लंका भी जीतने में सफल हुआ। इस प्रकार दक्षिण-विजयी सहदेव इन्द्रप्रस्थ से दक्षिण तक विभिन्न देशों को जीतता हुआ चला गया। इस विजय-यात्रा में निम्नलिखित देशों का उल्लेख मिलता है—

शूरसेन, मत्स्य, अधिराज, पटच्चर, निषादभूमि, नरराष्ट्र, कुन्तिभोज, चर्मण्वतीकूल, सेक, अपरसेक, अवन्ति, भोजकटपुर, कोसल, वेणातट, कान्तारक, प्राक्कोसल, नाटकेय, हेरम्बक, मारुध, रम्यग्राम, नाचीन, अर्बुक, आटविक, पुलिन्द, पाण्ड्य, किष्किन्धा, माहिष्मती पुरी, त्रैपुर, सुराष्ट्र, शूर्पारक, तालाकट, दण्डक, सागरद्वीप, निषाद, पुरुषाद, कर्णप्रावरण, कालमुख, कोलगिरि, सुरभीपत्तन, ताम्रद्वीप, रामक पर्वत, तिमिंगिल, एकपाद, केरल, वनवासी, संजयन्ती, करहाटक, पाण्ड्य (दूसरी बार) द्रविड, चोड, केरल, आन्ध्र, तालवन, कलिंग, उष्ट्रकर्णिक, आटवीपुरी, यवन नगर और लंका।

इस देश-सूची में बहुत से नाम नए और अपरिचित हैं। उनकी पहचान भी नहीं हो सकती है। इनमें प्रसिद्ध राज्य निम्नलिखित थे—

शूरसेन—मध्य देश में स्थित मथुरा-मण्डल का ही प्राचीन नाम था। इसे उत्तर पाण्ड्य के नाम से भी जानते थे। इसकी राजधानी शूरसेनपुर (सभा पर्व, अ० ३८, पृ० ८०४) को ही मथुरा कहते थे जो अति प्रसिद्ध तीर्थ और नगर भी था। यह देश दुधार गायों के लिए प्रसिद्ध था (आदि पर्व २२०-४६)। जरासंध के भय से शूरसेन (यादव) लोग मथुरा छोड़ कर दक्षिण दिशा की ओर चले गए थे (सभा पर्व, १४-२६)।

मत्स्य—(विराटराष्ट्र) महाभारत युग में यह एक प्रसिद्ध और समृद्ध राष्ट्र था जहां विराट (विराटपर्व १-१७) राजा राज्य करते थे। विराट राष्ट्र (आदि पर्व १-१६९, १७०) में पांचो पांडव द्रौपदी के साथ अज्ञातवास के समय रहे थे। मत्स्य राज, विराट, ने अपनी पुत्री उत्तरा को अर्जुन के हाथ में सौंप दिया और अर्जुन ने उसे अपने पुत्र (अभिमन्यु) को (आदि पर्व १-१७१) व्याह दी। वैराट पर्व में विराटनगर (आदि पर्व २-२०६) में रहते हुए पांडवों के पराक्रम का वर्णन है।

कुरु राज्य के चारों ओर बहुत से सम्पन्न देश—पाञ्चाल, चेदि, मत्स्य,

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शूरसेन, पटच्चर, दशार्ण, नवराष्ट्र, मल्ल, शाल्व, युगन्धर, कुन्ति, सुराष्ट्र, अवन्ति (विराटपर्व, १-१२,१३) बसे हुए थे। परन्तु पांडवों ने मत्स्य राष्ट्र के गुणों की ही प्रशंसा की (विराट पर्व, अ० २९, पृ० १९२९)। यह राष्ट्र धन-धान्य सम्पन्न था (विराट पर्व ३०-८)। विराट नगर (बैराट, जयपुर प्रान्त) ही मत्स्य राष्ट्र की राजधानी थी (विराट पर्व, १-१८)। यह सुन्दर नगर (विराटनगरं रम्यं, विराट पर्व ६-१) था, जहां दुर्गा देवी, त्रिभुवनेश्वरी, का मन्दिर था। विराटनगर (विराट पर्व १३-३) अथवा मत्स्यराज का नगर (विराट पर्व, ७२-४०) ही मत्स्य नगर (विराट पर्व, १३-१, २) भी कहलाता था। विराट देश में उपप्लव्य नामक अन्य नगर भी था (विराट पर्व, ७२-१४)। इसमें जयपुर, भरतपुर और अलवर के प्रान्त सम्मिलित थे।

अपर मत्स्य—इसकी ठीक-ठीक पहचान नहीं हो सकती है। सम्भवतः मत्स्य राष्ट्र का पश्चिमी भाग ही अपर मत्स्य कहलाता था।

अधिराज—डे (जा०डि०, पृ० २) ने इसकी पहचान रीवा (मध्य प्रदेश, इलाहाबाद से १८२ मील दूर) से की है।

पटच्चर—डा० अग्रवाल ने इसकी पहचान पटौदी राज्य से की है। परन्तु डे के अनुसार (जा० डि०, पृ० १५०) इसमें इलाहाबाद और बांदा के जिलों के भाग सम्मिलित थे।

निषाद भूमि—विन्ध्यपर्वत पर स्थित निषादों या भीलों का देश था। डे के अनुसार ये (जा०डि०, पृ० १४१-१४२) खानदेश और मालवा की पश्चिमी सीमा पर विन्ध्य और सतपुड़ा पर्वतों पर मही, नर्बदा और ताप्ती के किनारे बसे थे।

गोशृंग पर्वत (सभा पर्व ३१-५)—निषादभूमि के निकट ही यह पहाड़ी थी।

नरराष्ट्र—इसकी पहचान नल-राष्ट्र (नल का देश) नरवर (ग्वालियर प्रान्त) से की जा सकती है।

कुन्तिभोज (भीष्म पर्व, ९-४३)—इसे भोज भी कहते थे। यहां भोज नरेश कुन्तिभोज ने कुन्ती का पालन-पोषण किया था। पृथा-कुन्ती ने कुन्ति-भोज की राजधानी में पांडु का स्वयंवर में वरण किया था (आदि पर्व, अ० १११)। इसकी राजधानी अश्वनदी के निकट ही थी (वनपर्व ३०८-७)। कुन्ती ने कर्ण को एक पिटारी में रखकर अश्वनदी (वनपर्व ३०८-९, २२) में छोड़ दिया था। वह पिटारी अश्वनदी में बहती हुई चर्मण्वती (चम्बल) नदी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

में गयी और फिर यमुना तथा यमुना से होती हुई गंगा में पहुँची (वन पर्व ३०८-२५)। गंगा से ही वह पिटारी बहते बहते सूतविषय (अंग देश) की राजधानी चम्पा में पहुँच गई (वन पर्व ३०८-२६)। इससे हमें ज्ञात होता है—

१—अश्वनदी चम्बल की सहायक नदी थी।

२—कुन्तिभोज की राजधानी से चम्पा तक नदी मार्ग—अश्वनदी, चम्बल और गंगा द्वारा—प्रचलित था।

यह कुन्ति देश भी कहलाता था (गरुड़ पु०, १-५५-१०; भागवत १०-८६-२०; पाणिनि, ४-१-१७६; महाभाष्य ४-१-१९१) जिसकी पहचान ग्वालियर के कोंतवार से की गई है। यह दक्षिण पांचाल के पास ही दक्षिण की ओर स्थित था (सभा पर्व १४-२७)। सम्भवतः कुन्ति नदी की घाटी में स्थित होने के कारण इसे कुन्ति कहते थे।

चर्मण्वती-कूल—यह चम्बल नदी की घाटी थी।

सेक—डे (जा० डि० पृ० १८३-१८४) ने इसकी पहचान उत्तरी मालवा से की है।

अपर सेक—यह सेक के दक्षिण स्थित था (जा० डि० पृ० १८४)।

सेक और अपरसेक एक ही जनपद के दो पृथक पृथक भाग थे। अपर सेक इसी (सेक) जनपद का पश्चिमी भाग था। चम्बल नदी के पूर्व सेक देश था तथा इसके पश्चिम अपर सेक था जिसकी राजधानी दशपुर (मंड-सोर) थी।

अवन्ति (भीष्म पर्व ९-४३)—यह देश नर्मदा की घाटी (सभापर्व ३१-१०) में स्थित था। बृहत्संहिता (५-६४) में 'आवन्तिका जनपदाः' का उल्लेख मिलता है। महाभारत में अवन्ति के दो राजाओं—विन्द, अनुविन्द—का उल्लेख है (सभा पर्व ३१-१०)। इसकी राजधानी भी अवन्ति या अवन्तिका (उज्जैनी) कहलाती थी।

यह मालवा क्षेत्र का प्राचीन नाम है। एक मार्ग ऋक्षपर्वत को पार कर अवन्ति को जाता था (वनपर्व ६१-२१)। अतः स्पष्ट है कि यह देश ऋक्ष पर्वत के पास ही स्थित था।

भोजकट-देश सहदेव ने भोजकट पुर में राजा भीष्मक को पराजित किया था (सभा पर्व ३१-११)। यह विदर्भ देश ही था जिसकी राजधानी भोजकट पुर (आधुनिक भोजपुर, जो मध्य प्रदेश में भिलसा से ६ मील दक्षिण पश्चिम स्थित है) थी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भोजदेश को दाक्षिणात्य कहा गया है (उद्योग पर्व १५८-२)। यहाँ का राजा भीष्मक रुक्मिणी का पिता था। रुक्मिणी का भाई रुक्म था। श्री कृष्ण द्वारा रुक्मिणी हरण करने पर रुक्म ने कृष्ण का पीछा किया। उसने प्रतिज्ञा की थी कि वह श्रीकृष्ण को मारे बिना अपनी राजधानी (कुण्डिनपुर) को वापस नहीं लौटेगा। परन्तु कृष्ण ने उसे पराजित कर बन्दी बना लिया। बाद को कृष्ण ने उसे मुक्त कर दिया। जहाँ पर वह कृष्ण से हारा था, वहीं उसने भोजकटपुर नामक नगर बसाया (उद्योग पर्व, १८५-१५)। सहदेव ने सुराष्ट्र से ही भोजकट देश को दूत भेजा था और यहां के राजा भीष्मक ने भी युधिष्ठिर के शासन को स्वीकार कर लिया था (सभापर्व ३१।६३-६४)।

कोसल—यह दक्षिण कोसल था। बृहत्संहिता (१४।८) में इसे दक्षिण पूर्व में स्थित बताया गया है। इसे महाकोशल के नाम से भी जानते हैं। समुद्रगुप्त की प्रयाग प्रशस्ति में भी कोसल का उल्लेख है। पुराणों (वायु १-४५-१३३; ब्रह्मांड, पू० भा० १६-६४) में कोसल देश को विन्ध्यपृष्ठ पर तोशल और त्रैपुर के समीप ही स्थित बताया गया है। कोसल की राजधानी कुशस्थली (वायु पु०, २-२६-१९८) थी जिसे राम के पुत्र कुश ने बसाया था। इसमें मध्य प्रदेश और उड़ीसा का रायपुर-सम्भलपुर-बिलासपुर क्षेत्र तथा गंजाम का कुछ भाग सम्मिलित था। इसकी राजधानी श्रीपुर (आधुनिक सिरपुर) मानी गई है (रायचौधरी, पो० हि० ऐ० इ०, पृ० ५३८-५३९)। डे (जा० डि०, पृ० १०३-१०४) के अनुसार ११वीं अथवा १२वीं शताब्दी में इसकी राजधानी रतनपुर थी। यहां रत्नों या हीरों की खान का भी उल्लेख है (गरुड़ पु० १-६८-१८; बृहत्संहिता ८०-६)। इसीलिए इसकी राजधानी का नाम रतनपुर ठीक ही था।

प्राक्कोसल (सभापर्व ३१-१३)—यह दक्षिण कोसल का ही पूर्वी भाग था जो तोसल से मिला हुआ था। तोसल की ही राजधानी धौली (कलिंग-उड़ीसा) थी जिसका उल्लेख अशोक के कलिंग-शिला लेख में तोसलि के नाम से हुआ है। इसकी पहचान उत्तर कोसल के पूर्वी भाग—पूर्व कोसल (पूर्वाश्च कोसलान्, सभापर्व २०-२८)—से नहीं हो सकती है।

वेणा-तट देश (सभा पर्व ३१-१२)—वेणातट (वेणायाश्च तटं, बृहत्संहिता ४-२६) यह एक नदी-देश था जो दक्षिण में वेणा नदी की घाटी का ही नाम था। वेण्वातट-देश में रत्न होते थे (गरुड़ पु० १-६८-१७-१८; बृहत्संहिता ८०-६)। बृहत्संहिता (१४-१२) में वेणावर्त्तक नामक देश का उल्लेख है जिसे दक्षिण में स्थित बताया गया है। वेणा कृष्णा नदी की एक शाखा है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दोनों की सम्मिलित धारा को ही कृष्ण-वेणा (कन्हवेणा) कहते थे जिसके किनारे असिकनगर स्थित था (खारवेल का हाथी गुम्फा लेख)।

कान्तारक (सभापर्व ३१-१३)—यह प्राक्कोसल से मिला हुआ ही देश था (कान्तारकांश्च......तथा प्राक्कोसलान्)। समुद्रगुप्त के प्रयाग स्तम्भ लेख में भी दक्षिणापथ के विजित देशों में कोसल और महाकान्तार देशों का उल्लेख मिलता है (कौसलक महेन्द्र......महाकान्तारक व्याघ्रराज)। स्कन्द पुराण में कांतार का उल्लेख है जहां इसे गोदावरी और भीमा के दक्षिण स्थित बताया गया है (अवस्थी-प्राचीन भारत का इतिहास, पृ० २१९)।

नाटक (नाटकेय, सभा ३१-१३)—डे (जा० डि०, पृ० १३९) ने इसे लाट देश बताया है।

हेरम्बक (सभा, ३१-१३)—मारुध, रम्यग्राम, नाचीन और अर्बुक (सभा ३१-१४) अज्ञात है। इन सभी देशों को आटविक देश (तांस्तानाटविकान्, सभा ३१-१५) कहा गया है।

मारुध देश मार्कण्डेय पुराण (५८-८) में उल्लिखित मारुत ही है जिसे कूर्म रूपी भारत के मध्य में स्थित बताया है।

आटविक—(सभा पर्व ३१-१५) सहदेव से विजित कान्तारक, प्राक्कोसल, नाटकेय, हेरम्बक, मारुध, रम्यग्राम, नाचीन और अर्बुक, नामक देश (सभा पर्व ३१-१३, १४, १५) विन्ध्य, सतपुड़ा और महेन्द्र (पूर्वी घाट) के ऊपरी भाग के वनों में रहने वाले लोग थे। समुद्रगुप्त के प्रयाग स्तम्भ लेख में भी आटविक राजाओं की पराजय का उल्लेख है (परिचारकीकृत सर्वाटवीक-राजस्य)। यह विन्ध्याटवी का ही एक भाग था जो बघेलखंड से लेकर उत्कल के वन्य प्रदेश तक फैला हुआ था।

पुनः, आगे चल कर, बताया गया है कि सहदेव ने आटवी पुरी (रम्यां आटवीं पुरीं, सभापर्व ३१-७२) को जीता था। यहां पर इसका उल्लेख आन्ध्र, तालवन और कलिंग के साथ किया गया है।

पुलिन्द (सभापर्व ३१-१६)—पुराणों (वायु १-४५-१२६; ब्रह्मांड, पू० भा०, २, १६-५७, ५८; मार्कण्डेय ५४-४७) में आटव्यों (आटविकों) के साथ ही शबर, पुलिन्द और दण्डक नामक दाक्षिणात्य देशों को रखा गया है। यह नर्मदा की घाटी में बसे हुए थे। वामन पुराण (७६-२५) के अनुसार पुलिन्द हिमाद्रि और कालिंजर के बीच (अंतरमद्रिमुख्ययो हिमाद्रिकालंजरयो पुलिन्दा) बसे थे। इस प्रकार उनका सम्बन्ध कालिंजर पर्वत (बुन्देलखंड) से

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

था। डे के अनुसार (जा० डि०, पृ० १६१) पुलिन्द देश में बुन्देलखंड और सागर जिले का पश्चिमी भाग सम्मिलित था। भीम ने भी पूर्व-देश विजय में पुलिन्द नगर को जीता था (सभा पर्व २९-१०)।

पाण्ड्य राज्य (सभा पर्व ३१-१६)—यह द्रविड क्षेत्र का प्रसिद्ध देश था। यहां पर इसकी स्थिति अनिश्चित है।

माहिष्मती पुरी (सभा पर्व ३१/२१-५९)—यहां के राजा नील को सहदेव ने पराजित किया। माहिष्मती दक्षिणी अवन्ति की भी राजधानी थी। यह हैहयों की कुल-परम्परा से प्रसिद्ध राजधानी थी। राजशेखर के अनुसार (का० मी० ९३-२५) माहिष्मती के दक्षिणी ओर का देश दक्षिणापथ कहलाता था। यह नर्मदा की घाटी में स्थित अनूप देश था जिसकी राजधानी माहिष्मती थी।

अनूप—अनूप देश के राजा युधिष्ठिर को भेंट लाये थे (सभा पर्व ५१-२४)। यहां का राजा और उसकी सेना (अनूपकाः, सभा पर्व ५०-४८) युधिष्ठिर की सेना में सम्मिलित थे। इसका उल्लेख नीप (नीपानूप) के साथ भी हुआ है।

त्रैपुर (सभा पर्व ३१-६०; भीष्म पर्व ८७-९)—यह देश माहिष्मती पुरी से दक्षिण स्थित था, क्योंकि सहदेव माहिष्मती पुरी जीतने के बाद दक्षिण दिशा को गए, जहां उसने त्रैपुर-नृप (त्रिपुरी के राजा) को पराजित किया। कर्ण ने भी इसे जीता था। यह (दक्षिण) कोसल के निकट ही स्थित था (त्रिपुरीं कोसलां तथा, कर्ण पर्व ५४-१०)। त्रिपुर आधुनिक तेवर (जबलपुर से सात मील पश्चिम नर्मदा पर जबलपुर-भेड़ाघाट रोड पर स्थित) ही है। पुराणों तथा अन्य ग्रन्थों की भाँति महाभारत में भी त्रिपुर की उत्पत्ति और विनाश की कथा मिलती है (कर्ण पर्व, अ० ३३ व ३४)। इसकी खुदाइयों से प्राचीन सभ्यताओं के अवशेष मिले हैं।

सुराष्ट्र विषय (सभापर्व ३१-६२)—बृहत्संहिता (१४-१९) में इसे दक्षिण-पश्चिम देश विभाग में स्थित बताया गया है। यह पश्चिम भारत का देश है (का० मी०. ९४/४-५)। परन्तु महाभारत में इसे दक्षिण में स्थित कहा गमा है। यह एक सम्पन्न राष्ट्र था (विराट पर्व १-१३)। कौरवों की सेना में सुशिक्षित सुराष्ट्रदेशीय वीर सम्मिलित थे (भीष्म पर्व, २०-१४)। इस देश में भी बहुत से तीर्थ, मन्दिर, आश्रम, नदियां और सरोवर थे (वन पर्व, ८८-१९)। ये निम्नलिखित हैं—

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चमसोद्भेद—जो सरस्वती निषाद राष्ट्र के द्वार पर, विनशन नामक स्थान पर लुप्त हो गई थी, वह पुनः चमसोद्भेद नामक स्थान पर प्रकट हो जाती है (वन पर्व ८२-१११, ११२)। यह सुराष्ट्र में तीर्थ था (वनपर्व ८८-२०)।

प्रभास—(वन पर्व, ८८-२०) समुद्र तट पर स्थित यह अत्यन्त प्रसिद्ध तीर्थ स्थान था (स्कन्दपुराण-प्रभासखंड)। इसे देवताओं का तीर्थ (प्रभासं चोदधौ तीर्थं त्रिदशानां) कहा गया है। इसीलिए इसे देवपट्टन भी कहते हैं। यह सोमनाथ ही है। इस तीर्थ में स्नान कर चन्द्र देव ने उत्कृष्ट प्रभा प्राप्त की थी (प्रभां हि परमां लेभे) इसीलिये सब लोग इसे प्रभास कहने लगे (अतश्चैतत् प्रजानन्ति प्रभासमिति; शल्यपर्व, ३५-८६)।

चमसोद्भेद और प्रभास पास ही में स्थित थे (शल्य पर्व, ३५-८६,८७)।

सुराष्ट्र में ही **पिण्डारक** और **उज्ज्यन्तपर्वत** तथा **द्वारवती** या द्वारका (वनपर्व ८८।२१-२७) भी अत्यन्त पवित्र तीर्थ स्थान थे।

शूर्पारक (सभा पर्व ३१-६५)—यह पश्चिमी समुद्र तट पर स्थित देश है। परन्तु महाभारत में इसे दक्षिण समुद्र के तट पर स्थित बताया गया है (तीरं समुद्रस्य दक्षिणस्य, शान्तिपर्व ४९-६५)। यहाँ समुद्र तट पर परशुराम ने इसकी स्थापना की थी (शूर्पारकं देशं, शान्ति पर्व ४९-६६)। इसे ही **अपरान्त** भी कहते थे (शान्ति पर्व ४९-६७)। शूर्पारक आधुनिक सोपारा (जिला थाना, महाराष्ट्र) है। यह पवित्र तीर्थ भी था। यहाँ अशोक का शिलालेख भी मिला था।

तालाकट (सभा पर्व, ३१-६५)—शूर्पारक के साथ ही इसे अपरान्त में स्थित बताया गया है (ब्रह्म पु०. २७-५८)। बृहत्संहिता (१४-११) में तालिकट को दक्षिण में स्थित बताया गया है। फ्लीट के अनुसार बीजापुर जिले का तालिकोट तालिकट हो सकता है। परन्तु यह स्थान अधिक प्राचीन नहीं था। डे (जा० डि०, पृ० २०२) के अनुसार तालिकट और तलकाड एक ही हैं। तलकाड चेर की राजधानी थी जो कावेरी नदी के तट पर मैसूर के दक्षिण ३० मील दूर स्थित थी। राइस के अनुसार तलकाड का प्राचीन नाम तालवनपुर था (एपि ग्रे० इन्डि०, जिल्द ३, पृ० १६५)। ईसा की तीसरी शताब्दी में यह, गंग राजाओं की राजधानी थी और मैसूर के दक्षिण स्थित इनका राज्य गंगवाडि कहलाता था।

दण्डक (सभा पर्व ३१-६६)—वायु पुराण (१-४५-१२६) और ब्रह्माण्ड

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पु० (पू० भा०, २, १६-५८) में दण्डक को दक्षिणापथ का जनपद कहा गया है। यह दण्डकारण्य का नाम है जो विन्ध्य पर्वत से लेकर गोदावरी के डेल्टा तक फैला था। डा० भन्डारकर (आर० जी०) ने इसकी पहचान महाराष्ट्र से की है (अर्ली हिस्ट्री ऑफ दि डेकन, पृ० २)। दण्डकारण्य में ही जनस्थान (शल्य पर्व, ३९-९, १०) था, जहाँ रामचन्द्र ने राक्षसों का संहार किया था।

सागरद्वीप—सागर द्वीपों में बसने वाले म्लेच्छ राजाओं तथा **निषादों, पुरुषादों** और **कर्णप्रावरणों** को भी जीता (सभा पर्व ३१-६६, १७)। मार्कंडेय पुराण (५५-१३) में भी सामुद्रक पुरुषादकों का उल्लेख है। इन देशों की पहचान निश्चित नहीं है।

महाभारत में तेरह (आदि पर्व ७५-१९) और अठारह (द्रोण पर्व ७०-१५) समुद्र-द्वीपों का उल्लेख है।

कालमुख (सभा पर्व, ३१-६७)—ये भी राक्षस (नरराक्षसयोनयः) थे। इनकी भी स्थिति अनिश्चित है।

कोलगिरि (सभा पर्व, ३१-६८)—बृहत्संहिता (१४-१३) में कोल्लगिरि को दक्षिण देश में स्थित बताया गया है। फ्लीट ने इसे आधुनिक कोल्हापुर माना है जो दक्षिण महाराष्ट्र का एक प्रमुख नगर है। डे(जा०डि०, पृ०१०१) के अनुसार कोलगिरि और कोणावु एक ही हैं। कोणावु की स्थिति मलाबार के कुर्ग क्षेत्र में बतायी गयी है। विष्णु पुराण में उल्लिखित कोरा गिरि और कोला गिरि एक ही माने गये हैं।

सुरभी पत्तन (सभा पर्व, ३१-६८)—डे (जा० डि० पृ० १९७) के अनुसार यह कुबट्टुर ही है जो मैसूर में सरब या सुरभी की राजधानी थी। पेरिप्लस में उल्लिखित 'सोपत्म' और यह एक ही हैं। यही कुन्तलकपुर भी है।

ताम्रद्वीप (सभा पर्व ३१-६८)—डा० मोतीचन्द्र (उपायन पर्व, पृ० ६०) के अनुसार इसकी स्थिति खम्भात (कैम्बे) के आस पास थी। स्कन्दपुराण इसे दक्षिण में स्थित बताता है। यह सह्यपाद (पश्चिमी घाट) में कोंकण के निकट स्थित था (स्ट० स्क० पु०, भाग १, पृ० ९५-९६)।

रामक पर्वत (सभा पर्व, ३१-६८)—स्कन्द पुराण (स्ट० स्क० पु०, पृ० ४७) में रामक देश का उल्लेख है। यह पश्चिमी घाट का कोई पर्वतीय स्थान था। यहीं महाराष्ट्र में रामतीर्थ भी एक स्थान था। नागपुर के पास मेघदूत में वर्णित रामगिरि या (आधुनिक रामटेक) भी प्रसिद्ध स्थान था। रामक पर्वत निश्चित रूप में अज्ञात है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तिमिंगल (सभा पर्व ३१-६९)—बृहत्संहिता (१४-१६) में भी इसे दक्षिण में दण्डकावन के साथ रखा गया है। टालमी (ऐ० इ०, पृ० १८४) द्वारा उल्लिखित तंगल या तग (आधुनिक डिंडुगल, जो मदुरा से ३२ मील पश्चिमोत्तर में स्थित है) से तिमिंगिल की पहचान की गई है (जा० डि०, पृ० २०४)

एकपाद (सभा पर्व ३१-६९)—बृहत्संहिता (१४-७) में एकपद देश को पूर्व में रखा गया है। फ्लीट के अनुसार एकपद और एकचरण (बृ० सं०, १४-३१) एक ही हैं। मोतीचन्द्र (उपायन पर्व, ५९-६०) के अनुसार ये लोग गुजरात, कच्छ और काठियावाड़ के भीलों के पूर्वज थे। इसमें १० हजार ग्राम थे (स्ट० स्क० पु०, पृ० ४३)।

केरल (केरलान् वनवासिनः, सभा पर्व ३१-६९)—डा० मोतीचन्द्र (उपायनपर्व, पृ० ६०)ने यहाँ पर 'केवलान् वनवासिनः'—'जंगल में रहने वाले' का अर्थ लिया है। यह ठीक नहीं है। 'वनवासिनः' देश वाची शब्द है और इसका अर्थ है वनवासी देश के रहने वाले। महाभारत, गीता प्रेस संस्करण में केवलान् के स्थान पर केरलान् है।

वनवासी (सभापर्व ३१-६९)—महाभारत (भीष्मपर्व ९-५८) के अनुसार वनवासिन एक जनपद था। काव्यमीमांसा (पृ० ९३/२५-२८) में वनवासक और बृहत्संहिता (१४-१२) में वनवासी (जो एक ही हैं) दक्षिणापथ का देश कहा गया है। फ्लीट के अनुसार यह उत्तरी कनारा का वनवासी ही है। अल्बरूनी (अल्बरूनीज इण्डिया, पृ० २०२) ने बनवास को समुद्र तट के निकट स्थित बताया है। डा० ब्यूलर (इन्ट्रोडक्शन टु विक्रमांक चरित, पृ० ३४, नोट) ने इसे पश्चिमी घाट में तुंगभद्रा और वरदा नदियों के बीच स्थित बताया है। उत्तर कनारा के क्रौंचपुर को भी वनवासी कहते थे। टालमी (ऐ०इ०, पृ० १७६) ने इसे बनौसेई कहा है जो तुंगभद्रा की सहायक बरदा नदी किनारे इसके ऊपरी भाग में स्थित था (ऐ० इ०, पृ० १७९)। यह नगर अब भी विद्यमान है। ईसवी छठी शताब्दी तक वनवासी नगर कदम्ब वंश की राजधानी थी।

संजयन्ती नगरी (सभा पर्व, ३१-७०)—यह आधुनिक संजन (महाराष्ट्र में) है (उपायन पर्व, पृ० ६०)। स्कन्द पुराण (स्ट० स्क० पु०, जिल्द १, पृ० ४५) में संजायु देश का उल्लेख है जिसकी पहचान संजयन्ती देश से हो सकती है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(7599)

पाखण्ड-करहाटक (सभा पर्व, ३१-७०, पाखंडं करहाटकं)—मार्कण्डेय पु० (५५-८) में पाषण्ड देश को कूर्म रूपी भारत के मध्य में स्थित बताया गया है। पार्जिटर (मा० पु० अं०, पृ० ३५४) के अनुसार यह जैन-बौद्ध हैं। वे बताते हैं कि महाराष्ट्र के सतारा जिले में कराड नगर के निकट बौद्ध गुफाएँ हैं। इसका प्राचीन नाम करहकड या करहकट था (आ० स० वे० इ०, ०सं १०, पृ० १६) और इसकी पहचान महाभारत में उल्लिखित करहाटक से हो सकती है। महाभारत में इसे पाषण्ड इसी लिए कहा गया है कि इसके निकट बौद्ध-विहार थे (मा० पु० अं० पृ० ३६२)।

द्रविड देश के राज्य

द्रविड (उद्योग पर्व १४०-२६; कर्ण पर्व ५-४७) देश के साथ पाण्ड्य, चोल और केरल के सैनिक भी थे (कर्ण पर्व, १२-१४)। काव्य मीमांसा में दक्षिणापथ के जनपदों में इसका उल्लेख नहीं है। डे (जा० डि०, पृ० ५४) के अनुसार मद्रास से लेकर कन्याकुमारी तक का भूखण्ड द्रविड कहलाता था। भागवत पुराण में बलराम की यात्रा से द्रविड क्षेत्र के भूगोल पर प्रकाश पड़ता है—उन्होंने श्रीशैल के आगे दक्षिण, द्रविड क्षेत्र में प्रवेश किया, जहाँ वेंकट प्रभु (वेंकटाचल), कामाक्षी, काञ्ची (नगर) कावेरी नदी, श्रीरंग, ऋषभ पर्वत और दक्षिण मथुरा (पाण्ड्य) होते हुए सेतुबन्ध तक गए। उन्होंने कृतमाला व ताम्रपर्णी नदियों तथा मलय कुलपर्वत और यहीं अगस्त्याश्रम को देख कर वे कुमारी (केप कमोरिन) तक गए (भागवत पु०, १०/७९/१३-१७)। इस प्रकार स्पष्ट है कि पाण्ड्य, चोण्ड्र (चोल), केरल और द्रविड इस द्राविड क्षेत्र में सम्मिलित थे (सभा पर्व ३१-७१) जिसे सहदेव ने जीता। अर्जुन भी अश्वमेध के घोड़े के साथ साथ द्रविड देश में दक्षिण समुद्र तक गए थे (आश्वमेधिक पर्व, ८३-१०, ११)। वसिष्ठ की नन्दिनी के थनों से द्रविडों की उत्पत्ति हुई थी (आदि पर्व, १३४-३६)।

पाण्ड्य (सभा पर्व ३१-७१)—सहदेव ने इसे जीता था। कहा गया है कि द्रविड़ लोग भी क्षत्रिय थे। परन्तु ब्राह्मणों का अदर्शन (न देखना या श्रद्धा न करने) के कारण वे वृषलत्व (शूद्रत्व) को प्राप्त हुए (अनुशासन पर्व, ३३-२१, २२)। असुर बल पाण्ड्य राष्ट्र का एक राजा था (आदि पर्व ६७-४२)। पाण्ड्य देश का राजा द्रौपदी के स्वयंवर में आया था (आदि पर्व १८९-१५)। पाण्ड्य-राज युधिष्ठिर की सभा में बैठते थे (सभा पर्व ४-२४)। पाण्ड्य नरेश समुद्रतटवर्ती देश के सैनिकों से युक्त युधिष्ठिर के पक्ष में आए

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

थे (उद्योग पर्व, १९-९)। पाण्ड्य राजा के रथ पर सागर के चिन्ह से युक्त ध्वजा फहराती थी (द्रोण पर्व २३-७२)। इससे इस देश की स्थिति दक्षिण-समुद्र के तट पर सिद्ध होती है। महाभारत काल में यहं प्रसिद्ध राष्ट्र था (उद्योग २२-२३), जहाँ का राजा अपने पराक्रम के लिए प्रसिद्ध था (उद्योग-पर्व १७१-२६)। चोल और पाण्ड्य सेना युधिष्ठिर के दाहिने पक्ष पर डटी थी (भीष्म पर्व ५०-५१)। श्री कृष्ण ने चोलों और पाण्ड्य को जीता था (द्रोण पर्व ११-१७)। यहाँ के सैनिक कुशल धनुर्धर थे (कर्ण पर्व १९-५६, ५७, ५८)। राजसूय यज्ञ के समय पाण्ड्य देश के राजा ने मलय और दर्दुर पर्वतों पर होने वाले चन्दन और अगुरु के ढेर तथा सूक्ष्म वस्त्र, वैदूर्य और मुक्ता (जो ताम्रपर्णी नदी की घाटी में मिलते थे) ले आये थे (सभा पर्व, ५२।३४-३५)।

चोल (सभा पर्व, ३१-७१)—सहदेव ने द्रविड क्षेत्र में पाण्ड्यों के साथ ही चोल और केरल को भी जीता (सहितांश्चोण्ड्रकेरलैः)। यहाँ चोण्ड्र के स्थान पर चोड या चोल होना चाहिए। चोल एक प्रसिद्ध राज्य था (भीष्म-पर्व ९-६०)। राजशेखर ने दक्षिणापथ राज्यों की सूची में काञ्ची और चोल जनपदों का अलग-अलग उल्लेख किया है (प्रा० भा० स्व०, पृ० ५४)। इसे चोड देश भी कहते थे (अशोकीय शिला लेख)। चोल का नाम चक्रवर्ती सम्राट चोल के नाम पर हुआ था। इसकी राजधानी कांची थी (प्रा० भा० भौ० स्व० पृ० ६८)। महाभारत में काञ्ची के शूरों (काञ्च्याः) का उल्लेख है (कर्ण पर्व, १२-१९)। काञ्ची के योद्धा दुर्योधन की सेना में सम्मिलित थे (उद्योग पर्व, १६२-२१)। चोल देश के राजा ने युधिष्ठिर को भेंट में अमित चन्दन, अगरु तथा मोती, वैदूर्य और चित्रक रत्न दिये थे (सभा पर्व, अ० ५१-पृ० ८६१)। उसने मणि, रत्न और सूक्ष्म वस्त्र भी भेंट में दिए थे (सभा पर्व, ५२/३४-३५)। मद्रास प्रदेश के तंजवुर और तिरुचिरपल्ली प्रान्तों में चोल देश स्थित था।

केरल (भीष्म पर्व ९-५८) दक्षिण का प्रसिद्ध राज्य था जिस सहदेव ने जीता था (सभा पर्व ३१-७१)। ये वसिष्ठ की गाय (नन्दिनी) के मुँह के फेन से उत्पन्न बताये गए हैं (आदि पर्व, १७४-३८)। केरल-नरेश ने युधिष्ठिर को चन्दन, अगुरु और वैदूर्य तथा चित्रक रत्न भेंट में दिये थे (सभा पर्व, अ० ५१, पृ० ८६१)। यह मलाबार तट पर स्थित है, जहाँ ट्रावनकोर और कोचीन के प्रान्त स्थित हैं (प्रा० भा० भौ० स्व०, पृ० ६९)।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अन्ध्र (भीष्म पर्व, ९-४९)—बृहत्संहिता (१४-८) में इसे दक्षिण-पूर्व देश-भाग में स्थित बताया गया है। यह प्रसिद्ध जनपद था जिसे सहदेव ने जीता था (सभा पर्व, ३१-७१)। यह कलिंग से मिला हुआ देश था। इसीलिए दोनों का एक साथ उल्लेख किया गया है (द्रोण पर्व, ४-८)। पुराणों में इसका उल्लेख प्राच्य के जनपदों में मिलता है (वायु पु०, १-४५-१२२)। भागवत पुराण (९/२३/४-६) के अनुसार बलि के एक पुत्र का नाम अन्ध्र था। उसी से इस प्रदेश का नाम अन्ध्र पड़ा। महाभारत में इन्हें दक्षिणापथ का निवासी बताकर आचारहीन कहा गया है (शान्ति पर्व, २०७-४२)।

अन्ध्र के राजा (अन्ध्रक) युधिष्ठिर की सभा में बैठते थे (सभा, ४-२४)। स्कन्द पुराण (१-२-३९-१९९) के अनुसार अन्ध्र देश में चार लाख ग्राम थे। यह देश गोदावरी और कृष्णा नदियों के मध्य स्थित है और आज भी दक्षिण का तेलगू-भाषी प्रान्त आन्ध्र प्रदेश कहलाता है। इसकी प्राचीन राजधानी धनकटक (या अमरावती) थी (जा० डि० पृ० ७)। धनकटक की पहचान आधुनिक बेजवाड़ा (हावड़-मद्रास रेलवे लाइन पर स्थित) से की गई है (एपी० इ० जिल्द ४, पृ० ८८)।

तालवन—यह दक्षिण भारतीय जनपद था, जिसे सहदेव ने जीतकर करद राज्य बनाया था (सभा पर्व, ३१-७१)। द्वारका के दक्षिण स्थित लतावेष्ट पर्वत के चारों ओर तालवन था (सभा पर्व अ० ३८, पृ० ८१३)।

बृहत्संहिता (१४-२२) में ताल नामक जनपद का उल्लेख है जो पश्चिमोत्तर दिशा में स्थित था। अतः यह (ताल) और तालवन एक नहीं हो सकते हैं। डे के अनुसार तालवनपुर और तलकाड एक ही हैं। तलकाड का प्राचीन नाम तालवनपुर था (एपी० इ०, जिल्द ३, पृ० १६५)। अतः तालवन देश की पहचान मैसूर के दक्षिण स्थित गंगवाडि से की जा सकती है (जा० डि० पृ० २०२)।

कलिंग—राजशेखर कलिंग को पूर्व (का० मी०, ९३/२०), और दक्षिण दिशाओं में (का० मी०, पृ० ९/११-१२) रखते हैं। बृहत्संहिता (१४-८) में इसे दक्षिणपूर्व में स्थित बताया गया है। महाभारतीय जनपद तालिका में इसका दो बार (भीष्म पर्व ९-४६, ६९) उल्लेख किया है। सहदेव ने इसे दक्षिण विजय में जीता था। कर्ण (वन पर्व, २५४-८) और श्रीकृष्ण (उद्योग पर्व ४८-७६) ने भी इसे जीता था। युधिष्ठिर की सभा में कलिंग नरेश भेंट लाये थे (सभा पर्व ५२-१८)। यह देश समुद्र और महेन्द्र पर्वत (उड़ीसा के

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पास पूर्वी घाट) के निकट ही था (आदि पर्व २१४/११-१३)। यहाँ बहुत से तीर्थ स्थान थे (आदि पर्व २१४-९) जिनका अर्जुन ने दर्शन किया था। कलिंग राष्ट्र के ब्राह्मणों को अर्जुन ने आदरपूर्वक दान दिया था (आदि पर्व, २१४-१०)। अपने भाइयों सहित युधिष्ठिर ने समुद्र तट पर चलते हुए कलिंग की तीर्थयात्रा की थी (वन पर्व ११४/३-४)। यहाँ वैतरणी नदी (वन पर्व ११४/४, १३) और इसके उत्तर तट पर यज्ञिय गिरि (वन पर्व ११४/५-१२) था। यहीं ब्रह्मा का दिव्य वन (स्वायम्भुव वन) था जहाँ विश्वकर्मा ने भी यज्ञ किया था (वन पर्व ११४/१७-१८)। आधुनिक पुरी और गंजाम के जिले तथा आस पास के हिस्से कलिंग में सम्मिलित थे। कलिंग में व्रजमणि और पीत (पीले) वर्ण का हीरा होता था (बृहत्संहिता, ८०-७)। इसका नाम बलि पुत्र कलिंग के नाम पर पड़ा। इसकी राजधानी दन्त-कूर या दन्तपूर (उद्योग पर्व ४८-७६) थी (कलिंगेषु दन्तपुरं नाम नगरम्। महावस्तु ३/३६१/१२) जिसकी पहचान पुरी से की गई है (जाग० डि०, पृ० ५३)।

उष्ट्रकर्णिक (सभा पर्व, ३१-७१)—वायु पुराण (१-४७-५२) में उष्ट्र-कर्णों का उल्लेख है। परन्तु इसकी पहचान नहीं हो सकती है।

आटवी पुरी (सभा पर्व ३१-७२)—पीछे देखिए आटवी। डा० मोती-चन्द्र के अनुसार यह अन्ताखी नाम का नगर था जो सीरिया के सम्राट अन्ति-योक की राजधानी थी। इसी प्रकार वे 'रम्यां' (सभा पर्व ३१-७२) के स्थान पर 'रोमा' (रोम) मानते हैं और वहाँ भारत से दूत भेजने की घटना का उल्लेख (उपायन पर्व, पृ० २४) करते हैं।

यवनपुर (यवनानां पुरं, सभा पर्व ३१-७२)—यवनों का उल्लेख मिलता है। अस्तु यह कहीं किसी दक्षिण के यवनपुर का उल्लेख होगा। इसकी पह-चान और स्थिति अज्ञात है। नकुल ने पश्चिमी दिग्विजय में यवनों को परा-जित किया था।

लंका (सभा पर्व, अ० ३१, पृ० ७५९)—सहदेव ने भीमपुत्र घटोत्कच को लंका विजय करने के लिए भेजा था। घटोत्कच समुद्र पार दक्षिण में लंका को गया और अपने अभियान में सफल हुआ।

सिंहल—मणियुक्त वस्त्रों से सुशोभित सिंहली लोग युधिष्ठिर को भेंट में समुद्रसार वैदूर्य, मोती और हाथियों की झूलें (कुथां) लाये थे (सभापर्व, ५२-३६)। इन्हें म्लेच्छ कहा गया है (आदि पर्व १७४-३७)। सिंहल और लंका

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

का एक ही पंक्ति (वन पर्व ५१-२३) में अलग उल्लेख किया गया है। सिहली वीरों की सेना कौरवों के पक्ष में थी (द्रोण पर्व २०-६)। युधिष्ठिर की राजसूय-यज्ञ में द्राविड़ों के साथ सिंहली भी उपस्थित थे (सभापर्व ३४-१२)।

सिंहलों को श्याम (काला) वर्ण वाला और उनकी आँखों को लाल कोने वाला (सिंहलाः श्यामास्ताम्रान्त लोचनाः; सभा पर्व ५२-३६) कहा गया है। राजशेखर ने दाक्षिणात्यों को कृष्ण वर्ण का बताया है।

बृहत्संहिता (१४-१५) और काव्यमीमांसा (पृ० ९३।२५-२८) में सिंहल को क्रमशः दक्षिण देश-विभाग तथा दक्षिणापथ में स्थित बताया गया है। यह आधुनिक लंका या सीलोन ही है।

समुद्रद्वीपों—इन्द्रद्वीप, कशेरु, ताम्रद्वीप, गभस्तिमान्, गन्धर्व, वरुण, सौम्याक्ष—(सभापर्व, अ० ३८, पृ० ७९१)—में ताम्रद्वीप पुराणों में उल्लिखित भारत के नवद्वीपों का ताम्रपर्ण अथवा सिंहल ही है (प्रा० भा० भौ० स्व०, पृ० १२-१७)।

इस प्रकार सहदेव ने इन्द्रप्रस्थ से दक्षिण दिशा की ओर जाते हुए दक्षिणापथ को सिंहल तक जीता।

पश्चिम दिग्विजय (सभापर्व अध्याय ३२)

नकुल खाण्डवप्रस्थ (इन्द्रप्रस्थ) से निकलकर पश्चिम दिशा की ओर सेना के साथ गये और इस पश्चिम दिग्विजय में उन्होंने निम्नलिखित देशों को जीता—

रोहीतक, मरुभूमि, बहुधान्यक, शैरीषक, महोत्थ, दशार्ण, शिबि-राज्य, त्रिगर्त, अम्बष्ठ, मालव, पञ्चकर्पट, माध्यमिका और वाटधान (के द्विजों) को जीता (सभा पर्व, ३२।४–८क)। यहां से नकुल लौट पड़े और फिर—

पुष्करारण्य, उत्सवसंकेत गण, सिन्धुतटीय-ग्रामणीय, शूद्र राज्य, आभीर, सरस्वती-तटीय गण (निषाद) और पर्वतीय गण (सभापर्व, ३२।८ख–१०) जीते। इस प्रकार सम्पूर्ण पंजाब (कृत्स्नं पञ्चनदं, सभा पर्व ३२-११ क) को जीतकर अमरपर्वत, उत्तर ज्योतिष, दिव्यकटपुर, द्वारपाल, रमठ, हारहूण, प्रतीच्य नृप गण (जिनमें वासुदेव कृष्ण का राज्य-भोज-अन्धक-वृष्णि संघ-सम्मिलित था) और मद्र, (सभा पर्व, ३२।११ ख–१४) को जीतने के बाद सागर की कोख में अर्थात् सिन्धु-सौराष्ट्र और कच्छ के समुद्र तट पर बसे हुए परम भयंकर पल्हवों, बर्बरों, किरातों, यवनों, और शकों के देशों को जीता (सभा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पर्व ३२।१६-१७)। इस प्रकार नकुल पश्चिमी दिशा को जीतकर इन्द्रप्रस्थ वापस लौट आए।

इस पश्चिम-दिग्विजय में वर्तमान् हरियाना (रोहतक, सिरसा, महोत्थ, दशार्ण), राजस्थान (मरुभूमि, पुष्करारण्य, माध्यमिका), सरस्वती की घाटी (निषाद, सौराष्ट्र के पर्वतीय लोग), मालवा, सिन्ध और पूरा पंजाब (शिबि, त्रिगर्त, अम्बष्ठ, शूद्राभीर गण, रमठ, किरात, पह्लव, बर्बर, यवन, शक) सम्मिलित था।

रोहीतक—यह एक समृद्ध गण-राज्य था (वनपर्व २५४-२०) जिसे कर्ण ने जीता था। इसका मुख्य नगर भी रोहीतक (रोहतक) था (दिव्यावदान पृ० ६७।२४-२७; ६८।१६-१७)। रोहीतक नगर यौधेयों की राजधानी भी थी (योधेयों का इतिहास)। इसके नगर-देवता कार्तिकेय थे (रोहितके कार्तिकेयः कुमारो लोक विश्रुतः, महामयूरी, पंक्ति २१)। यहां पर भी कहा गया है कि नकुल कार्तिकेय के अति प्रिय रोहीतक में पहुँचे (कार्तिकेयस्य दयितं रोहीतकम्, सभा पर्व ३२-४)। अतः स्पष्ट है कि नकुल द्वारा विजित रोहीतक एक राजनगर ही था जहां नकुल को **मत्तमयूरकों** के साथ युद्ध करना पड़ा (तत्र युद्धं महच्चासीत्छूरैर्मत्तमयूरकैः, सभापर्व ३२-५ क)। यह धनधान्य से सम्पन्न (धनधान्यवत् बहुधनं), रमणीय (रम्यं) और गायों की बाहुल्यता से युक्त (गवाढ्यं) नगर था (सभापर्व ३२-४), जिसके रक्षक मत्तमयूरक शूर थे। मत्तमयूर कार्तिकेय के भक्त थे। रोहीतक नगर तक्षशिला से मथुरा जाने वाले उत्तरापथ मार्ग पर स्थित था (उपायन पर्व पृ० २४; बु० भा० भू०, पृ० ४६६, ५३८)। संभवतः रोहीतक नाम श्रेष्ठ गाय रोहीतक (लाल रंग वाली) की अधिकता के कारण ही पड़ा।

दिव्यावदान (पृ० ६७।२५-२८) में इसे महानगर कहा गया है, जो १२ योजन लम्बा और ७ योजन चौड़ा था; इसके चारों ओर प्राकार और गोपुर (७ प्राचीर और ६२ फाटक) थे; यह रथ्या (सड़कों), वीथियों, बाजारों, उद्यानों, सरोवरों और सभाभवनों से सुशोभित था; जलाशयों में जलचर पक्षी विहार करते थे; और सम्पूर्ण नगर संगीत की ध्वनियों से गुंजायमान था। इस प्रकार यह वर्णन महाभारत के इस कथन को सिद्ध करता है कि यह समृद्ध और रमणीय नगर था।

महाभारत में रोहीतकारण्य (उद्योग पर्व, १९-३०) का उल्लेख मिलता है जिसे मरुभूमि के निकटस्थ कहा गया है। शायद रोहीतक वृक्षों (रुहीड़ा,

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बृ० सं० ५४-६८) के कारण ही इसे रोहीतकारण्य कहते थे। रोहीतकारण्य (रोहीतक वन) में कौरवों की सेना ठहरी थी। यह वर्तमान रोहतक है। (विशेष विवरण के लिए दृष्टव्य–यौधेयों का इतिहास)।

मरुभूमि—रोहतक के बाद ही उसने सम्पूर्ण मरुभूमि को जीता; क्योंकि यह निकट ही था और इसमें कई सशक्त राज्य थे। राजशेखर ने पश्चिमी देशों की सूची में मरुभूमि का उल्लेख नहीं किया है। मरुदेश को दाशेरक देशों के पश्चिम भाग में स्थित कहा गया है (विष्णुधर्मोत्तर, १-१६२-२)। दाशेरक की पहचान मालवा से की गई है (जा० डि० पृ० ५४)। अतः मरुभूमि या मरु देश मालवा के पश्चिम स्थित था। काम्यकवन के पास ही मरुभूमि थी। द्वैतवन (देवबन्द, जिला सहारनपुर, उत्तर प्रदेश) छोड़कर पांडव लोग काम्यकवन में तृणबिन्दु सरोवर के पास (कुरुक्षेत्र के पास) गए। काम्यकवन मरुभूमि के सिरे (शीर्ष स्थान=उत्तरी सीमा) पर स्थित था (वनपर्व २५८।१३-१६)। भगवान् श्री कृष्ण हस्तिनापुर से द्वारका जा रहे थे तो उन्हें रास्ते में शर्कर (बालू), धूल और काँटों वाला मरुधन्व (मरुभूमि) का रेगिस्तान पड़ा था (आश्वमेधिकपर्व, ५३।५-७)। यहीं उत्तंक मुनि का आश्रम था। यहां जल दुर्लभ था (तोयम् मरुषु दुर्लभम्। आश्वमेधिकपर्व, ५५-१३)। भगवान की कृपा से यहां भी जल-पूर्ण मेघ आते और पानी बरसाते हैं (आश्व-मेधिक, ५५-३६)। बृहत्संहिता (५४-८६) के अनुसार मरुदेश वह देश है जहां जल का अभाव हो। मरुभूमि आधुनिक मारवाड़ ही है। यह विस्तृत क्षेत्र था (प्रा० भा० भौ० स्व० पृ० ७७-७८)।

बहुधान्यक—नकुल ने बहुधान्यक प्रदेश को जीता। यह यौधेय राज्य था। योधेय एक अति प्रसिद्ध लड़ाकू जाति थी। बृहत्संहिता, महाभारत, पुराणों, योगवसिष्ठ, यशस्तिलक, और अभिलेखों तथा सिक्कों और मुहरों पर इनका उल्लेख मिलता है (देखिए-आचार्य भगवान देव-बीर भूमि हरियाणा और अवस्थी-यौधेयों का इतिहास पृ० ७)। यौधेयों के सिक्कों पर 'यौधेयानाम् बहुधान्यके' लिखा हुआ मिला है। ये सिक्के खोखराकोट से मिले थे। महा-मयूरी (एक बौद्ध मन्त्र-ग्रन्थ है जिसमें विभिन्न नगरों के यक्ष-देवताओं के नाम दिए गए हैं) में बहुधान्यक नगर का यक्ष कपिल (पंक्ति १५, कपिलो बहु-धान्यके) था। यहां धान बहुत होता था इसीलिए इसे बहुधान्यक कहते थे। अतः यह भी यौधेय गण-राज्य का ही भाग था जहां चावल बहुत होता था (देखिये–यौधेयों का इतिहास)।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शैरीषक—नकुल-विजित शैरीषक की पहचान सिरसा (हिसार प्रान्त) से की गई है। यहां भी यौधेयों के सिक्के मिले हैं (उपायन पर्व पृ० ९४)। अतः यह भी यौधेय राज्य का अंग था। सिरसा (प्राचीन शैरीषक) में यौधेय बसे हुए थे (यौधेयों का इतिहास, पृ० २६)।

महोत्थ—यह भी आधुनिक हरियाना में स्थित था। यह आधुनिक महिम (हरियाना प्रदेश) है।

दशार्ण (दशार्णान्)—सामान्यतः दशार्ण की पहचान पूर्वी मालवा से की गई है। परन्तु यहां पर उल्लिखित दशार्ण का सम्बन्ध हरियाना से मालुम होता है (आचार्य भगवानदेव-वीर भूमि हरियाना)। 'दशार्ण' का अर्थ 'दस किलों' से भी लिया गया है।

इस प्रकार नकुल ने यौधेय गण राज्य (हरियाना) को जीत कर मरुभूमि की ओर बढ़े तथा इसे भी जीत लिया।

यौधेयों के साथ ही साथ शिबि, त्रिगर्त, अम्बष्ठ, और मालवों के भी गणराज्य थे। इन गण राज्यों, का महाभारत में विशेष उल्लेख मिलता है (द्रोण पर्व १९-१६; १५७।२८, ३०)। यौधेय, मालव, अम्बष्ठ, शिबि और त्रिगर्त गणों के वीरों ने युधिष्ठिर के विरुद्ध युद्ध किया था (द्रोण पर्व, १५७। २८, ३०)।

हरिवंश से भी ज्ञात होता है कि शिबि, यौधेय, और अम्बष्ठों में रक्त-सम्बन्ध था (यौधेयों का इतिहास, पृ० १७)। इन सभी गणों का सम्बन्ध उशीनर से था और उशीनर वाहीक देश (पंचनद=पंजाब) का ही एक भाग था। उशीनर का ही मद्रक, केकय और सुवीर (सौवीर) से सम्बन्ध था। ये लोग पूर्वी पंजाब और पश्चिमी उत्तर-प्रदेश में स्थित थे। त्रिगर्तों के साथ इनका घनिष्ठ सम्बन्ध था। सम्भवतः वे सभी एक संघ के ही सदस्य थे (यौधेयों का इतिहास, पृ० १८-१९)।

बृहत्संहिता में एक ही साथ त्रैगर्तक, मालव, कौलिन्द, शिवि (बृ० सं० ४-२४) और यौधेयों (बृ० सं० ५-६७), यौधेय, आर्जुनायन और शिबियों (बृ० सं० ११-५९), दशार्ण, उशीनर तथा शिबि (बृ० सं० १६-१६), तथा आर्जुनायन, वसाति यौधेय और शिबि (बृ० सं० १७-१९) के उल्लेख सिद्ध करते हैं कि नकुल द्वारा विजित—दशार्ण, शिबि, त्रिगर्त, अम्बष्ठ, मालव और पञ्चकर्पट—गण राज्य थे जो यौधेयों के साथ ही पंचनद में बसे हुए थे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

युधिष्ठिर को शिबि, त्रिगर्त और यौधेय तथा अम्बष्ठ (सभा पर्व ५२-१५) भेंट लाये थे (सभा पर्व ५२-१४)।

शिबि—(द्रोण पर्व ७-१५) शिबिराज-पुत्री युधिष्ठिर को व्याही थी, जिसने यौधेय नामक पुत्र को जन्म दिया (आदि पर्व ९५-७६)। परन्तु **विष्णु पुराण** में इस राजपुत्री का नाम यौधेयी दिया गया है (विष्णु पुराण ४-२०-४४)। सहदेव ने इनकी विजय की थी। **स्कन्दपुराण** में उल्लिखित शिव देश ही शिबि जनपद था जिसमें दस हजार ग्राम थे (स्क० १-२-३९-१४९)। **महावस्तु** (१/३४/९-१०) में इसका उल्लेख है। **दिव्यावदान** (पृ० ३६१-२१) में इसे एक गणराज्य कहा गया है। यूनानियों द्वारा उल्लिखित शिब्वाय और शिबि एक ही हैं। इनकी राजधानी शिवपुर (आधुनिक शोरकोट, जिला झंग, पश्चिमी पंजाब) थी। यह 'झंग मघियाना' क्षेत्र (पश्चिमी पाकिस्तान) था।

त्रिगर्त—वृहत्संहिता (१४-२५) में इसे उत्तर देश में स्थित बताया गया है। त्रैगर्तकों को संशप्तक गण कहा गया है। यह प्रसिद्ध जनपद था (भीष्म पर्व ९-६३)। अर्जुन ने भी इसे जीता था (सभा पर्व २७-१८)। नकुल ने भी इसे जीता (सभा पर्व ३२-७)। ये लोग युधिष्ठिर को भेंट लाये थे (सभा पर्व ५२-१४) त्रिगर्त राज पाँच भाई थे और पाँचों रथी थे (उद्योग १६४-८; १६६/९-११) यह जालंधर के आस-पास का देश था (जा० डि० पृ० २०६)।

अम्बष्ठ—वृसत्संहिता (९-१९) में अम्बष्ठों और त्रिगर्तों को एक साथ रखा गया है। महाभारत में भी इनका उल्लेख वशाति, शाल्वक, केकय और त्रिगर्तों के साथ (उद्योग पर्व ३०-३२) मिलता है। ये सभी राज्य दुर्योधन के साथ थे। इनका उल्लेख क्षत्रियों (ज्ञेथाय) के साथ (येचाम्बष्ठाः क्षत्रियाः ये च) हुआ है और इनकी स्थिति सिन्धु-सौवीर के निकट ही थी तथा इनकी गणना पंचनद के शूरों में की गई है। (भीष्म पर्व २०-१०)। इनकी पहचान यूनानी लेखकों के संबस्तई या अबस्तनाय से की जाती है। ये अत्यन्त वीर थे जो पंजाब की पूर्वी सीमा पर बसे हुए थे। टॉलमी (मैक्रिन्डिल-ऐ० इ० पृ० १६०-१६१) का अम्बुई या अम्बस्टई ही अम्बष्ठ है। श्रुतायु अम्बष्ठों का राजा था (भीष्म पर्व, ५९-७५)।

मालव—महाभारतीय जनपद-सूची में अवन्ति (अवन्तयः, भीष्म पर्व

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

९-४३) और मालवा (भीष्म पर्व ९-६२) के उल्लेख हैं। इसी प्रकार भीष्म पर्व (७७-६) में भी मालवों और आवन्तयों का अलग-अलग उल्लेख है। इससे यह सिद्ध होता है कि मालव और अवन्ति भिन्न-भिन्न जनपद थे। नकुल द्वारा विजित मालवान् (सभा पर्व ३१-७) की पहचान पंचनद या पंजाब के मालवों से करनी चाहिये और यही मालव देश जनपदों की सूची में भी उल्लिखित है जिसका विभेदन अवन्ति से किया गया है। ये अम्बष्ठों के निकटस्थ थे (अम्बष्ठान् मालवान्, द्रोण पर्व १५७-२८; १६१-३) और क्षुद्रकों के साथ—क्षुद्रकमालवाश्च (भीष्म पर्व ५९-१३५; ७७-७) सम्बद्ध थे। सिकन्दर के समय पंजाब में क्षुद्रक-मालव संघ बना था। ने दोनों ही पड़ोसी गणराज्य थे जिन्हें यूनानी लेखकों ने 'ऑक्सीड्रकाय' (क्षुद्रक) और 'मल्लवॉय' (मालव) के नाम से सम्बोधित किया है।

महाभारत में उल्लिखित 'प्राच्याः प्रतीच्योदीच्यमालवाः' (भीष्म पर्व १०६-७) मिलता है। यहाँ पर उदीच्य के मालवों से ही तात्पर्य है जिन्हें नकुल ने जीता था। बृहत्संहिता (१४-२७) में मालव को उत्तर दिशा में स्थित बताया गया है। बृहत्संहिता (४-२४, १६-२६) में अधिकांशतः औदीच्य गण जातियों के साथ इनका उल्लेख हुआ है और प्रतीच्य के अर्बुद-सुराष्ट्र (३२-१९) तथा भरुकच्छ-सुराष्ट्र-लाट के साथ (६९-११) भी हुआ है। अतः स्पष्ट है कि उत्तर के औदीच्य मालव पंजाब के मल्लवॉय थे जिनकी राजधानी मुलतान (पश्चिमी पंजाब) थी (जा० डि० पृ० १२२)। दूसरा मालव देश पश्चिम में स्थित अवन्ति या पश्चिमी मालवा था जिसकी राजधानी उज्जयिनी थी।

मत्स्य पुराण (११३-४४) में इसे प्राच्य में स्थित बताया गया है।

औदीच्य-मालव (मल्ली या मल्लवाय) रावी नदी की निचली घाटी में नदी के दाहिनी ओर बसे थे। उनके ही राज्य में चिनाब और सिन्धु नदियों का संगम था। आगे चल कर ये लोग ही राजपूताना, अवन्ति और मही नदी की घाटी में जाकर बस गये थे (पो० हि० ऐ० इ०, पृ० २५४-२५५)।

क्षुद्रक राज्य झेलम और चिनाब के संगम से नीचे की ओर स्थित था जहाँ पश्चिमी पंजाब के झंग और लायलपुर प्रान्तों के भाग सम्मिलित थे। लायलपुर में ही महाभारत के ललित्थ लोग भी बसे थे।

पंचकर्पट—(सभापर्व, ३२७) पश्चिम भारत का एक जनपद था जिसे नकुल ने जीता था। इसकी स्थिति अज्ञात है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

माध्यमिका—(सभा पर्व ३२-८) बृहत्संहिता (१४-२) में इसे मध्य देश में स्थित बताया गया है। पुष्यमित्र शुंग के समय में यवनों ने माध्यमिका पर आक्रमण किया था (अरुणद्यवनो माध्यमिकां, महाभाष्य)। माध्यमिका की पहचान राजपूताना में चित्तौड़ से ११ मील उत्तर में स्थित नागरी से की गई है। डे माध्यमिक और शिवि को एक ही मानते हैं (जा० डि०, पृ० १८७)। शिवि की राजधानी जेतुत्तर थी, जिसकी पहचान कनिंघम ने नागरी से की है जहाँ शिबि जनपद के सिक्के मिले हैं (आर्कियोलाजिकल सर्वे रिपोर्ट, जि० ६, पृ० १९६)। यहाँ पर नकुल विजय में एक ही स्थान पर (शिबीं··· तथा माध्यमिकांश्च) शिबि और माध्यमिका को अलग-अलग जीतने का उल्लेख है। इससे स्पष्ट है कि शिबि और माध्यमिका अलग-अलग जनपद थे। परन्तु सिक्कों पर 'मझिमकाय शिबि जनपदस' लिखा मिलता है जिससे शिबि जाति को माध्यमिका से जोड़ा गया है। इससे दोनों—शिबि और माध्यमिका—की एकता ज्ञात होती है। शिबि जनपद यहाँ के बने हुए शालों के लिए प्रसिद्ध था।

वाटधान—नकुल ने वाटधान के ब्राह्मणों (वाटधानान् द्विजान, सभा पर्व ३२-८) को पराजित किया था। ये लोग (ब्राह्मणाः वाटधानाः सभा पर्व ४९-२४) 'बलि' (कर या भेंट) लेकर युधिष्ठिर के यहाँ आये थे। डा० मोतीचन्द्र इनकी पहचान शुंगों से करते हैं (उपायन पर्व, पृ० २८) उनके अनुसार ही वाटधान माध्यमिका के निवासी थे (उपायन पर्व पृ० ३१)। परन्तु महाभारत स्पष्ट रूप से माध्यमिकों और वाटधानों को भिन्न-भिन्न बताता है (माध्यमिकांश्चैव वाटधानान् द्विजानथ, सभा पर्व ३२-८)। ये कृषि और गोपालन भी करते थे (सभा पर्व ४९-२४)। निचली सिन्ध घाटी में बसा हुआ नगर ब्रह्मनाबाद ही इनकी राजधानी थी (उपायन पर्व, पृ० ३२)।

बृहत्संहिता (१४-२६) में इन्हें उत्तर देश में स्थित बताया गया है। इसकी पहचान भटनेर से की गई है (जा० डि० पृ० २७)। पार्जिटर के अनुसार फ़ीरोज़पुर के दक्षिण और सतलज के पूर्व वाटधान देश स्थित था (मार्क० पु० अंग्रेजी अनुवाद, पृ० ३१२, नोट)।

पुष्करारण्य—(सभा पर्व ३२-८) यह एक पश्चिम भारतीय जनपद था जो पवित्र पुष्करारण्य के बन में स्थित था। यह आधुनिक पुष्कर (अजमेर से ६ कोस दूर) नामक प्रसिद्ध तीर्थ है (वन पर्व ८२/२०, २१, २८, ३५)।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उत्सवसंकेत गण—(भीष्म पर्व ९-६१) यह एक गण राज्य था जिसे अर्जुन ने उत्तर विजय में जीता था (सभा पर्व २७-१६) और नकुल ने भी इसे पश्चिम विजय में जीता (सभा पर्व ३२-९)। सिन्धु नदी के ही निकट पंचनद (पंजाब) का यह एक गण राज्य था।

ग्रामणीय—ये महाबली लोग थे जो सिन्धु नदी के तट पर बसे हुए थे (सिन्धुकूलाश्रिता ये च ग्रामणीया महाबला; सभा पर्व ३२-९)। इस राज्य की पहचान निश्चित नहीं है।

शूद्र—(भीष्म पर्व ९-६७) नकुल ने इनके देश को जीता था (सभा पर्व, ३२-१०) और यहाँ का राजा दुर्योधन के पक्ष में था (द्रोण पर्व ७-१५)। शूद्र और आभीर गणों को सरस्वती नदी की घाटी में स्थित (शूद्राभीरगणाश्चैव ये चाश्रित्य सरस्वतीम्, सभा पर्व ३२-१०) बताया गया है। बृहत्संहिता (१४-१८) में शूद्र जनपद को दक्षिण पश्चिम में स्थित बताया गया है। मार्कंडेय पुराण (५७-३५) इसे अपरान्त (पश्चिम) में स्थित बताता है। यह यूनानी इतिहासकारों द्वारा उल्लिखित 'सोड्रई' (क्ला० अ० पृ० १८१) ही है जिसे सिन्धु और सतलज नदियों के बीच मुलतान जिले के दक्षिण और पंजाब की पाँचों नदियों के संगम के कुछ ऊपर बसा हुआ कहा गया है (जा० डि० पृ० १९५)।

आभीर—(भीष्म पर्व ९-६७) यह गण जाति सिन्धु और सरस्वती के बीच भूखंड में शूद्र-जनपद के निकट बसी थी (सभा पर्व ३२-१०)। इनको आचारहीन म्लेच्छ कहा गया है (वन पर्व १८८।३५-३६)। शूद्रों और आभीरों के राज्य में ही सरस्वती लुप्त हो गयी और जहाँ वह विनष्ट (अदृश्य) हो गयी थी, वहाँ विनशन नाम का तीर्थ था (शल्य पर्व ३७।१)। यहाँ के राजा युधिष्ठिर को विविध भेंटें लाये थे। ये कृषक और गोपाल थे। इनके यहाँ धान्य को खेती विशेष रूप से होती थी। वे रत्न, बकरी, भेंड़, गाय, सोना, फलों से बना हुआ मधु तथा कम्बल युधिष्ठिर के दरबार मे ले आये थे (सभा पर्व ५१।१२-१३)।

इनको बृहत्संहिता (१४-१८) में दक्षिण और पश्चिम में स्थित बताया गया है। इन आभीरों ने द्वारका से कृष्णवंशी स्त्रियों को ले जाते हुए अर्जुन को लूटा था। उस समय इनका देश पंचनद (पंजाब) की समृद्ध भूमि में बसा था—

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

स **पंचनद**मासाद्य धीमानतिसमृद्धिमत् ।
देशे गोपशुधान्याढ्ये निवासमकरोत् प्रभुः ॥
ततो लोभः समभवद् दस्यूनां निहतेश्वराः ।
दृष्ट्वा स्त्रियो नीयमानाः पार्थेनैकेन भारत ॥
ततस्ते पापकर्माणो लोभोपहतचेतसः ।
आभीरा मन्त्रयामासुः समेत्याशुभदर्शनाः ॥ शल्यपर्व ७।४५-४७

इस प्रकार ये लोभी और पापी दस्यु (शल्य पर्व ७।४९, ६०, ६२) तथा म्लेच्छ (शल्य पर्व ७।६३) थे। इन्हें पंचनद में ही बसा हुआ कहा गया है (आभीरैः पंचनदालयैः, शल्य पर्व ८।१७)। नर्मदा के मुहाने के समीप गुजरात का दक्षिणी-पश्चिमी भाग आभीर कहलाता था जिसे यूनानी इतिहासकारों ने अबिरिया कहा है (जा० डि० पृ० १)। मेक्रिन्डिल ने आभीरों के देश को सिन्धु के पूर्व में बताया है। ये सिन्ध के मुहाने के निकट ही शकों (शकस्थान) और निषाद के निकट ही (आभीराश्च शकाम्लेच्छानिषादाः, देवी भागवत ६।११।९) बसे थे।

निषाद—नकुल ने सरस्वती की घाटी में बसे उन लोगों को भी जीता जो मछलियों से अपनी जीविका चलाते थे (सभापर्व ३२-१०)। हम इनकी पहचान निषादों से करेंगे जो समुद्र और सरस्वती संगम के निकट सौराष्ट्र-काठियावाड़ में बसे हुए थे।

पञ्चनद—यह प्रसिद्ध देश था (बृ० सं० १०-६, ११-६०)। बृहत्संहिता (१४-२१) में भी यह पश्चिम दिशा में स्थित कहा गया है। नकुल ने सम्पूर्ण पंचनद (कृत्स्नं पंचनदं) अर्थात् पंजाब की ५ नदियों (विपाश=व्यास, शतुद्रि=सतलज, इरावती=रावी, चन्द्रभागा=चिनाब, वितस्ता=झेलम) द्वारा अभिसिंचित प्रदेश, जिसमें बहुत से देश बसे हुए थे जीता (सभा पर्व ३२-११)। यह प्रसिद्ध और पुण्य देश था जैसा कि मुनि अष्टावक्र ने कहा (वन पर्व १३४-१२)—लोके ख्यातं पंचनदं च पुण्यम्।

परन्तु दूसरे स्थान पर, कर्ण-शल्य विवाद में, पांचनद देश के लोगों की धर्म-हीनता का विस्तार के साथ वर्णन किया है (कर्ण पर्व अ० ४५)। पंचनद प्रदेश को ही **वाहीक** और **आरट्ट** देश भी कहते थे—

पंचनद्यो वहन्त्येता यत्र पीलुवनान्युत ॥
शतद्रुश्च विपाशा च तृतीयैरावती तथा ।
चन्द्रभागा वितस्ता च सिन्धु षष्ठा बहिर्गिरेः ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आरट्टा नाम ते देशा नष्टा धर्मा न तान् व्रजेत् ।
व्रात्यानां दासमीयानां वाहीकानामयज्वनाम् ॥
कर्णपर्व ४४।३१-३३

और भी देखिए—

पञ्चनद्यो वहन्त्येता यत्र निःसृत्य पर्वतात् ।
आरट्टा नाम वाहीका न तेष्वार्यो द्वयहं वसेत् ॥
कर्ण पर्व ४४-४१

इस क्षेत्र में प्रचलित दुराचार को पांचनद धर्म (कर्ण पर्व ४५।१९) और यहां के निवासियों को कुटिल (पांचनदांश्च जिह्मान्, कर्ण पर्व ४५।१६) कहा गया है। अमरपर्वत, उत्तरज्योतिष, दिव्यकटपुर और द्वारपाल को नकुल (सभापर्व, ३२।११-१२) ने जीता। इनकी पहचान नहीं हो सकती है।

रमठ—एक भारतीय जनपद था (शान्तिपर्व, ६५-१४) जिसे पश्चिम में नकुल ने जीता था (सभापर्व ३२-१२)। **बृहत्संहिता** (१४-२१) में इसे पश्चिम दिशा में पंचनद के निकट स्थित कहा गया है। **काव्यमीमांसा** में इसे उत्तरापथ में स्थित कहा गया है। इसे गजनी और वखान के बीच स्थित बताया गया है (प्रा० भा० भौ० स्व० पृ० ८८, ९६)। हींग को बाह्लीक कहते हैं। बाह्लीक देश का दूसरा नाम 'रमठ' भी है। इससे हींग को 'रामठ' भी कहते हैं (वेद धरातल पृ० ४८४-४८५)। इस प्रकार रामठ और बाह्लीक देश एक ही हैं।

हारहूण—नकुल ने इसे प्रतीच्य देशों के साथ जीता था (सभापर्व ३२-१२)। **बृहत्संहिता** (१४-३३) में हारहौर के राजा का उल्लेख है। काव्यमीमांसा (९४।९-११) हारहरव देश को उत्तरापथ में स्थित बताती है। डे (जा० डि० पृ० ७३) के अनुसार यह देश सिन्ध और झेलम नदियों के बीच तथा गंदगढ़ और साल्ट रेंज (नमक की पहाड़ियों) के बीच स्थित था। डा० मोतीचन्द्र (उपायनपर्व पृ० ६५-६७) के अनुसार यह देश आधुनिक हिरात था। डा० सरकार इन्हें हूणों की एक शाखा मानते हैं जिन्होंने मध्य एशिया से लेकर मध्य भारत तक विजयें की थीं (जा०ऐ०मे०इ०, पृ० २४)।

मद्र—नकुल ने मद्र देश की राजधानी शाकल या आधुनिक स्यालकोट (शाकलं मद्राणां, सभा पर्व ३२-१४) के शासक अपने मामा शल्य को प्रेम से वश में कर लिया (धर्म विजय) और भेंट में बहुत से रत्न लेकर समुद्र तट की ओर गया (सभा पर्व ३२।१४-१६)। बृहत्संहिता (२४-२२) में इसे

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उत्तर पश्चिम में स्थित कहा गया है। यह वाहीक खण्ड का एक प्रसिद्ध देश था जो इरावती या रावी के तट पर स्थित था। मद्र देश की सीमा के अन्तर्गत हिमालय से निकलने वाली मनोरमा इरावती (रावी) नदी बहती थी (मत्स्य पु० ११४।१७-१९)। इसे हैमवती भी कहा गया है जिसके तट पर प्रकृति और पशु-पक्षियों ने उस क्षेत्र को अत्यन्त रमणीय बना दिया था (मत्स्य, अ० ११५)। इस प्रकार यह सुरम्य प्रदेश था। डे (जा० डि० पृ० ११६) इसे रावी और चिनाब के बीच स्थित बताते हैं।

सागर-कुक्षि में स्थित म्लेच्छ—नकुल ने पश्चिम-सागर की कोख में स्थित पह्लव, बर्बर, किरात, यवनों और शकों को जीता (सभापर्व ३२।१६-१७)।

पह्लव—बृहत्संहिता (१४-१७) में इन्हें दक्षिण-पश्चिम में स्थित बताया गया है। पह्लवों को गौतमीपुत्र शातकर्णी ने हराया था। अस्तु इनकी स्थिति भी पश्चिमी भारत में सिद्ध होती है। रुद्रदामन प्रथम के जूनागढ़ शिलालेख में एक पह्लव मन्त्री का उल्लेख है। ये लोग पारद या पार्थिया के रहने वाले थे। डा० सरकार इनको पह्लवी या पारसी (ससैनियन) लोग मानते हैं (जा० ऐ० मे० इ०, पृ० २४)।

बर्बर—बृहत्संहिता (१४-१८) में इसे दक्षिग-पश्चिम में स्थित बताया गया है और इनका उल्लेख आभीरों के साथ पश्चिमी जनों के रूप में हुआ है तथा यह क्षेत्र सागर-तट के निकट ही था (बृ० सं० ५-४२)। सिन्धु नदी के मुहाने के निकट ही बर्वरिकम (या बर्बरीक) नाम का प्रसिद्ध व्यापारिक नगर था। इसके आसपास का भूखंड ही बर्बर देश था।

किरात—बृहत्संहिता (१४-१८) में बर्बरों के साथ ही इनकी भी स्थिति दक्षिग पश्चिम में बतायी गई है। सम्भवतः बिलोचिस्तान का 'कलात' क्षेत्र ही किरात देश था।

यवन—बृहत्संहिता (१४-१८) में इसे दक्षिण-पश्चिम में स्थित बताया गया है। रुद्रदामन प्रथम के जूनागढ़ शिला लेख से यवन-गवर्नर तुशास्फ का उल्लेख मिलता है। इनका उल्लेख काम्बोजों के साथ भी हुआ है।

शक—बृहत्संहिता (१४-२१) में इनको पश्चिमी देश में स्थित बताया गया है। सिन्धु नदी का डेल्टा सीथिया या शक-स्थान कहलाता था। यही शक देश था (प्रा० भा० भौ० स्व०, पृ० ८९) जिसे नकुल ने जीता। शक सौराष्ट्र-काठियावाड़ और मालवा में भी शासक थे।

इस प्रकार पश्चिमी-विजय के बाद नकुल भी इन्द्रप्रस्थ को वापस लौट आया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इस प्रकार महाभारत के दिग्विजय पर्व में इन्द्रप्रस्थ के चारों ओर–उत्तर, पूर्व, दक्षिण और पश्चिम में–स्थित विभिन्न देशों की तालिका मिलती है। उत्तर की ओर अर्जुन ने हिमवन्त प्रदेश, काश्मीर, अफ़गानिस्तान (लोह), बाल्हीक और शिवालिक की पहाड़ियों को जीता; पूर्व में भीम ने पांचाल, कोसल, काशी, वत्स, गण्डक-तट, विदेह, मगध, अंग, वंग, पुंड्र, सुह्म और लौहित्य तथा दक्षिण पूर्व में चेदि, दशार्ण, आदि देशों को जीता; सहदेव ने दक्षिण में शूरसेन, मत्स्य, अवन्ति, वेणातट, दक्षिण कोसल, आटविक राज्य जीतने के बाद दक्षिण-पश्चिम में स्थित सौराष्ट्र, शूर्पारक होते हुए पश्चिमी घाट में तालकट, दण्डक, करहाट, संजयन्ती, केरल और पांड्य को जीत कर द्रविड देश में घुसा जहाँ उन्होंने चोलों को जीतकर लंका विजय की; तथा नकुल हरियाना राजस्थान और पंजाब तथा सिन्ध के गणों व अन्य देशों को जीतने में सफल हुआ। इस प्रकार सम्पूर्ण भारत की विजय करने के बाद युधिष्ठिर ने राजसूय यज्ञ की जिसमें भी पराजित देशों के राजाओं ने उनको भेटें दी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उपायन पर्व

युधिष्ठिर की राजसूय यज्ञ में गान्धार, सिन्ध, शाल्व, प्राग्ज्योतिष, पर्वतीय देशों के राजा, वंग-कलिंग, कुन्तल, मालव, आन्ध्र, द्रविड़, सिंहल, काश्मीर, बाह्लीक, मावेल्ल, वृष्णि-संघ और मध्यदेश के राजा आये थे (सभा पर्व अ० ३४)।

इन सभी राजाओं ने युधिष्ठिर को भेंट में विभिन्न वस्तुएँ दी थीं। इन भेंटों (उपायनों) का ही वर्णन 'उपायन पर्व' में किया गया है। इनसे न केवल देशों के नाम ही मिलते हैं वरन् देशों की उपजों (उत्पादों) का परिचय मिलता है। अतः यह वर्णन प्राचीन भारत के आर्थिक भूगोल पर महत्वपूर्ण प्रकाश डालता है। राजशेखर ने काव्यमीमांसा (अ० १७) में न केवल देशों का ही वर्णन किया है, प्रत्युत प्रत्येक देश-विभाग की उत्पाद का भी उल्लेख किया है। महाभारत में इसी को 'यज्ञ में धन का आना'(धनागमो यज्ञे, सभा पर्व ४९-२२) भी कहा गया है। उस सभा में जो-जो रत्न आये थे, दुर्योधन कहते हैं कि उन्होंने, इनके नाम भी (नामधेयानि रत्नानां, सभा पर्व ५०-३६) नहीं सुने थे। गरुण पुराण (पूर्व० अ० ६८ अ० ८०) में विभिन्न देशों में मिलने वाले रत्नों का विवेचन किया है (गरुड़ पुराण एक अध्ययन।

निम्नलिखित देशों के राजाओं ने भेंटें दीं—

वाटधान--५१।६-७।

वरुण द्वीप (सभापर्व अ० ३८, पृ० ७९१)—समुद्र ने **वारुण-कलश** में भरा हुआ मधु (शराब) दिया (सभा पर्व ४९-२६)।

यहाँ इसका अर्थ है कि वरुण द्वीप के राजा ने सुवर्ण कलश में वारुणी (वारुण द्वीप की बनी मधु) भेंट में दी। यह एक प्रसिद्ध समुद्र द्वीप था (सभा पर्व ३८ पृ० ७९१) जिसकी पहचान बोर्नियो से की गई है **सागर-द्वीपों** के रहने वाले रत्नाकरों (रत्नों की खानों) से रत्न लाये थे (सागरा-भूपाः सर्वे रत्नाकरास्तथा, सभा पर्व ५०-२१)। इन समुद्र द्वीपों को ही द्वीपान्तर कहते थे, (प्रा० भा० भौ० स्व० पृ० १३-१८)।

हिमवंत-प्रदेश—हिमवंत प्रदेश के लोग और **अन्त्याः** सीमान्त लोग भी भेंटें लाये थे (सभा पर्व ५०-२१)।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बिन्दुसर-देश—बिन्दु सरोवर के पास स्थित देश के राजा ने मय-निर्मित कृत्रिम पुष्करिणी भेंट में दी थी जो रत्नमयी थी (सभा पर्व ५०-२५)। बिन्दुसर के आसपास स्थित देश का उल्लेख स्कन्द पुराण में भी मिलता है। (स्टडीज़ इन स्कन्द पुराण, पार्ट वन, पृ० ५९)। बिन्दुसर के पास ही गंगा का उद्गम स्थान है।

वाटधान (सभा पर्व ४९-२४; ५१।६-७)—वामन पुराण (१३-३७) में इसे उत्तरापथ में स्थित कहा गया है। वराहमिहिर इसे दासेरक के साथ (बृ० सं० १६-२२) स्थित बताते हैं। नकुल द्वारा विजित यह देश पश्चिम दिशा में स्थित था। इन संकेतों से ऐसा प्रतीत होता है कि यह पूर्वी पंजाब और हरियाना तथा राजस्थान से सटा हुआ कोई देश था। पार्जिटर के अनुसार (मार्कंडेय पु० अंग्रेजी, पृ० ३१२, फुट नोट) यह देश फ़ीरोज़पुर के दक्षिण और सतलज के पूर्व स्थित था। न तो यहाँ के ब्राह्मण शुंग ही थे और न इसका सम्बन्ध माध्यमिका से था जैसा डा० मोतीचन्द्र मानते हैं (उपायन पर्व पृ० २७)। सभा पर्व का पाठ—'तथा मध्यमिकायांश्च वाट-धानान्द्विजानथ' (सभा पर्व, २९-७) जिसे डा० मोतीचन्द्र ने ग्रहण किया है—के स्थान पर 'तथा माध्यमिकांश्चैव वाटधानान् द्विजानथ (सभा पर्व ३२-८, गीता प्रेस सं०)' पाठ मिलता है जिसके अनुसार माध्यमिका और वाटधान दो पृथक प्रदेश थे। वृहत्संहिता में भी माध्यमिका (१४-२) और वाटधान (१४-२६) को अलग-अलग क्रमशः मध्य देश तथा उत्तर देश में स्थित बताया गया है। माध्यमिका का सम्बन्ध शिबि जनपद से था, जैसा कि उनके सिक्कों से ज्ञात होता है; यद्यपि महाभारत (सभा पर्व ३२।७-८) शिबि और माध्यमिका को भी दो पृथक जनपद मानता है।

जहाँ तक शुंगों की उत्पत्ति का प्रश्न है शुंग नाम की एक पृथक जाति अथवा जनपद था (मत्स्य पु० १६२-६६)। शुंग औद्भिद नामक पर्वत के निवासी थे और यह पर्वत दक्षिण में कृतमाला (पांड्य देश में बहने वाली नदी) के तट पर स्थित था (अवस्थी—प्राचीन भारत का इतिहास, पृ० १३१-१३२)। अतः शुंगों और वाटधानों की तद्रूपता सिद्ध नहीं हो सकती है।

वाटधान का उल्लेख महाभारत की जनपद तालिका (भीष्म पर्व ९-४७) में भी मिलता है। श्री कृष्ण (द्रोण पर्व ११-१७) ने इस देश को जीता था। अर्जुन ने भी इन्हें गोवास, दासमीय और वसातियों के साथ जीता था (कर्ण

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पर्व ७३-१७)। सभा पर्व (४९-३-६) में भी इन्हें गोवासनों और दासमीयों (दासनीय अशुद्ध पाठ हैं, गीता प्रेस) के साथ रखा गया गया है (सभा पर्व ५१।५-६):

गोवासना ब्राह्मणाश्च दासनीया (दासमीयाश्च) सर्वशः।
प्रीत्यर्थं ते महाराज धर्मराज्ञो महात्मनः॥
त्रिखर्वं बलिमादाय द्वारि तिष्ठन्ति वारिताः।
ब्राह्मणा वाटधानाश्च गोमन्तः शतसंघशः॥

डा० मोतीचन्द्र द्वारा उल्लिखित पाठ (उपायन पर्व पृ० ११९, सभा पर्व ४७।५) में 'गोवासना' और 'दासमीया' का उल्लेख है। परन्तु डा० मोतीचन्द्र ने इन पर विचार नहीं किया है। यदि वाटधानों को माध्यमिका का रहने वाला मानें (उपायन पर्व पृ० ३१) और माध्यमिका की सही पहचान नागरी-चित्तौर (दक्षिण राजपूताना) से करें तो महाभारत का साक्ष्य प्रतिकूल पड़ता है। महाभारत के अनुसार वाटधान देश पंचनद, कुरुजांगल, रोहितकारण्य (यौधेय देश) और मरुभूमि से बाहर था—

ततः पंचनदं चैव कृत्स्नं च कुरुजांगलम्।
तथा रोहितकारण्यं मरुभूमिश्च केवला॥
अहिच्छत्रं कालकूटं गंगाकूलं च भारत।
वारणं वाटधानं च यामुनश्चैव पर्वतः।
एष देशः सुविस्तीर्णः प्रसूतधनधान्यवान्॥

उद्योग पर्व १९।२९-३१

अस्तु, स्पष्ट है कि वाटधान एक समृद्ध प्रदेश था जिसकी पहचान भटनेर से की गई है। वामन पुराण (१३-३७) में इसे आभीरों के साथ रखा गया है।

संभवतः भादनक देश ही वाटधान नामक देश था जिसका उल्लेख महाभारत, बृहत्संहिता और वामन पुराण में हुआ है। वाटधान अथवा भादानक ही को कुमारिका खंड देश-तालिका में भयाणक (स्ट० स्क० पु०, पृ० ५१-५२) कहा गया है जिसमें एक लाख ग्राम थे (स्कन्द पु०, १-२-३९-१५९)।

काम्बोज—यह उत्तराखंड का एक पर्वतीय देश था और इसीलिये यहाँ के राजा ने ऊनी, रोएँ वाले तरह-तरह के सुन्दर वस्त्र, मृगचर्म और घोड़े, ऊँट और खच्चर भेंट में दिये (सभा पर्व ५१।३-५) यह पामीर के आसपास का देश है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गोवासन (गोवासना ब्राह्मण, सभा ५१-५)—गोवासन के ब्राह्मण भी भेंट लाये थे। गोवासन की पहचान 'क्यु-पि-शोंग-न से की गई है जिसका उल्लेख ह्वेनसांग करता है। इसे गोविसन माना गया है जो मातीपुर (मंडावर, जिला बिजनोर, उत्तर प्रदेश) से ४०० ली दक्षिण पश्चिम में स्थित था (जा० डि०, पृ० ७२)। कनिंघम (ऐ० जा० इ०, पृ० ३०१) ने इसकी पहचान नैनीताल प्रान्त के काशीपुर से की है। यहाँ द्रोण-सागर प्रसिद्ध तीर्थ था।

दासमीय—(दासमेय) सभा पर्व, ५१-५) बृहत्संहिता (१४-२८) इसे यौधेयों के साथ (यौधेयदासमेयाः) उत्तर दिशा में स्थित बताती है। फ्लीट ने भी इसे उत्तरी लोगों का नाम माना है।

कुणिन्द—कुणिन्द-नरेश को द्विजमुख्य कहा गया है जिसने भेंट में शंख दिया था। इसके अतिरिक्त उसने हिरण्य और विविध वस्त्र भी दिये थे (सभा, अ० ५१, पृ० ८६)। कुणिन्द, कुनिन्द या कुलिन्द एक ही है, जो शिवालिक की पहाड़ियों के नीचे यमुना और सतलज के बीच तथा व्यास और सतलज की ऊपरी घाटियों में बसे थे।

काश्मीर—यहाँ के राजा ने शुद्ध और रसीले अंगूर दिये (सभा अ० ५१, पृ० ८५०)। यह प्रसिद्ध काश्मीर देश है जो हिमालय की कुक्षि में स्थित है (योगवसिष्ठ)।

यवन—यवनों ने तेज दौड़ने वाले पर्वतीय घोड़े, बहुमूल्य आसनों, और उत्तम कम्बल रत्न भेंट में दिये (सभा, अ० ५१, पृ० ८६०) इससे सिद्ध होता है कि यवन लोग काम्बोज के निकट पश्चिमी गान्धार के पर्वतीय प्रदेश में बसे हुए थे। सिकन्दर के आक्रमण के समय नीसा में यवन बसे हुए थे।

कलिंग—दक्षिण सागर के निकट से उपलब्ध रत्नों, शंख और वस्त्रों को कलिंग नरेश ने भेंट में दिया (सभा, अ० ५१, पृ० ८६०)। इससे सिद्ध होता है कि कलिंग और दक्षिण सागर के द्वीपों के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध था।

पाण्ड्य—पाण्ड्य नरेश ने दर्दुर पर्वत (मलय का एक शिखर) पर होने वाला चन्दन भेंट किया (सभा, ५१, पृ० ८६०) था।

नीप, चित्रक, कौकुर, कारस्कर और लोहजंघ के प्रधान या राजा भी युधिष्ठिर को भेंट लाये थे (सभा पर्व, ५०-२०)।

नीप—उपायन पर्व (पृ०११९, सभा ४६-२१) में डा० मोतीचन्द्र 'नीपाः' के स्थान पर 'निघ्नाः' पाठ लेते हैं। परन्तु निघ्न की भी स्थिति पर कोई

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विचार नहीं किया गया है। निम्न नाम प्रायः अप्रसिद्ध और अज्ञात देश-नाम है। अतः नीप पाठ ही ग्राह्य है। बृहत्संहिता (१४-२) में नीप देश का उल्लेख है और इसे मध्य देश में स्थित बताया गया है। इनके साथ ही इसी क्षेत्र में कुकुर (बृ० सं० १४-४) भी स्थित बताये गए हैं। मार्कंडेय पुराण (५८-६) में भी नीप देश को कूर्मरूपी भारत के मध्य भाग में स्थित बताया गया है। यद्यपि इसकी स्थिति निश्चित रूप से ज्ञात नहीं है, परन्तु फिर भी यहां पर 'नीपाः' का ही शुद्ध पाठ है। स्कन्द पुराण की कुमारिका खंड की देश तालिका में नीवृत नामक एक देश का उल्लेख है, जिसकी पहचान रुद्रदामन प्रथम के जूनागढ़ शिलालेख में उल्लिखित नीवृत से की गई है (प्रा० भा० भौ० स्व०, पृ० १२४; स्ट० स्क० पु०, पृ० २९)। रुद्रदामन प्रथम के अभिलेख में अनूप-नीवृत पाठ मिलता है। परन्तु विद्वानों ने नीवृत को ऐसे ही छोड़ दिया है। महाभारत (सभापर्व ५१-२४) में 'नीपानूपान्' (नीप और अनूप) पाठ मिलता है। नीप एक प्रसिद्ध राष्ट्र था (सभा पर्व ८-२२)। परन्तु इसकी स्थिति निश्चित नहीं है (देखिए—स्ट० स्क० पु०, पृ० २९)।

चित्रक—बौद्ध साहित्य से चित्तल पर्वत का उल्लेख (अट्ठसालिनी पृ० ३५०, विसुद्धिमग्ग पृ० २९२) मिलता है (बी० सी० ला०, अर्ली जाग्रफी फ्राम बुद्धिस्ट ऐन्ड जैन लिटरेचर, पृ० ४१)। इसलिये इसकी पहचान डा० मोतीचन्द्र (उपायन पर्व, पृ० ४५) द्वारा चित्राल राज्य में दिर, स्वात और चित्राल (उत्तरी पश्चिमी सीमान्त प्रदेश, पाकिस्तान) से की गई है।

कुकुर (भीष्म पर्व ९-६०)—**बृहत्संहिता** (१४-४) में कुकुर को मध्य देश में स्थित बताया गया है। **पद्मपुराण** (आदि, ६-५५) में भी इसका उल्लेख है। **महाभारत** (मौसल पर्व ३-४२) में इन्हें अन्धकों के साथ (पतंगा इव चाग्नौ ते निपेतुः कुकुरान्धकाः) इस प्रकार रखा गया है जैसे पतंगे आग में ज्योति पर एक साथ टूट पड़ते हैं। यह उनके राष्ट्रीय गण-संघ के स्वरूप (गणाः संघातवृत्तयः शान्ति पर्व) का परिचायक है। डा० जायसवाल (हिन्दू पालिटी) ने इसे पश्चिमी भारत (सौराष्ट्र-काठियावाड़) का गण राज्य बताया है। महाभारत (मौसलपर्व ५-२) के अनुसार वार्ष्णेय, भोजक, अन्धक, और कौकुर एक ही संघ-राज्य के सदस्य थे। भोजकों को उदीच्य (सभा पर्व १-१२) का निवासी कहा गया है जिनके अठारह कुल इस संघ के सदस्य थे (उदीच्याश्च तथा भोजाः कुलान्यष्टादश) और वे जरासंध के भय से पश्चिम देश को भाग गए थे (जरासंधभयादेव प्रतीचीं दिशमास्थिताः)। परन्तु उन्हें मध्यदेश की याद न भूली थी (सभा पर्व १४-६०)। अतः स्पष्ट है कि पहले

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यह संघ मध्य देश में मथुरा-मण्डल में बसा था। परन्तु बाद में छोड़ कर वे लोग द्वारावती (द्वारका) को चले गए थे (सभा पर्व १४-६७)। अतः कुकुर अन्धक और वृष्णियों के साथ आनर्त देश में बसे हुए थे। वासिष्ठीपुत्र पुलुमायी के १९ वें वर्ष के नासिक लेख, गौतमीबलश्री के लेख) में इसे पश्चिमी भारत के जनपदों में स्थित बताया गया है (सरकार-सेलेक्ट इन्स० पृ० १९६)। रुद्रदामन प्रथम के जूनागढ़ शिला लेख में भी इसका उल्लेख इसी क्षेत्र के जनपदों के साथ किया गया है (सेलेक्ट इन्स०, पृ० १७२)। दोनों ही अभिलेखों में इसका उल्लेख अपरान्त के साथ किया गया है। डा० सरकार ने इसकी पहचान आनर्त के निकट उत्तरी काठियावाड़ से की है (सेलेक्ट इन्स०, पृ० १७२, फुटनोट १)। डा० मोतीचन्द्र इनकी पहचान पंजाब की खोखर जाति से करते हैं। परन्तु यह महाभारत के साक्ष्य के विरुद्ध है। महाभारत (वन पर्व १८३-२६) के अनुसार वृष्णिपुर आनर्त में स्थित था और कुकुरान्धक (कुकुर और अन्धक) आदि वृष्णि संघ के ही शूर थे (वन पर्व १८३-३२) जिनका वृष्णियों, सात्वतों और शूरसेनों (वन पर्व १२०-२०) के साथ कुलसम्बन्ध था।

कारस्कर—यह भारत का एक प्रसिद्ध जनपद था (ब्रह्मांड, उपो० १४-३३; मत्स्य ११३-४९; वायु १-१६-६९; वामन १३-५२; मार्कंडेय ५४-५१; स्कन्द ७-१-२०६-३०)। इसे भी अपरान्त में स्थित बताया गया है (मत्स्य, ११२-४९; वामन, १३-५२)। इनका उल्लेख बौधायन धर्म सूत्र (१७-६) और बौधायन श्रौत सूत्र (१-२-१५) में भी मिलता है। पुराणों में इसे पश्चिमी जनपद बताया गया है। प्रो० जयचन्द्र विद्यालंकार चित्ताल नगर और चित्तल नदी के आसपास कारस्कर देश को स्थित मानते हैं (भारत भूमि और निवासी, पृ० ३१६)। डा० मोतीचन्द्र भी इस देश को कश्क़ार घाटी में स्थित चित्रालयों की एक शाखा बताते हैं (उपायन पर्व पृ० ४७)। डे इसे दक्षिण में स्थित बताते हैं। यह दक्षिण भारत में साउथ कनारा प्रान्त का कारकल था, जो जैनों और बौद्धों का तीर्थ था। इसीलिए ब्राह्मण ग्रन्थों में इसकी निन्दा की गई है (जा० डि० पृ० ९३)। महाभारत (कर्ण पर्व ४४-४३) में इसे निन्द्य एवं त्याज्य देश कहा गया है जहां धर्म दूषित था।

लोहजंघ—यह अज्ञात है। डा० मोतीचन्द्र के अनुसार काबुल के दक्षिण लोगर घाटी से इसकी पहचान की गई है (उपायन पर्व पृ० ४८)। मार्कंडेय पुराण (५४-५१) में इसे अपरान्त में स्थित कहा गया है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चोल और केरल ने मुक्ता, वैदूर्य और चन्दन तथा अगुरु भेंट किया (सभा पर्व अ० ५१, पृ० ८६१)। ये दक्षिण के प्रसिद्ध देश थे। चोल कारोमण्डल तट पर स्थित था। केरल आज भी प्रसिद्ध है जो मलाबार तट पर स्थित है।

अश्मक (भीष्मपर्व ९-४४)—यह गोदावरी-तट पर स्थित दक्षिणापथ का देश था जिसकी राजधानी पौदन्य (पैथन या बोधन, औरंगाबाद के निकटस्थ) थी। यहां के राजा ने दुधार गायें भेंट की (सभा, अ० ५१, पृ० ८६१)। अश्मक नामक राजा ने ही पौदन्य नामक नगर को बसाया था (आदि पर्व, १७६-४७)।

सिन्ध—सैन्धव राजा ने सिन्धु देश के घोड़ों (सैन्धवों) की भेंट की (सभा, अ० ५१, पृ० ८६१)। इस युग में यह प्रसिद्ध राज्य था जिसका राजा जयद्रथ सिन्धु-सौवीर आदि दस राष्ट्रों का शासक था (कर्ण पर्व, ५।११-१२)। उसे सिन्धु-सौवीर का स्वामी (स्त्रीपर्व, २२।९, ११) कहा गया है जिसकी सेवा में काम्बोज यवनों की स्त्रियाँ रहती थीं। शिबि, सौवीर और सिन्धु के सैनिक उसकी सेना में थे (वन पर्व २७१।२-३) वह शिबि, सौवीर और सिन्धु का स्वामी था (वन पर्व २६७।११)। वही सिन्धुराज भी था (वन पर्व २६७-१८)।

सौवीर—सौवीर राजा ने हाथी जुते हुए रथ भेंट में दिए (सभा, अ० ५१, पृ० ८६१)। सौवीरक (वन पर्व २८७-२) जयद्रथ को सौवीरराज कहा गया है (वन पर्व २६५-१२)। वह ही 'पतिः सौवीरसिन्धूनां' (सौवीर-सिन्धु का स्वामी) भी था (वन पर्व २६७-८)। अतः स्पष्ट हैं कि इस समय सिन्धु, और सौवीर (निचली सिन्धु घाटी) एक ही राजा के आधीन थे।

अवन्ति—(पश्चिमी मालवा) के राजा ने रत्नों, विविध आभूषणों और दासियों की भेंट दी (सभा, अ० ५१, पृ० ८६१)। इसकी राजधानी भी अवन्ति या उज्जयिनी थी।

दशार्ण—(पूर्वी मालवा), **चेदि** (बघेलखण्ड) और **शूरसेन** (मथुरामंडल) तथा **काशि** के राजाओं ने भी भेंटें दीं। काशिराज ने हाथी और रत्न दिए (सभा, अ० ५१, पृ० ८६१)।

विदेह और **कोसल** (पूर्व कोसल) के राजाओं ने घोड़े दिए (सभा, अ० ५१, पृ० ८६१)।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वसातियों के साथ शिबि नरेश ने तथा त्रिगर्तों ने मालवों के साथ बहुत से रत्न भेंट में दिए (सभा, ५१-८)।

वसाति—यह प्रसिद्ध देश था (द्रोण पर्व ९१-३८)। बृहत्संहिता (१४-२५) में इन्हें उत्तर में स्थित बताया गया है। डा० अग्रवाल (पा० भा०, पृ० ४२२, ४६५) इन्हें शिबि का पड़ोसी बताते हैं। यही महाभारत भी मानता है। इसकी पहचान यूनानी इतिहासकारों के ओस्सदिओइ से की गई है। चनाब और सतलज की संयुक्त धारा जहां सिन्धु से मिलती है उसके समीप वसातियों का राज्य था (पा० भा०, पृ० ४६५)।

शिबि—इस समय यह सिन्धु राज्य के आधीन था। सिकन्दर के आक्रमण के समय यह (शिव्वॉय) गण राज्य था। यह सिबिस्तान (या शिवि राष्ट्र) ही था जिसकी राजधानी शिविपुर (आधुनिक शोर कोट, झंग प्रान्त, पश्चिमी पाकिस्तान) थी।

कार्पासिक—युधिष्ठिर को कार्पासिक देश की दासियाँ भेंट में दी गई—

> **शतं दासी सहस्राणां कार्पासिकनिवासिनाम्** ।। सभा पर्व ५१-८
> **श्यामास्तन्व्यो दीर्घकेश्यो हेमाभरणभूषिताः।**
> **शूद्रा विप्रोत्तमार्हाणि रांकवाण्यजिनानि च** ।। सभा पर्व ५१-९
> **बलिं च कृत्स्नमादाय भरुकच्छनिवासिनः।**
> **उपनिन्युर्महाराज हयान् गान्धारदेशजान्** ।। सभा पर्व ५१-१०

डा० मोतीचन्द्र (उपायन पर्व, पृ० ११९-१२०, सभा पर्व ४७।७-८) भी यही पाठ मानते हुए कहते हैं—"कार्पासिक (महाभा०, २, ४७, ७) बहुत अप्रचलित शब्द है जिसका महाभारत में एक ही बार प्रयोग मिलता है। इस स्थान की ऐतिहासिकता पूर्ण रूप से सिद्ध है, क्योंकि इसका उल्लेख सांची के एक अभिलेख में हुआ है। अभिलेख संख्या १४३ (मान्यूमेन्ट्स ऑफ सांची, जिल्द १ पृ० ३१४) में **कार्पासीग्राम** के एक अर्हत के दान का उल्लेख है। सांची के अन्य किसी लेख में फिर इसका उल्लेख न होना सिद्ध करता है कि यह स्थान भारत से दूर स्थित था और वहां से आने जाने में असुविधा तथा कठिनाइयाँ थीं। चूंकि महाभारत इस देश की स्थिति और दिशा के विषय में मौन है, इसलिए देखना है कि कहीं और भी इसका उल्लेख है।......**फ़ान-यू-समिंग** नामक संस्कृत-चीनी-कोश में किपिन या कपिश के लिए संस्कृत शब्द कपिशय दिया हुआ है जिसका शुद्ध रूप कपिशय है। इस प्रकार किपिन की पहचान कार्पासिक से होनी चाहिये।........किपिन का भारतीय रूम कपिर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

था और यही कार्पासिक भी था।………कपिश का ही रूपान्तर कबुस या कफुस है और कफुस ही कार्पास है। कार्पास का मराठी रूपान्तर कापुस है। सिक्कों पर कुषाण सम्राट कैड फ़ाइसेस को खरोष्ठी में कफस या कपस कहते हैं और वह कपिश से सम्बन्धित था। कपिश और काम्बोज भी एक ही थे। यद्यपि कपिश या काफिरिस्तान काम्बोज गण राज्य का एक भाग ही था, तथापि इसने अपना स्वतन्त्र अस्तित्व कार्पासिक देश के नाम से बनाए रखा। ………काफिर देश की युधिष्ठिर को भेंट भी उनके देश की परम्परा के अनुरूप ही थी। वे शूद्र कहे गए हैं, जो अपने साथ एक लाख दासियाँ लाए थे। वे स्त्रियाँ कार्पासिक की रहने वाली थीं……। वे अपने साथ बकरों की खालें और मृग-चर्म लाये थे। काफिर देश में दासता अति प्रसिद्ध थी'' (उपायन पर्व, पृ० ४०-४५)।

सत्य ही, यह देश-नाम अप्रसिद्ध है; और पौराणिक भुवनकोश, बृहत्संहिता तथा महाभारत में भी इस स्थान के अतिरिक्त दूसरी जगह इसका उल्लेख नहीं मिलता है। डा० मोतीचन्द्र (उपायन पर्व, पृ० ४०-४५) ने बड़े परिश्रम के साथ इसकी पहचान कपिश या काफिरस्तान से की है। परन्तु इस पहचान में सन्देह है। इस पहचान पर सन्देह करने के निम्नलिखित कारण हैं—

१—**कपिश** का नाम साहित्य, अभिलेखों और सिक्कों में प्रसिद्ध और प्रचलित हो चुका था। फिर इस प्रसिद्ध और प्रचलित नाम को छोड़ कर अप्रचलित नाम को क्यों लिखा गया। भौगोलिक नामों के पीछे एक परम्परा रहती है जिससे उस स्थान के लक्षणों का ज्ञान होता है—

'भूगोलकविशेषं नामरूपमानलक्षणतो व्याख्यास्यामः'।

भागवत पु०, ५-४।

कार्पासिक की कपिश से पहचान करने में स्थानीय लक्षणों पर ध्यान नहीं दिया गया।

डा० मोतीचन्द्र स्वयं मानते हैं कि "कपिश देश का वर्णन कापिशायनी सुरा के बिना अधूरा ही है। युधिष्ठिर को दी गई भेंटों में इसका उल्लेख नहीं है" (उपायन पर्व पृ० ४५)। सत्य तो यह है कि जब महाभारतकार इसे कपिश मानता ही नहीं है तो वह 'कापिशायन' का स्वप्न कहां से देखता। यदि कार्पासिक और कपिश एक ही थे तो कापिशायन का उल्लेख करता ही अत्यावश्यक था। परन्तु वे एक न थे।

२—स्थान-लक्षणों के अनुसार यह वह देश था जहां कपास (कर्पास) पैदा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

होती थी। इसीलिए इसे कार्पासिक कहा गया है। कपिश की जलवायु अत्यन्त शीत थी जहाँ ऊनी और रोएँ वाले (समूर या फ़र) कपड़ों का प्रयोग होता था। काम्बोज के निवासियों ने ऐसे ही ऊनी और रोएँ वाले कपड़े भेंट में दिए थे (सभा पर्व ५१।३)। इस प्रकार कपिशा में अकार्पासिक और अजाविक (और्ण) वस्त्र प्रचलित थे। कार्पासिक के नाम लक्षण के बिना कपिशा कार्पासिक था ही नहीं।

३—दासियों को 'श्यामाः' (श्याम या काले रंगवाली) कहा गया है। कपिशा की स्त्रियाँ श्यामा न हो कर गोरी होना चाहिए।

४—चौथी बात तो अत्यन्त महत्वपूर्ण है जिस पर डा० मोतीचन्द्र ने विचार नहीं किया। इन दासियों की भेंट करने वाला कौन था? उत्तर है शूद्राः। ये शूद्र तो शूद्र देश के ही रहने वाले थे जिन्हें डा० मोतीचन्द्र काफ़िरिस्तान के शूद्र कहते हैं। जो प्राचीन भूगोल से अपरिचित संस्कृतज्ञ है, वह इन्हें भरुकच्छ का शूद्र (भरुकच्छनिवासिनः शूद्राः) मानेगा। परन्तु काफ़िरिस्तान का शूद्र तो किसी भी दशा में मान्य नहीं है।

युधिष्ठिर को कार्पासिक देश की एक लाख दासियाँ भेंट मे दी गई (शतं सहस्राणां कार्पसिकनिवासिनाम्), वे श्याम रंग की थीं (श्यामाः) और उनके केश बड़े लम्वे थे (सभा पर्व, ५१-७)। डा० मोतीचन्द्र कहते हैं कि उनको शूद्र कहा गया है (उपायन पर्व, पृ० ४४)। परन्तु प्रतीत यह होता है कि शूद्र देश के राजा ने इन दासियों की भेंट दी। इसीलिए शब्द 'शूद्राः' आया है, न कि काफ़िर देश के राजा ने दासियों की भेंट की। काफ़िर देश का राजा तो कापिशायन ले आता यदि कपिश या काफ़िरिस्तान से भेंट आती। शूद्रों का कार्य सेवा धर्म था। अतः इसी दृष्टिकोण से उनके द्वारा दासियों का भेजना ही समुचित उपायन (भेंट) थी। यहाँ कपिश या काफ़िरिस्तान का उल्लेख नहीं है।

इसी पर्व में भेंटों के वर्णन के प्रसंग में ही कहा गया है कि शूद्र-जन सेवा करते थे (शूद्राः शुश्रूषवस्तथा, सभा पर्व ५२-३८)। ये शूद्र ही विप्रों के योग्य उत्तम अजिन (मृग चर्म) भी ले आये थे। शूद्र एक प्रसिद्ध देश था।

नकुल ने पश्चिमी दिग्विजय में शूद्र और आभीर देशों (सभा पर्व, ३२-१०) को जीता था। अतः आवश्यक ही था कि शूद्र देश से भी उपयुक्त भेंट आती। उन्होंने इसीलिए राजा के लिए दासियाँ और ब्राह्मणों को देय मृगचर्म भेंट में दिये। शूद्र, शौद्रायण या सोड्राई पश्चिमी भारत का प्रसिद्ध देश

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

था। इसके बाद ही भरुकच्छ (भड़ोंच) से भी आने वाली भेंट का उल्लेख है (उपायन पर्व पृ० १२०)। अतः कार्पासिक देश की पहचान कपिश से नहीं हो सकती। यदि कपिश से आने वाली भेंट का उल्लेख होता तो कपिश का ही उल्लेख होता न कि अप्रचलित नाम 'कार्पासिक' का उल्लेख होता। 'कार्पासिक' का सीधा अर्थ है 'कपास पैदा करने वाले देश' से और यह शूद्र देश का ही नाम था, क्योंकि वहाँ कपास की खेती होती थी और पशुपालन भी। आगे चलकर इसी अध्याय में 'वस्त्रमकार्पासम्' (ऐसे कपड़े जो कपास के बने न थे; सभा पर्व ५२-२७) का उल्लेख है। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में 'कपास के सूत से बने हुए कपड़े' के अर्थ में 'कार्पासिकं' शब्द का प्रयोग मिलता है—

माधुरमापरान्तकं कलिंगकं काशिकं वांगकं वात्सकं माहिषकं च कार्पासिकं श्रेष्ठमिति। अर्थशास्त्र अधिकरण २, अ० ११।

अर्थात कपास के सूत से बने हुए वस्त्र निम्नलिखित देशों के उत्तम होते हैं—

(१) **माधुरम्**—मधुरा (पांड्य देश की राजधानी, आधुनिक मदुरा) का बना हुआ,

(२) **अपरान्तकं**—अपरान्त अथवा कोंकण का बना,

(३) **कालिंगक**—कलिंग देश में उत्पन्न,

(४) **काशिक**—काशी का बना,

(५) **वांगक**—वंग (पूर्वी बंगाल) का,

(६) **वात्सकं**—वत्स देश का बना और

(७) **माहिषक**—(महिष मंडल) मैसूर का बना हुआ सूती कपड़ा प्रसिद्ध था।

अपरान्त या कोंकण में आज भी कपास अधिकता से उत्पन्न होती है। पश्चिमी समुद्र के निकटस्थ अपरान्त (भीष्म पर्व ९-४७) प्रसिद्ध देश था जो शूर्पारक क्षेत्र (शान्ति० ४९-६७) का ही दूसरा नाम है। इसी पश्चिमी क्षेत्र की दासियाँ भी श्यामा थीं। इसी पर्व में आगे चलकर 'अपरान्तसमुद्भूतांस्तथैव परशून्छितान्' (सभा पर्व ५१-२८) का प्रयोग मिलता है। इस प्रकार अपरान्तसमुद्भूत कार्पासिकं से भी महाभारत परिचित था। अशोक के अभिलेखों में ('ये अञ्ञे च अपराता') अपरान्ताः अथवा पाश्चात्य जनों का उल्लेख है, शूद्राभीर गण भी पाश्चात्य देश के ही निवासी थे। अतः

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कार्पासिक देश की पहचान शूद्र या सोड़ई देश से की जानी चाहिए न कि कपिश या काफ़िरिस्तान से ।

भरुकच्छ—भरुकच्छ (भड़ौंच) निवासी अपने साथ गान्धार देश के घोड़े लाये थे (सभा पर्व ५१-१०) । वराहमिहिर बृहत्संहिता (१४-११) में इसे दक्षिण देश-भाग में स्थित बताते हैं। जुन्नार और नासिक अभिलेखों में (आर्कयोलाजिकल सर्वे ऑफ़ वेस्टर्न इण्डिया जिल्द ४, पृ० ९६, १००) इसका उल्लेख हुआ है । यह यूनानी लेखकों द्वारा उल्लिखित 'बैरीगज़ा' है । पुराणों (मत्स्य ११३-५०; मार्कंडेय ५४-५१; वायु, ११४५।१३०) में इसे अपरान्त में स्थित बताया गया है। यह नर्मदा-सागर संगम पर स्थित था । इसे भृगुकक्ष (मार्कंडेय पु० ५५-२१; पाणिनि ८-१८-२१) भी कहते थे ।

गान्धार देश—ये गान्धार देश के घोड़े लाये थे। यह पर्वतीय देश था (भीष्म पर्व २०८) । गान्धार देश रावलपिंडी और पेशावर के निकट स्थित था । शकुनि गान्धार का राजा था (सभा पर्व ४७-३०) । यही गन्धर्व रक्षित देश था (सभा पर्व २८।५-६) जिसकी राजधानी गन्धर्व नगर थी। इसकी राजधानी तक्षशिला थी (आदि पर्व ३।२०, १७१) थी । यह एक प्रदेश भी था (पश्चिमी गान्धार) ।

समुद्रनिष्कुट (सभा पर्व ५१-११)—यह एक जनपद था (भीष्म पर्व ९-४९) जिसे समुद्रतटीय. देशों—अपरान्त (कोंकण), कच्छ (कक्ष) और माहेय (मही नदी की घाटी=खम्भात की खाड़ी का निकटवर्ती देश) के साथ (कुन्दापरान्ता माहेयाः कक्षाः सामुद्रनिष्कुटाः) रखा गया है। डा० मोतीचन्द्र (उपायन पर्व, पृ० १२०, सभा पर्व ४७-९) ने भी अपने पाठ में इसे स्वीकार किया है । परन्तु इसका विवेचन नहीं किया ।

पारेसिंधु (सभा पर्व ५१-११)—इसी पंक्ति में—समुद्रनिष्कुटे जाताः परिसिन्धु च मानवाः (उपायन पर्व पृ० १२०, सभा पर्व ४७-९) परिसिन्धु के स्थान पर गीता प्रेस संस्करण में पारेसिन्धु (सभा पर्व ५१-११) पाठ है। डा० मोतीचन्द्र समुद्रनिष्कुट का अर्थ सामुद्रिक उपवन (सीशोर गार्डेन्स) और परिसिन्धु का अर्थ सिन्धु नदी के पार (ट्रान्स इन्डस पीपुल) लेकर इस देश की पहचान बलोचिस्तान के 'लासबेला और कलात' से करते हैं ।

सहदेव की दक्षिण विजय में 'सागरद्वीपवासियों', म्लेच्छ नृपतियों और कालमुख-राक्षसों पर विजय का उल्लेख है (सभा पर्व ३१।६६-६७) । समुद्र के उस पार (परं पारं समुद्रं; आदि पर्व २२-४; २५-१) अर्थात् 'दक्षिण

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

समुद्रस्य पारं लंका' (सभा पर्व दा० पाठ पृ० ७६४) या दक्षिण समुद्र के उस पार लंका से धन समूह प्राप्त हुआ था। इस समुद्र-पार लंका को ही 'पारे सिन्धु' या 'पालेसमुद्र' कहा गया है। अतः समुद्रनिष्कुट देश की पहचान समुद्रनिष्कुट अथवा समुद्र द्वार पर स्थित सेतु प्रान्त से हो सकती है और 'पारे सिन्धु' तो सिंहल का ही प्रचलित नाम था। काव्यमीमांसा के अनुसार सिंहल दक्षिणापथ से सम्बन्धित देश था और कुमारिका खंड के अनुसार यह भारतवर्ष का एक देश था जिसमें दस हजार ग्राम थे (स्ट० स्क० पु०, पृ० ५१)। महाभारत (सभापर्व अ० ३१, दा० पाठ पृ० ७६४) में रामसेतु (सेतु प्रान्त) के बाद ही लंका या सिंहल है। 'पारे सिन्धु' 'मानवा' अर्थात समुद्र पार के अन्य लोगों में समुद्र द्वीपों के निवासी भी सम्मिलित माने जा सकते हैं। समुद्रगुप्त को सर्वद्वीपवासियों (सर्वद्वीपवासिभिः) और सैंहलकादिभिश्च-सिंहल के निवासियों ने उपायन भेजी थीं (समुद्रगुप्त की प्रयाग प्रशस्ति)। बाण ने हर्ष चरित में भी 'परं पारं' (सिंहल) में प्रवरसेन की कीर्ति और राम की सेना के जाने का उल्लेख किया है—

कीर्तिः प्रवरसेनस्य प्रयाता कुमुदोज्वला।
सागरस्य परं पारं कपिसेनेव सेतुना॥

हर्ष चरित १-१४

यह चन्द्रगुप्त द्वितीय के युग में हुआ। इसकी पुष्टि चन्द्र के मेहरौली अभिलेख से भी होती है जिसमें उसके प्रभाव का उल्लेख दक्षिण समुद्र पर बताया गया है। आदित्यसेन के अपसद लेख में भी कहा गया है कि उसकी कीर्ति समुद्र पार चली गई थी (याता सागरपारम्, श्लोक २६)। अतः स्पष्ट है 'सागरपार' अथवा 'पारे सिन्धु' सिंहल का ही परिचायक बन गया था।

डा० मोतीचन्द्र 'पारे सिन्धु' के स्थान पर 'परिसिन्धु' पाठ स्वीकार करते हैं और वैराम, पारद तथा वंग को सिन्ध नदी के पार क्षेत्रों में स्थित मानते हैं (उपायन पर्व, पृ० ४८)।

वैराम—(सभा पर्व ५१-१२) इस जनपद का उल्लेख बृहत्संहिता, काव्यमीमांसा और पुराणों में नहीं मिलता है। महाभारत की जनपद-तालिका में भी इसका उल्लेख नहीं है और न इसका उल्लेख दिग्विजय पर्व में ही मिलता है। केवल यहीं पर इनका उल्लेख है कि ये युधिष्ठिर की सभा में भेंट लाये थे। महामयूरी में वैरामक का उल्लेख (वैरामके बलो यक्षः, पंक्ति ४८)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हुआ है । डा० मोतीचन्द्र ने इसकी पहचान मक्रान में बसने वाली ओरोटी की राजधानी रम्बकिया से किया है (उपा० पृ० ५१) । रम्बकिया का संस्कृत रूप ही वैरामक है । कलकत्ता संस्करण महाभारत में वैयमक पाठ है ।

इसी खंड (पर्व) में आगे चलकर कुछ जातियों का उल्लेख है (सभा पर्व ५२।१३) ।

कैराता दरदा दर्वाः शूरा वै यमकास्तथा ।
औदुम्बरा दुर्विभागाः पारदा बाह्लिकैः सह ॥

यहाँ ऊपर पहली पंक्ति में 'वै यमकाः' मिलता है । ये दो शब्द 'वै' और 'यमकाः' हैं । यदि एक ही शब्द है तो वैयमकाः होगा । परन्तु दो शब्द ही हैं जिनमें वै (अव्यय) है और पद पूरा करने के लिये ही इसका प्रयोग हुआ है । इसी प्रकार 'वैरामाः' में भी 'वै' अव्यय है और देश नाम 'रामाः' है । सहदेव ने दक्षिण दिग्विजय में 'रामकं' पर्वत को जीता था (सभा पर्व ३१-६८) । हस्तलिखित पाठ में वैराम को वैयम भी पढ़ा जा सकता है । अतः संभव यही है कि वैराम के स्थान पर राम या रामक पाठ ही था ।

पारद—यह विदेशी जाति के लोग थे जिनका सम्बन्ध पार्थिया से था । इनको पह्लव भी कहा गया है जिनका उल्लेख शकों और यवनों के साथ मिलता है । पह्लवों को वसिष्ठ की गाय (नन्दिनी) की पूँछ से उत्पन्न कहा गया है (आदि पर्व १७४-२६) । भीष्म की सेना में पुलिन्दों तथा क्षुद्रक-मालवों के साथ पारद भी विद्यमान थे (भीष्म पर्व ८७-७) । बृहत्संहिता (१४-२१) में पारत (पारद) देश को पश्चिम में स्थित कहा गया है । बृहत्संहिता में इनका कई स्थानों पर उल्लेख हुआ है (१०।५७; १३।९; १६।४, १३, २२) । डे (जा० डि० पृ० १४८) ने पारद को पार्थिया अथवा प्राचीन फ़ारस बताया है । डेरियस के वेहिस्तन अभिलेख में पार्थिया का उल्लेख पार्थव रूप में हुआ है । डा० ओर्ट (ऑन दि ओरिजिनल इनहेबिटैन्ट्स ऑफ़ भारतवर्ष ऑर इण्डिया, पृ० ३५) के अनुसार पारद लोग उत्तरी बिलोचिस्तान के रहने वाले थे । टॉलमी के 'परदीने' ही पारद हैं जो गेड्रोसिया (बलोचिस्तान) के अन्दर रहते थे । इनकी पहचान परदान से की गई है (उपायन पर्व पृ० ५३-५४) ।

पुराणों में इसका उल्लेख उदीच्य के जनपदों में किया गया है (मत्स्य ११३-४१; ब्रह्मांड पू० २, १६-४८) । महाभारत में ही इनको कुलिन्दों, तंगणों और परतंगणों के साथ शैलोदा नदी की घाटी में स्थित कहा गया है ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(सभा पर्व ५२-३)। पार्जिटर के अनुसार ये उत्तर पश्चिम में रहते थे (ऐ० हि० ट्रै० इं०, पृ० २०६)

आभीर (सभा, ५१-१२) डा० मोतीचन्द्र आभीर के स्थान पर वंग पाठ सही मानते हैं (उपा० पर्व, पृ० ५४; १२०, ४७-१०) और वंग की पहचान मक्रान तट के लंग से करते हैं (उपायन पृ० ५४)। यह खींचा-तानी और अटकल है। आभीर देश ही गोपशुधान्य से सम्पन्न था (शल्य पर्व, ७-४५)। अतः उनकी भेंटें बकरी, भेंड़, गाय, कम्बल और मधु आदि उपयुक्त ही थीं (सभा ५१।१२-१३)।

कितव—इनकी पहचान डा० मोतीचन्द्र मक्रान (बिलोचिस्तान) के केज से करते हैं (उपायन पृ० ५५)। यहाँ कितवों को आभीरों के साथ जोड़ा गया है (आभीराः कितवैः सह, सभा पर्व ५१-१२)। सौवीर देश के साथ भी कैतव (सौवीराः कैतवाः, भीष्म पर्व १८-१३) अथवा कितव है (सौवीराः कितवाः, भीष्म पर्व १०६-७) आया है। न तो इनका उल्लेख महाभारत की जनपद तालिका में है और न पुराणों, बृहत्संहिता या काव्यमीमांसा में हा इनका उल्लेख है।

प्राग्ज्योतिष (सभा पर्व ५१।१४।१६) देश (कामरूप अथवा आसाम) का राजा घोड़े, हीरे और मणि तथा हाथी दाँत की मूठ वाली तलवार भेंट में लाये थे। लौहित्य की घाटी के प्राच्य वन में हाथी मिलते थे (प्रा० भा० भौ० स्व०, पृ० १४२)। अतः हाथी की भेंट उपयुक्त ही थी।

द्वयक्ष (सभा पर्व ५१-१७)—इसकी पहचान बदख्शां से की गई है (उपा० पृ० ५८)।

त्र्यक्ष (सभा पर्व, ५१-१७)—मार्कंडेय पुराण (५५।२२) में त्रिनेत्र नामक जनपद का उल्लेख है। इस समय पूर्वी पंजाब के कुछ लोगों के नाम के साथ 'त्रिख' (तिरखा) उपनाम लगा मिलता है। त्रिख या तिरखा ठीक त्र्यक्ष का ही अपभ्रंश रूप मालूम पड़ता है।

ललाटाक्ष (सभा पर्व ५१-१५) संभवतः यह लद्दाख है।

औष्णीक (सभा पर्व ५१-१७) अज्ञात है।

रोमक (सभा पर्व ५१-१७) देश की पहचान पंजाब की साल्ट रेंज से की गई है (उपायन पृ० ५९)।

पुरुषादक (सभा पर्व ५१-१७)—बृहत्संहिता (१३-६) में इनकी स्थिति पूर्व विभाग में बतायी गई है। वराहमिहिर ने पुरुषाद का उल्लेख अन्य स्थान

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पर (बृ० सं० ४-२२) भी किया है। फ्लीट ने इन्हें पूर्व देशीय नरभक्षी लोग माना है।

एकपाद—(सभा पर्व ५१-१८) सहदेव ने इसे दक्षिण विजय में जीता था (सभा पर्व २१-६९)। ये लोग गुजरात के भील थे (उपायन प० पृ० ५९-६०)।

चीन, शक, ओड्र और वन्य (वनवासी) **बर्बर** लोग वंक्षु (ऑक्सस) नदी की घाटी में उत्पन्न (होने वाले) घोड़े और आरण्य घोड़े भी ले आये थे। इसके अतिरिक्त उन्होंने सुवर्ण भी दिया था (सभा पर्व ५१।२०-२३)। इन देशों की प्रसिद्धि वहाँ के घोड़े थे। इसे अर्जुन ने जीता था।

चीन (सभा पर्व ५१-२३) की पहचान चीन के पश्चिमी भाग (चीनी तुर्किस्तान) से की जा सकती है।

शक (सभा पर्व ५१-२३)—इन शकों की पहचान तुखारिस्तान के निकट वक्षु नदी की घाटी से की जा सकती है जहाँ शक बसे हुए थे।

ओड्र (सभा पर्व ५१-२३)—इनकी पहचान उत्तर पश्चिम में स्वात की घाटी में स्थित प्राचीन उड्डियान देश से की गयी है (उपायनपर्व पृ० ६१-६३)।

बर्बर (सभा पर्व ५१-२३)—ये वन में रहने वाले उत्तरी पश्चिमी सीमांत प्रदेश के लोग थे।

वार्ष्णेय या वृष्णि (सभा पर्व ५१-२४)—यह पश्चिम भारत का प्रसिद्ध वृष्णि संघ था जिसके सिक्के भी थे। ये आनर्त्त (गुजरात काठियावाड़) में बसे थे।

हारहूण (सभा पर्व ५१-२४)—यह अंगूर और अंगूरों की बनी हुई शराब (हारहौरक) के लिये प्रसिद्ध था। अतः इनकी पहचान हेरात से की गई है (उपायन पर्व पृ० ६५-६७)।

हेमवत (सभा पर्व ५१-२४)—यह हिमवन्त देश है जिसका बौद्ध साहित्य में भी उल्लेख मिलता है। इसकी पहचान तिब्बत से की गई है। फ़रगुसन इसे नैपाल मानते हैं। प्रो० राइसडेविड्स इसे मध्य हिमालय मानते हैं। अर्जुन ने हैमवतों को जीता था।

नीप और अनूप (सभा पर्व ५१-२४)—गीता प्रेस संस्करण में 'नीपानूपान्'—नीप और अनूप देशों के राजा भेंट लाये थे। रुद्रदामन् प्रथम के जूनागढ़ शिलालेख में अनूप-नीवृत मिलता है। यहाँ पर उल्लिखित नीप और अनूप क्रमशः नीवृत अनूप ही हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नीप बृहत्संहिता (१४-२)—में इसे मध्य देश में स्थित बताया गया है। इसकी पहचान अज्ञात है।

अनूप—यह नर्मदा तट पर स्थित प्रसिद्ध देश था जिसकी राजधानी माहिष्मती थी। यह दक्षिण अवन्ति (या मालवा) था।

बाह्ली (सभा पर्व ५१-२६)—इसे बाह्लीक या वलख (बैक्ट्रिया) माना गया है। यहाँ से ऊनी (और्णं च रांकवं) शाल आये थे।

चीन (सभा पर्व ५१-२६)—यहाँ से रेशमी कपड़े (कीटजं पट्टजं तथा) आये थे। चीन अपने सिल्क (चीनांशुक-चीनपट्ट) के लिये प्रसिद्ध था। यह भारत और चीन के मध्य घनिष्ठ सम्पर्क को सूचित करता है।

शक (सभा पर्व ५१-३०)—इन्हें तुषारों के साथ शकास्तुषारा:) रखा गया है। ये मध्य एशिया के शक थे।

तुषार—(सभापर्व ५१-३०) यह तुषार देश है जिसे चीनी तु-ह्-लो कहते थे। यह बदख्शां के निकट मध्य एशिया का प्रसिद्ध देश था। वायु पुराण (१।४५।११८)इसे उदीच्य में(५५-१६)और गरुड़ पुराण तथा विष्णु धर्मोत्तर (१-१-८) और बृहत्संहिता (१४-२२) में इसे पश्चिमोत्तर (उत्तर-पश्चिम) में स्थित बताया गया है। डा० स्टाइन (राजतरंगिणी भाग १, पृ० १३६) के अनुसार बलख और बदख्शां सहित आक्सस नदी की ऊपरी घाटी का क्षेत्र तुषार या तुषार कहलाता था। यह देश तुखारा जाति के उत्तम घोड़ों के लिये प्रसिद्ध था।

कंकों (सभा पर्व ५१-३०) का शक, तुषार, यवन, गान्धार और चीन के साथ उल्लेख हुआ है (शान्ति पर्व ६५-१३)। इसकी पहचान चीनियों द्वारा उल्लिखित कंग-कु से की गई है जो साग्डियना (बुखारा व समरकन्द) में स्थित था (उपा० पृ० ७१-७२)।

रोमश (सभा पर्व ५१-३०)—पाठ में रोमश होते हुए भी (उपा० पृ० १२१, ४७-२६) डा० मोतीचन्द्र इसे लोमश लेते हैं (उपा० पृ० ७२) और इन्हें शक जाति की शाखा बताते हैं।

पूर्व देश (सभा पर्व ५१-३५)—मध्य देश के पूर्व में स्थित भूखण्ड पूर्व देश कहलाता था।

सभा पर्व के अध्याय ५२ (डा० मोतीचन्द्र के उपायन पर्व में अ० ४८) में भी यज्ञ में आए हुए धन-संचय का वर्णन किया गया है। पहले उत्तर के पर्वतीय देशों और जातियों (पर्वतीया, सभा पर्व ५२-७) का वर्णन किया गया है (सभा पर्व ५२।२-७)

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मेरु (पामीर) और मन्दर (कैलास पर्वत का एक शिखर जिस पर शिव का निवास था) के बीच शैलोदा नदी बहती थी और उसके दोनों किनारों पर बांस के पेड़ थे (सभा ५२-२)। यही वर्णन रामायण (किष्किंधा काण्ड ४३-३७) में भी मिलता है। इन बांसों के द्वारा ही सिद्ध पुरुष शैलोदा नदी को पार कर उसके दूसरे किनारे पर जाते थे जहां उत्तर कुरु देश है (किष्किंधा काण्ड ४३।३८)। महाभारत में भी बताया गया है कि इन बांसों के जंगलों में ही खस, एकासन, अर्ह, प्रदर, दीर्घ वेणु, पारद, कुलिन्द, तंगण, और परतंगण रहते थे। वे हिमालय के फूलों से बना हुआ शहद तथा काली और सफेद चौरी लाए थे। उत्तर कुरु के लोग शुद्ध जल और माल्य लाए थे। उत्तर कैलास के लोग औषधियाँ लाए थे। इस प्रकार महाबली पर्वतीय लोग (पर्वतीया) बलि लेकर युधिष्ठिर के राजद्वार पर खड़े थे (सभा पर्व, ५२।२-७)। इस प्रकार ये सभी देश हिमालय में कैलास के निकट और इसके उत्तरी भाग में बसे थे।

शैलोदा नदी की पहचान जक्सर्टस नदी से की गई है जो सागिडयना (श्वगण) देश में बहती थी (जा० डि० पृ० १७२)।

खस (सभा पर्व ५२-३)—महाभारत में दरद, तंगण, लम्पाक (लमगन) और खसों को पाषाणयोधी (पत्थरों से लड़ने वाला) अस्तु पर्वतीय कहा गया है (द्रोण पर्व १२१।४१-४३)।

ये बर्बर लोग थे जिन्हें भारत की उत्तरी सीमा पर स्थित बताया गया है। सम्भवतः वे नेपाल के खस थे (मार्कंडेय पु० अं० पृ० ३४६)। पार्जिटर के अनुसार शैलोदा नदी के तट पर बसे हुए खस पश्चिमी तिब्बत के निवासी थे। खसों का सम्बन्ध काश्गर से था (मार्कण्डेय पुराण अं० पृ० ३५१)।

'खसा एकासना ह्यर्हाः प्रदरा दीर्घवेणवः' (सभा पर्व ५२-३) में 'एकासना ह्यर्हाः प्रदरा दीर्घवेणवः खस के विशेषण पद ही मालुम होते हैं। डा० मोतीचन्द्र एकासन से खसों को एक स्थान पर बसा हुआ मानते हैं। 'ह्यर्हाः' के स्थान पर डा० मोतीचन्द्र 'ज्योहा' पाठ लेते हैं जिसकी पहचान अलमोड़ा जिले के जोहार परगना से की गई है। डा० मोतीचन्द्र **दीर्घवेणु** को घुमक्कड़ (प्रदरा) मानते हैं (उपा०, पृ० ७६)।

पारद के स्थान पर (उपायनपर्व पृ० ७९, सभा पर्व ४८-३) में पशुप पाठ है।

पशुप—सम्भवतः यह पशुपाल देश था (मार्कण्डेय पु० अं० पृ० ३९१)।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बृहत्संहिता में (१४-२९) पशुपाल देश को उत्तर पूर्व देश भाग में स्थित बताया गया है। फ्लीट ने इसे उत्तर पूर्व की एक खानाबदोश चरवाहों की जाति माना है। डा० मोतीचन्द्र इन्हें घुमक्कड़ चरवाहों की जाति मान कर आधुनिक किरगिज मानते हैं (उपायन पर्व, पृ० ७६)।

कुलिन्द (सभा पर्व ५२-३)—ये हरद्वार के निकट तराई के जंगलों में रहते थे। इनके ही साथ तंगण भी रहते थे। कुलिन्द और तंगण (सभा पर्व ५२-३) एक ही साथ पिपीलक-सोना भेंट में लाए थे।

तंगण (सभा ५२-३)—ये गंगा के ऊपरी भाग में इसके पूर्वी तट पर बसे थे। तंगण नामक जाति मध्य एशिया में काश्गर क्षेत्र में भी बसी थी (उपायन पर्व पृ० ७९)।

परतंगण (सभा पर्व, ५२-३)—इनकी पहचान तंगण के उत्तर हिमालय के उस पार मध्य एशिया के काश्गर क्षेत्र में बसी तंगण जाति से की जा सकती है।

डा० मोतीचन्द्र इनकी पहचान परँतकिने देश या जाति से करते हैं जो वक्षु और जक्सर्टस नदियों की ऊपरी घाटी में बसे थे (उपायन पर्व पृ० ८०)।

पिपीलिका-स्वर्ण और चौरी लाने वाले महाबली पर्वतीय तिब्बती और भूटिया लोग ही थे जिनको आज भी स्वस्थ और विशाल शरीर वाला पाते हैं।

उत्तर कुरु (सभा पर्व ५२-६)—यह देश शैलोदा नदी के उस पार बसा था। यह देश उत्तर कैलास (कैलास के उत्तरी भाग) के निकट ही था। **उत्तर कैलास** के लोग भी औषधि लाए थे (उत्तरादपि कैलासादोषधीः; सभा पर्व ५२-६)। यह काल्पनिक देश न होकर हिमालय की उपगिरि शृंखला के उत्तर शैलोदा नदी के उस पार बसा था, जहां पुण्यात्मा लोग और गन्धर्व, किन्नर, सिद्ध, नाग, तथा विद्याधर आनन्द के साथ बिहार करते थे (किष्किंधा काण्ड, ४३-५३)।

अर्जुन जम्बू नदी की स्वर्णिम घाटी को पार कर इसके पश्चिम दिशा में **नागों** के देश में गए। वहां से पश्चिम की ओर जाकर **गन्धमादन** पर्वत पर पहुँचे। इसे पार कर वे **केतुमाल वर्ष** पहुँचे। उसे जीतकर अर्जुन **इलावृत वर्ष** में पहुँचे। यहां से पूर्व की ओर जाते हुए वे मेरु-मन्दर पर्वतों के बीच बहती हुई शैलोदा नदी के किनारे बांसों के जंगल में पहुँचे जहां खश, झष, **नद्योत, प्रघस, दीर्घवेणिक, पशुप, कुलिन्द, तंगण और परतंगण** आदि जातियाँ बसती थीं। उन्हें जीतकर अर्जुन उनसे रत्नों की भेंट लेकर **माल्यवन्त** पर्वत पर पहुँचे। इस पर्वत को पार कर अर्जुन **भद्राश्व वर्ष** में गए। उसे जीत कर

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नील पर्वत पर पहुँचे। वहां से आगे बढ़ कर अर्जुन ने **गुह्यकों** के देश को जीता। इसके बाद उन्होंने **गन्धर्वों** के देश को जीता जहां उनके बहुत से गण रहते थे। इसके आगे वह **श्वेत पर्वत** पर पहुँचे। इस पर्वत को पार कर वे **हिरण्यक वर्ष** में पहुँचे, जहां के रम्य प्रदेशों में सुन्दर प्रासाद सुशोभित हो रहे थे। यहीं अर्जुन **महापथों** पर चलते हुए आगे **शृंगवान्** पर्वत पर पहुँचे। इसे पार कर वे **उत्तर कुरु वर्ष** में गए। यहां युद्ध वर्जित था। अर्जुन ने उत्तरकुरु के लोगों से कर रूप में दिव्य वस्त्र, दिव्य आभरण, क्षौम (सिल्क) और मृग-चर्म प्राप्त किए (सभा पर्व, अध्याय २८, दाक्षिणात्य पाठ पृ० ७४८-७४९, २८।७-१६)।

इस प्रकार उत्तर कुरु की स्थिति जानने के लिए मध्य एशिया के प्राचीन भूगोल को जानना आवश्यक है।

इलावृत—यह मेरु के चारों ओर स्थित जम्बूद्वीप का एक खण्ड था (सभा पर्व, अ० २८, दा० पाठ पृ० ७४७—मेरोरिलावृतं वर्षं सर्वतः परि-मण्डलम्)। यह भारत और हिमवान् के उत्तर में स्थित था। मेरु या सुमेरु पामीर पर्वत ही है। अतः इलावृत वर्ष पामीर-प्लेटू ही है। इसमें आधुनिक पामीर की आठ पहाड़ियाँ सम्मिलित हैं।

मेरु पर्वत के उत्तर भाग में कुरु है (भीष्म पर्व ७।२)। अतः उत्तर कुरु पामीर प्लेटू के उत्तर स्थित है। प्रो० जयचन्द्र विद्यालंकार के अनुसार उत्तर कुरु की स्थिति शकों (सैवांग) और हूणों (ह्यिंगनू) के राज्यों की सीमा पर थ्यानशान पर्वत के दक्षिण तथा इसिकुल लेक के पश्चिम इलि नदी की घाटी में थी (भारत भूमि और उसके निवासी, पृ० ३१०)।

बृहत्संहिता (१४।२४) में उत्तर कुरु का उल्लेख उत्तर में स्थिति कैलास, हिमवान्, वसुमान्, क्रौंच तथा मेरु आदि के साथ किया गया है। डे (जा० डि० पृ० २१३) इसे गढ़वाल और हूण देश का उत्तरी भाग बताते हैं जहां मन्दाकिनी नदी और चैत्ररथ बन हैं। टालमी ने इसे ओत्तोरकोर्ह कहा है (ऐ० इ०, पृ० ३०५)। लासेन इसे काशगर के पूर्व स्थित बताते हैं। रामायण के आधार पर इसमें तिब्बत और पूर्वी तुर्किस्तान सम्मिलित थे (जा० डि० पृ० २१४)।

उत्तर कैलास (सभा पर्व ५२-६)—यह प्रसिद्ध कैलास पर्वत है जिसे हेम-कूट भी कहा गया है। इसका उत्तरी भाग तिब्बत से मिला हुआ था।

उदयगिरि (सभा पर्व ५२-८)—यह हिमालय के पूर्वी सिरे पर स्थित था (परार्धे हिमवतः सूर्योदयगिरौ)।

CC-0. Agamnigam Digital Preseyation Foundation, Chandigarh

कारुष (सभा पर्व ५२-८)—यह देश उदयगिरि के निकट लौहित्य (ब्रह्मपुत्र) नदी के दोनों ओर समुद्र के किनारे स्थित था (कारूषे च समुद्रान्ते लौहित्यमभितश्च ये)। कारूष देश का राजा (आदि पर्व १८५-१६) द्रौपदी के स्वयंवर में आया था। कारुष का उल्लेख चेदि और काशी के साथ (भीष्म पर्व ४७-४) तथा चेदि-मत्स्य के साथ (भीष्म पर्व ५४-८) मिलता है। इनका उल्लेख पौंड्र (पुंड्रवर्धन) के साथ (द्रोण पर्व ११-१५) भी मिलता है। अधिकांशतः इनका सान्निध्य चेदि के साथ (कर्ण पर्व ५६-२) विन्ध्य पृष्ठ पर था। अतः यह लौहित्य के निकट नहीं हो सकता है।

डा० मोतीचन्द्र कारूष के स्थान पर वारीष पाठ लेते हैं और इनकी पहचान पूर्वी बंगाल के बैरीसाल से करते हैं (उपा० पृ० ८५)।

किरात—यहाँ किरात रहते थे जो फल-मूल खाते थे और वे चर्म के वस्त्र पहन कर क्रूरता से शस्त्र चलाते थे। ये क्रूर किरात भी भेंट में चन्दन, अगुरु की लकड़ी, चर्म, सुवर्ण, और गन्ध तथा कैराती दासियाँ, दूरगामी पशु और पक्षी ले आए थे (सभा पर्व, ५२।९-११)। अतः स्पष्ट है कि ब्रह्मपुत्र और समुद्र के बीच, पास की पहाड़ियों में रहने वाली यह जंगली जाति थी जिसकी पहचान आधुनिक नेफ़ा से की जा सकती है।

इसके बाद ही विभिन्न देशों और गणों की तालिका मिलती है (सभा पर्व ५२।१३-१८)। इसमें कैरात (काम्बोज) दरद, दर्व, शूर, यमक (वैयमक), औदुम्बर, दुर्विभाग, पारद, बाल्हीक, काश्मीर, कुमार (कुन्दमान्), घोरक (पौरक), हंसकायन, शिबि, त्रिगर्त, यौधेय, राजन्य, भद्रकेकय (मद्रकेकय) मद्र और केकय, अम्बष्ठ, कौकुर, तार्क्ष्य, वस्त्रप, पह्लव, वशातला (वशातयः, वशाति), मौलेय, क्षुद्रक, मालव, शौण्डिक, कुकुर, शक, अंग, वंग, पुण्ड्र, शाणवत्य, गय, वंग, कलिंग, मगध, ताम्रलिप्त, पुण्ड्र, दौवालिक (दुकूल), सागरक (कौशिक), पत्रोर्ण, शैशव और कर्णप्रावरण आदि बहुत से देशों के लोग भेंटें लेकर युधिष्ठिर के द्वार पर खड़े थे।

इन देशों में किरात (पृ० ६८, ७१, ८६, ११४), काम्बोज (पृ० ७६, ११८), दरद (पृ० ७७), दर्व (पृ० ७४-७५), पारद (पृ० १२८), बाह्लीक (पृ० ७६), काश्मीर (पृ० ७४, ११८), कुमार (पृ० ८२), पौरक या पौरवक (पृ० ७४), शिवि (पृ० १०८, १२२), त्रिगर्त (पृ० ७४, १०८), मद्र (पृ० ११३-११४), अम्बष्ठ (पृ० १०८), पह्लव (पृ० ११४), वसाति (पृ० १२२), क्षुद्रक (पृ० १०९), मालव (पृ० १०८-१०९), कुकुर (पृ० १२०), शक (पृ० ११४), अंग-वंग (पृ० ८७-८८), वंग (पृ० ८९), पुण्ड्र

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(पृ० ८९), कलिंग (पृ० ११९), मगध (पृ० ८७), और ताम्रलिप्त (पृ० ८९) देशों का वर्णन पीछे किया जा चुका है।

शूर, वैयमक, औदुम्बर, दुर्विभाग, कुन्दमान, घोरक. हंसकायन, यौधेय, राजन्य, केकय, तार्क्ष्य, वस्त्रप, मौलेय, शौण्डिक, शाणवत्य, गय, दौवालिक, सागरक, पत्रोर्ण, शैशव, और कर्ण प्रावरण पर नीचे विचार किया जायगा।

शूर—डा० मोतीचन्द्र इसकी पहचान 'सूर' (सूरी) जाति से करते हैं जिसका सम्बन्ध शेरशाह से था (उपायन पर्व, पृ० ८७)। यह कल्पना ही है। इनका उल्लेख आभीरों के साथ मिलता है—

काम्बोजा बाल्हीकाः शूरास्तथाभीरा नरोत्तमा ॥ वन पर्व १८८।३६
कलिंगाः सिंहलाः प्राच्याः शूराभीरा दशेरका ॥ द्रोण पर्व २०।६

विष्णुपुराण (२।३।१६) शूरों को आभीरों के साथ अपरान्त (पश्चिम) में स्थित बताता है (तथापरान्ताः सौराष्ट्राः शूराभीरास्तथार्बुदाः)।

सामान्य रूप से आभीरों के साथ शूद्रों का उल्लेख मिलता है (शूद्राभीर गणाश्चैव, सभा पर्व ३२-१०)। पार्जिटर का विचार है कि शूद्र के स्थान पर शूर गलती से रखा गया है·········(मार्कण्डेय पु० अं० पृ० ३१३-३१४)। शूद्र और शूर एक ही प्रतीत होते हैं। शूद्रों के देश को ही यूनानियों ने सोड्रई कहा है। यदि शूद्र और शूर एक नहीं है तो यह भी सम्भव है कि सूरत (गुजरात) के आसपास का क्षेत्र शूर देश कहलाता था। आभीर भी गुजरात में सरस्वती के तट पर बसे थे। पड़ोसी होने के कारण दोनों का नाम शूरा-भीराः एक साथ मिलता है। इन्हें अधार्मिक कहा गया है (वन पर्व १८८।३६)।

वैयमक—ऊपर कहा जा चुका है कि वैयमक में वै अव्यय है। देश नाम केवल यमक ही है। डा० मोतीचन्द्र ने इसकी पहचान मध्य अफ़गानिस्तान के ऐमाक लोगों के देश सी की है (उपा० पृ० ८७)।

औदुम्बर (सभा ५२-१३)—बृहत्संहिता (१४-४) में औदुम्बर देश को मध्य देश में स्थित बताया गया है। उदुम्बर (बृ० सं० ५-४०, १६-३) और औदुम्बर एक ही हैं। मार्कण्डेय पु० (५५-९) भी इसे कूर्म रूपी भारत के मध्य में स्थित बताता है। डे (जा० डि०, पृ० १३, २०९) औदुम्बर या उदम्बर की पहचान कच्छ से करते हैं, जिसकी प्राचीन राजधानी कोटेश्वर अथवा कच्छेश्वर थी। यह पहचान मान्य नहीं है।

पाणिनि (अष्टाध्यायी, ४-३-५३) भी इसका उल्लेख राज्यादिगण में

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

करते हैं। इनके प्राचीन सिक्के कांगड़ा प्रान्त में व्यास के उत्तर और रावी नदियों के मध्य पाए गए हैं। अतः व्यास के उत्तर और रावी के दक्षिण संकरी घाटी में होकर त्रिगर्त के प्रवेश द्वार में उदुम्बरों का देश था (पा० भा०, पृ० ७२)।

इनके सिक्कों पर विश्वामित्र का नाम मिलता है और हरिवंश पुराण (हरिवंश, २७-५१) के अनुसार औदुम्बर विश्वामित्र के पुत्र थे।

महाभारत (पूना सं०) में इनका पाठान्तर कोटूम्बर भी मिलता है। कौटूम्बर एक विशेष प्रकार का छपा या कढ़ा हुआ कपड़ा था जो उदुम्बर देश की विशेषता थी (उपा० पृ० ८९-९०)।

दुर्विभाग—अज्ञात है।

कुन्दमान—इसकी पहचान काश्मीर के कुठार परगना से की गई है (उपा० पृ० ९१)।

घोरक—इसकी पहचान टॉलमी द्वारा 'गोरुएइया' से की गई है। यह गौरी (निचली स्वात नदी) और कुनार की घाटी में स्थित आधुनिक बाजौर था (उपा०, पृ० ९१)।

हंसकायन—इनकी पहचान हुंजा और नगर से की गई है (उपा०, पृ० ९२)। विष्णु पुराण (२-२-२९) में हंस पर्वत का उल्लेख है जो उत्तर में स्थित था। यह हंस पर्वत और हुंज एक ही हैं।

यौधेय—यह अत्यन्त प्रसिद्ध गण राज्य था जिसके सिक्के यमुना और सतलज के पश्चिम विस्तृत क्षेत्र में विभिन्न स्थानों से मिले हैं। इस आधार पर लुधियाना से रोहतक तक और सहारनपुर तथा देहरादून का भाग अर्थात् पूर्वी पंजाब (हरियाना) और पश्चिमी उत्तर प्रदेश सम्मिलित था।

गरुड़ पुराण—(१-५५-१०) और **विष्णुधर्मोत्तर** (१-९-१०) इसे मध्य देश में स्थित बताते हैं। **मार्कंडेय** पुराण (५५-४७) इसे कूर्म रूपी भारत के वाम कुक्षि में स्थित बताया गया है। **बृहत्संहिता**—(१४-२८) में इन्हें उत्तरी देश-भाग में स्थित बताया गया है। यह आयुधजीवी संघ था। ये वीर थे और इनका देश वीर क्षेत्र कहलाता था जिसका प्रधान देवता कार्तिकेय थे। रोहतक इनका प्रसिद्ध नगर था। राजपुर इनकी राजधानी थी (देखिये, अवस्थी-यौधेयों का इतिहास)। यहाँ धानों की बाहुल्यता के कारण इस देश को बहुधान्यक कहते थे। रोहीत (लाल गाय) की विशिष्टता के कारण इसे रोहीतक भी कहते थे जो रोहीतकारण्य में स्थित था।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

राजन्य—बृहत्संहिता (१४-२८) में इन्हें उत्तर देश-विभाग में स्थित कहा गया है। इनकी ऐतिहासिकता इनके सिक्कों से सिद्ध होती है। होशियारपुर से इनके सिक्के मिले हैं। अतः यही प्रान्त राजन्य देश था।

केकय—इनका उल्लेख मद्र के साथ (मद्र केकय) मिला है जिससे इन प्रदेशों की समीपता सिद्ध होती है। यह प्रसिद्ध देश था जिसका उल्लेख छान्दोग्य उपनिषद (५-११-४), काव्यमीमांसा (अ० १७), रामायण, महाभारत और पुराणों तथा बृहत्संहिता (४-२२; ५-६७, ७४; १६-२६; १७-१८) में मिलता है।

बृहत्संहिता (१४-२५) में इसे उत्तर देश भाग में स्थित कहा गया है। यह केकयनाथ (११-६०) का भी उल्लेख करती है। **पुराणों** (वामन १३-३९; वायु १-४५-११७) में इसे उदीच्य में स्थित बताया गया है। मार्कण्डेय पु० (५५-४२) में इसे कूर्म रूपी भारत के वामकुक्षि में स्थित बताया गया है।

शिव के पुत्र केकय से यह इस नाम से प्रसिद्ध हुआ (मत्स्य पु० ४८-२०)।

रामायण युग में केकय राज्य विपाश (व्यास) नदी से लेकर सिन्ध नदी पर गान्धार देश की सीमा तक फैला था (अयोध्या कांड अ० ६८; उत्तर कांड १००।१०)।

यह प्रदेश शाहपुर, गुजरात और झेलम (पश्चिमी पाकिस्तान) के प्रान्तों में स्थित था। इसकी राजधानी गिरिव्रज (अयोध्या कांड ६८।२) थी जिसे राजगृह भी कहते थे (अयोध्या कांड ६८।६)। इसकी पहचान कनिंघम द्वारा गिर्जाक (आधुनिक जलालपुर) से की गई है। युअनच्वांग ने गिरिव्रज को गजनी माना है।

केकय नरेश ने भरत को उत्तम हाथियों, चित्र-कम्बलों, मृगचर्म तथा कुत्तों की भेंटें दीं (अयोध्याकांड ७०।१९-२०)। ये कुत्ते पराक्रम में बाघ के समान थे (अयोध्याकांड ७०।२०)।

सौभूति (सोफ़ाइटेज) के राजा ने सिकन्दर को बड़े-बड़े १५० कुत्तों की भेंट की थी। ये कुत्ते सिंहों के साथ युद्ध करने में पीछे न हटते थे। ऐसा विश्वास किया जाता था कि इन कुत्तों की नसों में चीतों का खून दौड़ता था। इस प्रकार ये टाइगरों (चीतों) के समान ही बलशाली कुत्ते थे (क्लासिकल अकाउन्ट्स, पृ० २५९-२६०, जाग्रफ़ी आफ़ स्ट्रैबो, १५-१-३१)। रामायण में ऐसे ही कुत्तों को केकय देश से सम्बद्ध किया गया है (अयोध्या कांड ७०।२०)—

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अन्तःपुरेऽतिसंवृद्धान् व्याघ्रघोर्यबलोपमान् ।
दंष्ट्रायुक्तान् महाकायाञ्शुनश्चोपायनं ददौ ॥

सौभूति का राज्य झेलम और चिनाब नदियों के बीच स्थित था। इस समय यह राज्य केकयनाथ के ही प्रभाव में रहा होगा।

कौकुर—यहाँ, इस जनपद सूची में, कौकुर (सभापर्व ५२-१५) और कुकुर (सभापर्व ५२-१६) राज्यों का उल्लेख है। ऊपर कहा जा चुका है कि कुकुर पश्चिम भारत का संघ राज्य था। कौकुर की पहचान पंजाब के खोखरों से हो सकती है (उपा० पृ० ४६)।

तार्क्ष्य (सभापर्व ५२-१५)—ये निर्भीक लोग थे जो मृत्यु से नहीं डरते थे (वनपर्व १८४।८-२१)। तार्क्ष्य एक मुनि थे और वह पुण्य देश में रहते हुए सदाचारी ब्राह्मण थे (वनपर्व १८४।१८-२१)। यह तेजस्वी लोगों का देश (तेजस्विदेशवासात्) था (वनपर्व १८४।२१)। तार्क्ष्य आश्रम और यह देश हैहय राज्य से दूर न था।

तार्क्ष्य शब्द के विभिन्न अर्थों—गरुड़, रत्न, घोड़ा, पक्षी आदि—के आधार पर तार्क्ष्य देश की स्थिति को तुरुष्क देश, लाल सागर आदि क्षेत्रों में खोजते हुए डा० मोतीचन्द्र तार्क्ष्य देश का तादात्म्य अफ़गानी जाति तरक्की से करते हैं (उपा०, पृ० १०१-१०४)। इसमें काल्पनिक उड़ानें ज्यादा हैं और सत्यता कम। महाभारत तार्क्ष्य मुनि का उल्लेख करता है और ये मुनि अपने आपको पुण्य देश का निवासी बताते हैं। इनका देश ही तार्क्ष्य देश था। तार्क्ष्य आश्रम हैहयों की राजधानी (माहिष्मती) से अधिक दूर न था। तार्क्ष्य पर्वत भी था।

वस्त्रप (सभापर्व ५२-१५)—डा० मोतीचन्द्र इसकी पहचान वस्त्रापथ से करते हैं (उपा० पृ० १०४)। परन्तु यह क्षेत्र वृष्णि और भोजान्धकुकुर राज्य में स्थित था। अतः इसकी वस्त्रापथ से पहचान में सन्देह है। महाभारत में वस्त्रा नदी (भीष्म ०-२५) का उल्लेख मिलता है। संभव है कि वस्त्रा नदी की घाटी ही वस्त्रप कहलाता हो।

मौलेय (सभापर्व ५२-१५)—डा० मोतीचन्द्र इसे बिलोचिस्तान की मूला नदी के तट पर स्थित बताते हैं। वे बताते हैं कि अर्थशास्त्र में उल्लिखित मौलेयक रत्न बिलोचिस्तान के मौलेय पर्वत पर उत्पन्न होते थे (उपायन पर्व पृ० १०७)। न तो मूला नाम की कोई प्राचीन नदी ही थी और न मौलेय पर्वत ही। यह निराधार अटकल है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मार्कंडेय पुराण (५६-४८) में मौलिक नामक देश का उल्लेख है जो दक्षिणापथ में पौरिक और अश्मक के निकट (पौरिकामौलिकाश्चैव अश्मका भोगवर्धनाः) स्थित था। वासिष्ठीपुत्र पुलुमायी के १९वें राज्य वर्ष में लिखवाये गये नासिक लेख में भी मुलक (असिक असक मुलक……) नामक देश का उल्लेख मिलता है। मुलक, मौलिक और मौलेय एक ही देश के विभिन्न रूप थे। इस प्रकार मौलिक या मौलेय देश गोदावरी नदी के तट पर औरंगाबाद जिले में स्थित था (सरकार जा० ए० मे० इ० पृ० ३०; अली, जा० पु०, पृ० १५५)।

अर्थशास्त्र (शामशास्त्री, अंग्रेजी, पृ० ७०) में वर्णित मौलेय का बम्बई संस्करण (पृ० ११३) में मालेयक—मलय पर होने वाला—कहा गया है। माला पर्वत मलय का ही एक भाग था। पंडित पुस्तकालय काशी के संस्करण में भी मालेयक (अर्थशास्त्र २-११) पाठ है।

शौण्डिक (सभा पर्व ५२-१६)—पहले शौण्डिक क्षत्रिय थे, परन्तु आगे चलकर ब्राह्मणों के प्रति द्वेष के कारण वे वृषल हो गये थे (अनुशासन पर्व, ३५।१७-१८)। पृथिवी पर मनुष्यों का मैल म्लेच्छ थे और म्लेच्छों में भी सबसे अधिक पतित (मलं) शौण्डिक थे (कर्ण पर्व ४५-२५)।

मत्स्य पुराण (११३-५४) में शोण्डिकेर नामक देश को विन्ध्य पृष्ठ पर स्थित बताया गया है। संभवतः शौण्डिकेर और शौण्डिक एक ही थे। इनकी स्थिति अज्ञात है।

कर्ण ने **शुण्डिक देश** (शुंडिकान्) को जीता था जिसे पूर्व देश में अंग, वंग, कलिंग और मिथिला के साथ रखा गया है (वन पर्व २५४-८)।

शाणवत्य (सभा पर्व ५२-१६)—डा० मोतीचन्द्र ने शाणवत्यों की पहचान सन्थालों से की है। सन्थाल परगना दक्षिण भागलपुर प्रान्त में स्थित है (उपा० पृ० ११०)।

गय (सभा पर्व ५२-१६)—इसकी पहचान गया प्रान्त से की गई है (उपा०, पृ० ११०)। गय पर्वत पुण्य तीर्थ था जहाँ ब्रह्म सरोवर, गयशिर (गया की पहाड़ी), फल्गु नदी और कौशिकी पवित्र तीर्थ थे (वन पर्व ८७।८-१३)।

दौवालिक (सभा पर्व ५२-१८)—डा० मोतीचन्द्र के अनुसार दौवालिक के स्थान पर दुकूल (रेशमी कपड़ा) पाठ है। दौवालिक देश के विषय में ज्ञान नहीं है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सागरक (सभा पर्व ५२-१८)—संभवतः यह कोई सागर स्थित द्वीप था।

पत्रोर्ण (सभा पर्व ५२-१८) कपड़े के लिये प्रयुक्त किया गया है (उपा० पृ० ११२)।

शैशव (सभा पर्व ५२-१८)—अज्ञात है।

कर्णप्रावरण (सभा पर्व ५२-१९)—पुराणों (वायु १-४७-५७; ब्रह्मांड, २-१८-६०; मत्स्य १२०-५८; ब्रह्म २७-६३) में इसे पावनी नदी की घाटी में स्थित पूर्व देश का जनपद कहा गया है। सहदेव ने इसे दक्षिण दिग्विजय में जीता था (सभा पर्व ३१-६७)। इनकी ठीक-ठीक स्थिति ज्ञात नहीं है। पार्जिटर इन्हें उत्तर का उलूक मानते हैं (मार्कंडेय पु० अं० पृ० ३४६)।

गज (सभा पर्व ५१।२०-२१)—वंग, कलिंग, मगध, ताम्रलिप्त, पुण्ड्र और कर्णप्रावरण आदि देशों के राजाओं के बाद ही (सभा पर्व ५२।१८-१९) कहा गया है कि काम्यक सर के पास मिलने वाले एक हजार हाथियों की भेंट की गई—

ईषादन्तान् हेमकक्षान् पद्मवर्णान् कुथावृतान्।
शैलाभान् नित्यमत्तांश्चाप्यभितः काम्यकं सरः॥
दत्त्वैकैको दशशतान् कुंजरान् कवचावृतान्।
क्षमावन्तः कुलीनाश्च द्वारेण प्राविशंस्तदा॥ सभा पर्व ५२।२०-२१

यहाँ पर पाठ में इतनी गड़बड़ी है कि स्पष्टतः यह नहीं कहा गया है कि इन हाथियों को किसने दिया। इस प्रकार युधिष्ठिर के राजद्वार पर हाथियों की भेंटों का यह सामान्य वर्णन ही है। परन्तु इन गजों को काम्यक सर से सम्बन्धित किया गया है और काम्यक सर की स्थिति अज्ञात है। डा० मोतीचन्द्र काम्यक सर को कामरूप (आसाम) से सम्बद्ध करते हैं। संभवतः कामाख्या और काम्य को एक कर वे आसाम पहुँचते हैं। वे कहते हैं कि प्राच्य के हाथी आसाम के हाथी हो सकते हैं।

काम्य वन—महाभारत में कामतीर्थ (वन पर्व ८२।१०५) का उल्लेख है। परन्तु यह काम्य सर नहीं हो सकता है। हमें महाभारत में **काम्य वन** का विशेष वर्णन मिलता है (वनपर्व, ५।३; २२।५३; ३६।४१, ४३; १८२।१८; २५८।१३)। यह वन सरस्वती के किनारे मरुधन्व (मरुभूमि) में स्थित था। यहाँ आश्रम भी था जहाँ पवित्र जल का (तडाग या सरोवर) भी था (वन पर्व २५८।१६)। यहां हाथी भी थे (वन पर्व २४।१९; २५।१५)। अतः हम काम्य सर की पहचान काम्य वन के सरोवर से करेंगे। हाथी वन ही में मिलते हैं। अतः यह सरस्वती के तट पर स्थित काम्य वन था।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हाथियों की उत्पत्ति भारत के आठ वनों में होती थी (प्राचीन भारत का भौगोलिक स्वरूप पृ० १४१-१४६)। ऊपर जो महाभारत में हाथियों का वर्णन है उसमें केवल 'पद्मवर्णान् कुंजरान्' (सभा पर्व ५२-२०) इन हाथियों की जाति पर प्रकाश डालता है। ऐरावण (ऐरावत) जाति के हाथियों को 'किंचित्कमलवर्णाभाः' (विष्णुधर्मोत्तर १।२५१।२३) कहा गया है। इस जाति के हाथी प्राच्य वन—हिमालय, प्रयाग, लौहित्य और गंगा के बीच स्थित महावन—में होते थे (विष्णु धर्मोत्तर, १।२५१।२२)। यह वन सरस्वती और मरुधन्व से अलग है। अतः काम्यक सर और इन हाथियों के देश की पहचान निश्चित रूप से नहीं हो सकती है।

काम्यक वन को छोटा नागपुर में स्थित करना सर्वथा असंगत है (उपा० पृ० १४४)। नागपुर गोमती के किनारे नैमिष के पास ही स्थित था (शान्ति पर्व २५५-२)।

गन्धर्व (सभा पर्व ५२।२३, २४)—गन्धर्व देश से घोड़े आये थे। अतः यह गान्धार देश ही था। अर्जुन ने भी इस देश को जीत कर घोड़े प्राप्त किये थे (वन पर्व ८१-२४)।

शूकर (सभा पर्व ५२-२५)—इस देश के राजा ने भी हाथी भेंट में दिये। उत्तर प्रदेश में एटा जिले का सोरों शूकर क्षेत्र कहलाता है।

मत्स्य (सभा पर्व ५२-२६)—विराट ने हाथी भेंट में दिये। मत्स्य सम्पन्न राष्ट्र था।

पांशुराष्ट्र (सभा पर्व ५२-२७)—डा० मोतीचन्द्र इसे उड़ीसा या छोटा नागपुर में स्थित बताते हैं। संभवतः ये लोग पान, पान्व, पानूर या पानिक जाति से सम्बन्धित थे (उपा० पृ० ११७)।

वृष्णि (सभा पर्व ५२-३०), **चोल-पांड्य** (सभा पर्व ५२-३५) और **सिंहल** (सभा पर्व ५२-३६) के नरेश भी भेंटें लाये थे।

इस प्रकार युधिष्ठिर को भारत के सभी राज्यों ने अपना सम्राट मान लिया था और इस यौधिष्ठरी स्थिति में भारत के विभिन्न राष्ट्र एकता के सूत्र में बंध गये।

महाभारत कालीन प्रसिद्ध नगर

अयोध्या—यह कोसल की राजधानी थी (सभा पर्व ३०-२)। यहाँ रामचन्द्र ने राज्य किया था (शान्ति पर्व २९-६१)। यह पवित्र एवं प्रसिद्ध पुरी थी जहाँ साफ-सुथरे पथ थे और ये मार्ग पताका-ध्वजाओं से सुशोभित थे। यहाँ के लोग प्रसन्न और पुष्ट थे (आदि पर्व, १७६।३६-४२)।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अहिच्छत्र (आदि पर्व १६५-२१)—यह अहिच्छत्र विषय (उत्तरी पंचाल) की राजधानी थी, जिसे अर्जुन ने जीतकर द्रोण को दे दिया था (आदि पर्व १३७।७६-७७)। इसकी पहचान उत्तर प्रदेश के बरेली प्रान्त में आँवला के निकटस्थ रामनगर से की गई है।

आनर्त्तनगर—आनर्त्त (उत्तरी काठियावाड़) की राजधानी आनर्त्तनगर (वन पर्व २०-१), कुशस्थली या द्वारका ही थी।

इन्द्रप्रस्थ (आदि पर्व १।१५१)—पांडवों ने इसे बसाया था। (आदि पर्व अ० २०६, अ० २०७)। यह आधुनिक दिल्ली है। यह **शकप्रस्थ** (मौसल पर्व ७-१०) भी कहलाता था।

करवीरपुर(अनुशासन पर्व २५-४४)—इसकी पहचान आधुनिक कोल्हापुर से की गई है (जा० डि० पृ० ९३)।

एकचक्रा (आदि पर्व ६१। २६-२७)—यह पंचाल देश का एक नगर था, जिसकी पहचान चक्रनगर (जिला इटावा, उ० प्र०) से की गई है।

काम्पिल्य—ब्रह्मदत्त की राजधानी थी (शान्ति पर्व १३९-५)। यह दक्षिण पंचाल की राजधानी थी (आदि पर्व १३७।७३)। यहाँ द्रुपद राज्य करते थे। यह आधुनिक कम्पिल (जिला फरुखाबाद, यू० पी०) है।

कुरुक्षेत्र (अनुशासन पर्व १२४।४८, १६५।२४)—प्रसिद्ध तीर्थ था। इसे धर्म क्षेत्र कहा गया है।

कुशस्थली—(शान्ति पर्व ३३९-९१) द्वारका का ही दूसरा नाम था। पश्चिम देश में स्थित यह रमणीय नगरी रैवत पर्वत (गिरनार) से सुभोशित थी। यहाँ के दुर्गों से स्त्रियाँ भी युद्ध कर सकती थीं(सभा पर्व, १४।५०-५१)। यह वृष्णियों की राजवानी द्वारका ही थी।

कान्यकुब्ज—यह कुशिक वंश के प्रसिद्ध राजा गाधि की राजधानी थी (आदि पर्व १७४-३)। गाधि के पुत्र विश्वामित्र थे। कान्यकुब्ज (आधुनिक कनौज, प्रान्त फरुखाबाद, यू० पी०) के निकट ही गंगा तट पर अश्वतीर्थ भी था (अनुशासन पर्व ४।१७)।

गजपुर (स्वर्गारोहण पर्व १-६)—**हस्तिनापुर** (स्वर्गारोहण पर्व ५।३४-३५) का ही दूसरा नाम था। **हास्तिनपुर** (सभा पर्व ३४-१) कुरु देश की राजधानी थी। इसकी पहचान मेरठ के हस्तिनापुर (यू० पी०) से की गई है। यह **नागसाह्वय** (अश्वमेधिक पर्व ७०।१५) भी कहलाता था।

गया(अनुशासन पर्व २५-४२; १०२-४६)—प्रसिद्ध तीर्थ-नगर था जो गया प्रदेश का ही मुख्य नगर था।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जयन्ती (वन पर्व ८२-१९)—यहाँ सोम तीर्थ प्रसिद्ध तीर्थ था। यह वैजयन्ती या वनवासी (नार्थ कनारा) थी।

तक्षशिला (आदि पर्व ३-२०; स्वर्गारोहण पर्व ५।३४-३५)—यह उत्तरी पश्चिमी भारत का प्रसिद्ध नगर था जो महापथ पर स्थित प्रसिद्ध व्यापारिक केन्द्र और विद्या का प्रतिष्ठान था।

मथुरा (शान्ति पर्व ३३-९०) में कृष्ण का प्रादुर्भाव हुआ था। यह यादवों की राजधानी थी।

माहिष्मती (अनुशासन पर्व २।६१, १५२।३) दक्षिण अवन्ति की प्रसिद्ध राजधानी थी। यही अनूप देश की राजधानी थी जो नर्मदा नदी पर स्थित (आधुनिक मान्धाता) थी।

मिथिला—(वनपर्व २०७।६-९; शान्ति पर्व १७।१९) विदेह राज्य की प्रसिद्ध राजधानी थी।

माकन्दी (द्रोण पर्व १३७-७३) दक्षिण पंचाल की दूसरी राजधानी थी जो गंगा तट पर स्थिति थी।

मृत्तिकावती (वन पर्व २५४-१०) अथवा मार्त्तिकावत नगर (मौसल पर्व ७।६९) की पहचान मारवाड़ के मर्त से की गई है (जा० डि० पृ० १३२)।

पृथूदक (शान्ति पर्व १५२-११) प्रसिद्ध तीर्थ और नगर था जो इस समय कुरुक्षेत्र के निकटस्थ पिहोआ के नाम से प्रसिद्ध है।

पौदन्य (आदि पर्व १७६-४७) को राजा अश्मक ने बसाया था। यह अश्मक देश की राजधानी थी।

प्रभास (शान्ति पर्व १५२-१२; अनुशासन पर्व ९४-३) पश्चिमी भारत में सौराष्ट्र का अतिप्रसिद्ध तीर्थ-नगर था (उषवदात का नासिक गुफ़ालेख पं० २)।

प्रयाग (अनुशासन पर्व २५-३७) गंगा-यमुना संगम पर स्थित प्रसिद्ध तीर्थ-नगर था।

प्राग्ज्योतिषपुर (शान्ति पर्व ३३९-९२) कामरूप (आधुनिक आसाम) की राजधानी (वर्तमान गौहाटी) थी।

राजगृह (आदि पर्व २०३-१७, राजगृहे मागधानां) मगध की राजधानी (आधुनिक राजगिरि, बिहार प्रदेश) थी।

वारणावत—इसे पशुपति (शिव) का नगर (आदि पर्व १४२-३) कहा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गया है। यह रमणीय और समृद्ध नगर था (आदि पर्व १४२।७, १५)। यह उत्तर प्रदेश के मेरठ जिले का आधुनिक बर्नावा नामक स्थान है।

वाराणसी (अनुशासन पर्व १८।३७; ३०।१६-१८) काशी की प्रसिद्ध राजधानी थी। यह पवित्र तीर्थ था। इसे **विश्वेश्वरस्थान** (अनुशासन पर्व १६५-२३) भी कहा गया है।

शूर्पारक (वन पर्व ८५-४३; अनुशासन पर्व २५-५०) पश्चिमी समुद्रतट पर स्थित प्रसिद्ध तीर्थ (उषवदात का नासिक गुफ़ालेख पं० ३) और बन्दरगाह (पत्तन) था यह महाराष्ट्र में थाना जिले का आधुनिक सोपारा ही है।

श्रावस्ती (वन पर्व २०२-४) कोसल की राजधानी थी जिसे श्रावस्तक नामक इक्ष्वाकु वंशी राजा ने बसाया था (श्रावस्तको ज्ञेयः श्रावस्ती येन निर्मिता)।

पाठ्य-ग्रन्थ

महाभारत ६ खंड—गीता प्रेस

डा० मोतीचन्द्र—जाग्रफिकल ऐण्ड एकनामिक स्टडीज इन महाभारत (उपायन पर्व=उपा०)—लखनऊ १९४५

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अध्याय ६

यूनानी इतिहासकारों के भौगोलिक विवरण

प्राचीन भारत के ऐतिहासिक भूगोल को जानने में यूनानी और रोमन इतिहासकारों के विवरण अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। इनके ग्रन्थों अथवा उद्धरणों से उत्तरापथ—पंजाब, सिन्ध और उत्तरी-पश्चिमी सीमान्त प्रदेश के भूगोल पर महत्वपूर्ण प्रकाश पड़ता है। इनके विवरणों में उस क्षेत्र के विविध—गण-राज्यों और राजतान्त्रिक राज्यों के भौगोलिक स्वरूप को इतिहास के तिथि-क्रम के अनुसार जान सकते हैं। जिस समय बिम्बिसार मगध-साम्राज्य का विस्तार कर रहे थे सिन्धु-पार क्षेत्र फारस के राजाओं—अखमनी वंश—के आधीन हो गया। अखमनी वंश के राजाओं के अभिलेखों में भी उत्तरापथ का भूगोल ज्ञात होता है। इसी फारस-साम्राज्य का अन्त कर सिकन्दर भारत में घुसा। उसके अभियान में उसके साथ न केवल सैनिक ही थे, बल्कि कुशल भूगोल वेत्ता और इतिहासकार भी थे जिन्होंने स्वयं देखे हुए और कुछ दूसरों से सुने हुए वृत्तान्तों के आधार पर अपने विवरणों को लिखा। इसीलिए सुनी हुई खबरों पर आधारित विवरणों में सन्देह किया गया है। फिर भी इन विवरणों का महत्व कम नहीं है। डा० आर० सी० मजूमदार ने इन विवरणों को 'क्लासिकल अकाउन्ट्स ऑफ इण्डिया' नामक ग्रन्थों में संकलित किया है। ऐसे भूगोलवेत्ता यूनानी विद्वान कई थे जिनको दो वर्गों में बाँटा जा सकता है—

१—वे विद्वान जिनके विवरण प्रत्यक्ष-आंखों देखी परिस्थिति-पर आधारित था और—

२—वे, जिन्होंने अन्य साक्ष्यों से सूचनाएँ प्राप्त की थीं।

प्रथम कोटि में नियार्कस आता है, जिसने सिकन्दर की सेना में सक्रिय भाग लिया था।

प्रारम्भ में यूनानियों का भारत के विषय में बहुत ही कम ज्ञान था। इसका मुख्य कारण दोनों देशों—भारत और यूनान (ग्रीस)—के बीच की दूरी थी। परन्तु फारस के साम्राज्य की स्थापना से यह कठिनाई भी दूर हो गई।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इस साम्राज्य का पश्चिमी सिरा यूनान को छूता था तो इसका पूर्वी सिरा भारत को छूता था। यहाँ के राजदरबार में भी भारतीय और यूनानी राज-दूतों का सम्पर्क हूआ। सिन्धु नदी के उस पार का क्षेत्र फारस-साम्राज्य का बीसवां प्रान्त था।

स्काइलेक्स—इस साम्राज्य के शासनकाल में सम्राट डेरियस द्वारा केरियन्द का स्काइलेक्स नामक यूनानी विद्वान सिन्धु-घाटी की खोज करने भेजा गया था। वह कस्पपीरस (गान्धार का कोई स्थान, संभवतः कश्यपपुर) से चला था। उसके विवरणों से सिन्धु घाटी का भौगोलिक ज्ञान होता है।

हिकेटियस (५४९ ई० पू०–४८६ ई० पू०)—यह एक भूगोलवेत्ता और इतिहासकार था जिसके भौगोलिक विवरण स्काइलेक्स के वृत्तान्तों पर आधारित हैं। उसने गान्धार, सिन्धु नदी और कस्पपीरस (कश्यपपुर) का उल्लेख किया है। उसने **ओपिआइ** और **कलतिआइ** नामक जातियों का भी उल्लेख किया है।

हेरोडोटस (४८४ ई० पू०–४३१ ई० पू०)—वह एक प्रसिद्ध इतिहासकार था। भारत के सम्बन्ध में उसका ज्ञान अन्य साक्ष्यों पर आधारित था जिनमें से कुछ तो सुनी-सुनाई बातें ही थीं।

टेसियस—यह फारस के दरबार में एक वैद्य था। वह पहला यूनानी लेखक था जिसने भारत के विषय में कुछ विशेष परिचय दिया। इसके पहले अधिकांशतः भारत एक अज्ञात देश था। वह राज-वैद्य होने के नाते फ़ारस के दरबार में भारतीयों के सम्पर्क में आया और उनसे उसने भारत के सम्बन्ध में ज्ञान प्राप्त किया। फिर भी उसके विवरणों में दोष हैं।

भारत पर सिकन्दर के आक्रमण से ही यूनानी इतिहासकारों और भूगोल-वेत्ताओं को भारत के विषय में ठीक-ठीक ज्ञान मिल सका। सिकन्दर के साथ अनेक इतिहासकार और भूगोलवेत्ता भी भारत में आए थे, जिनके ग्रन्थों में उसके आक्रमण का वृत्तान्त दिया गया है। हमें उनके ग्रन्थ उपलब्ध नहीं हैं। इस समय केवल **स्ट्रैबो**, **प्लिनी**, और **ऐरियन** की पुस्तकों में हम उनके उद्धरण पाते हैं।

सिकन्दर के साथ आए हुए इतिहासकारों में **अरिस्टोबोलस**, **नियार्कस** और **ओनेसीक्रिटस** प्रमुख हैं। अरिस्टोबोलस के ग्रन्थ, 'हिस्ट्री ऑफ़ दि वार' के आधार पर ही एरियन ने 'अनाबेसिस' (सिकन्दर का जीवन चरित्र-जन्म से मृत्यु तक उसका जीवन जिसमें उसका भारत पर आक्रमण का वर्णन है

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भूगोल के लिए महत्वपूर्ण है।) और प्लूटार्क ने लाइफ ऑफ अलेग्ज़ेन्डर नामक ग्रन्थों की रचना की। नियार्कस सेना में एक नौकाध्यक्ष था। उसके उद्धरण स्ट्रैबो और एरियन के ग्रन्थों में मिलते हैं। आनेसीक्रिटस भी एक नौसंचालक था। इन यूनानी लेखकों ने यथाशक्ति और यथासम्भव भारत और इसकी संस्कृति के विषय में ठीक-ठीक विवरण देने की कोशिश की।

मेगस्थनीज को सेल्यूकस (निकेटार) प्रथम ने अपना दूत बनाकर पाटलिपुत्र में भेजा था। उसका व्यास नदी के पूर्वी भागों—मध्यदेश और प्राच्य देश-से परिचित होना स्वाभाविक था। **डेमाकस** भी यूनानी राजदूत था जिसे सीरिया के सम्राट और सेल्यूकस प्रथम के उत्तराधिकारी ने बिन्दुसार के दरबार में भेजा था। इन दोनों विद्वानों ने भारतीय भूगोल और सभ्यता के विषय में अपनी जानकारी दी जो कई दृष्टिकोणों से महत्वपूर्ण है। मेगस्थनीज का विवरण **इंडिका** के नाम से प्रसिद्ध है। इस समय केवल उसके उद्धरण ही मिलते हैं। डेमाकस का ग्रन्थ भी नहीं मिलता है।

पैट्रोक्लीज़ एक अन्य यूनानी लेखक था जिसका समय सेल्यूकस निकेटार और अन्तियोक प्रथम के राजत्वकाल में था। उसने **ईस्टर्न जाग्रफी नामक** ग्रन्थ लिखा। इस ग्रन्थ में उसने भारत का भी वर्णन किया। वह **प्रशंसनीय** लेखक था जिसके प्रति स्ट्रैबो ने सम्मान व्यक्त किया है। **बिखरी हुई सामग्री** को इकट्ठा कर उसे व्यवस्थित कर पैट्रोक्लीज़ ने भूगोल को **विज्ञान का रूप** दे दिया।

पालीबियस के इतिहास में भी भारत के विषय में महत्वपूर्ण विवरण मिलते हैं। उसका विवरण अप्राप्य है। मैक्रिन्डिल ने (इन्डिया ऐज़ डिस्क्राइब्ड बाई क्लासिकल राइटर्स में) उसका कुछ उल्लेख किया है।

आर्टेमिडोरस एक यूनानी यात्री और भूगोलवेत्ता था। उसका भूगोल सम्बन्धी ग्रन्थ "पेरिप्लस ऑफ एक्सटर्नल सी" कहलाता था जिसमें पूर्वी और पश्चिमी सागरों तथा उनमें स्थित द्वीपों का वर्णन किया गया है। यह अप्राप्य ग्रन्थ है। डा० विल्फ्रेड यच० शाफ ने इसके संक्षिप्त संस्करण का अनुवाद किया था। इसमें भारत सम्बन्धी नई बातों का ज्ञान होता है। ये सभी विवरण ईसा-पूर्व-युग में लिखे गए ते।

ईसवी संवत् के प्रारम्भ में **स्ट्रैबो** ने 'जाग्रफी' लिखी। यह महत्वपूर्ण ग्रन्थ था जिसे उसने अपनी यात्राओं और अनुभव के आधार पर लिखा था।

प्लिनी का ग्रन्थ 'नेचरल हिस्ट्री' ३७ खण्डों में विभक्त था। इसका छठा भाग भारत से सम्बन्धित और मेगस्थनीज़ के 'इन्डिका' पर आधारित था।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ऐरियन ने ईसा की दूसरी शताब्दी में 'इनवेज़न ऑफ अलेग्ज़ेन्डर दि ग्रेट" नामक ग्रन्थ लिखा जिसमें भारत का वर्णन किया गया है। यह ग्रन्थ मूलतः सिकन्दर के इतिहासकारों, मेगस्थनीज और डेमाकस के विवरणों पर आधारित है। इसे भी 'इन्डिका' कहते हैं।

टालमी—इन लेखकों में **टालमी** प्रसिद्ध भूगोल वेत्ता था जिसने भारतीय भूगोल का विस्तार से वर्णन किया है। वह बहुश्रुत विद्वान था जिसके ग्रन्थ को उसके समय में ही मान्यता मिल गई थी। वह ईसा की दूसरी शताब्दी में सिकन्दरिया (अलेग्जेन्द्रिया) का रहने वाला था। उसके ग्रन्थ-ऐन आउटलाइन ऑफ ज्याग्रफी-में भूचित्र, अक्षांश और देशान्तर रेखाओं के आधार पर स्थानों की स्थिति पर विशेष बल दिया गया है। अपने समय या इसके पूर्व के भूगोल पर लिखे गए ग्रन्थों से वह सन्तुष्ट न था। अस्तु उसने भूगोल के सिद्धान्तों को निर्धारित किया और अपने ग्रन्थ को इन सिद्धान्तों, विशेषकर ज्योतिष और खगोल, के आधार पर बनाया। इसमें उसे सफलता तो न मिली, परन्तु इतना अवश्य ही था कि उसने भूगोल को एक विज्ञान-विद्या के रूप में प्रतिष्ठित कर दिया।

इस प्रकार स्पष्ट है कि भारत के ऐतिहासिक भूगोल को जानने में यूनानी और रोमन लेखकों का विशेष महत्व है। भारतीय साहित्य में जनपदों अथवा राज्यों के नाम तो बड़ी संख्या में प्राप्त होते हैं, परन्तु उनकी स्थिति और स्वरूप के विषय में जानकारी नहीं मिलती है। उदाहरण के लिए महाभारत में मालव-क्षुद्रकों का एक ही साथ कई बार उल्लेख हुआ है, परन्तु वे कहाँ स्थित थे और उनका वैधानिक स्वरूप तथा शासन कैसा था महाभारत से पता नहीं चलता है। परन्तु सिकन्दर के इतिहासकारों द्वारा मल्लवॉय (मालव) और ऑक्सीड्रकाय (क्षुद्रक) की स्थिति और शासन पर प्रकाश पड़ता है। इस प्रकार यूनानी विवरण उत्तरी पश्चिमी भारत विशेष कर पंजाब और सिन्ध की जानकारी के लिये विशिष्ट महत्व रखते हैं।

देश और इसका विस्तार

हेरोडोटस—के अनुसार भारत सबसे पूर्व में स्थित देश है जिसके आगे रेगिस्तान है। इसमे केवल 'परिसिन्धु' (सिन्धु नदी पर स्थित) देश—पंजाब और सिन्ध का ही ज्ञान होता है। टेसियस भी यही कहता है। परन्तु वह इसमें यह और जोड़ता है कि भारत शेष एशिया से कम नहीं था। इससे स्पष्ट है कि इन दोनों लेखकों को सिन्ध से आगे के भारत का परिचय नहीं था। यह वृतांत केवल फारस-साम्राज्य की पूर्वी सीमाओं तक ही सीमित था।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

यद्यपि सिकन्दर के इतिहासकारों का भी ज्ञान पंजाब और सिन्ध तक ही सीमित था, तथापि उन्होंने व्यापक दृष्टिकोण से भारत के स्वरूप और विस्तार को जानने का प्रयत्न किया।

ओनेसीक्रिटस के अनुसार भारत संसार का एक तिहाई भाग था। **नियार्कस** के अनुसार मैदान को पार कर पूर्वी सागर तक पहुँचने में चार महीने लग जाते थे। यह ठीक ही था, क्योंकि उन दिनों तक मैदान पार करने में इतना समय लग जाता होगा।

मेगस्थनीज़ के अनुसार भारत का स्वरूप चौकोर था जिसके पूर्व और पश्चिम में समुद्र थे और उत्तर में हेमोदॉस (हिम देश) का पर्वत था तथा पश्चिम की ओर सिन्ध नदी थी।

एरस्थोनीज़ के अनुसार भी भारत उत्तर में कौकसस—परोपनिसस, एमोडोस या इमसास—(हिमालय शृंखला जो काबुल तक फैली थी) पर्वत था। यह पश्चिम में सिन्ध नदी तथा दक्षिण और पश्चिम में समुद्र से घिरा था। इसका आकार विषम कोण का आयत था। उन्होंने भारत का विस्तार भी बताया है जिसे कुछ विद्वान अनुमानतः ठीक मानते हैं।

स्ट्रैबो और **प्लिनी** ने भारत के विस्तार का वर्णन किया है। स्ट्रैबो के अनुसार इण्डिया के निवासी उस क्षेत्र में रहते हैं जो पहले फ़ारस के राजाओं के आधीन था। यह क्षेत्र 'एरिआनी' कहलाता था। इस प्रकार इस क्षेत्र में एरिया (हेरात), अरकोसिया (कन्दहार), गेड्रोसिया (बिलोचिस्तान) और पैरोपनिसडाय (काबुल) सम्मिलित थे। उसने पाटलिपुत्र और दक्षिण के कुछ स्थानों का भी उल्लेख किया है।

इन लेखकों के अनुसार सीलोन (सिंहल) भी भारत में सम्मिलित था। आनेसीक्रिटस के अनुसार यह तैप्रोबनी (तांबपंनी, ताम्रपर्णी) सीलोन ही था। यहाँ भारत से अधिक मोती (मुक्ता) और रत्न होते थे। बृहत्संहिता और गरुड़ पुराण से भी ज्ञात होता है कि सिंहल में रत्न पाये जाते थे।

देश की सीमाएँ—यूनानी लेखकों ने भी भारत की सीमाओं का उल्लेख किया है। स्ट्रैबो के अनुसार भारतीय भूमि में सिन्धु तटीय देश भी सम्मिलित थे जो पहले फ़ारसी साम्राज्य में सम्मिलित थे। उसके अनुसार सिकन्दर के आक्रमण के समय सिन्ध नदी भारत की सीमा थी। प्लिनी के अनुसार बहुत से लेखक सिन्ध नदी को भारत की पश्चिमी सीमा नहीं मानते थे। उनके अनुसार भारत में गेड्रोसिया (बिलोचिस्तान), अरकोसिया (कन्दहार),

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

एरिया (हिरात) और पैरोपनिसडॉय (काबुल) भी इसमें सम्मिलित थे। सेल्यूकस प्रथम ने ये देश चन्द्रगुप्त मौर्य को दिए थे। इस प्रकार भारत की पश्चिमी सीमा कोफेस (कुभा या काबुल नदी) थी।

भविष्य पुराण (३-२-१०) के अनुसार भी भरतखण्ड की पश्चिमी सीमा सिन्धु नदी थी—

पश्चिमे सिन्धुनद्यंते सेतुवन्धे च दक्षिणे।
उत्तरे बदरीस्थाने पूर्वे च कपिलान्तिके॥

कपिल तीर्थ गंगा सागर पर स्थित था (जा० ऐ० मे० इ० पृ० १८१-१८३)। विदेशी, शकादि, सिन्धु नदी को पार कर आर्य देश में आए थे—

केचित्तीर्त्वा सिन्धुनदीमार्यदेशं समागताः॥ भविष्य पु० ३-२-१५

इस देश को इसीलिए सिन्धुस्थान (भविष्य पु० ३-२-२०) कहते थे जो आर्य-राष्ट्र था। सिन्धुस्थान ही आगे चल कर हिन्दुस्थान हो गया।

क्विन्टस कर्टियस के अनुसार भारत वर्णन

वह विद्वान रोमन सम्राट क्लाडियस (४१ ई०-५४ई०) के राज्य काल में हुआ था। उसके अनुसार सम्पूर्ण भारत प्रायः पूर्व की ओर स्थित है। इसकी चौड़ाई लम्बाई से कम है। दक्षिण पहाड़ी क्षेत्र है। शेष भाग समतल है है जिसे काकशस पर्वत से निकलने वाली नदियाँ सींचती हैं। समुद्र इसके (चरण) धोता है। इस समुद्र के जल का रंग अन्य समुद्रों की भाँति ही है। राजा एरीथ्रस के नाम पर इसका नाम 'एरीथ्रियन सी' है। अनजान लोग मानते हैं कि 'इस जल का रंग लाल है।' यह समुद्र स्थल पर मूँगे और रत्न बिखेरता है।

इस प्रकार हिमालय से लेकर समुद्र और सिंहल तक देश का विस्तार यूनानी और रोमन लेखकों को ज्ञात था।

गंगा सबसे बड़ी नदी थी जिसके उस पार (पूर्व की ओर) दो जातियाँ रहती थीं—

१—गंगरिडाय और

२—प्रेसिआइ।

इनका राजा अग्रमीज़ था। अग्रमीज़ या औग्रसेन्य राजा था।

गंगरिडाय का तादात्म्य गंगमंडल से किया जा सकता है। यह मध्य देश ही था। इसे ही अनुगंग (गंगा तट क्षेत्र) कहा गया है। **प्रेसिआइ** भी प्राच्य का रूपान्तर था जो पूर्व देश का परिचायक था। यह गंगरिडाय के पूर्व स्थित था।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नदियाँ

सम्पूर्ण भारत नदियों से अभिसिंचित क्षेत्र था। प्रारम्भिक लेखकों—स्काइलैक्स और हिकेटियस-ने केवल **सिन्ध नदी** का उल्लेख किया है। टेसियस ने इसकी (अधिकतम) चौड़ाई १०० स्टेडिया और न्यूनतम चौड़ाई ४० स्टेडिया बतायी है। इससे मालुम होता है कि टेसियस को सिन्ध के विषय में अधिक ज्ञान था। वास्तव में नदी की चौड़ाई कम थी। हो सकता है कि उसने इसको बाढ़ के समय आँका हो। उसके अनुसार सिन्ध पर्वतों और मैदान में बहती है।

हाइपोबेरस—टेसियस ने हाइपोबेरस नामक नदी का भी उल्लेख किया है जो उत्तर में पर्वतों से निकल कर पूर्व समुद्र में मिलती है। इसकी घाटी में अम्बर के घने वृक्ष थे। संभवतः यह नदी गंगा (भागीरथी) नदी थी।

सिकन्दर के आक्रमण से पंजाब की अन्य नदियों के विषय में भी यूनानियों को ज्ञान हुआ। सिन्ध नदी पर आने के पहले ही उसे कोफस (कुभा) या काबुल नदी को पार कर उसकी सहायक नदियों (सुवास्तु और गौरी) की घाटियों की पर्वतीय जातियों को जीतना पड़ा था। आगे बढ़ कर सिन्ध के उस पार यूनानी लोग पंजाब की नदियों के संपर्क में आये। ये नदियाँ निम्नलिखित हैं—

हाइडेस्पस—यह वितस्ता या झेलम हैं।

एकीसाइन्स—यह असिक्नी, चन्द्रभागा या चिनाब है।

हाइड्रओटीस—यह इरावती, परुष्णी या रावी है।

हाइफ़सिस—यह विपाश या व्यास नदी है जिसके किनारे से ही सिकन्दर को वापस लौटना पड़ा था।

हाइड्रौस—यह शतुद्रु या सतलज है।

मेगस्थनीज़ ने पंजाब और अफ़गानिस्तान की नदियों के अतिरिक्त उत्तरी भारत की अन्य नदियों के नाम दिये हैं जो उत्तर प्रदेश, बिहार और बंगाल में बहती थीं।

गंगा और इसकी सहायक नदियाँ—मेगस्थनीज़ के अनुसार सिन्धु नदी की अपेक्षा गंगा अधिक बड़ी नदी थी। उसकी सहायक नदियाँ निम्नलिखित हैं—

केनास—इसकी पहचान केन नदी से की गई है। परन्तु यस० यन० मजूमदार शास्त्री का विचार है कि केन नदी पर नावें चलती थीं। यह बुन्देल-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

खंड की केन नदी न होकर संभवत: गोरखपुर की **कयान** या **कोहान** नदी थी जो घाघरा की सहायक नदी है (एन्शेन्ट इण्डिया-टालमी, पृ० ९८; इण्डि० ऐन्टी०, जिल्द ५, पृ० ३३१)।

कोसोअनास—यह कोसी नदी है।

एरन्नोबअस—(हिरण्यवाह) और **सोनस** एक ही सोन (शोण-हिरण्यवाह) के दो नाम प्रतीत होते हैं। संभवत: सोनस गया नदी की एक शाखा थी जो सोण कहलाती है (ए० इ० टा०, पृ० ९८)। हर्ष चरित (पृ० २०) से ज्ञात होता है कि हिरण्यवाह को ही सोन कहा जाता था (हिरण्यवाहनामानं महानदम् यं जना: शोण इति कथयन्ति)।

सोलोमतिस—इसकी पहचान राप्ती से की गई है।

कोन्डोचैटिस—गण्डक है।

सम्बॉस—इसकी पहचान गोमती से की गई है।

एगोरनीज—इसकी पहचान घाघरा से की गई है।

एरन्नीसीज—यह वरणासी (देखिये महाभारत की नदी-तालिका) है जो वरण और असी की मिश्रित धारा काशी में बहती है।

प्रिनस—इसकी पहचान पुण्या (पुनपुन) से की गई है जो गया की नदी है।

जोबनेस—यह जमुना नदी है जो गंगा की प्रमुख सहायक नदी है।

ऊपर की नदियों के नाम विकृत होने के कारण उनकी पहचान करने में कठिनाइयाँ हैं। इन नदियों की तालिका में विशेष उल्लेखनीय बात यह है कि इनमें प्राच्य अथवा पालिबोथ्रा (पाटलिपुत्र) के आस-पास के क्षेत्र की नदियाँ विशेष रूप से उल्लिखित हुई हैं।

गंगा और सिन्ध नदियों की घाटियों के अतिरिक्त हमें अफ़गानिस्तान की नदियों के भी नाम मिलते हैं। ये निम्नलिखित हैं—

कोफ़ेन—कुभा या काबुल नदी है।

सोअस्टस—सुवास्तु या स्वात नदी है।

गैरोइया—गौरी या पंजकोरा नदी है।

शिलस—शिलस नामक नदी का भी उल्लेख मिलता है। इस नदी में जो कुछ भी डाला लाता था वह डूब जाता था। यह इसके जल का प्रभाव था। (जाग्रफ़ी ऑफ़ स्ट्रैबो, १५-१-३८) रामायण अयोध्याकांड ७१-३) के अनुसार अपरपर्वत के निकट शिला नदी बहती थी, जो अपने अन्दर पड़ी हुई वस्तु को

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शिला बना देती थी। काठमांडू (नैपाल) में एक साधू ने बताया कि "शिला नदी में डुबाने से उँगली पत्थर की हो गई है।" वह पशुपतिनाथ का दर्शन करने जा रहा था। इस प्रभावकारी जल को शैलोदक कहा गया है जिसमें अंगुली डालने से वह शिला (पत्थर) हो जाती थी। इसीलिये इसका नाम शिला नदी पड़ा। महाभारत में इसे ही शैलोदा कहा गया है जो मेरु और मन्दर पर्वतों के बीच बहती थी और जिसकी घाटी में बाँसों के जंगल थे। यहीं पारद, कुलिन्द, तंगण और परतंगण जातियाँ बसीं थीं (सभापर्व, ५२)।

मत्स्य पुराण में इसका विशद वर्णन मिलता है—

"कैलास के पश्चिम में सभी औषधियों वाला अरुण पर्वत है जिसके शिला-ज़ाल ही इसकी शोभा हैं। यहीं सैकड़ों शृंगों के कारण पर्वत शृंगवान् कहलाता था। इसके पाद में (नीचे) शैलोद सरोवर था जिससे शैलोदका नदी निकल कर चक्षु (आक्सस) और सीता (यारकन्द) नदियों के बीच बहती हुई पश्चिम समुद्र से मिल जाती थी" (मत्स्य पु० १२०।१९-२३)।

यूनानी लेखकों के विवरण में दक्षिण भारत की किसी नदी का उल्लेख नहीं मिलता है। रोमन लेखकों ने बैरीगज़ा (भृगुकच्छ) के विवरण में नर्मदा का उल्लेख किया है।

सिकन्दर के इतिहासकारों द्वारा उल्लिखित राज्य और गण जातियाँ

स्ट्रैबो कहता है कि "नदियों का वर्णन करने के बाद उनके तटों पर स्थित या उनसे सम्बन्धित देशों का वर्णन करना भी आवश्यक है।" सिकन्दर भारत की ओर अभिमुख हुआ। **एरिआना** होते हुए वह भारत में घुसा और **पैरोपमिसस** पर्वत (काबुल की पहाड़ियों) को पार कर वह **कोफ़स नदी** और इसकी सहायक चोअस्पस (सुवास्तु) नदी पर प्लेमीरियम नगर के पास पहुँचा। फिर वह कोफ़स (काबुल) से सिन्ध नदी तक गया; वहाँ से हाइडस्पस (झेलम) तक और हाइडस्पस से एकीसाइन्स (असिक्नी, चिनाब) तक और अन्त में वह हाइपनिस या हाइफ़सिस (विपाश या व्यास) तक गया। इसके आगे वह न जा सका। उसकी सेना ने आगे बढ़ने से इन्कार कर दिया।

कोफ़स और इन्डस (सिन्ध) के बीच अस्टकनाय—अस्सकेनाय, (मसागा राजनगर—मेसोग) और पिथुकेलाटिस (पुष्कलावती) स्थित थे। सिन्ध और हाइडस्पस के बीच तक्षशिला राज्य था। इसके ऊपर उत्तर में एबिसरस (अभिसार) राज्य था जो एमोदि (हिमाद्रि) पर्वत के निकट स्थित था।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हाइडस्पस और एकीसाइन्स (चिनाब) के बीच पौरव राज्य था। हाइ-डस्पस के तट पर सिकन्दर का पोरस से युद्ध हुआ था। यहीं सिकन्दर ने **ब्यूकेफ़ेलिया** (जहाँ पर उसका रणबांकुरा घोड़ा-ब्यूकेफलस-गिर पड़ा था) और **निकाइया** (विजयनगर) नामक नगरों को बसाया था।

आगे चल कर उसने **कथेइया** (कठ राज्य) और सोफ़ाइटस राज्य, दबाकर एकीसाइन्स के आगे पोरस द्वितीय के राज्य को जीतता हुआ हाइ-फ़सिस (व्यास) तक बढ़ता चला गया। परन्तु यहीं से उसे लौटना पड़ा। **हाइडस्पस** के नदी-पथ से वह पंचनद (जहाँ पंजाब की पाँचों नदियाँ मिलती हैं) और सिन्ध नदी द्वारा सिन्ध के मुहाने (पतलीन) तक सिब्बाय, मल्ली (मल्लवाँया मालव), आक्सीड्रकॉय (क्षुद्रक) या सिड्रेके, मुसिकनास, सैबूस आदि जातियों से निबटता हुआ पतलीन(पतल) तक सिन्धु सागर पर पहुँचा।

इस प्रकार इस समय के पंजाब और सिन्ध में स्थित राज्यों का वर्णन यूनानी लेखकों के विवरणों से मिलता है। यह इस प्रकार है—

१. **अस्पेसियन**—यह काबुल, अलीसंग और कुनार नदियों की घाटी में बसा था, जो काबुल नदी के उत्तर में पहाड़ी भू-भाग था। अस्पेसियन्स अश्वकों (अस्सकेनियन्स) की ही पश्चिमी शाखा थी।

२. **गौरी (पंजकोरा नदी की घाटी)**—अस्सकेनियन और (अस्पेसियन) राज्यों के बीच में आधुनिक पंजकोरा नदी की घाटी थी।

३. **अस्सकेनियन राज्य**—पूर्व में यह सिन्धु नदी तक फैला था। इसकी राजधानी मसागा थी। यह एक प्रकृतिरक्षित गढ़ था। यहाँ के निवासी भी वीर पुरुष थे। यह राज्य सुवास्तु और उद्यान के नाम से भी विभिन्न युगों में प्रसिद्ध रहा है। यहाँ के राजा को यूनानियों ने अस्सकेनॉज़ की संज्ञा दी है।

४. **नीसा**—यह एक छोटा पहाड़ी राज्य था जो सिन्धु और काबुल नदी के बीच बसा था। सिकन्दर के आक्रमण के पहले से स्थापित यह एक यूनानी बस्ती थी।

मज्झिम निकाय में भी गौतम बुद्ध के समय में विद्यमान कम्बोज देश से सम्बद्ध योन देश का भी उल्लेख प्राप्त है (योनकम्बोजेषु द्वे वण्णा आयो चेव दासोच)। इसकी शासन व्यवस्था संभवतः गणतान्त्रिक थी।

५. **पुष्कलावती का राज्य**—यह राज्य काबुल से सिन्धु नदी के मार्ग पर स्थित था। यूनानियों द्वारा इनका उल्लेख प्यूकेलॉटिस के नाम से हुआ है। यह गान्धार राज्य का पश्चिमी भाग था। उस समय यहाँ का राजा एस्टीज़,

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अष्टक अथवा हस्ती था। यह सिकन्दरी सेनापति के साथ राष्ट्र-रक्षण करता हुआ वीर गति को प्राप्त हुआ था। पुष्कलावती के स्थान पर आजकल पेशावर से लगभग १७ मील दूर चारसड्डा बसा है। यही पश्चिमी गान्धार राज्य था। भरत पुत्र पुष्कर ने ही यहाँ पुष्करावती (या पुष्कलावती) की स्थापना करायी थी।

६. **पूर्वी गान्धार**—पूर्वी गान्धार राज्य की राजधानी तक्षशिला थी, जो वर्तमान रावलपिंडी प्रान्त में स्थित है। यूनानी इतिहासकारों ने यहाँ के राजा को टैक्साइलस के नाम से पुकारा है। परन्तु सिकन्दर के आक्रमण के समय ही इसकी मृत्यु हो गई थी और इसका पुत्र आम्भि राजा हुआ।

जहाँ पश्चिमी गान्धार ने सिकन्दर के सेनापतियों को रोकने की वीर चेष्टा की थी, पूर्वी गान्धार के राजा ने प्रथमतः देशद्रोहिता और कायरता का परिचय दिया।

७. **अभिसार**—पूर्वी गान्धार के उत्तर में ही मिला हुआ अभिसार राज्य था। डा० स्टीन के मत से यह झेलम और चिनाब के बीच का पहाड़ी देश था। यहाँ पर आधुनिक पुंछ जिला (काश्मीर) और हज़ारा जिले का कुछ अंश स्थित है।

८. **पोरस का राज्य**—झेलम और चेनाब के द्वाब में बसा था। इसमें आधुनिक गुजरात और शाहपुर (पंजाब) के जिले शामिल थे। यह अधिक शक्तिशाली राज्य था। इसी कारण द्वेष से तक्षशिलाधीश इसे नीचा दिखाना चाहता था। अभिसार राज्य से इस राज्य के सम्बन्ध अच्छे थे।

९. **ग्लुचुकायन**—यह एक छोटा राज्य था, जो चेनाब के पश्चिम पोरस के राज्य से मिला हुआ प्रदेश था।

१०. **गण्डरिस का राज्य**—ग्लुचुकायन राज्य के पूर्व चेनाब और रावी नदियों के द्वाब में स्थित था और पोरस के भतीजे छोटे पोरस द्वारा ही शासित था।

११. **अद्रेष्ट्वाय** यह रावी नदी के पूर्व में था। इसकी राजधानी पिम्प्रम थी जो आधुनिक अमृतसर अथवा गुरुदासपुर जिले में स्थित थी।

१२. **केथ्वाय (कठ)**—रावी और व्यास के बीच में स्थित कठ जाति का संघराज्य था। इनका मुख्य केन्द्र सान्गल अथवा साकल था जो गुरुदासपुर प्रान्त (पंजाब) में फतेहगढ़ के समीप अथवा अमृतसर में पूर्व जन्डियाला के स्थान पर स्थित था। यह युद्धप्रिय वीर जाति थी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१३. **भगल**—कठों के दक्षिण रावी और व्यास के बीच यह राज्य स्थित था।

१४. **सौभूति का राज्य**—कठों के समीपस्थ देश का राजा सौभूति (सिक्कों पर जिसका नाम सोफाइटीज प्राप्त होता है) था। पाणिनि ने उस देश का नाम सुभूत बतलाया है। यहाँ के लोग सौंदर्य प्रेमी थे।

१५. **सिब्बाय (शिवि)**—पश्चिमी पंजाब के आधुनिक झंग जिले में झेलम और चेनाब के संगम के समीप बसा था। इनका मुख्य नगर शिवपुर (वर्तमान शोरकोट, झंग जिला) था। महाभारत का प्रसिद्ध राजा उशीनर संभवतः यहीं का राजा था। यह शिव देश (कुमारिका खण्ड) कहलाता था।

१६. **अगलेस्वाय**—यह सिवॉय के ही समीप बसा था।

१७. **मल्लवाय (मालव)**—रावी और चेनाब के संगम के ऊपर यह गण-राज्य स्थित था।

१८. **आक्सीड्काय (क्षुद्रक)**—मालवों के पड़ोस में ही क्षुद्रकों का भी राज्य था। मालव और क्षुद्रकों में भीषण शत्रुता थी, परन्तु विदेशी आक्रमण को रोकने के लिए वे अपनी शत्रुता को भुला कर आपस में मिल गये थे।

१९. **अबस्टेन्वाय (अम्बष्ठ)**—चिनाब की निचली घाटी में अबस्टेन्वाय का गणतांत्रिक राज्य था।

सिन्ध नदी की निचली घाटी में कई छोटे-छोटे राज्य थे।

२०. **जेथ्राय (क्षत्रि)**—और

२१. **ओस्सेडिआय (वसाति)**—ये दोनों राज्य चिनाव से अभिसिंचित प्रदेश में रावी-चिनाव के संगम और सिन्धु नदी के बीच में स्थित थे। इनके ही पड़ोस में—

२२. **सोद्रई (शूद्र)**—और

२३. **मसेन्वाय**—सोद्रई और मसेन्वाय नामक दो छोटे राज्य थे।

२४. **मूसिकेनाज (मुचिकर्ण)**—उत्तरी सिन्ध में मूसिकानों का राज्य था। संभवतः इसकी राजधानी रोरुक (आधुनिक रोहरी जंकशन, सिन्ध प्रदेश) थी। इस राज्य में ब्राह्मणों का प्रभाव अधिक था। यह मूषिक देश था।

२५. **पतल अथवा पातानप्रस्थ**--सिन्धु के मुहाने में स्थित था, यहीं से सिन्धु नदी दो धाराओं में विभाजित हो जाती थी।

इस प्रकार इन छोटे-छोटे गणतांत्रिक और राजतान्त्रिक राज्यों में पंजाब

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

और सिन्ध प्रदेश बंटे थे। ये धनधान्य पूर्ण थे परन्तु इनकी निर्बलता इनका पारस्परिक द्वेष ही था जिसके कारण लड़कर या बिना युद्ध किये हुए ही ये विदेशी आक्रांता के अधिकार में आ गये।

सिकन्दर महान् के आक्रमण काल में उत्तरापथ की यही भौगोलिक और राजनैतिक दशा थी। प्राच्य में (पूर्वी भारत) मगध महाजनपद बढ़ते-बढ़ते एक साम्राज्य हो गया था, परन्तु पश्चिमोत्तर भारत इसमें अभी सम्मिलित नहीं था। यहाँ पर कोई ऐसी अन्य राजशक्ति न थी जो बिखरे राज्यों को समेट कर सामूहिक शक्ति से विदेशी आक्रमण से देश की रक्षा करता।

पाठ्य-ग्रन्थ

डा० बी० यन० पुरी—इण्डिया ऐज़ डिस्क्राइब्ड बाई अर्ली ग्रीक राइटर्स
डा० आर० सी० मजूमदार—क्लासिकल अकाउन्ट्स आफ़ इण्डिया

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अध्याय ७

पेरिप्लस आफ दि एरीथ्रियन सी में वर्णित भूगोल

पेरिप्लस ऑफ दि एरीथ्रियन सी' नामक ग्रन्थ से प्राचीन भारतीय भूगोल, विशेषकर भारतीय समुद्रतट पर स्थिति पत्तनों (बन्दरगाहों) और इनके तत्कालीन जगत में व्यापारिक महत्व पर प्रकाश पड़ता है। पश्चिम से भारतीय समुद्र तट पर व्यापारिक जहाज़ अपना माल लेकर आते थे और यहाँ से यहाँ की वस्तुएँ ले जाते थे। इस प्रकार ईसा की प्रारम्भिक शताब्दियों में विदेशी व्यापारी इतनी संख्या में आते जाते थे कि उनको 'भारतीय-समुद्र' में पथ-प्रदर्शन और परिचय कराने वाली 'गाइड' की आवश्यकता थी। यह ग्रन्थ उसी आवश्यकता की पूर्ति करता था।

यूनानियों के उत्कर्ष के सैकड़ों वर्ष पहले फारस की खाड़ी के पड़ोस के देश व्यापार, समृद्धि और सम्पत्ति के लिए प्रसिद्ध थे। मोहंजोदारो और हरप्पा का क्षेत्र अन्तर्राष्ट्रीय व्यापारिक मंडी थी और पश्चिमी समुद्र तट पर प्रागैतिहासिक युग में भी लोथल प्रसिद्ध बन्दरगाह था। मिश्र, मेसोपोटामिया, ईरान और भारत के साथ जल-थल सम्बन्ध थे। अरब निवासी और भारतीय इस व्यापारिक जगत में सक्रिय नाविक थे। अफ्रीका का पूर्वी तट, लाल सागर, फारस की खाड़ी और भारतीय समुद्र इन साहसिक व्यापारियों का कार्य-क्षेत्र था।

इस प्रकार व्यापार बढ़ा और लोगों को भारतीय पत्तनों और विभिन्न वस्तुओं तथा व्यापारिक मार्गों और मंडियों की जानकारी पाने की उत्सुकता बढ़ी। सभ्य और सशक्त जातियों तथा देशों ने इन मार्गों पर एकाधिपत्य जमाने के लिए बहुत संघर्ष भी किए। सिकन्दर की साम्राज्यवादी नीति में इन स्थल और जल मार्गों पर नियन्त्रण और अधिकार बनाए रखना भी शामिल था। परन्तु उसकी मृत्यु से उसका स्वप्न नष्ट हो गया। सेल्यूकस भी असफल रहा।

रोमन शक्ति का प्रभाव समुद्र पर बढ़ने लगा। रोम व्यापारिक केन्द्र बन गया। परन्तु अरबों के कारण रोमन लोगों को भारतीय समुद्र के बारे में

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सूचनाएँ नहीं मिल पाती थीं। इससे उनकी महत्वाकांक्षा पर कुछ ठेस लगी। परन्तु रोम और ऐक्सम राज्य की सन्धि से रोमन लोगों को बढ़ावा मिला। एक रोमन नाविक अपनी नाव से भारत की ओर आया। कुछ महीनों में वह सूचनाएँ लेकर लौट गया। इसके बाद ही एक अन्य साहसिक ने भारतीय मानसूनों के विषय में सूचना इकट्ठा की और भारत की सफल सामुद्रिक यात्रा कर भारतीय वस्तुओं को रोम ले गया। धीरे-धीरे इन यात्राओं में वृद्धि हुई।

'पेरिप्लस ऑफ एरीथ्रियन सी' के लेखक ने भी, जो मिश्र का यूनानी था, भारत की स्वयं यात्रा की और जो कुछ भी अपनी आँखों से देखा, अनुभव किया या सुना उसके आधार पर उसने यह ग्रंथ लिखा। इस ग्रन्थ का इसीलिए महत्व अधिक है कि उसने स्वयं भारतीय समुद्र तट की यात्रा की थी। इस लेखक का नाम अज्ञात है। उसने यह ग्रन्थ लगभग ८५ ई० के आस पास (मैक्रिन्डल इसे ८० ई० और ८९ ई० के बीच रखते हैं) लिखा था 'एरीथ्रियन सी' का नाम यूनानियों और रोमन लोगों ने भारतीय समुद्र को दिया था जिसमें लाल सागर और फारस की खाड़ी भी सम्मिलित था। यह ग्रीक (यूनानी) भाषा में ग्रन्थ है जिसका अंग्रेजी में अनुवाद मैक्रिन्डिल और शॉफ ने किया था।

टॉलमी ने भी लगभग १५० ई० में अपना भूगोल लिखा और उसमें भी भारतीय समुद्र-तट का वर्णन किया गया है। परन्तु टॉलमी ने स्वयं यात्रा नहीं की थी। इसलिए भी 'पेरिप्लस ऑफ एरीथ्रियन सी' का टॉलमी के ग्रन्थ से अधिक महत्व है। जब दक्षिण भारत में सातवाहन साम्राज्य उन्नत दशा में था और उसकी सेनाएँ तीनों समुद्रों (तियसमुदपीतवाहनस), पर प्रबल थीं, तब इसका जहाजी-चिह्न सिक्कों पर इसकी शक्ति का प्रतीक था। पेरिप्लस के लेखक ने लगभग इसी युग में इस देश के वेला-तट की समृद्धि का वर्णन किया है। इस प्रकार पेरिप्लस से हमें भारतीय समुद्र तट पर स्थित स्थानों की भौगोलिक स्थिति और उनका व्यापारिक महत्व ज्ञात होता है। परन्तु यह आशा नहीं रखना चाहिए कि इसके लेखक द्वारा उल्लिखित प्रत्येक स्थान की हम पहचान कर उसे वर्तमान नकशे पर ढूंढ़ निकालें।

सिन्थूज—एरीथ्रियन सी में गिरने वाली नदियों में सिन्धु ही सबसे बड़ी नदी थी। इसके सात मुख थे। इनके दलदली और छिछले होने के कारण जहाज़ों के आने जाने में कठिनाइयाँ थीं। केवल मध्यम धारा (मुख) में ही जहाज़ों का आना-जाना होता था। यहीं इसके निकट बर्बरिकम का व्यापारिक नगर स्थित था।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बर्बरिकम—बर्बरीक का ही यूनानी रूप है। यह बन्दरगाह भी था। इसका सम्बन्ध बर्बर जाति से भी है जिसका उल्लेख महाभारत और पुराणों में मिलता है।

मीननगर—यह सीथिया का प्रमुख नगर था। इसकी पहचान सिन्धु डेल्टा में स्थित पटल से की जा सकती है। स्मिथ इसे ब्रहमनाबाद मानते हैं।

एरीनान की खाड़ी—सिन्धु के आगे रैन ऑफ कच्छ है जिसे ही एरीनॉन-गल्फ कहा गया है। इसके दो भाग थे और दोनों भागों में ही पानी बहुत कम था और किनारों पर बालू के ढेर थे जिनमें कभी-कभी जहाज फँस जाते थे।

बरक की खाड़ी—यह कच्छ की खाड़ी है। बरक को द्वारका से सम्बन्धित किया गया है। सम्भवत: बरक बर्करेश (स्कन्द पु० १-२-३९-१७४) है।

एरिअक—लासेन के अनुसार यह लाटिका है जिसमें खम्भात के दोनों ओर के भूभाग सम्मिलित थे। कुछ लोग इसे अपरान्तक से सम्बन्धित करते हैं। सम्भवत: यह बृहत्संहिता (१४-१५) का आर्यक था।

अबिरिआ—यह आभीर देश था।

सिरस्ट्रेने—यह सुराष्ट्र (सौराष्ट्र)-काठियावाड़ है। यहां अनाज, तिल-हन, कपास और धान अधिक होता था। यह पशुओं में भी समृद्ध था। यहां का मुख्य नगर मीननगर था जहां से कार्पासिक वस्त्र बैरीगजा को भेजा जाता था।

बैरीगजा—भरुकच्छ (भृगुकच्छ), आधुनिक भड़ोच है जो नर्मदा के मुहाने पर अत्यन्त प्रसिद्ध बन्दरगाह था। यहां की बाजारों में यूनानी राजाओं-अपलदत और मिनेन्डर-के सिक्के मिलते थे।

पैपिका—बैरीगजा के निकट ही एक नगर था।

नम्मदुस नदी—नर्मदा है।

मईस नदी—मही नदी है।

बैरीगजा से अन्दर की ओर देश में कई जातियाँ रहती थीं—अरत्रिओई, अरकोसिओई, गन्दरेओई और प्रोक्लेइस। इनके आगे बैक्ट्रिअनोई के लड़ाकू लोग थे।

अरत्रिओई—यह आरट्ट देश है जो वाहीक (पंजाब) का ही एक नाम था (महाभारत, कर्ण पर्व ४४-३३)।

अरकोसिओई—या अरकोसिया आधुनिक कन्दहार था।

गन्दरेओई—गन्धारी जाति या गन्धार देश था।

प्रोक्लेइस—पुष्कलावती (चारसड्डा) थी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ओज़ेने उज्जयिनी है जहाँ से माल बैरीगज़ा में लाकर इकट्ठा किया जाता था।

दचिनाबदेस (दखिनाबदेस) दक्षिणापथ देश है जो बैरीगज़ा से दक्षिण की ओर स्थित था। यहाँ दो प्रसिद्ध व्यापारिक नगर थे—(१) **पैथान** (प्रतिष्ठान), आधुनिक पैथन है जो गोदावरी के किनारे स्थित है। (२) **तगर** का प्रसिद्ध नगर पैथान से १० दिवसीय यात्रा की दूरी पर स्थित था। इसकी पहचान पैथान से ९५ मील दूर दक्षिण पूर्व में स्थित तेर से की गई है। यह बहुत बड़ा गगर था। इन नगरों का माल भी निर्यात के लिए बैरीगजा के बन्दरगाह और मंडी में लाया जाता था।

सुप्पारा—सुपारा (जिला थाना, महाराष्ट्र) है। यह प्रसिद्ध बन्दरगाह और नगर शूर्पारक, था। यह व्यापारिक नगर विभिन्न देशों और दिशाओं से आने वाले मार्गों का केन्द्र था।

कैल्लिना—आधुनिक कल्याण है। यह सातवाहन युग में पश्चिमी तट का प्रसिद्ध बन्दरगाह था।

सेमिल्ल—टॉलमी का सिमिल्ल और युअनच्वांग का चि-मो-लो तथा मुस्लिम लेखकों का सैमूर है। यह बम्बई से लगभग २५ मील दूर दक्षिण में स्थित चौल (या चॉल) है।

मन्दगोर—संभवतः यह सावित्री नदी के मुहाने पर स्थित बान्कूट है।

पलेपतमे की पहचान आधुनिक दभोल से की गई है।

मेलीज़िगरो की पहचान जयगढ़ से की गई है। संभवतः यह प्लिनी द्वारा उल्लिखित सिगेरस है।

बिज़ेन्टियम की पहचान विजयदुर्ग से की गई है जिसे पश्चिमी समुद्रतट का सुन्दर बन्दरगाह माना जाता था। यह वैजयन्ती या जयन्ती है।

तोगरम—संभवतः आधुनिक देवगढ़ है जो एक बन्दरगाह था।

औरन्नबोअस—मैक्रिंडिल इसे आधुनिक मलवन (महाराष्ट्र) बताते हैं। यह महत्वपूर्ण स्थान था।

सेसेक्रियने द्वीप वेंगुरला नामक आधुनिक नगर के निकट ही वेंगुरला के पहाड़ी द्वीप हैं। वेंगुरला अच्छा बन्दरगाह था।

एगिदिई द्वीप संभवतः यह गोआ है।

कैनेटई द्वीप—ये संभवतः कारवार के पश्चिम ओएस्टर की शिलाएँ (ओएस्टर राक्स) हैं।

चेरसोनेसस—यह कारवार के पास निकला हुआ भूखंड है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ह्वाइट आइलैंड (श्वेत द्वीप)—यह तट से १० मील दूर पिजयन आइलैंड है जिसे नित्रम भी कहते हैं।

नौरा की पहचान कनानोर से की गई है (क्ला० अ० पृ० ३१२)।

टिन्डिस की पहचान पोन्नानी से की गई है। टिन्डिस चेरोबोथ्रा (केरलपुत्र) का राज्य है। यह समुद्र तट पर एक गाँव है। इसी राज्य में मुज़िरिम प्रसिद्ध बन्दरगाह था जहाँ माल से लदे हुए अरबों और यूनानियों के जहाज आते थे।

दमिरिका तामिल देश है।

मुजिरिस (मुचिरीपत्तनम) की पहचान क्रैंगनोर से की गई है। मध्य युग में यह प्रसिद्ध बन्दरगाह था।

नेल्किन्ड की पहचान कोट्टयम से की गई है।

चेरोबोथ्रा (केरलपुत्र) केरल है जिसकी राजधानी करूर थी।

पांडियन राज्य पांडच देश (मदुरा और टिनेवली) है।

बकरे पांडच राज्य का ही प्रसिद्ध बन्दरगाह था जहाँ गोल मिर्च (काली मिर्च) बहुत होती थी और इनके लिये ही जहाज यहाँ आते थे। इसकी पहचान पोरकड से की गई है।

परलिआ—बकरे के आगे लाल रंग की पहाड़ी है और समुद्र तट पर परलिआ नामक प्रदेश स्थित था जिसकी पहचान पुरली (ट्रावनकोर का प्राचीन नाम) से की गई है। इसमें ट्रावनकोर और टिनेवली के आधुनिक प्रान्त सम्मिलित थे। यहाँ **कोल्चोई** (कोलकई) नगर स्थित था।

बलित—यह सुन्दर बन्दरगाह था और समुद्र तट पर एक गाँव था जिसकी पहचान वर्कल्लई से की गई है। इसके आगे कोमारी (कन्या कुमारी) है जो दक्षिण भारत का सिरा है।

अर्गरु—इसे समुद्रतटीय प्रदेश कहते थे। यह पांडच राज्य का भाग था। यहाँ मोती मिलते थे। इसे अर्गरु कहते थे जिसकी पहचान उरैपुर (चोल देश की प्राचीन राजधानी) से की गई है। इसके आगे हमें कमर, पोडुका और सोपत्मा के बन्दरगाह मिलते हैं।

कमर की पहचान कावेरीपट्टनम से की गई है।

पोडका की पहचान पांडीचरी से की गई है।

सोपत्मा की पहचान मर्कनम से की गयी है।

यहीं से पूर्व की ओर क्षेत्र मुड़ना शुरू हो जाता है। इसके निकट ही समुद्र में एक द्वीप स्थित था जिसे **पालेसिमुन्द** या तप्रोबेन (ताम्रपर्ण=लंका

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

या सिंहल) कहते थे। यहाँ मोती और बहुमूल्य पत्थर (मणि), शंख और मलमल होता था।

मसलिया (मौसल) की पहचान मसलीपट्टम से की गई है। इसे मछली-पट्टम कहते हैं।

दोसारेने (दशार्ण) आधुनिक उड़ीसा है।

चिर्रहदए—इसके आगे तट उत्तर की ओर जाता है जहाँ बहुत सी बर्बर जातियाँ बसती थीं। इनमें चिर्रहदए भी एक मनुष्य जाति थी। इसे किरात माना गया है।

इसके आगे तट पूर्व की ओर मुड़ता है और समुद्र में चलते हुए गंगा-सागर-संगम में पहुँचते हैं। यहीं गंग नाम का नगर और प्रान्त है। संभवतः यह नगर ताम्रलिप्ति था।

इसके आगे समुद्री मार्ग से ही सुवर्णभूमि और चीन को मार्ग जाता था। इस प्रकार पेरिप्लस के लेखक ने भारतीय समुद्र तट का चित्र प्रस्तुत किया है।

पाठ्य-ग्रन्थ

डा० आर० सी० मजूमदार—क्लासिकल अकाउन्ट्स आफ़ इण्डिया कलकत्ता।

जे० डब्ल्यू० मैक्रिन्डिल—दि कामर्स ऐन्ड नेवीगेशन ऑफ़ दि एरीथ्रिअन सी, बम्बई १८७९।

यच० डब्लू शाफ़—दि पेरिप्लस ऑफ़ दि एरीथ्रिअन सी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अध्याय ८

टालमी का भारत-वर्णन

टालमी और उसका भूगोल

टॉलमी एक बहुश्रुत विद्वान था। वह गणितज्ञ, संगीत-विशारद, ज्योतिषाचार्य और महान भूगोल-विद् था। उसके विविध ग्रन्थ प्रारम्भ से ही महत्वपूर्ण माने जा चुके थे, यद्यपि लोग उनके दोषों से भी परिचित हो गए थे। इतना होते हुए भी उसका जीवन-चरित्र अँधेरे में है।वह मिश्र का निवासी था और ईसा की दूसरी शताब्दी के मध्य में वह सिकन्दरिया में विद्यमान् था। इसी समय उसने यह ग्रन्थ लिखा था।

उसका भौगोलिक ग्रन्थ—'ऐन आउटलाइन ऑफ जाग्रफी'—भूगोल-विषयक महत्वपूर्ण ग्रन्थ है, जिसका मुख्य उद्देश्य नकशे का ठीक-ठीक बनाना और प्रत्येक स्थान को अक्षांश-देशान्तर रेखाओं के अनुसार नकशे में दिखाना था। परन्तु वह स्वयं इन सिद्धान्तों का अपने ग्रन्थ में प्रयोग करने में सफल न हो सका। फिर भी, कुछ भी हो, इतना तो माना ही जाता है, कि टॉलमी ने भूगोल-विद्या को विज्ञान का आधार देकर उसे वैज्ञानिक रूप दिया।

उसके समय में भूगोल सम्बन्धी जितने भी ग्रन्थ थे, उनसे टॉलमी सन्तुष्ट न था। उसने टाइर के मैरिनस के ग्रन्थ को सुधारा। टॉलमी का भूगोल आठ खण्डों ('बुक्स') में विभक्त है। पहले खण्ड में उसने भूगोल के सिद्धान्तों का विवेचन किया है। आगे के ६ खण्डों और सातवें खण्ड के चार अध्यायों में अपने नकशे के स्थानों की स्थिति का विवरण ('टेबल') दिया गया है। आगे के खण्ड (८) और सातवें खण्ड के शेष अध्यायों में भी नकशों की ही चर्चा की गई है। उसके ग्रन्थ में २६ नकशे–योरप के १०, लिबिया के ४ और एशिया के १२–हैं। उसका भारत का नकशा बहुत ही अशुद्ध है।

टॉलमी के भौगोलिक विवरण न केवल भारत पर, विशेषकर इसके समुद्र-तट पर महत्वपूर्ण प्रकाश डालते हैं, प्रत्युत दक्षिण तथा दक्षिण-पूर्वी समुद्र द्वीपों–लंका, जावा (यव द्वीप), बरुष द्वीप, बाली, आदि–और मध्य एशिया तथा चीन पर भी प्रकाश डालते हैं जिनके साथ भारतीयों का घनिष्ट सम्बन्ध

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
था। सीथिया (शक), पार्थिया (पारद), बैक्ट्रिया (बाह्लीक), एरिया (हिरात), साग्डिअनोइ (श्वगण) और पैरोपनिसडाय (काबुल) आदि देशों का भारत के ऐतिहासिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक जीवन से घनिष्ट सम्पर्क था।

गंगा के अन्तर्वर्ती भारत का वर्णन

भारत—इसकी सीमाएँ और विस्तार—गंगा की सीमा से घिरा हुआ भारत (टॉलमी गंगा को पूर्वी सीमा मानता है) पश्चिम में **पैरोपनिसडाय, अरखोसिया** और गेड्रोसिया से घिरा था अर्थात् भारत इन देशों के पूर्व में स्थित था; उतर में साग्डिएओई (समरकन्द) और सकै (शक) देश इमाओस (हिमालय) पर्वत पर बसे हुए थे; पूर्व में गंगा नदी थी और दक्षिण में भारतीय समुद्र था।

परोपनिसस—यह हिन्दुकुश पर्वत का मध्य भाग था जिसका संस्कृत रूप उपरिश्येन (अवेस्ता में उल्लिखित उपैरि सेना) कहा गया है। इस पर्वत पर ही पैरोपनिसडाय (काबुल देश) स्थित था जिसकी राजधानी आर्टोस्पन अथवा टालमी द्वारा उल्लिखित करौर थी। इसकी पहचान काबुल नगर से की गई है।

अरखोसिया—यह कन्दहार से सिन्ध तक का भाग था जिसमें पूर्वी अफगानिस्तान का अधिकांश भाग सम्मिलित था। पैरोपनिसडाय के नीचे ही अरखोसिया स्थित था। इसका मुख्य नगर अरखोटॉस था।

गेड्रोसिया—यह आधुनिक बिलोचिस्तान था, जिसकी पूर्वी सीमा पर सिन्ध नदी बहती था।

साग्डियना—यह बैक्ट्रिया या बलख के उत्तर में स्थित था। यह सोग्द है जो बुखारा से समरकन्द तक कोहिक के किनारे स्थित था। स्कन्द पुराण में श्वगण जाति का उल्लेख है जो इसी देश में रहती थी। टॉलमी के अनुसार साग्डियन पर्वत पामीर की पहाड़ी ही थी जिससे आक्सस नदी निकलती है।

सकै—यह क्षेत्र साग्डियना के पूर्व में स्थित था। यह एक घुमक्कड़ जाति थी जो पर्वतों और जंगलों में रहती थी। इसकी निम्नलिखित शाखाएँ थीं—**करतै** (इसकी पहचान किरातों से की गई है), कोमरोई, कोमेदई, मस्सगेतई, ग्रिनैओई, सिथै, तूरनै और बिल्तई। ये काफिरिस्तान, बदख्शां, शिग्नान, रोशन और बाल्तिस्तान की पहाड़ियों में बसी हुई थीं (ऐ० इ० पृ० ३५)।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

टॉलमी के भूगोल और नकशे में भारतीय स्वरूप को बिगाड़ दिया गया है। जहाँ दक्षिण प्रायद्वीप के दोनों समुद्र तट कुमारी अन्तरीप में त्रिभुज की दो रेखाओं की भांति मिलते हैं, टॉलमी के नकशे में वह सपाट एक लाइन मानी गई है। इसी प्रकार की अशुद्धियां अन्य स्थलों पर भी हैं। जो तक्षशिला बैरीगजा के उत्तर होनी चाहिए थी, वह इसके पूर्व में है। यह गलती दूरी की गणना करने में हो गयी थी।

उसका समुद्र-तटों (वेला-कूल) का वर्णन तत्कालीन व्यापार-जगत में भारतीय व्यापार के महत्व का प्रमाण है।

पश्चिमी समुद्रतट

सिरस्ट्रेने (सुराष्ट्र)—यह सुराष्ट्र या सुरठ (वा० पु० पु० के १९ वें वर्ष का नासिक अभिलेख) कहलाता था जो गुजरात का प्राचीन नाम था। **पेरिप्लस आफ एरिथ्रियन सी** में भी इसका उल्लेख है कि यह **अबिरिया** (आभीर देश) का समुद्री तट था। पेरिप्लस में इसकी उपजाऊ भूमि की प्रशंसा की गई है जो कर्पास की उपज के लिए प्रसिद्ध था (ऐ० इ० पृ० ३५-३६)। इस प्रकार स्पष्ट है कि महाभारत में उल्लिखित **कार्पासिक** देश सुराष्ट्र भी हो सकता है जहां आभीर और शूद्र बसते थे। पेरिप्लस के अनुसार यहाँ के निवासी बलिष्ठ थे (ऐ० इ० पृ० ३६)। इसकी राजधानी गिरिनगर (आधुनिक जूनागढ़) थी।

कैन्थी—यह कच्छ की खाड़ी थी। यह गुजरात (सिरस्ट्रेने) को कच्छ से अलग करती थी। कच्छ का दक्षिणी समुद्रतट इस समय भी **कंथ** कहलाता है। पेरिप्लस में इस खाड़ी को वरके कहा गया है। परन्तु टॉलमी के अनुसार बरके इसी खाड़ी में एक द्वीप था। यहाँ जहाजों का आना-जाना कठिन था।

सिन्थोन—सिन्ध नदी की एक शाखा, **पीती**, से इसकी पहचान की गई है। यह सिन्धु-मुखों (सिन्धु-मुखानि) से सम्बन्धित बघार नदी की शाखा थी। चन्द्र के मेहरौली अभिलेख में कहा गया है कि उसने सिन्धु के सात मुखों को पार कर बाल्हीक देश की विजय की थी (तीर्त्वा सप्तमुखानि येन समरे सिन्धोर्जिताः बाल्हिकाः)।

खैरीफ्रान—कनिंघम ने इसकी पहचान आधुनिक बघार नदी से की है। सिन्धु-मुखों से सम्बन्धित गार नदी की एक दक्षिणी शाखा और नदी की मुख्य धारा के संगम पर लारी बंदर के निकट तक यह बहती है।

सपर—यह वारी मुख (एक सिंधु-मुख) है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सबलेस्स—यह इस समय सिर-मुख (सिर-माउथ) कहलाता है।

लोनीबरे—यह संस्कृत में लोणवारि या लोणवडा अर्थात् लवणवारि या लावणवाट है। यह आधुनिक कोरी है जो लौनी भी कहलाता है।

बर्दक्सेम—यूल के अनुसार यह आधुनिक पोरबंदर है। परंतु डा० बर्जेस के अनुसार यह बर्दिया ग्राम के निकट स्थित प्राचीन स्थान श्रीनगर है। बर्दक्सेम बर्दिया का यूनानी रूप प्रतीत होता है।

सिरास्ट्र—यह सुराष्ट्र अथवा सुरठ ही है। लासेन इसकी पहचान नवी बंदर से ४० मील पूर्व स्थित जूनागढ़ से करते हैं जो प्राचीन काल में गिरिनगर कहलाता था क्योंकि यह गिरनार (रैवतक) पहाड़ के निकट स्थित था। यहीं अशोक, शक महाक्षत्रप रुद्रदामन प्रथम और स्कंदगुप्त के अभिलेख मिले हैं। यूल ने इसकी पहचान नवीबंदर से की है। यह भादर नदी के मुहाने पर एक बंदरगाह था। युअनच्वांग ने भी सु-ल-च (सुरठ) या सौराष्ट्र देश की यात्रा की थी।

मोनोग्लोसोन—यह आधुनिक मंग्रोल है जो नवीबंदर के नीचे गुजरात-काठियावाड़ के दक्षिण-पश्चिमी तट पर बंदरगाह है। यह समृद्ध और घना बसा हुआ स्थान है।

लरिके (लाट)—लासेन के अनुसार यह संस्कृत में राष्ट्रिक और प्राकृत में लाटिक है। लार देश अथवा लाट देश गुजरात का प्राचीन नाम था। इसमें मही नदी की निचली घाटी और ताप्ती (तापी) के बीच का भूखंड सम्मिलित था। इसकी राजधानी भृगुकच्छ या भरुकच्छ (बैरीगज़ा, आधुनिक भड़ोच) थी। गुप्त युग में लाट देश समृद्ध और सुसंस्कृत देश था जहाँ का पट्ट (रेशमी कपड़ा) जगत-प्रथित था।

मलेओ—यह मही और नर्मदा के बीच लरिके के निकट स्थित मालवा ही था जिसकी राजधानी उज्जेन थी। टालमी के अनुसार बैरीगज़ा (भरुकच्छ) और ओज़ेन (उज्जयिनी) लरिके के ही आधीन नगर थे।

माफिस नदी—यह मही नदी है जिसे मालवा की नदी कहा गया है। पेरिप्लस का लेखक इसको मइस बताता है। यह नदी खंभात की खाड़ी (मही सागर) में गिरती है।

बैरीगजा की खाड़ी—बैरीगज़ा की खाड़ी इस समय खम्भात की खाड़ी कहलाती है। बैरीगजा बहुत बड़ी व्यापारिक मंडी थी और यह नर्मदा नदी के मुहाने पर स्थित था। खम्भात की खाड़ी में स्तम्भ तीर्थ था। स्तम्भ का

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ही खंभ हो गया। **नर्मदा** नदी को टॉलमी नमदोस या नमदेस कहते हैं। पेरिप्लस के लेखक ने इसे नम्नदिओस बताया है। उसने इस खाड़ी में नौ-संचालन की कठिनाइयों का उल्लेख किया है। यह बहुत ही संकरी और तंग खाड़ी थी।

कमने—बैरीगजा के दक्षिण में स्थित था जिसे पेरिप्लस के लेखक ने कम्मोने बताया है।

नौसरिप—सूरत से १८ मील दक्षिण स्थित नवसारी से इसकी पहचान की गई है।

पौलिपौल—यूल के नकशे में इसे संजन के स्थान पर नौसारी के दक्षिण स्थित दिखाया गया है।

एरिअके—इसकी पहचान महाराष्ट्र से की गई है। इसे आर्यों से भी सम्बन्धित किया गया है (ऐ० इ० पृ० ३९, ३४५)। **बृहत्संहिता** (१४-१५) में आर्यक को दक्षिण दिशा में स्थिति बताया गया है। सम्भवतः एरिअके और आर्यक एक ही थे।

टॉलमी के समय यह देश तीन शक्तियों में विभक्त था। इनमें एक सदिनेस का वंश था जिसका अधिकार समुद्र तटीय क्षेत्र पर था। इस वंश को पेरिप्लस का लेखक सन्दनेस बताता है। उसने कल्लिएन (कल्याण) पर अधिकार कर लिया जो पहले सरगनेस के अधिकार में था। लासेन के अनुसार सदनेस का सम्बन्ध साधन शब्द से है। सरगनेस का सम्बन्ध शातकर्णी से है। पेरिप्लस के अनुसार एरिअके से ही मैम्बरस का राज्य शुरू होता था। मैम्बरस अथवा नैम्बनस की पहचान शक शासक नहपान से की गई है। परन्तु यस० यन० मजूमदार इसे नहीं मानते हैं। उनके अनुसार मैम्बरस और लम्बोर (लम्बोदर) एक ही थे तथा लम्बोदर एक शातकर्णी शासक था (ऐ० ई० पृ० ३४५)।

सोपारा—यह आधुनिक सोपारा (जिला थाना, महाराष्ट्र) है। पुराणों और महाभारत में इसे शूर्पारक बताया गया है जो प्राचीन काल में प्रसिद्ध बन्दरगाह था। इसलिए यह एक प्रसिद्ध व्यापारिक केन्द्र था।

गोअरिस और बेन्द—ये दो नदियाँ थीं। यूल के अनुसार सालसेट और बेसिन इनके मुहाने पर स्थित थे।

गोअरिस—यह गोदावरी नदी थी, जिसका प्राकृतिक रूप गोआअरी है।

बेन्द—इसकी पहचान भीमा से की गई है। कैम्पबेल ने इसकी पहचान भीवन्दी नदी से की है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दोंग—इसकी पहचान भिवन्दी से १० मील उत्तर दुगाड से की गई है, जो सोपारा के उत्तर स्थित था।

सिमिल्ल—इसकी पहचान आधुनिक चौल से की गई है जिसे युअनच्वांग ने चि-मो-लो कहा है। पश्चिमी समुद्रतट पर पुर्तगालियों के आने के समय भी यह प्रसिद्ध बन्दरगाह था। मुस्लिम लेखकों ने इसे सैमूर कहा है। यह भी एक व्यापारिक केन्द्र था।

हिप्पोकौर—पं० भगवानलाल इन्द्रजी इसकी पहचान थाना के निकटस्थ घोडबन्दर से करते हैं। यह भी एरिअके में स्थित था।

बाल्टीपत्न—इसे पेरिप्लस के लेखक ने पलैपत्नै कहा है। संभवतः इसका संस्कृत रूप पारेपत्तन था। यूल ने इसे दैबल बताया है। सम्भवतः यह दाभोल है। यह दक्षिण कोंकण का बन्दरगाह था।

एरिअके (समुद्रतट)—प्राचीन काल कोंकण तट अपने व्यापार के लिए अत्यन्त प्रसिद्ध था। यहाँ व्यापारियों को लूटने के लिए चोरी भी बहुत होती थी। इसीलिए इसे **पाइरेट कोस्ट** या चौर-तट कहा गया है जो सिमिल्ल के पास से लेकर नित्रा के व्यापारिक केन्द्र तक फैला था। नित्रा की पहचान आधुनिक मंगलोर से की गई है।

परन्तु कैम्पबेल का विचार है कि टॉलमी ने पाइरेट्स (चोरों) का उल्लेख नहीं किया है। टालमी द्वारा उल्लिखित 'एरिअके अन्द्रॉन परेतॉन' से एरिअके के पाइरेटों (चोरों) का तात्पर्य न होकर एरिअके या कोंकण तट पर शासन करने वाले आन्ध्रभ्रत्यों के राजवंश का उल्लेख है।

मन्दगर—पेरिप्लस के लेखक ने पालेपत्मो के पहले इसका उल्लेख किया है। इसकी पहचान मदनगढ़ से की गई है जो सौत्री (सावित्री) नदी के मुहाने पर स्थित बन्कूट से १२ मील दूर अन्दर की ओर स्थित था।

बिजन्टिओन—इसकी पहचान आधुनिक विजड्रोग (विजयदुर्ग) से की गई है, जिसे पश्चिमी समुद्रतट का उत्तम बन्दरगाह कहा जाता था। वास्तव में इसका प्राचीन नाम वैजयन्ती या वनवासी था, जिसे स्कन्दपुराण (७-१-१०७-८१) और महाभारत में जयन्ती कहा गया है। यह पवित्र तीर्थ भी था।

खेरसोनेसस—यूनानी भाषा में इसे प्रायद्वीप (पेननशुला) कहते हैं। इसलिए नार्थ कनारा में काली नदी के मुहाने पर जीभ की तरह बाहर निकले हुए कारवार क्षेत्र से इसकी पहचान की गई है।

अमंगर—इसे ननगौन नदी के मुहाने के निकट स्थित बताया गया है। ननगौन (नानागुण) की पहचान ताप्ती से की गई है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नित्रा—टॉलमी के अनुसार यह 'पाइरेट-पोर्ट्स' (चोरों से ग्रस्त बन्दरगाहों) अथवा पाइरेट कोस्ट (चौर-तट) का सबसे दक्षिणी स्थान है। प्लिनी ने लिखा है कि मोजीरिस की मंडी को जाने वाले जहाजों को चोरों का भय था जो नित्रा और इसके पड़ोस में रहते थे। अयंगर (बिगिनिंग्स ऑफ साउथ इन्डियन हिस्ट्री, पृ० २३०-२३१) के अनुसार पेरिप्लस में उल्लिखित नौर ही नित्रा है। नौर की पहचान मंगलौर से की गई है जो नेत्रवती और गुरुप के डेल्टा में स्थित है। इस प्रकार नित्रा का नाम आधुनिक नेत्रवती में भी मिलता है।

लिमीरिके—इसकी पहचान दिमिरिके या दमिरिके से की गई है जो तामिल देश है। टिन्डीज़ इसकी उत्तरी सीमा पर स्थित था जहाँ, कालीकट के पास से यह क्षेत्र शुरू होता है। इसकी राजधानी करूर कावेरी नदी पर स्थित थी, जहाँ केरोबोथ्रस या केरलपुत्र (चेर देश का राजा) रहता था।

टिन्डीज़—पेरिप्लस के लेखक ने इसे महत्वपूर्ण स्थान बताया है जो **केरोबोत्रस** के राज्य में समुद्रतट पर स्थित था। केरोबोत्रस तो केरलपुत्र-चेरपुत्र-या केरल ही है। द्रविड़ भाषा में टिन्डीज़ का अर्थ टोंडी है। शॉफ़ द्वारा इसकी पहचान पोनानी से की गई है। परन्तु डा० बर्नल और अयंगर इसकी पहचान कडलुन्डी से करते हैं।

ब्रमगर—यह संस्कृत का ब्रह्मागार मालुम होता है। दूसरे स्थान पर टॉलमी ने ब्राह्मेनगर का उल्लेख किया है, जहाँ ब्राह्मणोई मगोई-मग ब्राह्मण-बसे हुए थे।

मौजिरिस—यह मुइरी या मुयिरी कोड है जिसका उल्लेख मलाबार के एक अभिलेख में हुआ है। यह कडंगलूर या क्रंगनूर के राजा का निवास स्थान था। क्रंगनूर इस क्षेत्र का प्राचीन बन्दरगाह था। ईसाई-मत के अनुसार यहाँ ही धर्म-प्रचारक सेंट थामस उतरे थे।

मौजिरिस मुइरी कोट्ट या मुसिरि ही है जिसकी पहचान कोडुंगलूर अथवा क्रैंगनोर से की गई है। द्रविड़ साहित्य में बताया गया है कि यहाँ सोने से लदे हुए यवनों के जहाज आते थे और यहाँ से बदले में मसाले लाद कर ले जाते थे। यह केरल की प्राचीन राजधानी वंजि का बन्दरगाह था। वंजि को ही करुवूर (आधुनिक परूर या परवूर) भी कहा गया है।

मेलकिन्ड—पेरिप्लस का लेखक इसे नेलकिन्ड कहता है, जिसे लिमिरिके में स्थित कहा गया है। केरल की दक्षिणी सीमा पर स्थित कन्नेत्री पश्चिमी किन्ड (वेस्ट किन्ड) है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बकरेइ—प्लिनी इसे बेकरे और पेरिप्लस का लेखक इसे बकरे बताता है। स्कन्दपुराण में उल्लिखित वर्करेश ही बकरेइ या बकरे है। यह आधुनिक परकाड है जो पहले एक प्रसिद्ध बन्दरगाह था। यहाँ पुर्तगाली और डच बस्तियाँ थीं।

ऐओइ देश—यह ट्रावनकोर का दक्षिणी भाग था। इसका सम्बन्ध द्राविड 'अय' से है। इसका अधिष्ठान पश्चिमी घाट का **पोडिल हिल** था जो पालघाट के दक्षिण और टिनेवली के पश्चिम स्थित है। यह पाण्ड्य देश में सम्मिलित था (बिगिनिंग्स ऑफ़ साउथ इंडियन हिस्ट्री-अयंगर-पृ० १२६-१२८)।

एलंग्कोन या एलंग्कोर—यह किलन (कुलम) आधुनिक केरल में त्रिवेन्द्रम के निकट स्थित है।

कोट्टिअर—यह ऐओइ देश में स्थित प्रमुख नगर था जिसको दक्षिण ट्रावनकोर में स्थित बताया गया है। सम्भवतः यह दक्षिण ट्रावनकोर का कोट्टार (जिसे कोटौर भी कहा जाता है) नगर था जो व्यापार के लिए प्रसिद्ध रहा है।

कोमारिआ—यह कुमारीपुर अथवा केप कमोरिन या कन्या कुमारी है। राजशेखर (काव्यमीमांसा पृ० ९२।१२) के अनुसार कुमारी द्वीप (भारतद्वीप) की दक्षिणी सीमा पर कुमारीपुर स्थित था। पेरिप्लस में इसे कोमर या कोमरेइ कहा गया है।

यही पश्चिमी समुद्रतट का वर्णन है। टॉलमी द्वारा उल्लिखित स्थानों और पेरिप्लस में वर्णित स्थानों की तुलना करना अभीष्ट है—

टालमी का वर्णन	पेरिप्लस में उल्लेख	आधुनिक पहचान
बैरीगज़ा	बैरीगज़ा	भरुकच्छ-भड़ोच
नौसरिप	अकबरौ	सूरत से १८ मील दूर स्थित नवसारी
सौपर	सौप्पर	सोपारा (थाना प्रान्त, महाराष्ट्र)
डौंग	कलिलएन (कल्याण)	दुगाड, भिवन्डी से १० मील उत्तर
सिमिल्ल	सिमिल्ल	चॉल (बम्बई से २५ मील दक्षिण)
मिलिज़ेगिरिस द्वीप	मन्दगोर	बंकूट (सावित्री नदी पर स्थित) कोलमांडला
बाल्टीपत्न	पलैपत्नै	दभोल
बिज़न्टिओन	बिज़न्टियल	वैजयन्ती (जयन्ती)
खेरसोनेसस	खेरसोनेसस	कारवार

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

टालमी का वर्णन	पेरिप्लस में उल्लेख	आधुनिक पहचान
नित्रा	नौरा	मंगलोर
टिन्डिस	टिन्डिस	कडलुन्डी
मौज़िरिस	मौज़िरिस	ऋंगनूर
मेल्किड	नेल्किड	कन्नेत्री
बकरे	बेकरे	पार्काड
एलंग्कोन	मॉन्स पिर्रोस	क़िलन
कोमारिआ	कोमार	कुमारीपुर (कन्या कुमारी)

दोनों लिस्टों की तुलना करने से उनमें बहुत कुछ समानता दिखलाई पड़ती है। टॉलमी की लिस्ट में कैल्लिअन या कल्याण नाम के अत्यन्त प्रसिद्ध और महत्वपूर्ण स्थान का उल्लेख नहीं मिलता है।

पूर्वी समुद्र-तट

करेओई देश—यह दक्षिण टिनेवली का देश था कोल्खिक-खाड़ी में मोती मिलते थे। यह मनार की खाड़ी थी।

सोसिकौरई—इसकी पहचान तूतीकोरिन से की गई है जो टिनेवली में बन्दरगाह है। यह ताम्रपर्णी नदी (सोलेन) के तट पर स्थित था।

कोलखोई मोतियों के व्यापार के लिए प्रसिद्ध था।

पांडिओन देश—यह पांड्य देश था जिसमें मदुरा, टिनेवली प्रान्त, ट्रावनकोर, कोयम्बटोर तथा कोचीन सम्मिलित थे (ऐ० इ० पृ० ३५०-३५१)। इसकी राजधानी मदुरा (दक्षिण मथुरा) थी। इसकी पश्चिमी सीमा पश्चिमी घाट का दक्षिणी भाग था जिसे टॉलमी ने बेट्टिगो का नाम दिया है। इसके पूर्व में समुद्र तट था जो पाक जलडमरूमध्य तक विस्तृत था। पेरिप्लस के अनुसार इसमें नेल्किन्डा और कोलखोई की मूंगा-खाड़ी भी सम्मिलित थे।

आर्गलिक गल्फ—कोल्खिक गल्फ़ के आगे आर्गलिक खाड़ी थी। डा० मैक्रिन्डिल के अनुसार इसका नाम पेरिप्लस में उल्लिखित अर्गलाड पर आधारित है जहाँ मोतियों से अलंकृत सूक्ष्म वस्त्र बनता था। परन्तु यस० यन० मजूमदार के अनुसार आर्गलिक का सम्बन्ध तामिल अर्गली से है जिसका अर्थ महोदधि है। पेरिप्लस में उल्लिखित अर्गलाउ से इसका कोई सम्बन्ध नहीं है। अर्गलाउ तो अर्गरु या उरेयुर था।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

केप कोरी—टॉलमी इसे और कल्लिगिकोन को एक ही अन्तरीप (केप) मानते हैं। वे अलग-अलग हैं। कोरी आर्गलिक खाड़ी के दक्षिण में थी और कल्लिगिकोन इसके उत्तर में थी। इस खाड़ी का धनुषाकार रूप राम धनु कहलाता था और इसके दोनों सिरे धनुष्कोटि या केवल कोटि कहलाते थे। कोटि, कोड़ि या कोरि अथवा कोरी एक ही हैं। दक्षिणी कोटि पर ही रामेश्वरम् द्वीप स्थित है। पुर्तगाली इसे रमनकोरु कहते थे।

इसके आगे हम पूर्वी समुद्र तट पर चलते हैं। टॉलमी का पूर्वी समुद्र-तटीय विवरण उतना ही दोषपूर्ण है जितना कि पश्चिमी समुद्र तट का वर्णन था। उसके पश्चिमी समुद्र तट का विस्तार सिमिल्ल तक ही था न कि केप कमोरिन के दक्षिण तक। उसके अनुसार दक्षिण का तिकोना प्रायद्वीप था ही नहीं। उसके नक्शे में सपाट समुद्र तट था।

पूर्वी समुद्र तट कलिमीर से कृष्णा नदी के मुहाने तक सीधे उत्तर की ओर जाकर फिर बगाल की खाड़ी तक उत्तर पूर्व की ओर हो जाता है। टॉलमी के अनुसार यह तटीय-रेखा पहले दक्षिण पूर्व की ओर लगभग ६०० मील तक जाती है जहाँ पर कटक स्थित है और यहीं से, उसके अनुसार, गंगा की खाड़ी भी शुरू हो जाती है। इस तरह से टॉलमी का समुद्रतटीय स्वरूप आधुनिक भारत के समुद्र तट की भाँति न था।

बटोइ देश—यह कालिमूर से लेकर कावेरी नदी के दक्षिणी मुहाने तक विस्तृत था जहाँ इस समय तंजोर प्रान्त स्थित है। इसकी राजधानी **निकम** की पहचान नेगापटम से की गई है। बटोइ के लिये तामिल शब्द बेट्टुवर है। खबेरस नदी कावेरी है। इस में दो व्यापारिक केन्द्र थे—

(१) **खबेरिस** (कावेरीपट्टम) पुडु-कावेरी के मुहाने पर तल्लंगमबडी के कुछ उत्तर स्थित था।

(२) **सबौरस** की पहचान यूल द्वारा गुडलूर (कडुलोर) से की गई है जो दक्षिणी पेन्नार के मुहाने पर स्थित था।

अरौर्नोइ (अर्वरनोइ)—यस० यन० मजुमदार के अनुसार इसका तामिल रूप अरुवलर था। यह अरुवनाडु और अरुवावडतलाइ या उत्तर अरुव में विभक्त था और कृष्णा नदी के मुहाने के निकट स्थित था (ऐ० इ०, पृ० ३५३)। इसकी स्थिति के विषय में डा० मेक्रिन्डिल कहते हैं कि टाइना नदी से व्याप्त यह देश उत्तर में मैसोलस नदी के किनारे स्थित मैसोलिया तक विस्तृत था। परन्तु टाइना और मैसोलस नदियों की पहचान विवादास्पद है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कुछ लोग टाइना नदी की पहचान पिनाक या पेन्नार से और मैसोलस नदी की पहचान कृष्णा से करते हैं। परन्तु लासेन टाइना को कृष्णा और मेसोलस को गोदावरी मानते हैं।

पोडौके—इस व्यापारिक नगर को पेरिप्लस में कमर और सोपत्म के साथ बन्दरगाह के रूप में उल्लिखित किया गया है, जहाँ लिमिरिके और इसके उत्तर से भी जहाज़ आते थे। इसकी पहचान पुडुच्चेरि (पांडीचरी) से गई है।

मैसोलिया—यह कृष्णा और गोदावरी नदियों के बीच समुद्र तट था जो आगे पलौरा के निकट तक विस्तृत था। इसे पेरिप्लस के लेखक ने मसलिया बताया है। यह सूती कपड़ों (कार्पासिक) के लिए प्रसिद्ध था। इस देश का नाम मसलीपट्टम अब भी विद्यमान है।

कोड्डौर—इसकी पहचान मसलीपट्टम के निकट स्थित गूड्डूर नगर से की गई है।

अल्लोसिग्ने—इसकी पहचान कोरिंग या कोरंज से की गई है।

गंगा की खाड़ी—टॉलमी कलिंग तट का वर्णन न कर गंगा की खाड़ी में प्रवेश करते हैं।

पलौरा या पकौरा—इस नगर से ही गैंजटिक गल्फ (गंगा की खाड़ी) शुरू होती है। यह गंजाम में स्थित था।

ननिगैना—यह पुरी (उड़ीसा) थी जहाँ जगन्नाथ का प्रसिद्ध मन्दिर है।

कटिकर्दम—यह कटक था।

कन्नगर—इसकी पहचान कनारक (कोणार्क) से की गई है।

मनद-मुख या (मनद का मुहाना)—मनद महानदी थी।

टालमी ने चार नदियों—मनद, टिन्डिस, दोसरोन और अदमस का उल्लेख किया है जो गंगा के पश्चिमी मुख कन्नगर के बीच गंगा की खाड़ी में गिरती थीं। लासेन के अनुसार मनद—महानदी है; टिन्डिस ब्राह्मणी है; दोसरोन वैतरणी है और अदमस सुवर्णरेखा है। यूल इस पहचान से सहमत नहीं है।

दोसरन—यह इस क्षेत्र की नदी है जिसके किनारे दशार्ण लोग बसे थे। दशार्ण नदी पूर्वी मालवा की धसान नदी है। परन्तु यह दशार्ण देश पूर्वी मालवा से पृथक पूर्व में स्थित था। रामायण (किष्किंधाकांड ४१-१०) के अनुसार मेकल और उत्कल (उड़ीसा) के साथ दशार्ण देश के नगरों को

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

स्थित बताया गया है (मेकलानुत्कलांश्चैव दशार्णनगराण्यपि)। टॉलमी का दशार्ण यही दशार्ण है जिसे छत्तीसगढ़ में स्थित माना गया है। दशार्ण, अर्थात् दश (दस) और ऋण (एक किला), का अर्थ दस किलों का भी लिया गया है। रामायण में भी दशार्ण के नगरों का उल्लेख किया गया है।

अदमस—यह यूनानी शब्द है जिसका अर्थ हीरा है। यूल के अनुसार यह ब्राह्मणी नदी की शाखा संक थी जिसमें हीरे मिलते थे।

मीनगर—इसकी पहचान उड़ीसा के जाजपुर से की गई है।

कोसम्ब—यूल के अनुसार यह बालासोर के निकट स्थित था। परन्तु लासेन के अनुसार यह सुवर्णरेखा के मुहाने पर स्थित था। संभवतः यह कोई बौद्ध स्थान था जिसे कौशाम्बी के लोगों ने बसाया था।

गंगा का मुहाना—टॉलमी पहले विद्वान थे जिन्होंने पाश्चात्य जगत को गंगा सागर के विषय में ठीक-ठीक विवरण दिया। इसके पहले विद्वानों ने गंगा को समुद्र में गिरने का सामान्य उल्लेख किया था। टॉलमी ने गंगा के पाँच मुखों का वर्णन किया है। सबसे पश्चिमी-मुख कैम्बीसन कहलाता था जिसकी पहचान हुगली नदी से की गई है। विलफोर्ड और यूल कैम्बीसन को सुवर्णरेखा मानते हैं। इस प्रकार गंगा के पाँचों मुखों की पहचान करना कठिन है। टॉलमी ने इस क्षेत्र में स्थित दो नगरों का उल्लेख किया है। ये **पोलौरा** (सुवर्णरेखा के निकट जलसोर) और तिलोग्रम्मन (तिलग्राम) थे।

टालमी द्वारा वर्णित पर्वत-श्रेणियाँ

सिन्धु सागर से लेकर गंगा-सागर तक समुद्रतट का वर्णन करने के बाद टॉलमी ने पर्वत श्रेणियों का वर्णन किया है।

अपकोप—यह पोइनै थिओन कहलाता था। इसकी पहचान अरावली पर्वत से की गई है जो अर्बुद या आबू भी कहलाता था। अपकोप का अर्थ है देवदण्ड।

सरडोनिक्स—इस पर्वत श्रृंखला को सतपुड़ा माना गया है जो नर्मदा और ताप्ती के बीच स्थित था। यहाँ सर्डियन नामक हीरा मिलता था।

ओयुन्दिओन (विन्दिओन) विन्ध्य पर्वत है जो मध्य देश को दक्षिणापथ से अलग करता है। विन्ध्य का विन्दिओन ठीक-ठीक रूप है। टॉलमी के अनुसार सोन नदी के पच्छिम विन्ध्य पर्वत माला ही विन्दिओन था।

बेट्टिगो-पर्वत—इससे निकलने वाली नदियाँ स्युडोस्टमस, बैरिस और सोलेन (ताम्रपर्णी) हैं जो दक्षिणी मलाबार की नदियाँ हैं। इसलिये

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वेट्टिगो पर्वत पश्चिमी घाट (सह्य) का दक्षिणी भाग था जो कोयम्बटोर से कन्याकुमारी तक फैला था और जिसे मलय पर्वत कहा जाता था। राज-निघण्टु नामक आयुर्वेद के ग्रन्थ से ज्ञात होता है कि वेट्ट पर्वत मलय के समीप ही का पर्वत था (ऐ० इ० पृ० ३५६)—

मलयाद्रिसमीपस्थाः पर्वता वेट्टसंज्ञिकाः।
तज्जातं चन्दनं यत्तु वेट्ट वाच्यं क्वचिन्मते ॥

मलय पर्वत के एक भाग में ताम्रपर्णी नदी के मुहाने के समीप अगस्त्य ऋषि का आश्रम था। इसे तामिल में पॉडिगे (पॉथिगेइ) कहते थे। यही वेट्टिगो था।

अदेस्थान—इसकी पहचान पश्चिमी घाट के उस भाग से की गई है जो कोयम्बटूर के उत्तर स्थित था और जहाँ से कावेरी नदी निकलती है।

औक्सेन्टन—इसकी पहचान ऋक्षवंत पर्वत से की गई है। इससे टिन्डिस, दोसरोन और अदमस नदियाँ निकलती थीं।

ओरोडियन पर्वत—इसकी पहचान वैदूर्य पर्वत से की गई है। वैदूर्य पर्वत का उल्लेख महाभारत (वन पर्व ८७) में हुआ है। पांडव लोग तीर्थ-यात्रा करते हुए विदर्भ से आगे पर्वतों पर होते हुए नर्मदा नदी के तट पर पहुँचे। इस प्रकार यह सतपुड़ा पर्वत है (ऐ० इ० पृ० ३५६)। परन्तु वैदूर्य पर्वत की पहचान बीडर से की गई है।

इमाओस—यह हिमालय है।

नदियाँ

सिन्धु और इसकी सहायक नदियाँ—

सिन्धु—वैदिक युग से लेकर आगे तक यह नदी, जो भारतीय भूमि की सीमा, मर्यादा और रक्षिणी रही, अपने प्राचीन नाम सिन्ध से ही प्रसिद्ध बनी रही। इसके प्रवाह में परिवर्तन होते रहे हैं। टॉलमी ने भूल से इसे परोप-निसडाय के पूर्व दरद्रे (दरद देश) से निकल कर सीधे दक्षिण की ओर बहने का उल्लेख किया है। यह सतलज के उद्गम के निकट ही कैलास पर्वत के उत्तर से निकल कर पहले उत्तर पश्चिम की ओर बहती है। बदख्शां के पास से यह दक्षिण की ओर मुड़ती है। ऐसी गलती टॉलमी के अलावा अन्य प्राचीन लेखकों—एरियन, स्ट्रैबो, कर्टियस आदि—ने भी की थी। **काबुल नदी** को छोड़कर इसकी प्रमुख सहायक नदियाँ इसमें बाँई ओर या पूर्व में मिलती हैं। इन सहायक नदियों की संख्या स्ट्रैबो और एरियन के अनुसार १५ है, परन्तु प्लिनी के अनुसार १९ हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कोअ—यह कुभा, कोफ़ेस (कोफ़ेन) या काबुल नदी है जो सिन्ध में इसके पश्चिम की ओर मिलती है।

सोअस्टस—यह सुवास्तु या स्वात नदी है, जो गौरी (पंजकोरा) की सहायक नदी है।

पंजाब की पाँच नदियाँ

बिडस्पस—यह वितस्ता, हाइडस्पस या झेलम है; जिसकी घाटी में काश्मीर बसा है। यह एकीसाइन्स (असिक्नी) या चिनाब में मिलती है। **सन्दबल**—यह चन्द्रभागा या चिनाब है जो सिन्ध में गिरती है। **आद्रिस या रौअदिस**—यह ऐरावती (इरावती) या रावी है। स्ट्रैबो के अनुसार यह हियरोतिस है। **बिबासिस** विपाशा है। **जरद्रास** सतलज है।

गंगा और इसकी सहायक नदियाँ

गंगा—टॉलमी ने गंगा का वर्णन संक्षेप में ही किया है। उसने इसकी केवल तीन ही सहायक नदियों का उल्लेख किया है। यह गंगोत्री से निकलती है।

दिअमौन—यह यमुना नदी है जो प्रयाग में गंगा से मिलती है। **सरबोस**—कोसल की सरयू नदी है। **सोअ** सोण (सोन) नदी है।

दमुद—ऋक्षवन्त से निकल कर रामगढ़ और बर्दवान होती हुई यह तामलुक के पूर्व की ओर गंगा की शाखा हुगली से मिलती है।

टॉलमी **नमदोस** (नर्मदा), **मोफिस** (मही), **ननगौन** (ताप्ती), **गोअरिस** (गोदावरी), **बिन्द** (भीमा), खबेरोस (कावेरी) आदि का भी उल्लेख करते हैं।

देशों और जातियों का वर्णन

टॉलमी प्राचीन भारत के नदी-क्षेत्रों से सम्बन्धित देशों और जातियों का वर्णन करते हैं। नदी-क्षेत्रों का महत्व था और इस दृष्टिकोण से भी देश-वर्णन मिलता है, यथा स्कन्द पुराण की अरुणाचल देश-तालिका (देखिए, अवस्थी स्टडीज़ इन स्कन्द पुराण पार्ट वन, पृ० ५४-६०)।

लम्बतै (लम्बगै)—यह कोअ (कुभा या काबुल) नदी के उद्गम के निकट स्थित था जिसे लम्पाक भी कहा गया है। लम्पाक का उल्लेख महाभारत (द्रोणपर्व १२१।४२-४३) और पुराणों (मत्स्य ११३-४३; विष्णुधर्मोत्तर १-९-९) में भी मिलता है। इसे उदीच्य में स्थित बताया गया है। गरुण पुराण (१-५५-१७) में लम्पाक के स्थान पर ही लम्बक (लम्बकाः)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

का उल्लेख उत्तर-पश्चिम के देशों के साथ मिलता है। यह काबुल नदी के उत्तर तट पर पेशावर के निकट स्थित लमगन था। इसे मुरुण्ड भी कहा जाता था (लम्पाकास्तु मुरुण्डाः स्युः, हेमचन्द्र-अभिधान चिन्तामणि ४-२६)। समुद्रगुप्त के प्रयाग स्तंभ लेख में भी मुरुण्डों का उल्लेख शकों के साथ मिलता है। डा० स्टेन कोनाउ का विचार है कि मुरुण्ड एक शक शब्द था जिसका अर्थ प्रभु था। अतः लम्पाक शकों की राजधानी थी।

सोउअस्तेने (सुवास्तु)—यह सुवास्तु (स्वात) नदी की घाटी थी जिसे प्राचीन काल में उद्यान कहते थे और जिसे युअनच्वांग ने उ-चंग-न कहा है। यहाँ यूसुफजई नामक लड़ाकू जाति बसी है।

दरद्रै—यह दरदों का पर्वतीय देश था जिसका उल्लेख राजतरंगिणी और महाभारत में मिलता है। यह देश लम्पाक और सुवास्तु देश के पूर्व में काश्मीर की उत्तरी पश्चिमी सीमा पर स्थित था। यह दर्दिस्तान है। यह पिपीलिका-स्वर्ण (सोना खोदने वाली चीटियों) के लिए प्रसिद्ध था (सभापर्व ५२)।

कसपेरिया—इस नाम से काश्मीर का परिचय मिलता है। टॉलमी के समय में काश्मीर एक सशक्त राज्य था। काश्मीर-घाटी वितस्ता (बिडस्पस) या झेलम नदी से अभिसिंचित क्षेत्र था। टॉलमी के अनुसार सन्दबल (चन्द्र-भागा) या चिनाब और रौअदिस (इरावती) या रावी भी काश्मीर की पहाड़ियों से निकलती थीं।

किलिन्द्रिने—यह ऊँची पहाड़ियों का देश था जहाँ से विपाश (बिबासिस) या व्यास और शुतुद्रि (ज़रद्रोस) या सतलज, यमुना और गंगा निकलती थीं। यह पुराणों और महाभारत का कुलिन्द देश है। कनिंघम ने किलिन्द्रिने की पहचान जालन्धर और कांगड़ा की पहाड़ियों से किया है। इस समय ये कुलू और शिमला में बसे हुए कुनेत ही हैं।

गोरीएइया—यह गौरेअस या गौरी नदी की घाटी है। गौरी (पंजकोरा) काबुल नदी की एक सहायक नदी है। इस नदी के पूर्व में अस्सकेनाय लोगों का देश था जिसे सिकन्दर ने जीता था। यह जायसी (मलिक मुहम्मद) के पद्मावत में उल्लिखित गौर (गौर गाजना) और कुमारिका खंड का गौड देश है जिसे गजन या गाज़नक (गजनी) के साथ उल्लिखित पाते हैं (स्ट० स्क० पु०, पृ० ३१-३३)।

इस देश में **कैसन**, **बर्बोरन**, **ट्रस्तोक** और **गोरिय** नगर स्थित थे। इनकी पहचान कठिन है। कैसन (कनिंघम जा० ए० इ०, मजूमदार संस्करण पृ० ३१-३५) की पहचान बेग्राम से की गई है। बर्बोरन बर्बर जाति का नगर था।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नगर (या डायोनिसोपोलिस) की पहचान नगरहार (युअन-च्वांग के न-कि-लो-हो) आधुनिक जलालाबाद से की गई है।

गन्दरई—यह गान्धार देश है जो सोअस्टस (स्वात, सुवास्तु) और सिन्ध नदी के बीच स्थित था। ऋग्वेदिक जातियों में भी गान्धारी का उल्लेख है। पुराणों और महाभारत में भी इसका उल्लेख है। इस देश में **तक्षशिला** और **पुष्कलावती** के दो प्रसिद्ध नगर थे। तक्षशिला सिन्ध के पश्चिम में स्थित था। इससे सिद्ध होता है कि गान्धार देश सिन्ध नदी के दोनों ओर स्थित था। टॉलमी के समय इसकी राजधानी प्रोक्लेस (या पुष्कलावती) थी जिसकी पहचान चारसड्डा से की गई है। कनिष्क के समय इसकी राजधानी **पुरुषपुर** (पेशावर) थी। **उद्‌भाण्डपुर** (ओहिन्द) भी यहीं स्थित था।

अर्स—सिन्ध और विडस्पस के बीच स्थित अर्स देश की पहचान उरस देश (हजारा प्रान्त) से की गई है इसका उल्लेख राजतरंगिणी व महाभारत में भी हुआ है। टॉलमी के अनुसार टेक्सिअल (टेक्सिला) या तक्षशिला इस देश का नगर था।

पांडोई (पाण्डव)—इसे बिडस्पस के पास स्थित बताया गया है। इसकी पहचान निश्चित नहीं है।

सागल (शाकल) को यूथीमेडिया भी कहते थे। यह स्यालकोट था। स्यालकोट का सम्बन्ध शल्य से है (स्याल कोट=शल्य कोट) और यह वाहीक देश की राजधानी थी। यह मद्र जनपद था।

बौकेफल—सिकन्दर द्वारा स्थापित ब्यूकेफलस नामक नगर था जहाँ पोरस-युद्ध में उसका घोड़ा गिरा था। कनिंघम के अनुसार इसकी पहचान जलालपुर के निकट स्थित दिलावर से की गई है। स्मिथ के अनुसार यह झेलम था।

टॉलमी ने सिन्ध नदी से पालिबोथ्रा (पाटलिपुत्र) तक जाने वाले महापथ (उत्तरापथ) पर स्थित कई नगरों का उल्लेख किया है जिनकी पहचान करना कठिन है।

कैस्पेरीय (काश्मीर) के नगरों की सूची में वर्णित नगरों की पहचान नहीं हो सकती है। सिन्ध नदी से यमुना नदी के किनारे स्थित मथुरा तक बीच में स्थित **सलगिस्स, अरिस्पर, पलिक्न, लिगेनेरा, खोन्नमगर** और **कोग-नन्दौ** की पहचान अत्यन्त कठिन है (ऐ० इ० पृ० १२६)।

लैबोकल—यह लाहौर है जिसे लव-कोट कहा गया है। परन्तु यस० यन० मजुमदार इसे लाहौर नहीं मानते हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बटनग्र की पहचान भटनेर से की गई है।

ओस्टोबलसर की पहचान स्थानेश्वर या थानेश्वर से की गई है।

दैदल की पहचान भटनेर से पूर्व खघर (घग्घर) नदी के तट पर स्थित दुधल से की गई है।

अर्दोने या अहरोनी चितंग और घग्घर नदियों के बीच रेगिस्तान में स्थित था।

इन्दबर प्राचीन इन्द्रप्रस्थ हैं।

मोदौर मथुरा है जो यमुना तट पर स्थित था।

पस्सल मैक्रिन्डल के अनुसार पंचाल है। परन्तु यस० यन० मजूमदार इसकी पहचान प्रस्थल से करते हैं।

ननिखई की पहचान नैमिषारण्य या नीमखार से की गई है।

अदिस्दर की पहचान अहिच्छत्र (रामनगर, बरेली प्रान्त, यू० पी०) से की गई है।

कंगोर की पहचान कनौज (कान्यकुब्ज) से की गई है।

सौरबतिस या सन्द्रबतिस की समता चन्द्रवती या छत्रवती या अहिच्छत्र अथवा पंचाल के उस भाग से की गई है जो गंगा के पूर्व स्थित था। यूल के अनुसार यह मही नदी और अरावली पहाड़ के बीच स्थित भूखंड था।

इन्डो-सीथिया सिन्धु नदी के किनारे स्थित वह देश था जहाँ शकों का शासन था। टॉलमी के अनुसार इसमें पटलीन, अबिरिया और सिरस्ट्रीन सम्मिलित थे।

पटलीन सिन्धु नदी का डेल्टा है; **अबिरिया** आभीर (ओफिर) देश है; और सिरस्ट्रीन (सोरठ, सुराष्ट्र) है।

अन्द्रपन की पहचान कनिंघम द्वारा दरबन्द या डेराबन्द से की गई है जो डेराइस्माइल खाँ के निकट स्थित था।

बनगर की पहचान बन-नगर या बन्न अथवा बन्नू से की गई है। इसे फ़ाहियान ने 'पो-न' (बन) और युअनच्वांग ने 'फ़-ल-न' बताया है। इसे संस्कृत में वर्णु (पाणिनि, ४-३-१०३; ४-३-९३) कहा गया है। इसमें कुर्रम (क्रुमु) नदी की घाटी का निचला भाग सम्मिलित था।

एम्बोलिमा सिन्ध नदी के किनारे अटक से ६०मील उत्तर स्थित था जहाँ यह तंग घाटी से वेग के साथ बहती हुई निकलती है। यहीं बाँई ओर अम्ब का किला है। एरियन के अनुसार यह ऑरनास के निकट ही स्थित था।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पेन्टग्रम्य की पहचान एम्बलिका से ४० मील दूर दक्षिण पश्चिम में स्थित पंजपुर (पाँच पुरों) से की गई है। संभवतः महाभारत का यही पंचगण था।

असिग्रम्म—अज्ञात है।

पसिपेड—यह अरब भूगोलविदों का बेस्मेड है जो सिन्ध नदी के पूर्वी तट पर महत्वपूर्ण स्थान था। यह रोड और मुलतान के बीच में स्थित था। कनिंघम का मत है कि सेहवान (सिन्दोमान) ही पिस्का या पसिपेड था।

सौसिकन का सही रूप मूसिकन है जो मुसिकनॉस लोगों की राजधानी थी। कनिंघम इसकी पहचान अलोर से करते हैं, जो ऊपरी सिन्ध की राजधानी रही थी।

बोनिस—अरब भूगोलविदों ने निचले सिन्ध में बनिया नाम के एक नगर का उल्लेख किया है जो मन्सूरा से अधिक दूर न था। संभवतः यही बोनिस था।

कोलक या कोलल की पहचान कराची की खाड़ी में स्थित कर्कल्ल से की गई है।

सिन्ध डेल्टा के द्वीपों में पटल और बर्बरे स्थित थे।

पटल बहमनाबाद था।

बर्बरे—पेरिप्लस का लेखक इसे बर्बरिकॉन बताता है। स्कन्दपुराण में उल्लिखित बर्बरीक से इसकी पहचान होनी चाहिये (स्ट० स्क० पु० १००-१०१, ११९)। स्कन्दपुराण इसे खम्भात की खाड़ी (मही सागर संगम) में स्थित बताता है। कनिंघम के अनुसार कराची और थट्टा के बीच इसके खंडहर विद्यमान थे। यह प्रसिद्ध व्यापारिक केन्द्र था।

पनस का सम्बन्ध पर्णाशा से है जो आधुनिक बनास नदी है। यह आबू के निकट बहती हुई कच्छ की खाड़ी में गिरती है। यह नगर इसके मुहाने पर स्थित था।

बीनगर—कुछ लोग पेरिप्लस में वर्णित मीननगर के स्थान पर इसे लेते हैं। मीननगर सीथिया का प्रमुख नगर था। इसकी पहचान बहमनाबाद से की गई है।

लरिके लार देश गुजरात और कोंकण का समुद्रतटीय भाग था। लरिके एक राज्य (लाट) था।

बैरोगजा भड़ोच है। यह प्रसिद्ध बन्दरगाह था। यहाँ से जटामांसी,

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कुष्ठ, हाथी दाँत, कार्पासिक, पट्ट (रेशमी कपड़ा) और मसाला बाहर भेजा जाता था।

ओज़ेने उज्जैनी है।

मीनगर—पेरिप्लस में मीननगर का उल्लेख है। यह दूसरा मीननगर था जिसे टॉलमी ने ओज़ेने के दक्षिण पश्चिम में स्थित बताया है। यूल ने इसकी पहचान मासूदी द्वारा उल्लिखित मानेकीर से की है। विन्सेंट स्मिथ के अनुसार यह माध्यमिका (नागरी) है। प्रो० डी० आर० भंडारकर के अनुसार यह मंडसोर है।

नासिक महाराष्ट्र का प्रसिद्ध नगर है।

पौलिन्दई की पहचान पुलिन्द से की गई है। ये अरावली की पहाड़ियों पर बसे थे। इन्हें ऐग्रीफगोई कहा गया है जिसका अर्थ है कि यह जाति मत्स्य, मूल और फलों पर जीवित रहती थी।

खत्रिओई की पहचान कथैओइ से की गई है जो रावी और व्यास के बीच बसे थे (ऐ० इ० पृ० १५७)। ये कठ थे।

तबसोइ तापक देश (तापी तट पर स्थित) ही है (स्ट० स्क० पु०, पृ० ५९)।

कन्दलोई की पहचान कुन्तल से की गई है।

प्रपिओतई की स्थिति पारियात्र पर्वत पर थी।

अम्बस्तई अम्बष्ठ लोग थे।

सोर की पहचान चोल देश से की गई है।

बोलिंगई की पहचान भूलिंग से की गई है जो शाल्वों की एक शाखा थे।

स्टगबज्र की पहचान भोजकट से हो सकती है।

बर्दओतिस की पहचान भराओद या भारहुत से की गई है।

पोरोउअरोइ की पहचान पौरवक (पोरस राज्य) या पौरिक राज्य (पश्चिमी भारत) से की जा सकती है।

मंडलै देश सोन और नर्मदा के उद्गम स्थान के निकट था। इसकी पहचान स्कन्दपुराण के मंडल देश से की जा सकती है (कुमारिका खंड ३३-६१)। चेदि देश का भी दूसरा नाम (पर्याय) मंडल था (स्ट० स्क० पु० पृ० ५३)। अतः यह चेदि (बघेल खंड) ही था।

पालिम्बोथ्र पाटलिपुत्र है।

तमलितेस ताम्रलिप्ति है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सबरई की पहचान शबरों से की गई है। ये विन्ध्याटवी में बसे थे।

गंगरिडई—यह गंग मंडल था। यहाँ इसकी पहचान गंगा के मुहाने से की गई है।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि टॉलमी का भौगोलिक ग्रन्थ भारतीय भूगोल का महत्वपूर्ण ज्ञान-साधन है। परन्तु उल्लिखित देशों की पहचान करना अत्यन्त कठिन हैं। यहाँ हमने टॉलमी का भौगोलिक परिचय मात्र ही देकर उसके द्वारा वर्णित वेला-कूल पर विशेष ध्यान दिया है। इसके विशद विवेचन के लिए स्वतन्त्र ग्रन्थ हैं जिनका विशेष अध्ययन और विवेचन किया जा सकता है।

अध्ययन आधार

१. मैक्रिन्डल का टॉलमी-वर्णित ऐन्शेन्ट इंडिया—जिसका सम्पादन सुरेन्द्रनाथ मजूमदार शास्त्री ने किया (कलकत्ता १९२७)—यही हमारा विशेष वर्ण्य-आधार रहा है।

२. क्लासिकल अकाउन्ट्स आफ़ इंडिया (संपादित—आर० सी० मजूमदार)।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अध्याय ६

अभिलेखों से प्राप्त भौगोलिक विवरण

"For the ancient geography connected with the past of India we are really dependent primarily and almost entirely on the epigraphic records." —FLEET

प्राचीन भारतीय भूगोल को जानने का सबसे महत्वपूर्ण साधन अभिलेख हैं। अभिलेखों से ही हम किसी स्थान की ठीक-ठीक स्थिति जान सकते हैं। सबसे प्रथम हमें अखमनी वंशीय फ़ारस के सम्राटों के लेखों में सिंध नदी और इसके पश्चिमी भागों का ज्ञान होता है। इनमें भारत की सीमा पर बसे हुए देशों और जातियों के उल्लेख मिलते हैं। इसके बाद हम ईसा पूर्व की चौथी शताब्दी में आते हैं। पिपरावा बौद्ध लेख में शाक्यों (सकियानं), सोहगौरा ताम्रपत्र लेख में श्रावस्ती (सवतियान) और महास्थान लेख में पुडनगल (पुंड्रनगर=पुंड्रवर्धन) के उल्लेख मिलते हैं। इस लेख के आधार पर ही हम पुंड्रवर्धन की पहचान महास्थान से करते हैं। इसी प्रकार अशोकीय अभिलेखों, खार वेल के हाथीगुंफा लेख, वासिष्ठीपुत्र पुलुमायी के १९वें राज्य वर्ष का नासिक अभिलेख, रुद्रदामन प्रथम का जूनागढ़ शिलालेख, समुद्रगुप्त का प्रयाग स्तंभ लेख और आगे के भी अन्य राजवंशों के लेखों (वाकाटकवंशीय लेख, कलचुरि अभिलेख, प्रतिहार वंशीय लेख आदि) और ताम्रपत्रों में भी महत्वपूर्ण सूचनाएँ मिलती हैं। इस प्रकार इस सामग्री के उपयोग के लिए स्वतन्त्र ग्रन्थ की ही आवश्यकता है। यहाँ हम केवल प्रारंभिक अभिलखों से प्राप्त भौगोलिक विवरणों का विवेचन करेंगे।

परिच्छेद १

अशोकीय लेखों में भौगोलिक उल्लेख

जम्बूद्वीप—अशोक के अभिलेखों में हमें जम्बूद्वीप का उल्लेख मिलता है (लघु शिलालेख—१)। यह बौद्धों का ही जम्बूद्वीप है जिससे हमारा तात्पर्य

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
भारतवर्ष से ही है। अशोक के धर्म-कार्य से जम्बूद्वीप आदर्श बौद्ध देश बन गया था।

जनपद—अशोक के लेखों में चोडा (चोल), पाडा (पांड्य), सतियपुत (सत्यपुत्र), केरलपुतो (केरल), योन (यवन), कंबोज, गंधार, अपरांत, मगध, कलिंग, भोज, पुलिंद, नाभपंक्ति (नाभा), आटविक, रिस्टिक और पेतनिक आदि देशों के उल्लेख मिलते हैं।

ग्राम और नगर—कोसंबि, पाटलिपुत्र, तक्षशिला, उज्जयिनी, सुवर्णगिरि, इसिला, संबोधि, तोसली, समापा और लुम्बिनि ग्राम आदि के उल्लेख मिलते हैं।

खपिंगल पर्वत, खलतिक पर्वत और नागवन आदि के भी उल्लेख हैं। गंगापुपुटक (स्तंभ लेख ५) में गंगा शब्द गंगा नदी का दर्शन देता है।

जनपद और जातियाँ

अंता (प्रथम लघु शिला लेख, १३वां शिला लेख, अंतेषु; दूसरा कलिंग शिला लेख)—इसमें हमें साम्राज्य की सीमा के अन्त (सीमांत) पर स्थित देशों और जातियों का ज्ञान होता है। महाभारत (सभापर्व ५१-१७) में **अन्तवास** (अंत में रहने वालों) और अन्तचार (भीष्म पर्व ९-६८) का उल्लेख है। इसी अर्थ में **प्रचंत** (दूसरा शिला लेख, पाठ में प्रचंत के स्थान पर 'अंता' भी है) अथवा **प्रत्यंत** (समुद्रगुप्त का प्रयाग स्तंभ लेख) भी मिलते हैं।

अपरांत (अपरत, शिला लेख ५)—अपरांत पश्चिम देश भाग का प्रसिद्ध भूखंड था। इसका उल्लेख गौतमी बलश्री के नासिक लेख और रुद्रदामन प्रथम के जूनागढ़ लेख में कुकुर के साथ (कुकुरापरांत) मिलता है। कुकुर पश्चिम भारत में (सौराष्ट्र-काठियावाड़ का) संघ राज्य था। अतः यहाँ इसका तात्पर्य पाश्चात्य लोगों—जातियों और जनपदों—से है। महाभारत में भी अपरांत का उल्लेख है। **भोज** अपरांत की ही एक जाति थी जो वृष्णि संघ का सदस्य था।

अंध्र (१३ शिला लेख)—आन्ध्र प्रसिद्ध और प्राचीन देश—गोदावरी और कृष्णा का मध्य भाग —था। यहाँ इसका उल्लेख पुलिंदों के साथ (अंध्र-पुलिंदेषु) हुआ है।

आटविक (१३ शिला लेख)—अटवि और 'अटावयो' पाठ मिलते हैं जिनसे आटविक लोगों का बोध होता है। सामान्य रूप से इसका अर्थ वन्य

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लोगों से लिया गया है। परन्तु राज्यों को आटविक लोगों से भय बना रहता था। अतः उन्हें वशवर्ती बनाना आवश्यक था। समुद्रगुप्त के प्रयाग स्तंभ लेख में भी आटविकों का उल्लेख है। इसकी पहचान विन्ध्याटवी से करना चाहिये जहाँ पुलिंद, शबर आदि वन्य लोग रहते थे।

कलिंग (१३ शिला लेख) पूर्व देश का शक्तिशाली राज्य था, जिसे अशोक ने जीता था (कलिंगाः विजिताः)। वह महानदी और गोदावरी नदियों के बीच का देश था। (प्लिनी ने कलिंग राज्य को तीन भागों में विभक्त किया है—कलिंग, मध्य कलिंग और महाकलिंग। राजेंद्र लाल मित्रा ने त्रिकलिंग का अर्थ तीन कलिंग—कलिंग, मध्य कलिंग और उत्कलिंग (उत्कल) किया है। इस समय इसकी राजधानी तोसली (धौली) थी।

कंबोज (शिलालेख ५, १३) का उल्लेख योन (यवन) और गंधार के साथ मिलता है। यह ठीक ही है। महाभारत में यवन-कम्बोज का उल्लेख हुआ है। यह पामीर—बदख्शां क्षेत्र था।

गंधार (शिला लेख ५, १३)—सिंधु तटवर्ती प्रसिद्ध देश था जिसकी राजधानी तखसिला थी (कलिंग शिला लेख १) जो मौर्य साम्राज्य का एक प्रादेशिक नगर था।

चोड (चोल), **पाड** (पांड्य), **सत्यपुत्र** और **केरलपुत्र** (केरल) दक्षिण की ओर साम्राज्य की सीमा पर स्थित प्रत्यंत राज्य थे। ये द्रविड़ क्षेत्र के प्रसिद्ध राज्य हैं। **तंबपन्नी** (ताम्रपर्णी) नदी पांड्य देश की नदी है जो दक्षिण समुद्र में गिरती है। कुछ विद्वान तंबपन्नी (ताम्रपर्णी) को सिंहल मानते हैं।

तंबपंनि (शिला लेख २)—डा० भंडारकर तंबपंनि को पांड्य की नदी न मानकर सिंहल मानते हैं (अशोक पृ० २८२)। परन्तु तेरहवें शिला लेख में मिलता है 'पंडिया अवं तंबपंनिया' (पांड्याः यावत् ताम्रपर्णीयाः) जिसका अर्थ 'पांड्य देश में ताम्रपर्णी तक' अर्थ होता है। इससे यह नदी ही मालुम होती है।

नाभक-नाभपंक्ति (शिलालेख १२) की पहचान निश्चित नहीं है। संभवतः इसका सम्बन्ध नाभा-पटियाला (नाभ-पंक्ति) से था।

पुलिन्द (शिलालेख १३)—यहमध्य प्रदेश और महाराष्ट्र की पहाड़ियों पर बसने वाली प्रसिद्ध पर्वतीय—आटविक-जाति थी।

पेतनिक (शिलालेख १३)—पेतनिकों की पहचान पैठानिक—पैथान के लोगों से की गई है जो अश्मक (अस्सक) या **गोदावरी तट-देश** के रहने वाले थे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भोज (शिलालेख १३)—पश्चिमी भारत के कुकुरान्धक संघ में भोज भी सम्मिलित थे।

मगध (भाब्रू शिला लेख) प्रसिद्ध जनपद था। इस समय यह साम्राज्य था। इसकी राजधानी पाटिलपुत्र थी।

योन (शिला लेख २, ५, १३) उत्तर पश्चिम में कम्बोजों के साथ बसे हुए यवन थे।

रिस्टिक (शिलालेख ५) के पाठान्तर लठिक (धौली) और रट्क (मान्सेरा) हैं। लठिक पेरिप्लस का लिरिके मालुम होता है। रट्क रट्ट राज्य है। (स्ट० स्क० पु० पृ० ३६) जिसका संस्कृत रूप राष्ट्र और इसी से महाराष्ट्र (मह+रट्ट) बना। अतः रिस्टिक या राष्ट्रिक का सम्बन्ध महाराष्ट्र से हैं। रामायण में भी ऋष्टिक का उल्लेख है।

सत्यपुत्र (शिलालेख २)—केरल के निकट स्थित दक्षिण का देश है जिसकी पहचान निश्चित रूप से नहीं हो सकी है।

नगर

इसिला (लघु शिला लेख १)—दक्षिण का एक प्रादेशिक नगर था जो इस समय ब्रह्मगिरि है।

उजेनि (कलिंग शिला लेख १)—पेरिप्लस और टॉलमी का ओजेने और अवन्ति की राजधानी थी। इस समय यह मौर्य साम्राज्य की प्रान्तीय राजधानी थी।

कोसंबिय (कौशाम्बी-प्रयाग स्तम्भ लेख)—वत्स देश की राजधानी और मौर्य साम्राज्य का प्रसिद्ध नगर था जहां महामात्र नियुक्त थे।

तखसिला (कलिंग शिला लेख १)—उत्तरापथ का प्रमुख नगर और प्रान्तीय राजधानी थी। यह टैक्सिला है।

तोसली (कलिंग शिला लेख १)—कलिंग का मुख्य नगर था जहां इस विजित प्रदेश का गवर्नर रहता था। यह धौली है। इसके अतिरिक्त **समापा** (जौगढ़, गंजाम जिला) भी कलिंग का एक प्रमुख नगर था।

पाटलिपुत (शिला लेख ५)—पाटलिपुत्र (पटना) है, जो मगधसाम्राज्य की राजधानी थी।

लुंमिनि ग्राम (रुम्मिनदेई स्तम्भ लेख)—यह लुम्बिनी (नैपाल की तराई) है जहां शाक्य मुनि बुद्ध का जन्म हुआ था।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

संबोधि (शिला लेख ८)—बोधि-गया (बुद्ध-गया) है।

सुवर्णगिरि (लघु शिला लेख १)—दक्षिण में कोलार की गोल्ड-फील्ड्स का नाम रहा होगा।

खलतिक पर्वत (दूसरा गुहालेख)—अशोक ने खलतिक पर्वत (गया के निकट बराबर की पहाड़ी) पर आजीविकों के लिए गुफा बनवायी थी।

खपिंगल पर्वत (शिला लेख २, जौगढ़ पाठ)—कलिंग में जौगढ़ (गंजाम जिला) या प्राचीन समापा नगर की पहाड़ी थी जहां अशोक का यह अभिलेख खुदा हुआ है।

नागवन (शिला लेख ५)—हाथियों का वन है। प्राचीन भारत के राजनैतिक और आर्थिक इतिहास में नागवनों का विशेष महत्व था। इसीलिए अर्थशास्त्र, महाभारत और पुराणों में नागवनों का विवेचन किया गया है। भारत में आठ नागवन थे (प्राचीन भारत का भौगोलिक स्वरूप, पृ० १४१-१४६)।

इस प्रकार अशोक के अभिलेख प्राचीन भारत के भूगोल को जानने के महत्वपूर्ण साधन हैं।

परिच्छेद २

खारवेल के हाथीगुम्फा लेख में भूगोल-वर्णन

खारवेल के हाथीगुम्फा लेख में कलिंग (पंक्ति ३, ५) के राजा ने विजयें कीं। और इस तरह लेख में हमें **भरथवस** या भारतवर्ष (पंक्ति १०), **उत्तरापथ**, **त्रमिर** (तामिल) या द्रविड़ (पं० ११), **अंग-मगध** (पं० १२), **मगध** में गंगा नदी (पं० १२), इसकी राजधानी **राजगृह** (पं० ८) और **गोरथ गिरि**=बराबर की पहाड़ियां, गया (पं० ७), रठिक-भोजक (पं० ६), **पड**=पांड्य (पं० १३), **कन्हबेणा** और इसके तट पर स्थित **असिकनगर** (पं०४) **मधुरं**=मथुरा, और **यवन राज** (पं० ८) और **कुमारीपर्वत** (पं० १५) [=उदयगिरि जहाँ लेख लिखा मिला है] के उल्लेख मिलते हैं।

परिच्छेद ३

रुद्रदामन प्रथम के जूनागढ़ लेख में देश-वर्णन

शक महाक्षत्रप रुद्रदामन प्रथम के जूनागढ़ शिला लेख (लगभग १५० ई०) में गिरिनगर (पं० १), के निकट ऊर्जयत गिरि (रैवतक) और इससे

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
निकलने वाली नदियाँ **सुवर्णसिकता** (सोनरेखा) और **पलाशिनी** (पं० ५-६) के पानी को बांध से रोक कर सुदर्शन तडाग बनाया गया था। यह टूट गया, तो फिर रुद्रदामन प्रथम ने इसकी मरम्मत करायी थी। इसका वर्णन करते हुए रुद्रदामन की उपलब्धियों का वर्णन किया गया है। इसने वीर यौधेयों को हराया था। उसके साम्राज्य में बहुत देश सम्मिलित थे।

राज्य-विस्तार

जूनागढ़ शिलालेख में ही रुद्रदामन को स्ववीर्यजित जनपदों वाला अर्थात् अपने पराक्रम से राज्य को जीतकर साम्राज्य का स्थापक और शासक (महाक्षत्रप) कहा गया है (जनपदानां स्ववीर्यार्जितानां)। ये जनपद निम्नलिखित थे—

(पूर्व) आकर, (अपर) अवन्ति, अनूप, नीवृत, आनर्त्त, सुराष्ट्र, श्वभ्र, मरु, कच्छ, सिन्धु, सौवीर, कुकुर, अपरान्त और निषाद (पूर्व्वापराकरावन्त्यनूपनीवृदानर्त्त-सुराष्ट्र-श्वभ्र-मरु-कच्छ-सिन्धु-सौवीर-कुकुरापरांत-निषादादीनाम्)।

इसमें अधिकांश जनपद गौतमीपुत्र शातकर्णि के साम्राज्य में सम्मिलित थे।

आकर—पूर्वी मालवा का परिचायक है जिसकी राजधानी विदिशा (मध्य प्रदेश में) थी। यह विन्ध्य पृष्ठ में स्थित था और इसे दशार्ण भी कहते थे। वैश्यनगर (वेसनगर) भी इसका एक अन्य प्रसिद्ध स्थान था जो यहीं स्थित है।

अवन्ति—यह पश्चिमी मालवा का प्राचीन नाम था जिसकी राजधानी उज्जयिनी थी।

अनूप—अधिकांश विद्वान अनूप और नीवृत को एक ही जनपद मानते हैं, जो उनकी भूल है। अनूप देश को विन्ध्यपृष्ठ में स्थित बताया गया है जो नर्मदा के किनारे स्थित था और हैहयों का प्रसिद्ध नगर माहिष्मती इसकी राजधानी थी। इसलिए अनूप देश हैहय देश भी कहलाता था। अवन्ति के निवासी भी हैहयों की एक शाखा थे (स्टडीज इन स्कन्द पुराण पार्ट वन पृ० ९३-९४)। राजा महिष के द्वारा स्थापित माहिष्मती नर्मदा के तट पर स्थित थी जिसकी पहचान डा० सरकार और बी० सी० लॉ द्वारा आधुनिक मान्धाता (नीमाड प्रान्त, म० प्र०) से की गई है, परन्तु अन्य विद्वान इसकी पहिचान

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इन्दौर से ४० मील दक्षिण नर्मदा के तट पर स्थित महेश्वर अथवा महेश से करते हैं। यह चेदि मण्डल में स्थित कलचुरियों की राजधानी थी (अनर्घ-राघव, VII, पृ० ४७८)।

नीवृत—स्कन्दपुराण की कुमारिकाखण्ड देश-तालिका में नीवृत को एक मण्डल कहा गया है जिसमें ४ करोड़ गाँव सम्मिलित थे। यहाँ, जूनागढ़ लिपि में भी इसका नाम जनपद की तालिका में दिया गया है। यह पश्चिमी भारत में स्थित था (स्टडीज इन स्कन्द पुराण, पार्ट १, पृ० २९)।

वृष्णि के पुत्र का नाम निवृति था (वृष्णेश्च निवृतिः पुत्रो) (गरुण पुराण, १।१३९।३१)। निवृति से बसाया हुआ या शासित देश ही नीवृत कहलाया, जिसको पश्चिम भारत में वृष्णियों के राज्य से ही अथवा उसके किसी भाग से इसका तादात्म्य कर सकते हैं।

आनर्त—उत्तरी गुजरात था जिसकी राजधानी द्वारिका थी।

सुराष्ट्र—(सौराष्ट्र या काठियावाड़)।

श्वभ्र (साभ्रमती की घाटी)—इस प्रदेश में खेटक (आधुनिक खेड या केरा प्रान्त) भी सम्मिलित था।

मरु—राजस्थान का प्रसिद्ध मारवाड़ देश है जिसे मरु-मण्डल, मरु भूमि अथवा मरुस्थल भी कहा गया है। जल और वनस्पति की कमी के कारण ही इसका यह नाम पड़ा।

कच्छ—यह प्राचीन काल में कच्छेल्ल भी कहलाता था। यह आधुनिक कच्छ ही है।

सिन्धु-सौवीर—(सिन्धु की निचली घाटी)।

कुकुर—सिन्धु और पारियात्र पर्वत के बीच स्थित भूखण्ड है जिसमें राज-पूताना और उत्तरी गुजरात के कुछ भाग सम्मिलित थे।

अपरान्त—उत्तरी कोंकण।

निषाद—इन्हें विन्ध्य पर्वत का निवासी कहा गया है। डा० रायचौधरी इन्हें पश्चिमी विन्ध्य और सरस्वती की घाटी में स्थित बताते हैं।

पश्चिमी भारत में समुद्र तट पर रहने वाली यह एक जाति थी। इससे रुद्रदामन का समुद्रपर्यन्त पृथ्वी पर आधिपत्य सिद्ध होता है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

यौधेय—जूनागढ़ शिलालेख में ही बताया है कि रुद्रदामन ने उन यौधेयों को पराजित किया था, जिन्हें सम्पूर्ण क्षत्रियों ने अपना वीर मान लिया था। इसलिए जो अपने को अजेय मानते हुए उद्धत स्वभाव के हो गये थे, रुद्रदामन ने बलपूर्वक उनका उन्मूलन किया (सर्व्वक्षत्राविष्कृत-वीर-शब्द-जातोत्सेका-विधेयानां यौधेयानां)। यौधेय एक प्राचीन प्रसिद्ध गण जाति थी जिसने इतिहास में अपनी भूमि-भक्ति और सैन्य शक्ति से विदेशियों के विरुद्ध युद्ध करते हुए अपने देश की रक्षा की थी। सिक्कों के आधार पर ऐसा माना गया है कि उन्होंने कुषाणों के विरुद्ध एक संघ बनाया था। सभी क्षत्रियों ने उन्हें अपना नेता चुना था।

परिच्छेद ४

वासिष्ठी पुत्र पुलुमायी के नासिक लेख में भौगोलिक-वर्णन

गौतमीपुत्र सातकर्णी एक महान विजेता था, जिसका प्रभुत्व दक्षिणापथ के विभिन्न राज्यों (जनपदों) पर स्थापित हो चुका था। यह प्रभुत्व तीन समुद्रों—पूर्वपयोधि, पश्चिम सागर और दक्षिण समुद्र—से घिरे हुए दक्षिणापथ पर स्थापित हो गया था, क्योंकि उसकी विजय-वाहिनी (सेना) के घोड़ों ने इन समुद्रों का पानी पिया था।

सातवाहन प्रबन्ध से ही ज्ञात होता है कि सातवाहनवंशीय राजा हाल (नं० १७) ने दोनों मथुरा नगरों को—एक दक्षिण में पाण्ड्य देश का मदुरा और दूसरा उत्तर प्रदेश में वृन्दावन के निकटस्थ मथुरा—को अपनी सेनाओं द्वारा जीता था (प्रबन्ध कोश, पृ० ७२)। इस समय मथुरा शकों और कुषाणों के अधिकार में था। गौतमीपुत्र ने शक-यवन-पह्लवों को भी पराजित किया था। ऊपर कहा गया है कि इन जातियों का रिपु-संघ बना था। इसी सातवाहन प्रबन्ध में सातवाहनवंश के प्रभुत्व का वर्णन किया गया है—

सच्चं भण गोदावरि ! पुव्व समुद्देण साहिया संती।
सालाहण कुलसरिसं जइ ते कूले कुलं अत्थि॥
उत्तरओ हिमवंतो दाहिणओ सालवाहणो राया।
समभारभरवकंता तेण न पल्लत्थए पुहवी॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

निश्चयतः अन्य सातवाहन सम्राटों की भाँति गौतमीपुत्र सातकर्णी भी दक्षिणापथपति था जैसा कि उसके साम्राज्य में सम्मिलित जनपदों और पर्वतों की स्थिति से सिद्ध होता है।

गौतमीपुत्र के साम्राज्य में असिक, असक, मुलक, सुरठ, कुकुर, अपरान्त, अनुप (अनूप), विदर्भ, आकर और अवन्ति सम्मिलित थे (असिकअसकमुलक-सुरठकुकुरापरान्तअनुपविदभआकरावन्तिराजस)।

असिक—इसकी पहचान अनिश्चित है। सेनार्ट और सरकार (डी० सी०) इसकी पहचान ऋषिक से करते हैं जिसका उल्लेख बृहत्संहिता में भी मिलता है। खारवेल के हाथी गुम्फा लेख में कृष्णवेणा के तट पर स्थित असिकनगर या ऋषिकनगर का उल्लेख मिलता है और यह असक (अस्सक) के साथ ही यहाँ पर उल्लिखित हुआ है। अतः, सम्भव है, कि ये दक्षिण में गोदावरी और कृष्णा नदियों के बीच स्थित था।

असक—इसे अश्मक या अस्सक अथवा गोदावरी-तट देश माना गया है।

मुलक—"असक और मुलक स्पष्ट ही प्राचीन अश्मक और मूलक हैं, जिनमें से मूलक की राजधानी प्रतिष्ठान ही सातवाहनों की राजधानी थी (भा० इ० रू०, पृ० ८६१)।"

सुरठ—सुराष्ट्र (सौराष्ट्र) या काठियावाड़ है। अर्थशास्त्र में सुराष्ट्र को एक संघ बताया गया है (अर्थशास्त्र, ११।१, पृ० ६२६)।

कुकुर—"कुकुर नाम का संघ कौटिल्य के समय में भी था।" पुराणों में भी इसका उल्लेख मिलता है (पद्म, आदि खंड, ६।५५, महाभारत, भीष्म पर्व, ९।६०)। बृहत्संहिता में पारियात्र पर्वत के साथ इसका उल्लेख मिलता है (कुकुराश्च पारियात्रनगः; बृहत्संहिता, १४।४)। डा० गोपालचारी ने इसकी पहचान पूर्वी राजपूताना से की हैं। सम्भवतः यह पारियात्र प्रदेश था। कुछ लोगों ने इसकी पहचान उत्तरी काठियावाड़ से की है। परन्तु वह भूखंड आनर्त कहलाता था। कुकुर आनर्त्त का पड़ोसी राज्य था।

अपरान्त—यह उत्तरी कोंकण है। यह पश्चिमी घाट और समुद्र के बीच स्थित मैदान का उत्तरी भाग है। कन्हेरी के एक लेख में भी इसका उल्लेख मिलता है।

अनूप—यह माहिष्मती के आस-पास का भू-भाग है जो नर्मदा नदी के उत्तर में स्थित था। पुराणों में इसे विन्ध्यपृष्ठ (वायु, पूर्वार्द्ध, ४५।१३४) पर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नर्मदा की घाटी में स्थित कहा गया है। डे महोदय इसकी पहचान दक्षिण मालवा से करते हैं (ज्यॉग्रफ़िकल डिक्शनरी, पृ० ८)।

विदर्भ—अति प्रसिद्ध प्राचीन राज्य है जो इस समय बरार कहलाता है। इसमें पयोष्णी (पूर्णा नदी) की घाटी और ताप्ती का मध्य भाग सम्मिलित था। यहाँ के निवासी भोज कहलाते थे और उनका सम्बन्ध पेतनिकों (पैठानिकों) से भी था।

आकर पूर्वी मालवा था जिसकी राजधानी विदिशा (मध्य प्रदेश) थी।

अवन्ति पश्चिमी मालवा था जिसकी राजधानी उज्जयिनी थी।

गौतमीपुत्र सातकर्णी को विझ (विन्ध्य), छवत (ऋक्षवत्=सतपुड़ा की पहाड़ियाँ), पारियात्र (पश्चिमी विन्ध्य), सह्य (पश्चिमी घाट का उत्तरी भाग, सह्याद्रि), कन्हगिरि (कन्हेरी, जिसे कृष्णशैल भी कहा गया है), सिरिटन (श्री पर्वत), मलय (पश्चिमी घाट का दक्षिणी भाग जो नीलगिरि के दक्षिण में है), महिद (महेन्द्र पर्वत, महानदी और गोदावरी के मध्यस्थ पूर्वी-घाट), सेटगिरि (श्रेष्ठगिरि) और चकोर नाम के पर्वतों का स्वामी कहा गया है। इन पर्वतमालाओं और जनपदों की स्थितियों से सिद्ध होता है कि गौतमी पुत्र का अधिकार सम्पूर्ण दक्षिणापथ पर निर्विन्ध्या-सिप्रा-वेतवा नदियों से लेकर कुमारी अन्तरीप तक फैला था।

गौतमीपुत्र सातकर्णी को वेनाकटक-स्वामी कहा गया है (वेनाकटक-स्वामि गोतमिपुतो सिरि सदकणि; गौतमीपुत्र सातकर्णी का नासिक लेख, राज्य-संवत्सर १८, पंक्ति १)। वेनाकटक देश की पहचान कृष्ण-वेणी-तट देश से की जानी चाहिए। यहीं असिकनगर भी स्थित था। अतः यही असिक राज्य भी था। बृहत्संहिता, और महाभारत में बेणातट देश के उल्लेख हैं (अवस्थी, स्टडीज़ इन स्कन्द पुराण, पार्ट वन, पृ० ५८)।

साथ ही, गौतमी पुत्र को 'गोवधनस' (गोवर्धनस्य) स्वामी (गौतमी पुत्र सातकर्णी का नासिक लेख, राज्य संवत्सर १८, पंक्ति १) अर्थात् गोवर्धन का स्वामी भी कहा गया है। गौतमी पुत्र के साम्राज्य में गोवर्धन क्षेत्र भी सम्मिलित था। गोवर्धन की पहचान नासिक से की गई है। पुराणों की जनपद-तालिकाओं में 'नासिक्याः' (सरकार, ज्यो०ऐ०मे०इ०, पृ० ३२) या नासिक जनपद का भी उल्लेख मिलता है। पुराणों में इस क्षेत्र की, जिसकी राजधानी गोवर्धनपुर (नासिक) थी, विशेष महिमा बतायी गई है—

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सह्यस्य चोत्तरे यस्तु यत्र गोदावरी नदी ।
पृथिव्यामपि कृत्स्नायां स प्रदेशो मनोरमः ॥
गोवर्धनपुरं रम्यं भार्गवस्य महात्मनः ॥
(मार्कण्डेय पु०, ५४।३४-३५)

यह मनोरम देश सह्याद्रि के उत्तर में स्थित था जहाँ गोदावरी नदी बहती थी और वहाँ सुन्दर गोवर्धनपुर स्थित था। अस्तु स्पष्ट है कि यह मनोरम प्रदेश भी गौतमीपुत्र के साम्राज्य में सम्मिलित था। नासिक में उसके तथा उसके पुत्र के लेख प्राप्त हुए हैं। वासिष्ठी पुत्र का नासिक लेख (राज्य वर्ष १९), भी यहीं मिला है।

परिच्छेद ५

समुद्रगुप्त के प्रयाग स्तंभ लेख में भूगोल-वर्णन

यह समुद्रगुप्त के 'युद्ध और सन्धिमंत्री' हरिषेण द्वारा रचित प्रशस्ति काव्य है। इसका महत्व लिपियों में ही नहीं वरन् भारतीय संस्कृत साहित्य में भी है। इसके विभिन्न वृत्त कपोल कल्पित नहीं हैं, यद्यपि उनमें कुछ अतिशयोक्ति अवश्य ही है। हरिषेण युद्ध मंत्री होने के कारण समुद्रगुप्त की विजय-यात्राओं में अवश्य उपस्थित रहा होगा। इसीलिए उनका हरिषेण कृत वर्णन अत्यन्त प्रामाणिक है। भाषा और अलंकार की दृष्टि से भी यह लिपि अति सुन्दर है।

इसमें समय का उल्लेख नहीं है। डा० फ्लीट की उक्ति कि इस स्तम्भ का प्रतिष्ठान समुद्रगुप्त की मृत्यु के बाद हुआ मान्य नहीं है।

गद्य-पद्य मिश्रित काव्यमय ३३ पंक्तियों में इसकी रचना हुई है। इसका बहुत अंश नष्ट हो चुका है।

समुद्रगुप्त की विजयें

पिता ने आदेश दिया था कि वह समग्र पृथिवी का पालन करे। (पाहि निखिलां उर्वीम् इति)। गुप्त वंश के प्रथम महाराजाधिराज और गुप्त साम्राज्य के प्रस्थापक चन्द्रगुप्त प्रथम की उपर्युक्त उक्ति का आश्रय यही था कि यह भारत भूमि का आसमुद्र क्षितीश-एकराट्-बने और इस प्रकार से राजनैतिक एकता को स्थापना करे। बिना पृथिवी की विजय किये हुए इसका पालन कैसे हो सकता था। अस्तु दिग्विजय आवश्यक थी। उसकी विजयों को हम तीन भागों में विभाजित कर सकते हैं—

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१. दक्षिण-विजय (दक्षिणापथ विजय),

२. आर्यावर्त विजय,

३. आटविक भू-भाग की विजय।

दक्षिणापथ विजय—अच्युत, नागसेन, गणपतिनाग (?) तथा कोटकुलज राजा को पराजित कर उत्तरी भारत में शान्ति और शासन की स्थापना करने के बाद समुद्रगुप्त दक्षिणापथ की विजय यात्रा पर चल पड़ा। माहिष्मती और नर्मदा के दक्षिण का भूभाग दक्षिणापथ कहलाता था।

समुद्रगुप्त से पराजित दक्षिण के निम्नलिखित बारह राजाओं का उल्लेख हरिषेण ने प्रयाग स्तम्भ लेख में किया है—

(१) **कोसल का महेन्द्र (कौसलक महेन्द्र)**—यहाँ कोसल से अभिप्राय दक्षिण कोशल से है जिसमें आधुनिक जबलपुर, रायपुर, बिलासपुर और सम्भलपुर प्रान्त सम्मिलित थे। इसकी राजधानी श्रीपुर थी जहाँ आजकल रायपुर जिले का सिरपुर नामक नगर बसा हुआ है।

(२) **महाकान्तार का व्याघ्रराज (महाकान्तारक व्याघ्रराज)**—महाकान्तार मध्य प्रदेश के वन्य प्रदेश—पूर्वी गोंडवाना के लिए प्रयुक्त हुआ है। व्याघ्रपदा नाम की नदी का भी उल्लेख स्कन्द पुराण के वेंकटाचल माहात्म्य में अध्याय ३४, श्लोक ३७ में आता है—

अथ सुवर्णमुखर्याव्याघ्रपदाह्वय नदीसंगमः॥

यह सुवर्णमुखरी नदी संभवत' उड़ीसा में बहती है। स्कन्द महापुराण में (श्री वैष्णव खंड में वैशाख मास माहात्म्य, अध्याय १७ श्लोक ९) कांतार का भी उल्लेख आता है—

पंपातीरे द्विजः कश्चिच्छंखोनाम महायशः।
गुरौ सिंह गते चागान्नदीं गोदावरीं शुभाम्॥८॥
तीर्त्वा भीमरथीं पुण्यां कांतारे कण्टकाचले।
निर्जले निर्जने घोरे वैशाखे तपकर्षितः॥९॥

इसी प्रकार व्याघ्रपुर का भी उल्लेख आता है। व्याघ्रपुर की स्थिति तिल्लिकानन में बतलाई गई है : "व्याघ्रपुरंनाम तिल्लिकाननमध्यगम्"

अरुणाचल माहा० उत्तरार्ध अ० २—४२

कान्तार का विस्तार भी अरुणाचल पर्यन्त बतलाया गया है (अरुणाचल पर्यन्त कान्तारं; अरुणाचल माहात्म्य, उत्तरार्ध, अध्याय २२-९)। अरुणाचल स्थान दक्षिण प्रान्त में कान्ची के नैऋत्य कोण में 'तिरवण्णमले' नामक ग्राम

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

में ही विख्यात है। तिरुवण्णमले मद्रास से दक्षिण विलीपुर जंकशन के पश्चिम में विद्यमान है।

(३) **कोराल (केराल) का मण्टराज (कौरालक मण्टराज)**—कोराल का तादात्म्य दक्षिणी भारत में स्थित कोराड से किया गया है। स्कन्दपुराण में कोरला (वा कोरिला) का उल्लेख प्राप्त होता है। वहाँ इसे नर्मदा के उत्तर स्थित बताया गया है। यहीं कोरिलापुर (स्कन्द पु०, ५।३।२३१।४६) का भी उल्लेख प्राप्त होता है। इससे कोरिला अथवा कोराल देश नर्मदा की ऊपरी घाटी में स्थित सिद्ध होता है। डा० मुकर्जी मध्य प्रदेशीय चान्दा जिले के कूलूट से इस कातादात्म्य करते हैं।

(४) **पिष्टपुर का महेन्द्रगिरि (पैष्टपुरक महेन्द्रगिरि)**—पिष्टापुर का तादात्म्य मद्रास प्रदेश के गोदावरी प्रान्त में स्थित पिठापुरम से किया गया है।

(५) **कोट्टूर का स्वामिदत्त (कौट्टूरक स्वामिदत्त)**—कोट्टूर दक्षिण में गंजाम जिले का कोठूर ही है।

(६) **एरण्डपल्ल का दमन (ऐरण्डपल्लक दमन)**—डा० फ्लीट के अनुसार एरण्डपल्ल खानदेश में एरण्डोल ही है। परन्तु आजकल गञ्जाम जिले में स्थित चिकाकोल के समीप स्थित एरण्डपल्ली से एरण्डपल्ल की समता की जाती है।

नर्मदा की एक प्रसिद्ध सहायक नदी एरंडी का उल्लेख प्राप्त होता है। संभवतः एरण्डपल्ल देश भी एरण्डी की घाटी के लिए ही प्रयुक्त हुआ है।

(७) **काञ्ची का विष्णुगोप (काञ्चेयक विष्णुगोप)**—काञ्ची पल्लवों की प्रसिद्ध राजधानी (आधुनिक काञ्जीवरम्) ही थी। इस देश की पहचान तोण्डमण्डलम से की जा सकती है।

(८) **अवमुक्त का नीलराज (अवमुक्तक नीलराज)**—डा० जायसवाल के अनुसार नीलराज गोदावरी के समीप अव देश का राजा था। संभवतः यह गोदावरी जिले में नीलपल्ली नामक प्राचीन बन्दरगाह से सम्बन्धित है।

(९) **वेङ्गी का हस्तिवर्म (वैंगेयक हस्तिवर्म)**—वेङ्गी राज्य का आधुनिक नाम मद्रास प्रदेश में स्थित वेग्गी या पेडवेग्गी है।

(१०) **पालक्क का उग्रसेन (पालक्कक उग्रसेन)**—पालक्क राज्य गुन्तुर अथवा नेलोर जिलों (मद्रास प्रदेश) में पालक्कड ही है। परन्तु डा० फ्लीट तथा डा० स्मिथ इसे पालघाट मानते हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(११) देवराष्ट्र का कुबेर (दैवराष्ट्रक कुबेर)—डा० फ्लीट और डा० स्मिथ के अनुसार देवराष्ट्र महाराष्ट्र ही था। परन्तु इसका तादात्म्य विजगापट्टम जिला के येलमंचिली तालुका से किया गया है।

(१२) कुस्थलपुर का धनञ्जय (कौस्थलपुरक धनञ्जय)—डा० बार्नेट के अनुसार यह उत्तरी अर्काट में पोलूर के समीप कुट्टलूर ही है। स्मिथ और फ्लीट महोदय इसे द्वारका बताते हैं।

दक्षिणापथ के इन राजाओं को पराजित कर उनके राज्यों में उन्हें पुनः प्रतिष्ठित कर अनुग्रहीत किया। उनकी यह दक्षिणापथ विजय ही दिग्विजय कही जा सकती है। यही उनकी धर्म विजय थी।

आर्यावर्त विजय

आर्यावर्त—हिमालय और विन्ध्य के बीच तथा पूर्वी और पश्चिमी समुद्रों के बीच स्थित था।

"अनेकार्यावर्तराजप्रसभोद्धरणोद्वृत्तप्रभावमहतः"

आर्यावर्त के राजाओं का बलपूर्वक ग्रहण कर अथवा बलपूर्वक उनको नष्ट कर अपने प्रभाव को बढ़ाया था जिसने ऐसा था वह समुद्रगुप्त।

दक्षिणापथ के विजय-अभियान को प्रस्थान करने के पूर्व ही उसने कई आर्यावर्त के राजाओं को पराजित किया था। इन पराजित राजाओं का उल्लेख इसीलिए दक्षिणापथ के पराजित राजाओं के पहले हुआ है: "उद्वेलोदित बाहुवीर्यरभसादेकेन येन क्षणादुन्मूल्याच्युतनागसेनगणपत्यादीन् नृपान् सङ्गरे" (डा० सरकार, सेलेक्ट इन्सक्रिप्शन्स के अनुसार प्रयाग लेख)।

उसने युद्धों में अपने बड़े-बड़े शत्रुओं को जीता। क्षण मात्र में अच्युत, नागसेन और गणपतिनाग (?) को युद्ध में अपने बाहुबल से जड़ से उखाड़ दिया तथा जिसने कोटकुल में उत्पन्न हुए (नृप) को सेना द्वारा पुष्पपुर में खेलते हुए ही ग्रहण करवा लिया।

'दंडैर्ग्राहयतैव कोटकुलजं पुष्पाह्वये क्रीडता'

इस प्रकार वह उत्तरी भारत में शान्ति और शासन व्यवस्था स्थापित करने के बाद दक्षिणी भारत की विजय को चला था। दक्षिणी भारत की विजय के बाद उत्तरी भारत में विद्रोही और विरोधी वातावरण देखकर वहाँ के राजाओं का प्रसभोद्धरण द्वारा उसने असुर विजय भी प्राप्त की। ये पराजित राजा निम्नांकित थे—

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh
State Museum Library Lucknow 7599

रुद्रदेवमतिलनागदत्तचन्द्रवर्मगणपतिनागनागसेनाच्युतनन्दिबलवर्माद्यनेक-आर्यावर्तराजप्रसभोद्धरणोद्वृत्तप्रभावमहतः ।

रुद्रदेव, मतिल, नागदत्त, चन्द्रवर्मा, गणपतिनाग नागसेन, अच्युत, नन्दी और बलवर्मा।

रुद्रदेव का तादात्म्य सिद्ध नहीं किया जा सकता। कुछ विद्वानों ने इसकी पहचान वाकाटक राजा रुद्रसेन द्वितीय से है जो वस्तुतः दक्षिण का राज्य है।

मतिल का भी तादात्म्य सिद्ध नहीं हो सका। बुलन्दशहर में एक मुहर मिली है जिसमें 'श्रीमत्तिलस्य' लिखा है। उनका तादात्म्य इसी मत्तिल से किया गया है। **नागदत्त** नागवंश का था।

चन्द्रवर्मा—इनके विषय में बहुत मत हैं। कुछ का मत है कि सुसुनिया प्रस्तर लेख के ही चन्द्रवर्मन् हैं। परन्तु महामहोपाध्याय हरप्रसाद शास्त्री के अनुसार यह मेहरौली स्तम्भ लेख का चन्द्र है। परन्तु डा० रायचौधरी तथा अन्य विद्वानों ने इसे स्वीकार नही किया है। डा० भन्डारकर ने इसको सुसुनिया लेख का चन्द्रवर्मन् ही माना है।

गणपतिनाग नाग राजाओं में सर्वश्रेष्ठ था। इनका पुराणों में उल्लेख प्राप्त है। मथुरा, पवाया और भिलसा में उनकी अनेक मुद्राएँ भी प्राप्त हैं।

नागसेन भी एक नाग राजा ही था। हर्षचरित के अनुसार पद्मावती (पवाया, ग्वालियर में नरवर के समीप) यह में नाश को प्राप्त हुआ क्योंकि उसके भेद को सारिका ने प्रकट कर दिया था।

नन्दी भी सम्भवतः नाग राजा ही था।

अच्युत सम्भवतः अहिछत्र (रामनगर, बरेली जिला) का था, क्योंकि यहाँ ही से प्राप्त सिक्कों पर 'अच्यु' लिखा हुआ प्राप्त होता है।

बलवर्मा का तादात्म्य निश्चित रूप से नहीं हुआ है। कुछ विद्वानों का अनुमान है कि हर्ष के समकालीन राजा भास्करवर्मन् का पूर्वज ही बलवर्मन है। परन्तु कामरूप का प्रत्यन्त राज्यों में उल्लेख होने से इस मत की पुष्टि नहीं होती है।

आटविक राज्य

आर्यावर्त के राज्यों की विजय के बाद आटविक राज्यों का उल्लेख होता है। उसने इन सभी राजाओं को अपना सेवक (वशवर्ती) बनाया—

"परिचारिकीकृतसर्वाटवीकराजस्य"

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जिस अटवी प्रदेश का उल्लेख यहां आया है वह संभवतः बघेलखंड से लेकर उत्कल के वन्य प्रदेश तक फैला हुआ था। यहाँ शबरों की पल्लियाँ और उनका ही आधिपत्य था। यह विन्ध्याटवी का ही एक भाग था।

प्रत्यन्त राज्य

इसके बाद प्रत्यन्त राज्यों का उल्लेख है :

समतटडवाककामरूपनैपालकर्तृपुरादिप्रत्यन्तनृपतिभिः

समतट—समुद्रतटीय पूर्वी बंगाल था जिसकी राजधानी कोमिल्ला के समीप कर्मान्त अथवा बडकान्त थी। मंजुश्रीमूल कल्प में इसका कई बार उल्लेख आता है।

डवाक—डा० के० यल० बरुआ के अनुसार यह आसाम की कोपिली घाटी है।

कामरूप—आसाम है।

नैपाल—आधुनिक नैपाल ही है।

कर्तृपुर—कुमायूं, गढ़वाल, रुहेलखंड और शिवालिक के भू-भाग हैं।

उपर्युक्त सीमान्त राजाओं के अतिरिक्त कुछ सीमान्त जातियों ने भी समुद्रगुप्त के स्वामित्व को स्वीकार कर लिया था। ये जातियाँ निम्न-लिखित हैं :

मालवार्जुनायनयौधेयमाद्रकाभीरसनकानीककाकखरपरिकादिभिः......

मालव, अर्जुनायन, यौधेय, मद्रक, आभीर, प्रार्जुन, सनकानीक, काक, खरपरिक आदि।

मालव—मालव संभवतः ग्रीक इतिहासकारों द्वारा उल्लिखित मल्लवाय ही हैं जिनका सिकन्दर के साथ संघर्ष हुआ था।

अर्जुनायन—इनके सिक्के भरतपुर व अलवर राज्य में मिले हैं अतः यह जाति इसी भू भाग में निवास करती थी।

यौधेय—यह एक आयुधजीवी जाति थी जो सतलज और यमुना के तटों पर रहती थी। पूर्वी पंजाब से लेकर सहारनपुर और देहरादून जिलों तक बसी हुई थी। इनकी एक लिपि भरतपुर में भी मिली है और यह वही यौधेय हैं जिनका संघर्ष शक महाक्षत्रप रुद्रदामन प्रथम से हुआ था।

मद्रक—यह साकल (स्याल कोट) के माद्र हैं।

आभीर—राजपूताना के दक्षिण पश्चिम और महाराष्ट्र के उत्तर में बसे हुए थे। आजकल के आहीरों से संभवतः इनका सम्बन्ध है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रार्जुन—डा० स्मिथ के अनुसार नरसिंहपुर के आसपास इनका स्थान रहा होगा। डा० भन्डारकर के अनुसार उनका निवास स्थान मध्य प्रदेश के नरसिंहगढ़ में रहा होगा।

सनकानीक—ये मालवा के पूर्व में आकर देश (पूर्व मालवा) से ही सम्बन्धित थे। चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य के गुप्त संवत् ८२ के उदैगिरि लेख में सनकानिक महाराज का उल्लेख है।

काक—भूपाल प्रान्त में सांची के आसपास ही इनका स्थान रहा होगा। चन्द्रगुप्त द्वितीय के सांची अभिलेख (गुप्त संवत ९३) में सांची को काकनाद बोट कहा गया है। सांची का समीपस्थ गाँव भी काकरखेड़ा कहा जाता है।

खरपरिक—ये संभवतः मध्य प्रदेश के दमोह प्रान्त में रहते थे। पद्मपुराण में इनको म्लेच्छ कहा गया है। उपर्युक्त सभी प्रत्यन्त नृपतिगण और जातियाँ समुद्रगुप्त का प्रचण्ड शासन पालन करते थे।

विदेशों में प्रभाव

विदेशी राजाओं से भी समुद्रगुप्त का परस्पर सम्बन्ध था। उन्होंने भी समुद्रगुप्त के स्वामित्व को स्वीकार किया था—

१. **दैवपुत्र शाहि शाहानुशाहि**—यह उपाधि कुषाणों द्वारा धारण की गई थी। अतः पश्चिमोतर में रहने वाले कुषाण राजा का ही परिचायक यह समास-पद है।

२. **शक मुरुण्ड**—संभवतः शक क्षत्रपों के लिए प्रयुक्त हुआ है। मुरुण्ड शक शब्द है जिसका अर्थ है स्वामी। 'स्वामी' शकक्षत्रपों की एक उपाधि थी।

३. **सैंहलक**—लंका (सिंहल) के राजा को सूचित करता है।

४. **सर्वद्वीपवासिभिः**—सभी द्वीपों के निवासियों ने समुद्रगुप्त की आधीनता बहुभेंटोपहार देकर स्वीकार कर ली थी। रामायण में हमें सर्वद्वीपों का उल्लेख भी इसी क्षेत्र, द्वीपान्तर की ओर संकेत करता है—

> **आममीनाशनाश्चापि किराता द्वीपवासिनः।**
> **गिरिभिर्ये च गम्यन्ते प्लवनेन प्लवेन च॥**
> **यत्नवन्तो यवद्वीपं सप्तराज्योपशोभितम्॥**
> **सुवर्ण रूप्यक द्वीपं सुवर्णाकरमण्डितम्॥२॥**

इस प्रकार यह संकेत करता है कि जावा, आदि पूर्वी द्वीप समूहों में समुद्रगुप्त ने अपना यश विस्तारित कर दिया था। इन विदेशी राजाओं ने

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विभिन्न प्रकार से आत्मनिवेदन, कन्याओं की भेंट, अपने राज्य में शासन करने के लिए गुप्त-गरुड़-मुद्रा से अंकित राजशासन की याचना द्वारा समुद्र-गुप्त की सेवा की थी।

इस प्रकार समुद्रगुप्त ने दिग्विजय प्राप्त कर पृथिवी को एक बन्ध में बाँध दिया था। पृथिवी पर उनकी बराबरी कर लड़ने वाला अर्थात् प्रतिद्वंद्वी नहीं रहा (पृथिव्यामप्रतिरथः)। इस प्रकार उसका दिग्विजय समाप्त हुआ जिसके परिणामस्वरूप पृथिवी भारत भूमि में सार्वभौम सत्ता की स्थापना और राजनैतिक एकता की प्रतिष्ठा हुई।

समुद्रगुप्त के **एरान लेख** में एरिकण प्रदेश, चन्द्रगुप्त II के **उदयगिरि लेख** (नं० २) में पाटलिपुत्र, **चन्द्र के मेहरौली** अभिलेख में वंग, सिन्धु नदी के सात मुखों, बाह्लीक, दक्षिण जलनिधि और विष्णुपद गिरि, **कुमार गुप्त I** के दामोदरपुर ताम्रपत्रों में पुंड्रवर्धन भुक्ति और इसमें स्थित कोटिवर्ष विषय तथा उसके मंडसोर लेख में लाट, दशपुर, कैलास और सुमेरु के उल्लेख मिलते हैं। **स्कन्द गुप्त** के जूनागढ़ शिला लेख में रैवतक (गिरनार) पर्वत से समुद्रगामिनी पलाशिनी और सुवर्णसिकता (सुवर्ण रेखा) नदियों का उल्लेख मिलता है। स्कन्दगुप्त के भिटरी अभिलेख में 'श्रोत्रेषु गांगध्वनि' का उल्लेख अत्यन्त महत्वपूर्ण है। यह गंगा में गोमती के संगम से उत्पन्न शब्द का परिचायक है। भिटरी के निकट गोमती-गंगा का पुण्य संगम है जिसे भर्तृस्थान कहा जाता था। भर्तृ का ही बिगड़ा रूप भिटरी है। स्कन्दगुप्त के इन्दौर ताम्रपत्र में अन्तर्वेदी का उल्लेख है। बुध गुप्त के एरान लेख में कालिन्दी और नर्मदा के मध्यस्थ देश का उल्लेख है। इस प्रकार स्पष्ट है कि गुप्त अभिलेखों में महत्व-पूर्ण भौगोलिक उल्लेख हैं।

———

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अध्याय १०

रामायण में वर्णित भूगोल

महीदेवी (भारतभूमि)—रामायण एक धार्मिक काव्य है जिसमें वाल्मीकि ने राम चरित्र का चित्रण किया है। इस काव्य में राम को देश के विभिन्न अंचलों में घूमते हुए पाते हैं। उनका मही देवी के साथ आत्मीय सम्बन्ध था (उत्तर काण्ड १०९-६)। रामायण में धरणी देवी (उत्तर काण्ड ९७-१९) को दिव्य स्वरूप में चित्रित पाते हैं। पर्वतों और वनों (उत्तर काण्ड, ९८-१०) के सहित यही वसुधा देवी (उत्तर काण्ड ९८-६) थी। यह वसुन्धरा ही भारत भूमि थी जिसमें द्राविड, सिन्धु-सौवीरः सौराष्ट्र, दक्षिणापथ, वंगांगमगध, मत्स्य, काशिकोशल आदि देश सम्मिलित थे (अयोध्या १०।३६-३७)। रामायण में इसका सुन्दर काव्यमय चित्र उपस्थित किया गया है कि यह सम्पूर्ण पृथ्वी मानों समुद्र को माला की तरह धारण किए हुए हैं (समुद्र-मालिनीं सर्वां पृथिवीम्; बालकांड ३९-१३)। यही वर्णन महाभारत, पुराणों और अभिलेखों में भी मिलता है। इस प्रकार इस काव्य में भी भूगोल (पृथिवी) का दर्शन होता है। बालि नित्य प्रति पश्चिम, पूर्व, दक्षिण और उत्तर समुद्रों से घिरी हुई पृथिवी की प्रदक्षिणा करता था (किष्किन्धा काण्ड ११-४)। यहां भारत का उल्लेख नहीं मिलता है। परन्तु यही मही देवी ही भारतभूमि थी।

कर्म भूमि—रामायण में कहा गया है कि इस कर्म भूमि को पाकर अपने शुभ कर्तव्य कर्म को ही करना चाहिए (कर्मभूमिमिमां प्राप्य कर्तव्यं कर्म यच्छुभम्, अयोध्या काण्ड १०९-२८)। यह कर्मभूमि भारत भूमि ही थी जैसा कि पुराणों से ज्ञात होता है। धनधान्य पूर्ण होने के कारण ही इसको बसुमती (इयं वसुमती, अरण्य काण्ड १४-१६)।

भौगोलिक दृष्टि कोण से **किष्किन्धा कांड** अत्यन्त महत्वपूर्ण है। यहां सीता की खोज करने के लिए सुग्रीव ने बन्दरों को चारों दिशाओं में भेजा था। इस प्रकार चारों दिग्भागों पूर्व (अ० ४०), दक्षिण (अ० ४१), प्रतीची (अ० ४२) और उत्तर (अ० ४३)—में स्थित पर्वतों, नदियों, और जनपदों

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तथा द्वीपों का वर्णन मिलता है। इस भौगोलिक विवरण में हमें गुप्त-कालीन स्वर्ण युग का दर्शन मिलता है जब भारतीय संस्कृति मध्य एशिया में शैलोदा नदी (सीता=जक्सर्टस, या यारकन्द; और चक्षु या आक्सस) की घाटी के आस पास फैलकर चीन में पहुँच गई थी। इसी प्रकार दक्षिण में समुद्रपार लंका और यवद्वीप, सुवर्ण द्वीप आदि 'सर्व द्वीपों' (युद्ध काण्ड ५०-३४) या समुद्र-द्वीपों में भारतीय प्रभाव फैल चुका था और दक्षिण समुद्र सुगन्धित बन गया था। **बालकाण्ड** में अयोध्या से सिद्धाश्रम (बक्सर, बिहार प्रदेश) तक राम-यात्रा में अयोध्या से आगे पूर्व की ओर सरयू नदी को पार कर वह **सरयू—गंगा के संगम** (बिहार में छपरा के निकट) से आगे अंग विषय (१।२२।१४) में रुके। आगे बढ़ने पर जब वे लोग गंगा पार कर रहे थे दोनों धाराओं—गंगा और सरयू—के मिलने का महान् शब्द हो रहा था। गंगा-पार एक घोर वन था जिसमें मलद और करूष नामक समृद्ध जनपद बसे थे। यही ताटका-वन था जहाँ विश्वामित्र का आश्रम था (बालकाण्ड अ० २४)। बाल काण्ड (अ० ३२) में कौशाम्बी, महोदयपुर (कन्नौज), धर्मारण्य (गया के पास का वन) जिसमें पाँच पर्वतों से घिरा हुआ मागधी नदी के तट पर गिरिव्रज (मगध राजधानी) स्थित था। इस नदी-तट पर लहलहाते खेत थे (१।३२। ६-१०)। इसी प्रकार कौशिकी (कोसी) नदी का वर्णन (बाल काण्ड अ० ३४) मिलता है। पुनः, सिद्धाश्रम से मिथिला तक विश्वामित्र के साथ वैशाली होते हुए रामलक्ष्मण यात्रा (बाल काण्ड अ० ३१-५०) अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इन्हीं अध्यायों के बीच **यज्ञिय देश** (मध्य देश या धर्म देश) की प्रशंसा (अ० ३९) और भागीरथी का वर्णन भी महत्वपूर्ण हैं। इसी प्रकार अयोध्या से केकय देश की राजधानी राजगृह-गिरिव्रज (गजनी) तक भारत की यात्रा में हमें मध्य देश और उत्तरापथ का दिग्दर्शन होता है (अयोध्या कांड अ० ७१)। अयोध्या से ही केकय तक दूतों की यात्रा (अयोध्या काण्ड अ० ६८) भी महत्वपूर्ण है। राम लक्ष्मण सीता की वन यात्रा (अयोध्या काण्ड अ० ४५, ४९, ५० आदि) प्राचीन भारतीय भूगोल को जानने के लिए महत्वपूर्ण है। वापसी में भी लंका और अयोध्या के बीच यात्रा का विवरण जिसमें रामचन्द्र सीता को विभिन्न प्रदेशों और स्थानों का परिचय देते हैं महत्वपूर्ण है। उत्तर काण्ड (अ० ४५-४७) में सीता के साथ लक्ष्मण की अयोध्या से बाल्मीकि आश्रम तक यात्रा भी महत्वपूर्ण है। युद्ध कांड (अ० २६-२८) में विभिन्न क्षेत्रों में बन्दरों का उल्लेख भी महत्वपूर्ण है। उत्तर काण्ड में ही विभिन्न प्राचीन

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नगरों मथुरा (अ० ७०), प्रतिष्ठान (अ० ९०), तथा तक्षशिला और पुष्कलावती (अ० १००)—की स्थापना का उल्लेख मिलता है। अस्तु स्पष्ट है कि रामायण प्राचीन भारतीय भूगोल का महत्वपूर्ण साधन है। रामायण (किष्किन्धा काण्ड ४०-२८) से ज्ञात होता है कि दक्षिण-पूर्व एशिया के द्वीपों जावा सुमात्रा आदि (किष्किन्धा ४०-३०) को मार्ग पर्वतों और समुद्रों से जाते थे (किष्किन्धा ४०-२९)।

भौमिक विस्तार—रामायणीय भौगोलिक विस्तार भी उत्तर में पर्वतों को पार कर शिला नदी और चीन तक तथा दक्षिण में समुद्रपार द्वीपों-जावा (यव द्वीप) और सुमात्रा तक हो चुका था। समुद्र-द्वीप (किष्किन्धा काण्ड ४०-३६) समुद्रगुप्त के प्रयाग स्तम्भ लेख के सर्वद्वीप ही के परिचायक थे। दक्षिण में विन्ध्य, नर्मदा, गोदावरी, कावेरी, मलय, ताम्रपर्णी और समुद्रपार द्वीप (लंका) तक भौमिक विस्तार का उल्लेख है (अ० ४१)। पश्चिम में भी सौराष्ट्र और पश्चिम समुद्र (किष्किन्धा ४२।६-१०) के वेला तट पर खड़े नरिकेल वन (किष्किन्धा ४२।११-१३) और सिन्धु सागर (किष्किन्धा ४२।१५) तक का दर्शन होता है। उत्तर में हिमशैल, काम्वोज, दरद, कैलास तथा क्रौंच गिरि तक (किष्किन्धा ४३।४-२५) और फिर पर्वत पार शैलोदा नदी, उत्तर कुरु तथा उत्तरी समुद्र तक भौमिक विस्तार था (किष्किन्धा ४३। ३७-५३)। इस प्रकार रामायण कालीन भारत में भारत का चतुर्दिक प्रसार हो चुका था। पुराणों के आधार पर ही गंगावतरण अध्याय में (बालकाण्ड अ० ४३) सात गंगा की धाराओं—ह्लादिनी, पावनी, नलिनी, सुचक्षु, सीता, सिन्धु और हैमवती गंगा का वर्णन मध्य एशिया और बर्मा तक भौमिक विस्तार का साक्षी है।

जम्बूद्वीप (बालकाण्ड ३९-२२)

रामायण में पृथिवी के ७ महाद्वीपों में केवल जम्बूद्वीप का उल्लेख मिलता है (बाल काण्ड ३९-२२)। इसे सुदर्शन द्वीप (किष्किन्धा काण्ड ४०-९१) भी कहते थे। यह मेरु पर्वत पर स्थित था (किष्किन्धा काण्ड ४०।५७-६१)।

क्षीरोद सागर (किष्किन्धा काण्ड ४०।४३-४७) (क्षीर सागर), और जलोद सागर अथवा सुस्वादु सागर (किष्किन्धा ४०।४८-५०) के भी उल्लेख हैं। इन उल्लेखों से पौराणिक भुवनकोश का परिचय और इसका रामायण पर प्रभाव ज्ञात होता है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

किष्किन्धा काण्ड के भौगोलिक विवरण

किष्किन्धा काण्ड के अध्यायों में जिन दिग्विभागों का वर्णन किया गया है, वे भारत के ही चार देश भाग—पूर्व, दक्षिण, प्रतीच्य और उदीच्य—थे। अतः, अवश्य ही, इनकी स्थिति क्रमशः मध्य देश के पूर्व, दक्षिण, पश्चिम और उत्तर में होनी चाहिए।

मध्य देश—बाह्लि (बाह्लीक) देश के राजा (बाह्लीश्वर) इल ने मध्य देश में अश्वमेध यज्ञ करने के बाद प्रतिष्ठान नगर (प्रयाग से पूर्व गंगा तट पर स्थित झूसी) को बसाया था (उत्तरकाण्ड ९०।२१-२२)। यहाँ इसकी सीमाएँ नहीं बतायी गयी हैं। परन्तु यह अत्यन्त पवित्र देश था। **मनुस्मृति** के अनुसार हिमालय और विन्ध्याचल के बीच तथा विनशन (सरस्वती तट पर स्थित वह स्थान था जहाँ यह पवित्र नदी अदृश्य हो गई है) से पूर्व और प्रयाग के पश्चिम का भूखंड **मध्य देश** कहा गया है (मनुस्मृति २-२१)।

आर्यावर्त—मनुस्मृति के अनुसार पूर्व और पश्चिम समुद्रों तथा हिमालय और विन्ध्य पर्वत के बीच स्थित भूखंड को विद्वान लोग आर्यावर्त कहते हैं (मनु २-२२)। यह पवित्र देश था जहाँ काला मृग स्वभाव से (निर्भय होकर) घूमता है, वह यज्ञिय देश है" (मनु २-२३)। रामायण भी बताती है कि हिमालय और विन्ध्य पर्वत के मध्य राजा सगर ने यज्ञ किया था। यह देश (हिमवान् और विन्ध्य के बीच स्थित-तयोर्मध्ये) यज्ञ कर्म के लिए प्रशस्त देश था (बाल काण्ड ३९।४-६)। यही यज्ञिय देश अथवा आर्यावर्त था। मध्य देश, यज्ञिय देश (आर्यावर्त) के अतिरिक्त रामायण (अयोध्या १०-३७) में **दक्षिणापथ** का भी उल्लेख है जो नर्मदा के दक्षिण स्थित था। रामायण में भारत के निम्नलिखित देश-विभागों का उल्लेख एक ही साथ किया गया है—

(१) **उदीच्य**, (२) **प्रतीच्य**, (३) **दक्षिणात्य**, (४) **अपरान्त** और **सामुद्र**। पहले के चार विभाग तो प्रसिद्ध ही हैं। पाँचवाँ सामुद्र-देश अत्यन्त महत्वपूर्ण है जो गुप्त कालीन भारत का अंग था। सभी द्वीपों के रहने वालों ने समुद्रगुप्त का प्रभुत्व मान लिया था (पीछे देखिए)। चन्द्रगुप्त II का भी यहाँ प्रभाव बना रहा। राजशेखर और पुराणों में इसे ही द्वीपान्तर कहा गया है। पूर्व और दक्षिण के समुद्र द्वीपों (किष्किन्धा काण्ड ४०-३६) को ही 'सामुद्रा' कहा गया है। अरण्य काण्ड (अ० ३५।११-२५) में समुद्र तट की शोभा और इसकी उत्पाद—कदली, नारिकेल, ताल, तमाल, चन्दन, अगुरु, तक्कोल, गोलमिरच, मुक्ता तथा स्वर्ण और रजत के पर्वत शिखर का वर्णन,

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आर्थिक भूगोल पर महत्वपूर्ण है। इसलिए सामुद्रिक क्षेत्रों का भी पर्याप्त महत्व था।

पूर्व देश—(महेन्द्रकान्तां वनखण्डमंडितां दिशं, कि० ४०-७१) बनों से सुशोभित पूर्व दिशा में स्थित पवतों, नदियों और जनपदों के निम्नलिखित नाम मिलते हैं—

पर्वत—यामुन, मन्दराचल, शिशिर, ऋषभ जातरूपशिल, उदयगिरि और सौमनस।

यामुन (किष्किन्धा ४०-२१)—यह हिमालय की वह चोटी है जहाँ से यमुना निकलती है। इसे कलिन्द गिरि भी कहते थे और इसीलिए यमुना को भी कालिन्दी कहते थे। यह हिमालय का इन्द्रपुच्छ शिखर है।

मन्दराचल (किष्किन्धा ४०-२५)—इसे गंगा के दक्षिण तट पर विन्ध्य शृंखला पर स्थित कहा गया है (वराह पु० १४३-२)। मन्दर पर्वत की पहचान भागलपुर के मन्दार गिरि से की गई है।

शिशिर गिरि (किष्किन्धा ४०-३१)—यह पर्वत यव द्वीप (जावा) के आगे स्थित था।

ऋषभ (किष्किन्धा ४०।४४-४५)—पर्वत भी क्षीरोद सागर के निकट स्थित था।

जातरूपशिल (किष्किन्धा ४०।५०-५२) नामक पर्वत स्वादूदक सागर के उत्तर स्थित था इस पर्वत पर अनन्त देव का मन्दिर था। यहाँ कांचन ध्वजा फहराती थी जिस पर ताड़ का चिन्ह बना था।

उदय पर्वत (किष्किन्धा ४०।५४-५६)—सुवर्णमय था। यहाँ ताल, तमाल, सालु आदि के वृक्ष थे।

सौमनस (किष्किन्धा ४०।५७)—उदयगिरि का एक शिखर था।

सम्भवतः ऊपर वर्णित शिशिर गिरि, ऋषभ, जातरूपशिल और उदय गिरि नामक पवत सुवर्ण द्वीप में स्थित थे क्योंकि यहाँ सुवर्ण की बाहुल्यता थी।

नदियाँ (किष्किन्धा ४०।२०-२२)

पूर्व में बहने वाली नदियों में **भागीरथी** (गंगा) **सरयू, कौशिकी** (कोसी) और **कालिन्दी-यमुना** थीं। **सरस्वती, सिन्धु** (?) और **मही** (जो पश्चिम देश की प्रसिद्ध नदियाँ हैं) को पूर्व दिशा से सम्बद्ध किया गया है। कालमही अज्ञात है। **शोण** (सोन) पूर्व की प्रसिद्ध नदी है। परन्तु शोण (किष्किन्धा ४०।३३-३४) नामक नदी द्वीपान्तर की भी एक नदी थी जिसका जल लाल था और जिसके तट पर तीर्थ थे।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जनपद (किष्किन्धा ४०।२२-२३)

ब्रह्ममाल, विदेह, मालव, काशि, कोसल, मगध, पुंड्र, अंग और चीन (नाम नहीं दिया गया है) थे । इनमें काशी, कोसल, विदेह, मगध, अंग और पुंड्र प्रसिद्ध और परिचित देश हैं ।

मालव—पूर्वी दिशा में स्थित मालवा की पहचान कठिन है ।

ब्रह्ममाल—अज्ञात है । राजशेखर पूर्व देशों की सूची में ब्रह्म नामक जनपद का उल्लेख करते हैं (अ० ३, पृ० ८।३—प्राची दिशं………यत्रांगवंगसुह्म-ब्रह्मपुंड्राद्या जनपदाः) । सम्भवतः ब्रह्म और माल दो पृथक-पृथक देश थे । ब्रह्म की पहचान बर्मा से हो सकती है । माल देश को गंगा के उत्तर तथा विदेह के पूर्व और मगध के उत्तर पश्चिम में स्थित माला (जा० डि०, पृ० १२१) से कर सकते हैं ।

चीन भूमि—अर्थात् इस को रेशम के कीड़ों की उत्पत्ति वाला देश (भूमि च कोशकाराणां) कहा गया है । यह कौटिल्य (अर्थशास्त्र, १-११) का चीन-भूमि ही है (पट्टाश्च चीनभूमिजा व्याख्याताः)। महाभारत के अनुसार युधिष्ठिर के दरबार में चीन से रेशमी कपड़े भेंट में आए थे (पीछे, पृ० १३२) ।

रजत देश—यह चाँदी वाला देश (भूमिं च रजताकराम्) कहा गया है । इसकी पहचान कठिन है ।

कर्णप्रावरण (किष्किन्धा ४०-२६) नामक जनपद का उल्लेख महाभारत में भी मिलता है (भीष्म पर्व ५१-१३; पीछे देखिए पृ० १४२) ।

ओष्ठकर्णक एवं घोरलोहमुख (किष्किन्धा ४०-२६)—अज्ञात हैं ।

एकपादक (किष्किन्धा ४०-२६)—बृहत्संहिता (१४-७) की भाँति रामायण इन्हें पूर्व में स्थित बताती है । परन्तु महाभारत इन्हें दक्षिण में स्थित बताता है (पीछे, पृ० ९९, १३१) ।

पुरुषादक (किष्किन्धा काण्ड ४०-२७)—पीछे देखिए पृष्ठ १३०-१३१ ।

किराता (किष्किन्धा काण्ड ४०-२७; पीछे देखिए पृ० ८६, १३६) द्वीपवासी किरात (किराता द्वीपवासिनः किष्किन्धा, ४०-२८)—ये बंगाल की खाड़ी के निकट द्वीपों में रहने वाले वन्य लोग थे जिन्हें टॉलमी ने किर्हेड (किरात) कहा है । ये कच्ची मछली खाने वाले और जल के अन्दर विचरने वाले लोग थे । ये द्वीप समुद्र द्वीप ही थे जिनको आसाम, बर्मा की पहाड़ियों में होकर स्थल मार्ग और समुद्र में नावों द्वारा जल मार्ग जाते थे (गिरिभिर्ये

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

च गम्यन्ते प्लवनेन प्लवेन च (किष्किन्धा कांड ४०-२९)। ये ही **द्वीपान्तर** क्षेत्र थे।

यव द्वीप (किष्किन्धा ४०-३०, ३१) के सात समुद्रद्वीप राज्य थे जिनके नाम नहीं दिए गए हैं (यवद्वीपं सप्तराज्योपशोभितम्)।

सुवर्ण द्वीप (किष्किन्धा ४०-३०) सुमात्रा है।

रूप्यक द्वीप (किष्किन्धा ४०-३०)—पहचान कठिन है।

लोहित सागर (किष्किन्धा ४०-३९) की पहचान 'एरीथ्रियन सी' से हो सकती है।

पूर्वी दिशा का अन्तिम और पूर्वी सिरा, **उदय पर्वत था** (किष्किन्धा कांड, ४०।५४, ६२-६४)।

दक्षिण दिशा (किष्किन्धा काण्ड अ० ४१)

दक्षिण दिशा में विन्ध्य और नर्मदा के दक्षिण लंका द्वीप तथा पाताल की भोगवती पुरी तक दक्षिण देश का वर्णन किया है। इसमें विन्ध्य, अयोमुख, मलय, महेन्द्र, पुष्पितक गिरि, सूर्यवान् पर्वत, वैद्युत पर्वत, कुंजर पर्वत, और ऋषभ पर्वत स्थित थे।

नर्मदा, गोदावरी, कृष्णवेणी, महानदी और वरदा (जो बड़े-बड़े नागों से सुशोभित थी) दक्षिणापथ की प्रसिद्ध नदियाँ थीं (कि० ४०।८-९)। गोदावरी का विशेष उल्लेख हुआ है (कि० ४०-१२)। इसके बाद दक्षिण द्रविड़ देश की 'स्वच्छ जलवाली दिव्य कावेरी नदी का उल्लेख है (कि० ४०-१५) जिसके निकट मलय पर्वत था। इसके आगे ताम्रपर्णी नदी है (कि० ४०-१७) जिसकी घाटी में चन्दन वन हैं। यह समुद्र से मिलती है(कि० ४०।१७-१८)। इसकी घाटी में ही मुक्ता मणि मिलते थे जो पाण्ड्य देश की प्रसिद्ध उत्पाद थी। यहीं, जहाँ यह पांड्य देश में मलय की घाटी में बहती हुई ताम्रपर्णी समुद्र में मिलती है, महेन्द्र पर्वत (पूर्वी घाट) भी समुद्र में स्नान करता है (कि० ४०।२०-२१) अर्थात् ताम्रपर्णी के मुहाने पर ही समुद्रतट पर महेन्द्र और मलय पर्वत मिलते भी हैं। दक्षिण समुद्र के दूसरे तट पर, उस पार (अपरे पारे) एक द्वीप है (कि० ४०-२३) जो सिंहल और लंका ही है। यह मनुष्यों द्वारा अगम्य (अगम्यो मानुषैर्दीप्तः)। ताम्रपर्णी के मुहाने से आगे दक्षिण समुद्र और इससे परे लंका द्वीप था। इस द्वीप के भी आगे दक्षिण समुद्र में ही **पुष्पितक गिरि** (कि० ४०।२८-३०) है जहाँ पुण्यात्मा मनुष्य ही रहते थे और यहाँ इसके कांचन और रजत (चांदी) के शिखर हैं। उसके

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आगे **सूर्यवान्** नामक पर्वत है (कि० ४०-३१)। इसके भी आगे **वैद्युत पर्वत** और अगस्त्यभवन से सुशोभित कुंजर पर्वत है (कि० ४०।३२-३५)। यहीं नागों की नगरी, **भोगवती पुरी** (कि० ४०।३६-३८) पाताल में स्थित है। यहाँ का रक्षक राजा वासुकि नाग था (आ० ३२।१३)। भोगवती पुरी के भी आगे **ऋषभ पर्वत** है जहाँ गोशीर्षक, पद्मक और हरिश्याम नामक चन्दन उत्पन्न होता है। यहाँ चन्दन वृक्ष अग्नि के समान प्रभा वाले हैं। जिनको छूना नहीं चाहिए। इस चन्दन वन की गन्धर्वों के पाँच प्रधान रक्षा करते रहते हैं (कि० ४०।४०-४३)। इसके आगे यम लोक है जहाँ अन्धकार रहता है (कि० ४०।४४-४५)। इसके आगे लोगों की गति नहीं थी। इस प्रकार हमें यहाँ विन्ध्य और नर्मदा से लंका तक दक्षिण भारत और इसकी उपजों का सुस्पष्ट वर्णन मिलता है जो अत्यन्त महत्वपूर्ण और प्रत्यक्ष साक्ष्य पर आधारित वर्णन है। लंका से आगे दक्षिण की ओर आस्ट्रेलिया की ओर जाने में भी द्वीप हैं। परन्तु हमें उनका ज्ञान नहीं है। परन्तु रामायण हमें उस क्षेत्र का भी परिचय देता है। ऊपर उल्लिखित पर्वतों की पहचान, हमारी इस स्थिति में, अज्ञात है। यहाँ पर्वतों और नदियों के वर्णन में निश्चित क्रम है जो उनकी स्थितियों के अनुसार ही है।

यह क्रम जनपदों के नामों में भी मिलता है।

जनपद

हमें मेखल (मेकल), उत्कल, दशार्ण, आब्रवन्ती और अवन्ती, विदर्भ, ऋष्टिक, माहिषक, वंग (?), कलिंग, कौशिक, दण्डकारण्य, अन्ध्र, पुंड्र, चोल, पांड्य और केरल (कि० ४०।९-१२) के नाम मिलते हैं। इस जनपद-वर्णन में नर्मदा की घाटी में स्थित मेकल और अवन्ति, महानदी की घाटी में स्थित उत्कल, कलिंग और दशार्ण, गोदावरी की घाटी में स्थित दण्डकारण्य और अंध्र, वरदा नदी की घाटी में विदर्भ, कृष्णवेणी की घाटी में ऋष्टिक (?), कावेरी की घाटी में चोल और ताम्रपर्णी की घाटी में स्थित पांड्य देश था। कवि जनपद-वर्णन में कलिंग से आगे बिहार और बंगाल की ओर गंगा के किनारे चला जाता है। कौशिकी (कोसी) नदी की घाटी में स्थित कौशिक देश तथा वंग और पुंड्र का भी उल्लेख करता है।

मेकल (कि० ४१-९)—काव्यमीमांसा (९३।२८) के अनुसार मेकल दक्षिणापथ का एक पर्वत था। यह पर्वत नर्मदा नदी का स्रोत था। इस पर्वत-प्रदेश को ही मेकल कहते थे। यह अमरकण्टक की पहाड़ियों के पास का क्षेत्र

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

था। बृहत्संहिता (१४-७) इसे पूर्व देश-भाग में स्थित बताती है। इसे विन्ध्य-पृष्ठ (वामन पु० १३-५४) पर स्थित बताया गया है।

उत्कल (कि०, ४१-९)—बृहत्संहिता (१४-२) में इसे पूर्व में स्थित बताया गया है। इसे विन्ध्य-पृष्ठ पर स्थित बताया गया है (मार्कंडेय पु०, ५४-५३)। दक्षिण समुद्र (पूर्व सागर) के तट पर (भारते वर्षे दक्षिणोदधि-तीरग:) स्थित उत्कल (उत्कलेति समाख्यातः स्वर्गमोक्ष प्रदायकः) पुण्य देश था। यह समुद्र के उत्तर विरजमंडल तक विस्तृत था। इस पुण्य देश में पुरुषोत्तम तीर्थ (जगन्नाथ पुरी) स्थित था (नारद पु०, २।५२।७-१५)। इसीलिए उत्कल क्षेत्र (माहात्म्य, ब्रह्म पु०, अ० ४२) पवित्र देश था। सुद्युम्न के पुत्र उत्कल के नाम पर ही यह उत्कल के नाम से प्रसिद्ध हुआ (मत्स्य, १२-१७)। रघुवंश के आधार पर डा० ला ने (हि० जा० ऐ०इ० पृ० १९७) उत्कल की पूर्वी सीमा कपिशा नदी और पश्चिम में मेकल पर्वत माना है। यहाँ भी इसे मेकल के समीप ही स्थित बताया है।

दशार्ण-नगराणि (कि०, ४१-९)—दक्षिण में स्थित दशार्ण पूर्वी मालवा था जिसकी राजधानी विदिशा थी। परन्तु यहाँ पर इसका उल्लेख मेकल और उत्कल के साथ हुआ है। अतः मालूम होता है कि यह दशार्ण वही था जिसे पेरिप्लस के लेखक ने दोसरेने और टॉलमी ने दोसारन कहा है।

आम्रवन्ती (कि०, ४१-१०)—अज्ञात है।

अवन्ती (कि०, ४१-१०)—दक्षिण दिशा (या देश) में स्थित अवन्ति दक्षिणापथ (वनपर्व ६१-२१) का वह भाग था जिसे इसका दक्षिणी भाग माना गया है और इसकी राजधानी माहिस्सती (माहिष्मती) थी (हि० जा० ऐ० इ०, पृ० ३०५)।

विदर्भ (कि० ४१-१०)—यह दक्षिणापथ का एक देश था (का० मी० ९३।२५-२८)। बृहत्संहिता (१४-८) में इसे दक्षिण-पूर्व भाग में स्थित बताया गया है। कुण्डिन नगर या कुण्डिनपुर इसकी राजधानी थी जिसे विदर्भपुर भी कहते थे (प्रा० भा० भौ० स्व० पृ० ६१)।

ऋष्टिक (कि० ४१-१०)—इसका उल्लेख अशोक के शिलालेख—५ में पेतनिकों के साथ हुआ है (रिस्टिक-पेतिणिकानं, लठिक-पितिनिकेसु) और यहाँ उन्हें अपरांत (पश्चिम) में स्थित बताया गया है। इसकी पहचान महाराष्ट्र से की गई है।

माहिषक (कि० ४१-१०)—की पहचान दक्षिण के मैसूर प्रदेश से की

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गई है (जा० ऐ० मे० इ०, पृ० १९०-१९१)। वृहत्संहिता में माहिष (९।१०) और महिषक (१७।२६) के उल्लेख मिलते हैं। कुछ लोग इसकी पहचान माहिष्मती से करते हैं (जा० डि० पृ० १२०)।

वंग और कलिंग (गीता प्रेस सं०, कि० ४१-११)—दक्षिण में स्थित बताया गया है। कलिंग अवश्य दक्षिण पूर्व या दक्षिण में रखा जा सकता है। परन्तु वंग पूर्व देश का प्रसिद्ध प्रदेश है। इसीलिए वंग के स्थान पर **मत्स्य** पाठ (निर्णय सागर प्रेस संस्करण, मत्स्यकलिंगांश्च) भी मिलता है।

मत्स्य (निर्णयसागर प्रेस, सं०, कि० ४१-११)—महाभारत युग का प्रसिद्ध राष्ट्र था। रामायण युग में भी यह समृद्ध देश था (अयोध्या कांड, १०।३७-३८)। यह आधुनिक जयपुर-अलवर-भरतपुर खंड था।

कलिंग (कि० ४१-११)—भी पूर्वी समुद्र तट का प्रसिद्ध राष्ट्र था जिसमें आधुनिक पुरी और गंजाम के प्रान्त सम्मिलित थे। इसके पश्चिम में अमरकण्टक पर्वत बताया गया है (मत्स्य पु० १८५-१२)।

कौशिक (कि० ४१-११)—यहाँ गंगा प्रवाहित होती थी (मत्स्य पु० १२०-५०) जो पांचाल के निकट स्थित था। इस प्रकार गंगा की घाटी में स्थित कौशिक देश तो कौशिकी-कच्छ अर्थात पुंड्र हो सकता है। परन्तु यहाँ पर वर्णित कौशिक देश दक्षिण का देश था न कि पूर्व का। अतः दक्षिण के कौशिक देश की पहचान निश्चित नहीं है।

दण्डकारण्य (कि० ४१-११)—यह रामायण का प्रसिद्ध देश था जहाँ वनवासी राम का जीवन वहाँ बसे हुए राक्षसों का वध करने में लगा। दण्डकारण्य और जनस्थान एक ही भूखंड के नाम थे जहाँ से रावण सीता को हर ले गया था (सुन्दर कांड ३३।१२ का जनस्थान=दण्डकारण्य, सुन्दर कांड ३३।३०)। जनस्थान में ही रावण परिव्राजक बन कर सीता हरने गया था (सुन्दर कांड ३४-१५)। कैकेयी ने दूसरे वरदान में मांगा था कि राम १४ वर्ष तक दण्डकारण्य में रहें (अयो०, १८-३३)। राम भी दण्डकारण्य जाने को तैयार थे (अयो० १९।११, २०-२६, २८, ३०; २६।२३)। यह दण्डक वन महान था (अयो० १९।२५) और इस महारण्य (अयो० ४०-१८) को अटवी भी कहते थे (अयो० ४०-९)। तमसा नदी (इलाहाबाद के पास बहने वाली नदी—टोंस) के पास से ही सूने-सूने वन (शून्यारण्यानि) दिखाई पड़ते थे (अयो० ४६।३, २५)। तमसा के उस पार ही महामार्ग (अयो० ४६।२९) था, जो वन की ओर जाता था (अयो० ४६।३४)। कोसल, वत्स और

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

यमुनावन में स्थित चित्रकूट के आगे जब वे अरण्य में घुमे तब वह दुर्गम वन ही दंडकारण्य था जिसमें राक्षसों के अतिरिक्त तापसाश्रम भी थे (अरण्य, १।१-२)। इस वन के मुनियों ने ही राम को रहने के लिये वहाँ आश्रम सौंप दिया। पम्पा और मन्दाकिनी के निकट सूतीक्ष्ण के आश्रम से आगे दण्डकारण्य (अरण्य ८।६,१२) था। यहीं अगस्त्याश्रम था (अरण्य ११।३०-५३)। अगस्त्य ने वातापि और इल्वल नामक राक्षसों का वध किया था (अरण्य, ११।५५-६७)। वातापि के नाम पर ही बसा **वातापि** नाम का प्राचीन नगर (आधुनिक बादामी, महाराष्ट्र) था और इल्वल के नाम पर ही एलोरा भी प्रसिद्ध है। ये दंडकारण्य में ही स्थित थे।

यहीं अगस्त्याश्रम में विभिन्न देवी-देवताओं—ब्रह्मा, अग्नि, विष्णु, इन्द्र, सूर्य, सोम, भग, कुबेर, धाता, विधाता, वायु, वरुण, गायत्री, वसुओं, नागराज, गरुड़, कार्तिकेय और धर्म के मंदिर थे (अरण्य, १२।१७-२१)।

पंचवटी देश—अगस्त्याश्रम से दो योजन की दूरी पर **पंचवटी देश** था (अरण्य, १३।१३)। यह रम्य वन और श्लाघनीय देश गोदावरी के निकट, उसके तट पर स्थित था। जहाँ प्रचुर फल-मूल थे। यह देश पुण्य और रम्य था (अरण्य १३।१७-१९)। इसी रम्य देश को पुराणों में मनोरम देश कहा गया है (मत्स्य ११३।२८-२९)। यहीं गोवर्धन (नासिक), मन्दर और गन्धमादन पर्वत स्थित थे (मत्स्य ११३।३८)। यह देश सह्य (पश्चिमी घाट) और गोदावरी के बीच स्थित था (मत्स्य ११३।३७)। यही पंचवटी देश था (अयं पंचवटी देशः पुष्पितकाननः, अरण्य १५-२)। यह पुण्य भी था और रम्य भी था (अरण्य १५-१९)। यह दण्डकारण्य गोदावरी की घाटी में स्थित पहाड़ी और वन्य भाग था (कि० ४१।११-१२) जिसकी पहचान महाराष्ट्र से की गई है (प्रा० भा० भौ० स्व०, पृ० ६६)।

रामायण के अनुसार इस भयंकर वन्य-प्रदेश को महाराज इक्ष्वाकु ने अपने पुत्र दण्ड को दे दिया था। यह पर्वतीय प्रदेश विन्ध्य और शैवल (नागपुर के निकटस्थ रामगिरि) के बीच स्थित दण्ड का राज्य था (उत्तर कांड ७९।१५-१७)। इसीलिए यह दण्डक कहलाया (उत्तर, ८१।१८-१९)। इस राज्य में मधुमन्तपुर स्थित था (उत्तर कांड ७९।१७)।

जनस्थान—जब इस दण्डक राज्य में तपस्वी आकर बस गये, तभी से यह देश जनस्थान के नाम से प्रसिद्ध हो गया (उत्तर कांड ८१।२०)।

आन्ध्र (कि० ४१-१२)—दक्षिण का प्रसिद्ध देश है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पुंड्र (कि० ४१-१२)—पूर्व देश का प्रसिद्ध प्रदेश था। परन्तु यहाँ उसे दक्षिण दिशा में स्थित कहा गया है।

चोल, पांड्य और केरल (कि० ४१-१२) दक्षिण भारत के प्रसिद्ध देश थे।

पांड्य देश में ही अयोमुख पर्वत (कि० ४१-१३) स्थित था जिसे सुचन्दनवनोद्देश (चन्दन वन) में स्थित कहा गया है (कि० ४१-१४)। अयोमुख पर्वत मलय पर्वत ही था (मत्स्य पु० १६२-७१)। मलय-अयोमुख पर्वत पर स्थित अगस्त्य आश्रम तथा ताम्रपर्णी नदी भी पाण्ड्य देश में ही थे (कि० ४१।१५-१७)। ताम्रपर्णी नदी की घाटी में ही चन्दन वन भी था और यहीं मुक्तामणि भी प्रचुरता से होते थे (कि० ४१।१७-१८)।

चोल देश (कि० ४१-१२) में कावेरी नदी (कि० ४१-१५) बहती थी और इस देश में ही महेन्द्र पर्वत फैला था जो दक्षिण में समुद्र को छूता था। इस पर्वत पर सोना मिलता था (महेन्द्रः पर्वतोत्तमः जातरूपमयः अवगाढो महार्णवम्) और इस पर ऋषियों के आश्रम भी थे (कि०, ४१।२०-२२)।

अपरे पारे द्वीप (पारे सिन्धु द्वीप)—समुद्र के उस पार एक द्वीप था जिसे अगम्य कहा गया है (कि० ४१।२३-२४) और जहाँ का शासक राक्षसाधिपति रावण था (कि० ४१।२५)। यह सिंहल द्वीप था। इसके आगे दक्षिण समुद्र (कि०, ४१-२६) में ही **पुष्पितक गिरि** (कि० ४१।२८-३०), **सूर्यवान् पर्वत** (कि० ४१-३१), **वैद्युत पर्वत** (कि० ४१।३२-३३) और **कुंजर पर्वत** (कि० ४१-३४) थे। इनकी पहचान कठिन है। कुंजर पर्वत पर अगस्त्य भवन था।

भोगवती पुरी (कि० ४१।३६-३८)—कुंजर पर्वत पर ही भोगवती पुरी थी जहाँ का शासक नागराज वासुकि था।

इसके आगे ऋषभ पर्वत (कि० ३१।३९-४०) था। यहाँ कई प्रकार का चन्दन—गोशीर्षक, पद्मक और हरिश्याम—होता था (कि० ४१।४०-४१) इसके आगे गन्धर्व लोग रहते थे और इसके आगे यमलोक था (कि० ४१।४२-४४)।

प्रतीच्य (किष्किन्धा काण्ड अ० ४२)

पश्चिम (प्रतीची) दिशा (कि० ४२।५, १०, ५) में निम्नलिखित जनपद, पुर, वन, गिरि और नदियाँ थीं—

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जनपद	पुर	पर्वत	नदी	समुद्र
सौराष्ट्र	मुरवीपत्तन	सोमगिरि	पश्चिम	सिन्धुसागर
बाह्लीक	(मुरचीपत्तन)	पारियात्र	की ओर	पश्चिमसमुद्र
चन्द्रचित्र	जटापुर	वज्र, चक्रवान्	बहने वाली	
पाठान्तर	अवन्ती	वराह, मेघ,	नदियाँ,	
(शूरान्-	अंगलेपा	मेरु या	सिन्धु	
भीमानिति)	प्राग्ज्योतिषपुर	मेरु अस्तगिरि		
मरुस्थली				

जनपद

सौराष्ट्र (कि०, ४२-६)—पश्चिम दिशा में स्थित सिन्धु-सौवीर और सौराष्ट्र (बाल कांड १३-२७) प्रसिद्ध देश थे। यह अत्यन्त प्रसिद्ध और सम्पन्न राष्ट्र था।

बाह्लीक (कि० ४२-६)—यह भी प्रसिद्ध राष्ट्र (बलख) था।

चन्द्रचित्र (कि० ४२-६)—अज्ञात है। निर्णय सागर प्रेस संस्करण में **'शूरान्भीमानिति'** पाठांतर का भी उल्लेख है। यह भी भ्रष्ट पाठ है। शुद्ध पाठ शूराभीरान् (शूर+आभीर) होना चाहिये। **शूर** और **आभीर** भी पश्चिम देश के प्रसिद्ध जनपद थे।

मरुस्थली (कि० ४२-९, स्थलीमरुप्राया)—मरु भमि (मारवाड) ही है। पुरों या नगरों में अवन्ति (उज्जयिनी) ही परिचित नगर है। **प्राग्ज्योतिषपुर** पूर्व देश का प्रसिद्ध नगर (गौहाटी) था। पश्चिम में स्थित **प्राग्ज्योतिषपुर** की स्थिति प्रायः अज्ञात ही है।

मुरचीपत्तन (निर्णय सागर प्रेस ४२-१३)—पश्चिमी समुद्र तट पर स्थित बन्दरगाह था जिसकी पहचान मौज़िरिस से की गई है जो मलाबार तट पर स्थित था। बृहत्सहिता (१४-१५) में इसे दक्षिण में स्थित बताया गया है। डे (जा० डि०, पृ० १३१) इसकी पहचान मयिरिकोड अथवा मुयिरिकोट्ट से करते हैं।

पर्वत

सोमगिरि (कि० ४२-१५)—सिन्धु के मुहाने (सिन्धुसागर संगम) पर स्थित था (कि० ४२।१५-१८)। यह सिन्ध के डेल्टा में हाला पहाड़ी का दक्षिणी भाग था (जा० डि० पृ० १८८)।

पारियात्र (कि० ४२-२०; मत्स्य १९२-७९)—प्रसिद्ध कुल पर्वत था जो विन्ध्य का पश्चिमी भाग है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वज्र (कि० ४२।२५-२६) को एक महान् गिरि कहा गया है। यह पारियात्र के ही निकट स्थित था।

चक्रवान् (कि० ४२-२७, मत्स्य १६२-८०) पर्वत समुद्र तट के निकट स्थित था। यहाँ विश्वकर्मा ने विष्णु का चक्र बनाया था।

वाराह पर्वत (कि० ४२-३०) भी समुद्र तट पर स्थित था। मत्स्य पुराण (१६२।७९-८०) में भी पारियात्र, चक्रवान् और वाराह पर्वतों के साथ प्राग्ज्योतिषपुर का उल्लेख मिलता है। वाराह पर्वत पर ही प्राग्ज्योतिष नामक नगर स्थित था (कि० ४२-३१)।

मेघ पर्वत (कि० ४२।३५)—यह वाराह पर्वत के पास ही स्थित था।

मेरु (कि० ४२।३८-४१) को राजा (पर्वतों का राजा) और उत्तम पर्वत कहा गया है।

अस्त पर्वत (कि० ४२।४२-५२) पश्चिमी दिशा का पश्चिमी सिरा माना गया है। इसके आगे का क्षेत्र अज्ञात था।

उदीच्य (दिशं उदीचीं हिमशैलावतंसिकाम्)

सिद्धों, महर्षियों, तपस्विओं, और महात्माओं तथा आश्रमों से अभिमंडित **उत्तरी दिशा** को हिमालय से सुशोभित कहा गया है (कि० ४३।४) इस दिशा में स्थित जनपदों, वनों, पर्वतों, नदियों, सरोवरों तथा वहां के निवासियों के स्वभाव-लक्षण और पर्वतों पर मिलनेवाली धातुओं, वनस्पतियों और पशुओं तथा आश्रमों का सुन्दर तथा यथार्थ वर्णन दिया गया है। हिमवन्त प्रदेश की भूगोल का इतना महत्वपूर्ण वर्णन दुर्लभ हैं। हिमवन्त पर्वत के उस पार उत्तर-कुरु और उत्तर समुद्र तक हमें यह वर्णन ले जाता है। निम्नलिखित जनपदों, पर्वतों, वनों, नदियों, सरों आदि का वर्णन मिलता है—

जनपद	पर्वत	नदी	सरोवर	आश्रम
म्लेच्छ, पुलिन्द,	हिमवन्त, काल पर्वत,	जाम्बूनद	वैखानस	सोमाश्रम
शूरसेन, भरत,	सुदर्शन, देवसख,	शैलोदा	सर	
प्रस्थल, कुरु, मद्र,	कैलास, क्रौंच गिरि,			
काम्बोज-यवन,	कामशैल, मानस,			
शक, दरद	मैनाक, और सोम गिरि			

बताया गया है कि यहाँ इस क्षेत्र में बहुत ही दुर्गम प्रदेश नदियों और पर्वतों के बीच स्थित थे (इमानि बहुदुर्गाणि नद्यः शैलान्तराणि च; कि० ४२-१०) जिनमें म्लेच्छ, पुलिन्द, शूरसेन, प्रस्थल, भरत, कुरु, मद्रक, काम्बोज-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

यवन, शकों के नगर, दरद और हिमवन्त (प्रदेश) स्थित थे (कि० ४२। ११-१२)।

म्लेच्छ—ये हिमालय में रहने वाले म्लेच्छ थे। मत्स्य (१२०।४३-४४) में सात गंगाओं की घाटी में म्लेच्छों—बर्बर, यवन, खस आदि—को स्थित कहा गया है।

पुलिन्द—मत्स्य (१२०-४४) गंगा नदी की घाटी में पुलिक स्थित कहे गए हैं। डे (जा० डि० पृ० १६१) के अनुसार पूलिन्द देश हरिद्वार के उत्तर पश्चिम में स्थित था।

शूरसेन—प्रसिद्धि व्रज मंडल था।

प्रस्थल—ये त्रिगर्त राज्य से सम्बद्ध थे और पंजाब के निकट स्थित थे। इसलिए पार्जिटर के अनुसार पटियाला, फीरोजपुर, और सिरसा के प्रान्तों को ही प्रस्थल कहते थे (मार्कं० पु० अं०, पृ० ३२१)।

भरत—इनकी स्थिति सरस्वती की घाटी में थी और यह राज्य कुरु देश के निकट ही स्थित था "भरतों को आयुध जीवी संघ कहा गया है।......... पाणिनि ने भरत जनपद को प्राच्य और उदीच्य की मध्यवर्ती सीमा पर माना है। सूत्रों में भरत और कुरु दोनों का नाम आता है। कुरु जनपद की राजधानी हस्तिनापुर थी और वह एक-राज जनपद के रूप में संगठित था।...... कुरु-पांचाल एक संघ था। इससे ज्ञात होता है कि भरत नामक जनपद में आयुधजीवी संघ राज्य था। एवं कुरुओं के दो विभाग थे एक संघ और दूसरा एक-राज। यमुना और कुरुक्षेत्र के बीच ये संघ फैले हुए थे "(पा० भा०, पृ० ४६३)। डा० अग्रवाल के अनुसार ही "दक्षिण पूर्वी पंजाब में **थानेश्वर-कैथल-करनाल-पानीपत** का भूभाग भरत जनपद था। इसी का दूसरा नाम प्राच्य भरत भी था; क्योंकि यहीं से देश के उदीच्य और प्राच्य इन दो खंडों की सीमाएँ बँट जाती थीं" (पा० भा०, पृ० ४१)।

कुरु—दिल्ली-मेरठ का प्रदेश कुरु जनपद कहलाता था। अष्टाध्यायी में उसका नाम हास्तिनपुर आया है (पा० भा०, पृ० ४१)।

मद्रक—तक्षशिला के दक्षिण पूर्व में मद्र जनपद था जिसकी राजधानी शाकल (वर्तमान स्यालकोट) थी।

काम्बोज, यवन, शक, और दरद हिमवन्त प्रदेश के प्रसिद्ध राज्य थे जिनका उल्लेख महाभारत में भी मिलता है। 'काम्बोजयवनांश्च' से ज्ञात होता है कि यह कम्बोज (पामीर-बदख्शां) में बसे हुए यवनों का उल्लेख है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इनके निकट ही उत्तर में बर्बर भी थे (यवनकाम्बोजा बर्बराश्च; बालकांड ५४-२३)। वसिष्ठ की गाय के भिन्न-भिन्न अंगों से ही **काम्बोज, बर्बर, यवन, शक, म्लेच्छ, हारीत** और **किरात** (बालकांड ५५।२-३) नामक सैनिक जातियाँ प्रकट हुईं। रामायण से ज्ञात होता है कि इस समय सारी पृथिवी यवनों और शकों से भर गयी (तैरासीत् संवृता भूमिः शकैर्यवनमिश्रितैः, बालकांड ५४-२१)। वे वीर महापराक्रमी और तेजस्वी थे। उनके शरीर की कान्ति सुवर्ण तथा केसर के समान थी। वे सुनहरे वस्त्रों से अपने शरीर को ढँके हुए थे। उनके हाथों में तीखी तलवार और पट्टिश थी। उनके पास अग्नि के समान प्रज्वलित अस्त्र थे (बालकांड ५४।२२-२३)। यह वर्णन प्रत्यक्ष साक्ष्य पर आधारित है। यह सातवाहन युग था जब रामायण का नव संस्करण हो रहा था। इसीलिए किष्किन्धा कांड के अध्याय ४०, अ० ४१ और अ० ४२ का भौगोलिक वर्णन तथा मत्स्य पुराण (अध्याय १६२।६०-८८) में वर्णित पर्वतों, देशों, जनपदों और नदियों तथा सागरों से तादात्म्य है। रामायण के इस सम्पादन में मत्स्य पुराण की सामग्री का उपयोग कर उसे दिशा-भागों में स्थित बताया गया है। इसीलिए रामायण में कुछ भूलें भी हो गयी हैं। मत्स्य पुराण का भी नव संस्करण सातवाहन युग में ही हुआ था। इस युग में सामुद्रिक व्यापार और सम्बन्ध से दक्षिण के समुद्र द्वीपों—यव द्वीप, सुवर्ण द्वीप, आदि—का भी परिचय रामायण ने दिया है। इसी दृष्टिकोण से भी रामायण की भूगोल-व्यवस्था का महत्व है।

हिमशैल अथवा हिमवन्त का वर्णन करते हुए इस प्रदेश के विभिन्न पर्वतों और शिखरों की स्थिति का सही-सही अनुमान होता है।

हिमवन्त—यहाँ सदा बर्फ रहती है इसीलिए इसे हिमशैल कहते हैं। यह उत्तर पर्वत कहलाता था जहाँ कौशिकी नदी के तट पर विश्वामित्र ने तप किया था (बालकांड ६३।१४-१६) आज भी नैनीताल, अल्मोड़ा पौड़ी-गढ़वाल और शिमला के आगे उत्तर में पूर्व से पश्चिम तक एक लम्बी सफेद दीवाल खड़ी हुई सुशोभित होती है। इसी को रामायण (कि० ४३-४) में भी इसी प्रकार उत्तर दिशा के सिरे पर खड़ा हुआ शोभायमान कहा गया है—(दिशं ह्युदीचीं विक्रान्त हिमशैलावतंसिकाम्)। इससे ही रमणीक उत्तर दिशा गिरिराज से घिरी हुई कही गई है (कि० ४५-४)। इसीलिये यह उत्तर पर्वत कहलाता था (बाल, ७४-१) और उत्तरी दिशा को भी हैमवती दिशा कहते थे (बाल ६५-१)। बिहार और नेपाल के उत्तर में गंगा नदी

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

के उत्तर भी हिमालय स्थित है (उत्तरे जाह्नवीतीरे हिमवन्तं शिलोच्चयम्; बाल कांड ३१-१५) जहाँ से कौशिकी (कोसी) नदी निकलती है। हिमवन्त की घाटियों में बहती हुई कौशिकी नदी के किनारे हिमवत्पार्श्व में विश्वामित्र का आश्रम था (बालकांड ३४।८-१०)। यहीं भार्गव च्यवन ऋषि का आश्रम था जहाँ अपने राज्य से प्रवासित राजा चले गए थे (बालकांड ७०।२९-३२)। इस सिद्ध-चारण सेवित पर्वत पर गौतम ने भी तप किया था। यहाँ लोध्र, पद्मक और देवदारु के बन थे (कि० ४३-१३)। यहाँ होने वाले हाथियों को हैमवत कहते थे (बालकांड ६-२३)। गंगा नदी को भी हैमवती (बालकांड ४३-४) कहते थे। इस पर्वत में अनेक धातुओं की खानें थीं (हिमवान् धातूनामाकरो महान्; बालकांड ३५-१४)। यहाँ किन्नर और नाग बसे थे (बाल कांड ५५-१२)। किन्नर और किन्नरियों से ही हिमालय की शोभा थी (अयोध्या, १२-७४)। यह **किन्नर देश** आधुनिक कन्नौर है (भारत भूमि, पृष्ठ ३०६)। यह शिमला के निकट रामपुर-बूशहर क्षेत्र था। ये अश्व-मुख वाली स्त्रियाँ ही किन्नरी थीं जिन्हें मैनाक (हिमालय के पहाड़) पर बसा बताया गया है (कि० ४३-३१)। हिमवान् के कारण ही भारत को हिमाह्वय वर्ष या हैमवत वर्ष भी कहते थे।

काल पर्वत (कि० ४३-१४) हिमालय पर सोमाश्रम के निकट स्थित था। यह महाभारत (वनपर्व १३९।१, ४) का काल शैल है। उत्तर में हरि-द्वार के निकट कनखल की पहाड़ियों (वनपर्व १३५।३-५) के पास ही उशीर-बीज, मैनाक, श्वेतगिरि और कालशैल स्थित थे (वनपर्व १३९।१)। पास ही गंगा की सात धाराएँ दिखलाई पड़ती थीं और एक पुण्य तीर्थ (अग्नि तीर्थ) भी था। इसके पास ही देवताओं की क्रीड़ास्थली और पवित्र कालशैल पर्वत था (वनपर्व १३९।२-४)। कालशैल के आगे **श्वेत गिरि** और कुबेर का निवास स्थान **मन्दर पर्वत** था (वन पर्वत १३९-५)। यह दुर्गम पर्वत था। काल पर्वत या कालशैल को ही कालकूट भी कहा गया है (सभा पर्व २६-४) जो कुलिन्द देश के निकट ही स्थित था। डा० अग्रवाल ने कालकूट की पह-चान टौंस (तमसा) और यमुना के प्रदेश (देहरादून-कालसी) से की है। यह यमुना की उपरली धारा का यामुन प्रदेश था। अथर्व वेद में हिमालय पर होने वाले यामुन अंजन का उल्लेख है (अथर्व ४।९।१०)। अंजन के कारण यामुन पर्वत का नाम कालकूट या काला पहाड़ होना स्वाभाविक था" (पा० भा०, पृ० ६९-७०)।

सुदर्शन पर्वत (कि० ४३-१६)—काल पर्वत को लाँघ कर आगे सुवर्ण की खानों वाला सुदर्शन पर्वत था (शैलेन्द्रं हेमगर्भं महागिरिम् सुदर्शनं नाम)। मत्स्य पुराण (१६२-८३) में इसे **हेम गर्भ** (हेमगर्भो महाशैलः) का नाम दिया गया है। युद्ध कांड (२६-३१) में सुदर्शन पर्वत का उल्लेख दक्षिण के पर्वतों के साथ हुआ है।

देवसख (कि० ४३-१७) को मत्स्य पुराण (१६२-८३) में हेमसख गिरि कहा गया है। यहाँ पक्षी, विविध द्रुम, वन, झरने और गुफाएँ थीं (कि० ४३-१८)।

कैलास (कि० ४३-२०; मत्स्य १६२-८४)—देवसख या हेमसख पर्वत के आगे एक विशाल (शतयोजनम्) सुनसान मैदान था जिसमें नदी, पर्वत, वृक्षों और जीवों का अभाव था (कि० ४३-१९)। इस मैदान को कान्तार कहा गया है जिसके अन्त में कैलास पर्वत था जो श्वेत वर्ण का था (कैलासं पाण्डुरं)। इसलिए श्वेत पर्वत कैलास का ही शिखर था। यहाँ कुबेर भवन था और एक विशाल सरोवर था। इसके शिखरों को ही चन्द्रमा की भाँति उज्ज्वल कहा गया है (चन्द्रनिकाशेषु पर्वतेषु, कि० ४३-२४)। इसे मत्स्य पुराण में (१६२-८६) चन्द्रप्रस्थ गिरि कहा गया है। मत्स्य पुराण (१६२-८४) में कहा गया है कि रावण ने इसको हिला दिया था। एलोरा के कैलास मन्दिर (गुफा १६) में इस दृश्य को शिल्पी ने दिखाया है।

क्रौंच गिरि (कि० ४३-२५) पर महर्षि-गण और महात्मा रहते थे (कि० ४३-२६)। यह विशाल पर्वत था जिसमें गुफाएँ, अनेक चोटियाँ और ढालू प्रदेश थे (कि० ४३-२७)। यह कैलास पर्वत-श्रेणी का ही वह भाग था जिस पर मानस सरोवर स्थित है। इसे ही कामशैल (कि० ४३-२८) भी कहते थे।

कामशैल (कि० ४३-२८) कामदेव का तपस्थान पर्वत था। मत्स्य पुराण (१६२।८४-८७) कैलाश पर्वत पर ही इसके अन्य शिखर-शैलों—त्रिसंग पर्वत, मन्दर, उशीरबिन्दु, चन्द्रप्रस्थ गिरि, अद्रिराट (शिवशैल), प्रजापति गिरि, पुष्कर पर्वत, देवाभ्र पर्वत, रेणुक गिरि—का वर्णन करने के बाद क्रौंच पर्वत का उल्लेख करता है जिसे **सप्तर्षि शैल** भी कहा गया है (मत्स्य १६२-८८)।

मैनाक पर्वत (कि० ४३-२९)—क्रौंच पर्वत को लाँघ कर आगे मैनाक

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पर्वत स्थित है जहाँ किन्नरी (और किन्नर) रहते थे। इस किन्नर देश में सिद्धों के आश्रम थे। उनमें सिद्ध वैखानस, बालखिल्य, तपस्वी लोग रहते थे (कि० ४३।३१-३२)। इसी पर्वत के निकट ही **वैखानस सर** था (कि० ४३।३३)। मत्स्य (१६२-८४) में इसे कैलास के निकट ही स्थित बताया गया है। मत्स्य में यहाँ मैनाक का उल्लेख नहीं मिलता है।

शैलोदा नदी (कि० ४३-३७)—मैनाक पर्वत और वैखानस सर से आगे शैलोदा नामक नदी है जिसके तटों पर कीचक वेणु (बाँसों) के वृक्ष हैं। इन बाँसों की सहायता से ही लोग इस नदी को पार करते थे। इसके उस पार **उत्तर कुरु** देश है (कि० ४३।३८)।

उत्तर कुरु—इस पुण्य पुरुषों के देश में बहुत सी नदियाँ, सरोवर और पर्वत थे। इन पर्वतों पर फल वाले वृक्ष थे। वृक्षों से ही शयन, भक्षण और पान सामग्री मिलती थी। यहाँ की स्त्रियाँ गुणवती और सुन्दर थीं। यहाँ गन्धर्व, किन्नर और यक्ष सुख से रहते थे (कि० ४३।३८-५२)।

उत्तर समुद्र एवं सोमगिरि (कि० ४३।५३)—उत्तर कुरु देश के उस पार उत्तर-समुद्र और उसके बीच (किसी द्वीप में) सोमगिरि पर्वत स्थित था। यह सूर्य रहित देश था (कि० ४३।५५)। संभवतः यह उत्तर में ध्रुव प्रदेश ही था। उत्तर कुरु के निकट ही उत्तरी समुद्र था। कहा गया है कि उत्तर कुरु के आगे नहीं जाना चाहिए। सोम गिरि अत्यन्त दुर्गम और प्रायः अगम्य ही था (कि० ४३।५७-५८)।

इन देशों के अतिरिक्त हमें **कोसल** (बाल १३।२६; अयो० १५।१९, ३८।२, ५८।१६, ६१।५ आदि), **अंग** (बाल १३।२५) मल्ल (उत्तर १०२।९), मलद (बाल २४।१८), करुष (बाल २४।१८), कारुपथ देश (उत्तर, १०२।५, ७), मिथिला-विदेह (बाल कांड १३।२१, ६८।१५, ७३।१८ आदि), धर्मारण्य-गयावन (बाल कांड ३२-७)), काशि (बाल १३-२३), अयो० १०-३७), केकय (बाल १३।२४, ७३।२, ३ आदि), मगध (बाल १३।२६), सिन्धु-सौवीर (बाल १३।२७) और सौराष्ट्र (बाल १३-२७, कि० ४२-६) आदि देशों और काम्पिल्य (बाल ३३-२०) तथा इक्षुमती (काली नदी) के तट पर स्थित सांकाश्या (बाल, ७०।२, ३, ७), वत्स (अयो० ५२।१०१) तथा कौशाम्बी (बाल ३२-६), विदर्भ (बाल ३२-२, ३८-३), द्राविडों (अयो० १०-३७) का उल्लेख भी मिलता हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पर्वतों में हिमवान्, चित्रकूट (बाल १।३१, ३२, ३।१५), विन्ध्य (बाल ६-२३, ३९-५) महेन्द्र (बाल १७-१०) और मलय (बाल ९१-२४) आदि का उल्लेख है।

गंगा-यमुना (अयो० १५-५) और सरयू (अयो० ३६।१९, २२) मध्य देश की पवित्र नदियाँ थीं।

इस प्रकार रामायण में चतुरन्ता मही (अयो० १०४-१२) अर्थात भारतीय कर्म-भूमि का दर्शन होना है जिसके उत्तर में हिमालय अफ़गानिस्तान से आसाम तक फैला था; पश्चिम में सिन्धु-सागर-संगम, सिन्धु-सौवीर-सौराष्ट्र से लेकर पूर्व समुद्र तक और दक्षिण में दक्षिण समुद्र तक फैला था। यहाँ ही दक्षिणी पूर्व एशिया की चक्षु, सीता और शैलोदा की घाटियों का दर्शन मिलता है।

अन्य ग्रन्थों की भाँति रामायण में ऐसे देशों का भी उल्लेख मिलता है जो घोड़ों और हाथियों की उत्पत्ति के लिए प्रसिद्ध थे।

हयोत्तम-देश

प्राचीन भारतीय साहित्य में उन देशों का उल्लेख किया गया है जहाँ उत्तम प्रकार के घोड़े होते थे। **रामायण** में हमें काम्बोज विषय, बाह्लीक, वनायु और नदीज (सिन्धु नदी) के निकट (सैन्धव) होने वाले घोड़ों का उल्लेख मिलता है (बालकांड ५-२२)। काम्बोज (पामीर-बदख्शां), बाह्लीक (बलख) और वनायु (अफ़गानिस्तान का वाना) तथा सैन्धव उत्तम घोड़ों के देश थे।

गजोत्तम देश

प्राचीन भारतीय साहित्य में उन प्रदेशों का भी उल्लेख मिलता है जहाँ भिन्न-भिन्न प्रकार के हाथी मिलते थे। अशोक के अभिलेखों में नागवन का उल्लेख है। भारत इन्हीं आठ नागवनों में विभक्त था जिनका उल्लेख पुराणों में मिलता है। नीति-शास्त्र के ग्रन्थों में भी इनका उल्लेख हुआ है (देखिये, अवस्थी—प्राचीन भारत का भौगोलिक स्वरूप, पृ० १४२-१४६)। रामायण में भी इन वनों का परिचय मिलता है—

विन्ध्यपर्वतजैर्मत्तैः पूर्णा हैमवतैरपि।
मदान्वितैरतिबलैर्मातंगैः पर्वतोपमैः।
ऐरावतकुलीनैश्च महापद्मकुलैस्तथा॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अंजनादपि निष्क्रान्तैर्वामनादपि च द्विपैः ।
भद्रमन्द्रैर्भद्रमृगैर्मृगमन्द्रैश्च सा पुरी ।।

बालकांड, ६।२३-२५

ऊपर विन्ध्य और हैमवत वनों का उल्लेख है जहाँ हाथी होते थे। इसके साथ ही ऐरावत, पद्म, अंजन और वामन हाथियों के कुल (वंश) थे जिनका क्रमश: प्राच्यवन, करूषवन, अपरान्तक वन और वामन वन से सम्बन्ध था। भद्र, मंद्र, मृग और संकीर्ण (मिश्र) हाथियों की चार जातियाँ थीं जिनका उल्लेख कौटिल्य (अर्थशास्त्र, अंग्रेजी, पृ० ४९) भी करता है।

———

पाठ्य ग्रन्थ

पं० जयचन्द्र विद्यालंकार—'भारतभूमि और उसके निवासी'

डा० बुध प्रकाश—'इण्डिया ऐन्ड दि वर्ल्ड'

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अध्याय ११

भुवनकोष
पौराणिक भूगोल

पुराणों का महत्व—प्राचीन भारतीय भूगोल को जानने में पुराणों का महत्वपूर्ण स्थान है। पुराण १८ हैं और इतने ही उपपुराण हैं। सभी में कुछ न कुछ भूगोल मिलता है। पुराणों में भूगोल भुवन-कोश खण्डों में विशेष रूप से दिया गया है। इस भुवन-कोश के कई रूप और प्रकार हैं। इसके अतिरिक्त पुराणों में वर्णित तीर्थ या क्षेत्र माहात्म्य भी भूगोल के लिए महत्वपूर्ण हैं यथा **ब्रह्म पुराण** से भुवन-कोश (अ० १८-२०, २७) के साथ ही साथ [ओण्ड्र (ओड्र) देश, एकाम्रक्षेत्र (भुवनेश्वर, अ० ४१), उत्कल क्षेत्र (अ० ४२), पुरुषोत्तम क्षेत्र (पुरी, अ० ४६, ६९)] उड़ीसा के भूगोल पर महत्वपूर्ण प्रकाश पड़ता है। **पद्म पुराण** के भुवनकोश (आदि खण्ड अ० ३-९) में वर्णित सुदर्शन द्वीप (अ० ३-१६) को ही महाभारतकार ने महाभारत में समेटा है। इसमें सैकड़ों तीर्थों का माहात्म्य बताया गया है। इसी पुराण से यह भी ज्ञात होता है कि प्राचीन काल में **हिन्दुओं ने भी नकशे बनाए थे।** इसी भू-चित्रावली के ग्रन्थ में यमुना के तट पर इन्द्रप्रस्थ को स्थित दिखाया गया था। एक दिन हेमांगी (एक रानी) अपनी सखी मन्त्रिपुत्री के यहां गयी। मन्त्रिपुत्री कला ने उसे अपने घर की एक अद्भुत वस्तु दिखायी। उसने रानी के सामने एक सोने की पिटारी लाकर रख दी जिसमें एक किताब थी। इसके प्रारम्भ में देवावतारों के चित्ररूप थे और आगे भूचित्र था (पद्म पु० ६।२१७।५-९)—

> मंजूषां तत्र संस्थं च पुस्तकं पाणिनाऽग्रहीत्।
> तत्रावलोकयामास साऽवतारान्समासतः।
> पूर्वं ततस्तु भूगोलं पंचाशत्कोटियोजनम्॥
> तत्रान्धकारसंयुक्ता भूमिर्दृष्टा च कांचनी।
> एतयोरन्तरे राजँल्लोकालोकश्च पर्वतः॥
> सप्तद्वीपास्ततो दृष्टाः समुद्रैः सप्तभिर्वृताः।
> एतेषु नद्यः शैलाश्च खण्डानि तु महामते॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

एतद्भारतखंडं सा पश्यन्ती भूपतिप्रिया ।
यमुनाजान्हवीमुख्याः सरितः समवैक्षत् ।।

यमुनातीरग राजन्निन्द्रप्रस्थमिदं शुभम् ।
ददर्श सा महाभागा तीर्थव्रजयुतं नृप ।।

ऊपर भूचित्र में भूगोल (पृथिवी), इसके भाग, **सातद्वीप जो सात समुद्रों** से घिरे हुए थे, उनद्वीपों के खंड (वर्ष), नदी, पर्वत आदि के साथ ही **भारत-खंड** भी स्पष्ट था जिसमें गंगा यमुना आदि नदियाँ और तीर्थ आदि दिखाये गए थे। यही भुवनकोषों का वर्ण्य विषय भी है। परन्तु कहीं-कहीं विभिन्न पुराणों में वर्णन शैली भी भिन्न-भिन्न हो गई है।

विष्णु पुराण में संक्षिप्त भुवन कोश सामान्य ढंग से वर्णित है। इसमें तीर्थ-माहात्म्यों के न होने से अधिक भौगोलिक सामग्री नहीं मिलती है। **वायु** और **ब्रह्मांड** पुराणों का भुवनकोश विस्तार से है। इनमें नागवनों और तीर्थ-माहात्म्य भी दिए गए हैं। **भागवत** में भुवन कोश का वर्णन करते हुए भौगोलिक सिद्धांतों का उल्लेख सिद्ध करता है कि टॉलमी के बहुत पहले यहाँ भौगोलिक सिद्धान्तों पर भूगोलक (पृथिवी) का वर्णन होता था। पुराणों में भुवनकोश के अध्यायों से पहले खगोल का वर्णन मिलता है। भागवतीय भुवनकोश सामान्य ही है। इसमें तीर्थयात्राओं (बलराम-यात्रा) से स्थानों की स्थिति पर महत्वपूर्ण प्रकाश पड़ता है। **नारदीय पुराण** में भूगोल-वर्णन (द्वीपाख्यान, भरतखंड) मिलता है (पूर्व खंड, अ० ३)। तीर्थों का माहात्म्य (उत्कल, शालग्राम क्षेत्र, वाराणसी गया आदि) और नदियों का वर्णन (पूर्व खंड, ६।३०-३३) किया गया है, **मार्कंडेय पुराण** प्राचीन भूगोल का महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। इसमें पुराणों की सामान्य भुवनकोश-परम्परा (बंम्बई संस्करण अ०, ५४ और कलकत्ता जीवानन्द सं०, अ० ५७) के अतिरिक्त कूर्म-विभाग-व्यवस्था (बम्बई संस्करण, अ० ५५ और कलकत्ता सं०, अ० ५८) का वर्णन विस्तार के साथ किया गया है। कूर्मविभाग-देशव्यवस्था में कूर्म को पूर्व की ओर मुह कर भारतभूमि को ढक कर बैठा हुआ माना गया है। इसके भिन्न-भिन्न अंगों में देशों की स्थितियाँ बतायी गयी है। इसके सामान्य भुवनकोश अध्याय में सप्तद्वीपा पृथिवी, जम्बूद्वीप के खंड (वर्ष), पर्वत आदि, और भारतवर्णन—सप्तकुलपर्वत, इनसे निकलने वाली नदियाँ, ७ देश-भागों (मध्य-देश, उदीच्य, प्राच्य, दक्षिणापथ, अपरान्त, विन्ध्यपृष्ठ, और पर्वताश्रयी) में स्थित जनपदों का वर्णन किया गया है। **कूर्म-संस्थान** में भारत के नौ खंडों

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(मध्यभाग, मुख, पूर्वदक्षिण पाद, दक्षिण कुक्षि, दक्षिण-पश्चिम पाद, पुच्छ या पृष्ठ भाग, उत्तरपश्चिम पाद, उत्तर कुक्षि, और पूर्वोत्तर पाद) में स्थित केवल जनपदों का वर्णन किया गया है। इसमें पूर्वाभिमुखी भारत रूपी कूर्म क्षेत्र का वर्णन किया गया है। **पार्जिटर** ने मार्कण्डेय पुराण के अंग्रेजी अनुवाद में परिश्रम और प्रज्ञा के साथ विभिन्न स्थानों की पहचान भी की है। रावर्ट शेफर (एथनोग्राफी आफ ऐन्शेंट इन्डिया, १९५४) और शशिभूषण चौधरी (एथनिक सेटलमेन्ट्स इन ऐन्शेन्ट इन्डिया, कलकत्ता १९५५) ने भी इस पुराण की दोनों जनपद सूचियों का विवेचन किया है। इससे इस पुराण का भौगोलिक महत्व स्पष्ट है। **अग्नि पुराण** में भी भुवनकोश (अ० १०८, ११९, १२०) और भारतवर्ष (अ० ११८) का वर्णन अत्यन्त संक्षिप्त रूप में किया गया है। इसमें हमें रामायण व रामावतार वर्णन (अ० ५-११), और महाभारत (अ० १३-१५) के संक्षिप्त विवरणों में रामायण और महाभारत की भौगोलिक व्यवस्था परिलक्षित होती है। पूर्वपश्चिमोत्तर और दक्षिण में सीता को खोजने वाले वानरों का जाना (अग्नि पु० ८।१०-११) **रामायण के किष्किन्धा काण्ड** (अ० ४०-४३) में वर्णित भूगोल की स्मृति दिलाता है। इसी प्रकार महाभारत के अध्यायों में भी महाभारत के भौगोलिक संकेत मिलते हैं। **गरुण पुराण** (पूर्वार्द्ध अ० ५४-५६) में भुवन कोश का वर्णन किया गया है। इसमें (पूर्वार्द्ध अ० ५५) जम्बूद्वीप के वर्षों के अतिरिक्त नव द्वीप, भारत के प्रत्यन्त राज्यों, कुलपर्वतों और नदियों तथा जनपदों की सूची दी गई है। यह वर्णन **विष्णुधर्मोत्तर** से मिलता-जुलता है (द्रष्टव्य-गरुड़ पुराण एक अध्ययन-अवस्थी)। **मत्स्य, कूर्म, वामन,** और **लिंग पुराणों** में भी सामान्य भुवनकोश और तीर्थ-माहात्म्य मिलते हैं। **वराह पुराण** के भुवनकोश में भारतवर्ष (महावर्ष) और नवें द्वीप को भारत द्वीप कहा गया है। इसमें भी तीर्थों और क्षेत्रों का माहात्म्य अधिक संख्या में है। इनसे नेपाल के भूगोल तथा मथुरा और इसके आसपास के १२ बनों का परिचय मिलता है। **स्कन्द पुराण** न केवल आकार में सबसे बड़ा पुराण है, प्रत्युत भौगोलिक वर्णन के दृष्टि-कोण से भी सबसे महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। इसमें सामान्य भुवनकोश-परम्परा पर द्वीपाख्यान, जम्बूद्वीप, भारतवर्ष और इसके नव खण्डों का वर्णन किया गया है। नवें खण्ड को कुमारी खण्ड या कौमारिका खण्ड कहा गया है, जिसे वामन पुराण में कुमार द्वीप कहा गया है। इसी वर्णन के साथ-साथ भारतवर्ष को ७२ देशों में विभक्त कर प्रत्येक देश की ग्रामसंख्या और फिर भारत के वेलाकूल का वर्णन किया गया है (कुमारिका खण्ड, अ० ३९)। इसी पुराण

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

के अरुणाचल क्षेत्र माहात्म्य में नदी-देशों का भी वर्णन मिलता है। ये सूचनाएँ हमें अन्यत्र कहीं नहीं मिलती हैं (देखिए—स्ट० स्क० पु०)। **भविष्य पुराण** सबसे बाद का पुराण है जिसमें मध्यकालीन देश व्यवस्था की भी झांकी मिलती है—अजमरपुर (अजमेरपुर), राजपुत्राख्यदेश (राजपूताना) आदि। फिर भी इसमें बिखरी हुई भौगोलिक सामग्री अत्यन्त महत्वपूर्ण है यथा—

पांचालात्पूर्वतो देशो मागधः परिकीर्तितः।
आग्नेय्यां च कलिंगश्च तथावन्तश्तु दक्षिणे॥
आनर्त देशो नैर्ऋत्यां सिंधुदेशस्तु पश्चिमे।
ईशाने चैव कौणिन्दश्चार्यदेशश्च तत्कृतः॥

भवि० ३।१।६।२२-२४

यह प्रतिहार युगीन देश-व्यवस्था है जिसमें कान्यकुब्ज महादेश (पांचाल) के पूर्व पाल साम्रज्य (मागध देश) और पश्चिम में सिन्धु देश था।

भविष्य पुराण (३।३।२।९-१३) में मध्य युगीन राष्ट्र-व्यवस्था (जियो पालिटिक्स का दिग्दर्शन कराया गया है—

स्वर्गते विक्रमादित्ये राजानो बहुधाऽभवन्।
तथाष्टादश राज्यानि तेषां नामानि मे शृणु॥
पश्चिमे सिन्धुनद्यन्ते सेतुबन्धे हि दक्षिणे।
उत्तरे बदरीस्थाने पूर्वे च कपिलान्तिके॥

यहां भरतखण्ड का विस्तार और इसकी सीमाएँ—पश्चिम में सिंधु नदी, दक्षिण में सेतुबन्ध, उत्तर में बद्रीनाथ तथा पूर्व में कपिल (गंगा सागर) दी गई हैं। इसी क्षेत्र में १८ राज्य स्थित थे—

इन्द्रप्रस्थं च पांचालं कुरुक्षेत्रं च कापिलम्॥
अन्तर्वेदी व्रजश्चैवाजमेरं मरुधन्व च।
गौर्जरं च महाराष्ट्रं द्राविडं च कलिंगकम्॥
आवन्त्यं चोडुपं वंगं गौडं मागधमेव च।
कौशल्यं च तथा ज्ञेयं तेषां राजा पृथक्पृथक॥

भविष्य पु० (२।१।४।१-२३) में जम्बूद्वीप आदि ७ द्वीपों का वर्णन किया है।

भुवनकोश के साथ-साथ भविष्य पुराण भुवन-प्रतिष्टा में **भूचित्र** का भी वर्णन मिलता है (भविष्य पु० ४।१९।१५-२४)—

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पुण्ये तिथौ शिवक्षेत्रे दिने सौम्यग्रहान्विते ।
सप्त हस्तं पटं कृत्वा चतुरस्रं सुसंहतम् ।।
तस्मिन्सर्वाणि राजेन्द्र भुवनानि च लेखयेत् ।।
चातुर्वर्ण्यकमानीय विचित्रं चित्रकर्मणि ।
युवानं व्याधि रहितं भव्यं चित्रकरं शुभम् ।।
संपूजयित्वा यत्नेन दिव्यवासोविभूषणैः ।
प्रारंभं कारयेद्राजन्पटे तस्मिन्यथोदितं ।।
मध्ये च लेखयेद्राजञ्जम्बूद्वीपं सविस्तरम् ।
तस्य मध्ये स्थितो मेरुर्मेरोरुपरि देवताः ।।
दिशासु लोकपालानां पुरोऽष्टौ सुरसंयुताः ।
सप्तद्वीपवती पृथ्वी सप्त चैव कुलाचलाः ।।
सागराः सप्त चात्रैव नद्यो ह्रदाः सरांसि च ।
पातालाः सप्त चात्रैव सप्त स्वर्गविभूतयः ।।
एवं विधं पटं राजन्कारयित्वा सुशोभनम् ।
....
एतत्सर्वं पटस्थं तु कृत्वा चित्रमयं सुधीः ।

इस प्रकार चित्र-पट पर की गई भुवन-प्रतिष्ठा में भूचित्र अपने सर्वांगों से पूर्ण बनाना प्रचलित था । पुराणों में भूगोलक या भूगोल का वर्णन ही भुवनकोश का उद्देश्य था । अंग्रेजी में 'ज्याग्रफी' शब्द के समान ही इसका नाम आगे चलकर भूगोल पड़ गया । भूगोलक और भूगोल का अर्थ पृथिवी है, जिसका वर्णन नाम, मान, रूप और लक्षणों के आधार पर ही किया गया है ।

पौराणिक भुवन-कोश की विशिष्टताएँ

पौराणिक भुवन कोश की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं—

१—सृष्टि के साथ-साथ पृथिवी की उत्पत्ति ही जगत की उत्पत्ति है । धरणी और भूतधात्री पृथिवी—का स्वरूप और पृथिवी के भाग (द्वीप), तथा **सप्तद्वीपवती मही** में जम्बूद्वीप की श्रेष्ठता ।

२—भारत महिमा—जम्बूद्वीप के वर्षों (खण्डों) में भारत की श्रेष्ठता और महिमा । उत्तम भारतवर्ष ।

३—भारत वर्णन—नाम निरुक्ति, कर्मभूमि, नव-भेद—भारतवर्ष और भारतद्वीप, भारतद्वीप, मर्यादा—७ कुलपर्वत और उनसे निकलने वाली नदियाँ, देश-विभाग और जनपद वर्णन ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

४—कूर्म-संस्थान (मार्कंडेय पुराण)

इन उपर्युक्त विशेषताओं को हम दो भागों में ही विभक्त कर सकते हैं—

१—लोक संस्थान (भूसंस्थान)

२—भारत वर्ष

लोकोत्पत्ति और ब्रह्मांड

कर्म-जाति प्रकल्पित विश्व की उत्पत्ति सांख्य दर्शन के सिद्धान्तों पर हुई। प्रकृति-पुरुष और विकारों ने अंड को जन्म दिया जिसको जीवन मिला। उस अंड से पुरुष निकला जिसके अंगों में ही लोकों की कल्पना की गई (भागवत २।५।२२-४२)। उस सनातन पुरुष से व्याप्त यह विश्व दिव्य है। इस ब्रह्माण्ड में ७ पाताल और ७ लोक मिलकर १४ लोक कहलाते हैं।

७ लोकों में एक भू-लोक है जो पादगम्य है।

पृथिवी

पृथिवी ही भू लोक है। जहाँ हम पैरों से चल सकें वही भू-लोक है (पादगम्यस्तु भूलोको; अग्नि १२०-११)। इस वसुन्धरा को विष्णु-पत्नी भी कहा गया है। ज्योतिर्लोक, नदी, समुद्र, वन और पर्वतों से युक्त यह पृथिवी कमल रूपिणी कही गई है (अग्नि पु० १२०-३९)।

इसलिए यह पूजी जाती थी और पूजना चाहिए (नीलमत पुराण ६६२—पूजयेत् पृथिवी देवीं)। प्रजा और पृथिवी में सन्तान और माँ का सम्बन्ध है। पृथिवी मां है और मैं इसका पुत्र (माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः, अथर्व वेद १२-१-१२)। मनुष्य के अन्तिम अवशेषों—अस्थियों—को भूमि में गाड़ते हुए कहा जाता है—'जाओ, अब भूमां के पास (उपसर्प मातरं भूमिं)। पृथिवी एक पारिभाषिकी संज्ञा है; धर्मात्मा महाराज पृथु के अनुराग-योग (भक्ति) के कारण ही मही उसकी पुत्री हो गई और आदि राज पृथु की भूमि-भक्ति के कारण ही यह पृथिवी कहलायी (मत्स्य पु० १०-३५)। इस भूमि-भक्ति के कारण राजा भी 'पार्थिवाः' कहलाते हैं। यही देश-भक्ति है (देखिए, अवस्थी—इन्डियन नेशनलिज्म, वाल्यूम वन)।

महीगोल (महीमंडल)—पुराणों में पृथिवी को पद्माकारा कहा गया है (वायु, १-३४-४४; वामन ७७-७; अग्नि १२०-३९; मत्स्य १६९-३,४; वराह अ० ८१, पृ० ३५८)। यह पंकजाकृति उसके शुभ्र स्वरूप और गोल आकार का परिचायक है। इसके गोल आकार के कारण ही इसे भूगोलक या भूगोल का नाम पुराणों में दिया गया है। भूगोलकत्व का ही परिचायक शब्द

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भूमण्डलम् (स्कन्द पु० २-४-१५-१) था। स्कन्दपुराण स्पष्टतः इसे वृत्ताकार बताता है (स्क० पु० ६-१६८-७ : उर्वी वृत्ताकारा)। योगवसिष्ठ(३-१२-२५) में वर्तुलाकृति वाले भूगोलक को गेंद (वीटा) के समान बताया गया है (योगव०, उत्तरार्ध ६-१२६-२९ : भूगलकोऽयं वर्तुलाकृतिः; ६-१२७-२ : वीटा चिन्मात्रबालेन कल्पिता भूस्तथा)। स्कन्द पुराण के अनुसार यह मही (महीगोल, योगव० उ० ६-१२७-६) भ्रमरिका (भौंरी) की भांति घूमती भी थी (यथा भ्रमरिका दृष्टा भ्राम्यते च मही, स्कन्द पु० १-१-३१-७१)। इस प्रकार हिन्दुओं का भूगोल विषयक ज्ञान अत्यन्त उच्च था।

यह भूगोल-ज्ञान ही विज्ञान बन गया था जब हम इसके पीछे मान्य परम्पराओं और सिद्धान्तों को पाते हैं। प्राचीन भारत में भूगोल का अध्ययन-अध्यापन और वर्णन वैज्ञानिक ढंग पर किया जाता था जैसा कि भागवत पुराण के निम्नांकित उद्धरण से स्पष्ट ज्ञात होता है :

भूगोलकविशेषं नामरूपमानलक्षणतो व्याख्यास्यामः ॥

भागवत पु० ५-१६-४

वराहपुराण से भी ज्ञात होता है कि पृथिवी का वर्णन एक निश्चित प्रणाली के अनुसार ही होता था और यहाँ भी प्रमाण, स्थिति, विस्तार आदि ही को आधार माना गया था :

भूमि प्रमाणं संस्थानं पर्वतानाञ्च विस्तरम् ।

अस्माकं ब्रूहि कृपया देव देव उमापते ॥ वाराह पु० ७४।३

इसी प्रकार इस पुराण में भी, अन्य पुराणों की भांति, वर्णन भी मिलता है :

एष वः कथितो मार्गोभूमेरायामविस्तरः ॥

वाराह पु० अध्याय ८५, पृ० ३७२।

वराह पुराण के भुवनकोशवक्ता भगवान शंकर हैं (वराह पु०, अ० ७४-अ० ८९) अस्तु ऐसा परिलक्षित होता है कि अन्य विद्याओं की भांति भूविद्या भी शिव-प्रसूता ही थी।

चतुर्महाद्वीपा पृथिवी (चतुर्महाद्वीपवती सेयमुर्वी प्रकीर्तिता, वायु पु० १।४१।८२)पहले यह चार द्वीपों वाली पृथिवी थी।

पुराणों में पृथिवी को सप्तद्वीपा (सात द्वीपों वाली) कहा गया है। अन्य साक्ष्यों (का० मी० अ० १७) से भी यही ज्ञात होता है। इन द्वीपों की संख्या में उत्तरोत्तर विकास होता रहा। पहले यह पद्म (कमल) के आकार

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वाली पृथिवी चार महाद्वीप और बहुत से द्वीपों से युक्त थी (सैषा चर्तुमहाद्वीपा नागाद्वीपसमाकुला) थी (वायु पु० ९।४१।८५)। ये चार महाद्वीप—भद्र, भरत, केतुमाल और उत्तर कुरु—थे। ये चार द्वीप—भद्राश्व, भरत, केतुमाल और उत्तर कुरु—मेरु के चारों ओर स्थित थे और इन्हें देश भी कहा गया है (ब्रह्मांड पू० भा०, २।१५।५०-५१)। आगे चलकर जब पृथिवी सात द्वीपों वाली मानी गयी तो यही चारों द्वीप या देश जम्बूद्वीप के चार खण्ड (वर्ष) कहलाये।

सप्तद्वीपा पृथिवी—पृथिवी के सातद्वीपों की परम्परा प्राचीन भुवन-विन्यास में पक्की होकर जम गई। ये सात द्वीप निम्नांकित हैं—प्लक्ष द्वीप, शाल्मल द्वीप, कुशद्वीप, क्रौंच द्वीप, शाक द्वीप, पुष्कर और जम्बूद्वीप। कुछ पुराणों (स्कन्द, वराह, और मत्स्य) में प्लक्ष द्वीप के स्थान पर गोमेद द्वीप का नाम दिया गया है। ब्रह्मवैवर्त पुराण में (ब्रह्म० ७-७) शाल्मल के स्थान पर न्यग्रोध का नाम दिया गया है।

पुराणों में इन द्वीपों के वर्षों (खण्डों), पर्वतों, नदियों और वनों आदि का भी वर्णन दिया गया है। परन्तु इन द्वीपों की पहचान अभी तक ठीक-ठीक नहीं हो सकी है। इसलिए इनका विवेचन इस ग्रन्थ में करना असंगत सा लगता है। यदि भाषाविद् विद्वान-भारतीय और अभारतीय—पुरातत्व, भूगर्भ-शास्त्री, आदि इन द्वीपों के नाम-रूप और लक्षणों पर विचार करें तो पहचान कठिन नहीं है। विदेशी विद्वान करना ही नहीं चाहते क्योंकि इससे भारतीय संस्कृति पर पाश्चात्य प्रभुता की नकली छाप छूट जाने का भय है। इसीलिए वे इन वर्णनों को काल्पनिक कह कर अपनी अज्ञता पर पर्दा डालते हैं।

प्रो० अली ने जलवायु और वनस्पति के आधार पर इन द्वीपों की पहचान की है—

शाकद्वीप—मलाया, श्याम, इण्डोचाइना और दक्षिण चीन।

कुशद्वीप—ईरान और दक्षिण पश्चिम एशिया (ईराक और रेगिस्तानी भाग)।

प्लक्ष द्वीप—भूमध्य सागरीय क्षेत्र, ग्रीस और निकटस्थ भाग।

पुष्कर द्वीप—जापान, मंचूरिया और दक्षिण पूर्व साइबेरिया।

शाल्मल द्वीप—मेडागास्कर और अफ्रीका का वह भाग जो भूमध्य रेखा के निकट स्थित है।

क्रौञ्च द्वीप—कृष्ण सागर के निकट स्थित भूखंड।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जम्बू द्वीप (मध्य द्वीप)—भारतवर्ष, मध्य एशिया और उत्तर पश्चिम साइबेरिया (जा०पु०, फ़िगर ३, पृ० ४९) और उत्तर चीन। इसके उत्तरी भागों में यूराल और कैस्पियन सी से लेकर येनीसे तक और तुर्किस्तान तथा थ्यानशान पर्वत से आर्कटिक समुद्र तक भूखंड सम्मिलित थे (जा० पु०, पृ० ८७)। दक्षिणी भाग में भारत स्थित था।

यद्यपि यह पहचानें बड़े परिश्रम के साथ की गई हैं, परन्तु इनमें निश्चयता नहीं है।

पुराणों के अनुसार सातों महाद्वीपों के मध्य में लवण सागर से घिरा हुआ जम्बूद्वीप है; तत्पश्चात प्लक्षद्वीप, शाल्मलद्वीप, कुशद्वीप, क्रौंचद्वीप, शाकद्वीप और पुष्करद्वीप हैं जो क्रमशः इक्षुरस सागर, सुरोदक सागर, घृतोदक सागर, दधि सागर, क्षीर सागर और स्वादूदक सागर से घिरे हुए हैं। ये महाद्वीप और समुद्र उत्तरोत्तर दूने होते गये हैं। इन सभी द्वीपों के वर्णन में जम्बू द्वीप का विशेष रूप से वर्णन किया गया है। इसी महाद्वीप का वर्ष (विभाग) भारतवर्ष भी था।

जम्बूद्वीप

यह सभी महाद्वीपों के मध्य में स्थित है। जम्बू वृक्ष के आधार पर ही इसे जम्बू द्वीप कहा गया था। महाभारत और पद्मपुराण में इसे सुदर्शन द्वीप कहा गया है। इस महाद्वीप की उल्लेखनीय विशेषता यह है कि यह उत्तर और दक्षिण में नीचा है तथा मध्य में ऊँचा है (दक्षिणोत्तरतो निम्ना मध्ये तुंगा यथा क्षितिः। मार्कंडेय ५१-१२)। मेरु पर्वत इसके बीचोबीच में स्थित है। इस प्रकार मेरु के आसपास का क्षेत्र ऊँचा है। मेरु की पहचान पामीर से की गई है। इस लक्षण के आधार पर कि जम्बू द्वीप का मध्य भाग ऊँचा और उठा हुआ है तथा दक्षिण और उत्तर भाग नीचे हैं, जम्बूद्वीप की पहचान आधुनिक एशिया से करना समीचीन है। जम्बू नदी ही ब्रह्मपुत्र (सम्पो) नदी है।

सुमेरु से उत्तर नील, श्वेत और शृंगवान् वर्ष पर्वत हैं और सुमेरु के दक्षिण निषध, हेमकूट और हिमवान् वर्ष पर्वत हैं। हिमवान् परिचित ही है; हेमकूट कैलास है; और अन्य पर्वत हमें एशिया की प्रमुख पर्वत श्रेणियाँ ही प्रतीत होती हैं।

मेरु के चारों ओर, मध्य का उठा भाग, इलावृत वर्ष कहलाता था; इसके उत्तर में क्रमशः रम्यक, हिरण्मय और उत्तर कुरु वर्ष स्थित थे। इला-

 CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वृत के दक्षिण क्रमशः **किम्पुरुष वर्ष**, हरि **वर्ष और भारत वर्ष** हैं। इलावृत के पूर्व में **भद्राश्व** और इलावृत के पश्चिम में **केतुमाल वर्ष** था। इस प्रकार जम्बूद्वीप नव वर्षों में विभक्त था। इनकी सीमाएँ वर्ष पर्वत थे। भारत के अतिरिक्त इन वर्षों की पहचान निश्चित नहीं है।

जम्बूद्वीप के उपद्वीप—भागवत पुराण के अनुसार राजा सगर के पुत्रों ने यज्ञ के घोड़े को (जो खो गया था) खोजते हुए पृथिवी को चारों ओर से खोदा। इससे जम्बूद्वीप में आठ द्वीप बन गये। ये स्वर्णप्रस्थ (=स्वर्णद्वीप), चन्द्रशुक्ल, आवर्तन, रमणक (रमन्ना), मन्दर, हरिण, पांचजन्य, सिंहल अथवा लंका थे। देवी भागवत पुराण में भी हमें इन आठ उपद्वीपों का उल्लेख मिलता है (देवी भागवत, ५।११।३०-३२)। देवी भागवत में चन्द्रशुक्ल के स्थान पर चन्द्रशुक्र पाठ है। यहाँ यह स्पष्ट कहा गया है कि 'सिंहलों लंकेति' (भागवत, ४।१९।३०), सिंहलश्चैव लंकेति (देवी भागवत ५।११।३२) अथवा सिंहल ही लंका है। इनमें रमणक द्वीप प्रसिद्ध नागों का घर था जहाँ कालिय नाग मथुरा छोड़ कर चला गया था। यह बंगाल की खाड़ी में स्थित आधुनिक रमन्न ही है।

इन अन्य द्वीपों में सिंहल-लंका अति प्रसिद्ध था जिसे भारतवर्ष के नव-भागों का एक भाग (द्वीप) माना गया था। वायु पुराण (१।४८।१) में भारत के दक्षिण समुद्र के पार भारतवर्ष अनेक द्वीपों से अलंकृत था। इन्हें **अन्तरद्वीप** कहा गया है। इनमें **बर्हिणद्वीप पुंज** और अनेक क्षुद्रद्वीप (वायु १।४८।१२) थे। जम्बू महाद्वीप में ही विविध रत्नों की खानि वाले अन्य छे द्वीप—**अंग द्वीप, यम द्वीप, मलय द्वीप, शंख द्वीप, कुश द्वीप** और **वराह द्वीप** थे (वायु, १।४८।१३-१४)। शंखद्वीप और पांचजन्यद्वीप एक ही थे।

अंग द्वीप—इस विस्तृत द्वीप में नाना प्रकार के प्राणि-संघ और म्लेच्छ रहते थे। यहाँ स्वर्ण और विद्रुम रत्नों की खानि पृथिवी में थी। यह नदी, शैल और वनों से सुशोभित था। यहीं चक्रगिरि पर्वत था जो नागों के घर नाग देश में स्थित था (वायु० पु० १।४८।१५-१८)। दक्षिण पूर्व एशिया में स्थित प्राचीन भारतीय उपनिवेश चम्पा ही अंगद्वीप था। चम्पा के जंगली चम लोगों को ही म्लेच्छ माना जाता है। युअनच्वांग ने जिस महाचम्पा का उल्लेख किया है यह वही अंग द्वीप या चम्पा था। चम्पा में शिव-उपासना प्रमुख थी और नागों का शिव से घनिष्ठ सम्बन्ध है। डा० आर० सी० मजूमदार इसे अरब लेखकों का अंगदीय मानते हैं। डा० बुध प्रकाश इसे

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
अंग्स द्वीप (अलमहरी द्वारा उल्लिखित हन्स) मानते हैं (इं० व०, पृ० ६१-६२)।

यवद्वीप—यमद्वीप अशुद्ध पाठ है। इसका शुद्ध पाठ यव द्वीप होना चाहिये। इसमें रत्नों की खानें थीं; द्युतिमान् पर्वत धातुओं से अभिमंडित था और समुद्र में गिरने वाली नदियों की घाटियों में सोना मिलता था (वायु, १।४८।१९)। यह जावा है। डा० बुध प्रकाश इसे जेमूर और अंग द्वीप (अंग्स) मानते हैं (इं० व०, पृ० ६४)।

मलय द्वीप—यव द्वीप के समान ही मलय द्वीप भी मणि, रत्न और कनक (सोना) से भरा हुआ था। यहाँ चन्दन और सामुद्रिक पदार्थ (शंख आदि) भी मिलते थे। महामलय या मलय पर्वत पर चाँदी भी मिलती थी। नदियों और पर्वतों से सुशोभित यह द्वीप नाना म्लेच्छ जातियों का घर था (वायु पु०, १।४८।२०-२५) यहाँ अगस्त्य का घर था। यहीं कांचनपाद गिरि पर महात्माओं के आश्रम भी थे। यह आधुनिक मलाया है। रामायण में उल्लिखित चांदी मिलने वाला देश या रूप्यक द्वीप मलय द्वीप ही था।

लंका—त्रिकूट पर स्थित लंका नामक समृद्ध महापुरी थी (वायु, १।४८।२६-२९) यही सिंहल द्वीप था जिसके पूर्वी समुद्रतट पर गोकर्ण का प्रसिद्ध मन्दिर था (वायु १।४८।३०)।

शंखद्वीप—शंख द्वीप को एक विस्तीर्ण राज्य कहा गया है जो सौ योजन विस्तीर्ण था। यहाँ नाना जाति के म्लेच्छ रहते थे। यहीं शंख गिरि पर्वत था। यहाँ भी रत्नों की खानें थीं जिससे शंखनागा नदी निकलती थी। यहीं शंख मुख नामक नागराज रहता था (वायु० १।४८।३१-३३)। कम्बु नामक एक दैत्य-जाति (म्लेच्छ) थी (मार्कंडेय पु० ८५-३)। कम्बु शंख को भी कहते थे। अतः शंख द्वीप की पहचान प्राचीन भारतीय उपनिवेश कम्बुज से की जा सकती है। देवीमाहात्म्य और महिषासुर वध उपाख्यान में बताया गया है कि शुंभ दैत्य की सेना में कालक, दौर्हृद, मौर्य और कालकेय सम्मिलित थे (मार्कंडेय पु० ८५-५)। कंबु लोगों के समान ये भी दैत्य थे। देवीभागवत पुराण (५।२८।११-११) में कालकेयों के साथ ही काम्बोजों को भी दानव कहा गया है। ये काम्बोज और कम्बु एक ही थे ये सभी पाताल या द्वीपान्तर के रहने वाले थे। अतः शंखद्वीप और कम्बुज की पहचान निश्चित ही है। डा० आर० सी० मजूमदार और डा० बुध प्रकाश इसकी पहचान अरब लेखकों द्वारा उल्लिखित सैंखे द्वीप से करते हैं (इं० व०, पृ० ५९)।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कुशद्वीप—कुशद्वीप को कुमुद द्वीप भी कहते थे; क्योंकि यहाँ कुमुदा देवी की पूजा होती थी (वायु, १।३८।३४-३५)। देवी भागवत (७।३०।८०) के अनुसार कुशद्वीप की अधिष्ठात्री देवी कुशोदका थी (कुशद्वीपे कुशोदका)। यह कुशद्वीप भारतवर्ष से सम्बद्ध था। अतः कुशद्वीप, जहाँ एक शक्तिपीठ था और जो कुमुदद्वीप भी कहलाता था और कुश महाद्वीप (पृथिवी के ७ द्वीपों में एक महाद्वीप) एक न थे। कुश-कुमुद द्वीप एक उपद्वीप ही था जो भारत के दक्षिण में स्थित था। जेरिनी कुशद्वीप की पहचान सुमात्रा में सुंद द्वीप समूह से करते हैं। (इं० व० पृ० ७०)।

वराहद्वीप—यह द्वीप विभिन्न जातियों और म्लेच्छों का निवास स्थान था; यहाँ वराह पर्वत स्थित था जिसमें बहुत गुफाएँ और झरने थे; वहीं वाराही नाम की नदी भी बहती थी और यहाँ वाराह भगवान की एकभक्ति प्रचलित थी। इस द्वीप में बहुत से नगर और बन्दरगाह स्थित थे। (वायु पु० १।४८।३६-४०)। इसकी पहचान अरब लेखकों द्वारा उल्लिखित बरवा द्वीप से की गई है। डा० बुध प्रकाश के अनुसार वराह द्वीप वेर्हल द्वीप ही है जो सुमात्रा के तट के निकट स्थित था (इं० व०, पृ० ७१-७२)।

ऊपर इन छे द्वीपों को भारत के साथ ही सम्बद्ध किया गया है।

बर्हिण द्वीप पुंज—ऊपरी चिंडविन प्रान्त की कुबो घाटी का उत्तरी भाग मौर्य कहलाता था। प्रोम (श्री क्षेत्र) को मेरेउर या मल्थुरा कहते थे। यहाँ के राजा लोग अपने आपको मौर्य कहते थे जिन्होंने तगोंग या ओल्ड पैगन की नींव डाली थी और मयूर को राजचिह्न अपनाया। इस प्रकार बर्हिण द्वीप बर्मा है (इं० व० पृ० ७३)। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि कालक, कालकेय, कम्बु (या कम्बोजों) के साथ ही मौर्य भी दानव कहे गये हैं (मार्कंडेय ८५-५)।

भारतवर्ष

एवम् षडेते कथिता अनुद्वीपाः समन्ततः ।
भारतद्वीपदेशो वै दक्षिणे बहुविस्तरः ॥
एवमेकमिदं वर्षं बहुद्वीपमिहोच्यते ।
समुद्रजलसंभिन्नं खंडं खंडीकृतं स्मृतम् ॥

वायु पु० १।४८।४१-४२

ऊपर के छे अनुद्वीपों या उपद्वीपों का वर्णन करने के बाद वायु पुराण कहता है—"इस प्रकार मैंने छे अनुद्वीपों का वर्णन किया; भारतद्वीप दक्षिण

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दिशा में अतिविस्तीर्ण द्वीप है। इस प्रकार यह एक वर्ष (भारतवर्ष) बहुत द्वीपों वाला कहा गया है और समुद्र के जल से ही ये भाग खंड-खंड हो गये थे।" इस कथन में प्राचीन भारतीय भूगोल का बहुत बड़ा मन्त्र कहा गया है जिससे हमें ज्ञात होता है कि भारतद्वीप और भारतवर्ष अलग-अलग थे—

१. भारतवर्ष बहुत द्वीपों से युक्त था और इन द्वीपों में

२. भारतद्वीप भी एक द्वीप था।

यही हमें वराह पुराण से भी ज्ञात होता है कि—

१. एक, **महद्भारतवर्ष**—(हेमाद्रेर्दक्षिणं वर्षं महद्भारतं नाम) था (वराह पुराण अ० ७४, पृ० ३३१)।

२. दूसरा, **भारतद्वीप** था जो भारतवर्ष के नौ द्वीपों में से एक था—भारतं नवभेदं श्रृणुत। तद्यथा। इन्द्रः कमेरुः ताम्रवर्णो गभस्तिः नागद्वीपः तथा सौम्यो गान्धर्वो वारुणो भारतञ्चेति (वराह पु० अ० ८५, पृ० ३६५)।

वराह पुराण में ही कहा गया है कि भारतवर्ष सात द्वीपों वाला था (इदं भारतं वर्षं सप्तद्वीपं समांकितम्, वराह पु० अ० ७४-१)। इन सात द्वीपों के नाम नहीं दिये गये हैं।

भारतद्वीप में सात कुलपर्वत—महेंद्र, मलय, सह्य, शुक्तिमान, ऋक्षपर्वत, विन्ध्य और पारिपात्र (पारियात्र)—सम्मिलित थे। अतः यह ही कुमारीद्वीप, या कुमार द्वीप था जिसे पुराणों में प्रायः नवाँ द्वीप कहा गया है। इसको ही वायु पुराण में भारत द्वीप कहा गया है। इस नवें द्वीप—भारत के महत्व, कुलपर्वतों, नदियों और जनपदों का वर्णन किया गया है। शेष आठ द्वीपों को द्वीपान्तर कहा गया है और इनके नामों के अतिरिक्त इनका वर्णन नहीं मिलता है।

भारतवर्ष (मार्कंडेय वर्णित)

सभी पुराणों में मार्कंडेय पुराण ही अपनी भौगोलिक सामग्री के लिए प्रसिद्ध है। पार्जिटर ने इसके अंग्रेजी अनुवाद में जिस प्रकार भूगोल का विवेचन किया है, वह आज सर्वमान्य है। इसलिए हम भारत-वर्णन मार्कंडेय पुराण के आधार पर ही करेंगे। साथ ही अन्य पुराणों का भी तुलनात्मक अध्ययन हो सकेगा। मार्कंडेय पुराण (श्री वेंकटेश्वर प्रेस बम्बई) के अध्याओं (५१-५३) में जम्बूद्वीप और गंगावतरण का वर्णन किया गया है। गंगा जल से ही चार धाराएँ फूट पड़ी और भिन्न-भिन्न दिशाओं में बहने लगीं—

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पूर्व में सीता (यारकन्द), दक्षिण में अलकनन्दा (भागीरथी गंगा), पश्चिम में सुचक्षु (आक्सस) और उत्तर में उत्तर कुरु को सींचने वाली भद्र-सोमा नदी प्रसिद्ध हुईं (५३।१-१८)। इन नदियों की घाटियों में ही हिमालय के उत्तर पामीर का पठार, मध्य एशिया और दक्षिण पूर्व चीन बसा था। अलकनन्दा नदी की घाटी में ही भारत की पुण्य भूमि स्थित है। अध्याय ५४ में ही भारत-वर्णन है।

भारत महिमा (५४।२-४)—इसी देश में स्वर्ग और मोक्ष की सिद्धि होती है; क्योंकि दूसरी जगह कहीं भी मनुष्यों का कर्मानुष्ठान नहीं होता है। इसलिए भारतवर्ष के **भेदों, स्थिति** तथा इसमें जो **देश** और **पर्वत** हैं उनको जानने की इच्छा थी। भारत-प्रशंसा प्राय: सभी पुराणों में की गई है (विष्णु २।३।५)। यही स्वर्ग और अपवर्ग प्राप्त कराने वाली कर्म भूमि है (विष्णु २।३।२)। जम्बूद्वीप में यह श्रेष्ठ भूमि (भारतं श्रेष्ठं) है जो कर्म-भूमि कहलाती थी (विष्णु २।२।२२)। देवता लोग भी इसका प्रशंसा-गीत गाते थे (विष्णु २।२।२४-२६)।

नामकरण—पुराणों से ज्ञात होता है कि ऋषभ देव के पुत्र भरत के नाम पर ही इस देश का नाम भारतवर्ष (भरताद् भारतं वर्षं, अग्नि १०७-१२) पड़ा (वायु पु०, १।३३।५२; विष्णु २।१।३२)। महाराज भरत के पहले हिमाह्व (या हैमवत) वर्ष और नाभि खंड (स्कन्द १-२-३७-५६) कहलाता था। मत्स्य पुराण (११३।५-६) के अनुसार प्रजा का भरण करने के कारण मनु ही भरत कहलाते थे और मनु-भरत के नाम से ही यह वर्ष भारत कहलाया। ब्रह्म पुराण (१३-५७) के अनुसार दुष्यन्त-शकुन्तला के पुत्र भरत के नाम पर ही यह भारत कहलाया। परन्तु अधिकांशत: ऋषभ के पुत्र भरत के नाम पर ही भारत-खंड (देवी भागवत ३।१३।३९) कहलाया।

हिमाह्वम् दक्षिणं वर्षं भारताय पिता ददौ।
तस्मात्तुभारतंवर्षं तस्य नाम्ना महात्मनः॥

मार्कंडेय ५०।४०-४१

भागवत पुराण (११-२-१७) इस विख्यात देश को अद्भुत भारत कहता है (विख्यातं वर्षमेतद् यन्नाम्ना भारतमद्भुतम्)।

"प्राचीन परम्परा के अनुसार इस वर्ष का नाम भारतवर्ष था, किन्तु लगभग प्रथम शती विक्रमी से भारत के निवासियों ने पूर्व और पश्चिम के दोनों महासागरों पर अपने प्रभविष्णु अधिकार द्वारा बृहतर भारत का

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

निर्माण किया। शनैः शनैः जावा, सुमात्रा (श्री विजय), मलय, कम्बुज, चम्पा, श्याम (द्वारावती), केडा (कटाह द्वीप), बोर्नियो (वारुण द्वीप) आदि द्वीपान्तरों में भारतीय संस्कृति, भाषा, धर्म और कला इस प्रकार छा गई कि द्वीपान्तरीय प्रदेश भारत के ही अंग समझे जाने लगे। अतएव भारत की भौगोलिक सत्ता का अर्थ विस्तृत हो गया। उसमें न केवल भारत की भूमि बल्कि समुद्र के उस पार के द्वीप भी गिने जाने लगे। इस स्थिति का उल्लेख पुराणकारों ने किया है—'इस भारतवर्ष के नौ भाग जानने चाहिए। उन्हें समुद्र एक-दूसरे से अलग करता है। अतएव स्थल मार्ग से परस्पर अगम्य हैं। इन्द्रद्वीप, कशेरुमान्, ताम्रपर्णी, गभस्तिमान्, नागद्वीप, सौम्यद्वीप, गान्धर्व द्वीप और वारुण द्वीप ये आठ द्वीप हैं और नवाँ यही द्वीप है जो समुद्र से घिरा हुआ है। (मार्कं० पु० एक सां० अध्ययन, अग्रवाल, पृ० १४२)। इन नव भेदों या नव द्वीपों का वर्णन पुराणों के अतिरिक्त राजशेखर ने काव्यमीमांसा भी किया है।

नवभेद (भारतं वर्षं नवभेदमलंकृतम्, विष्णु पु० २।१।४१)

इसी प्रकार राजशेखर भारतवर्ष के नवभेदों का वर्णन करते हैं (का० मी० ९२।७-९)।

इन्द्रद्वीपः कसेरुमान् ताम्रपर्णो गभस्तिमान्।
नागद्वीपः सौम्यो, गन्धर्वो, वरुणः कुमारीद्वीपश्चायं नवमः।

इन्द्रद्वीप, कसेरुमान्, ताम्रपर्ण, गभस्तिमान्, नागद्वीप, सौम्य, गन्धर्व, वरुण और कुमारीद्वीप।

अधिकांशतः आठ द्वीपों का नाम देकर नवें की ओर संकेत करते हुए यह बताया गया है कि नवां द्वीप कुमारी द्वीप था (**कुमारी द्वीपश्चायं नवमः।** का० मी० ९२।९)। स्कन्द पु० (७-१-१७९-८) में भी इसका उल्लेख है—
अयं तु नवमो द्वीपः कुर्माया संज्ञितः प्रिये।

वराह पुराण में इस नवें द्वीप का नाम भारत दिया गया है—

इन्द्र कसेरु ताम्रपर्णो गभस्ति नाग द्वीप।
तथा सौम्यो गान्धर्वो वारुणो भारतं चेति॥ वराह पु०, अ० ८५ पृ० ३६५

अतः स्पष्ट है कि 'अयं कुमारी-द्वीपः' से भी कवि यही बताना चाहता है जो उसने 'इदं भारतं वर्षम्' द्वारा बताया है कि यह कुमारी द्वीप अथवा भारत (वराह पुराण अ० ८५ पीछे देखिये) वही है जहाँ हम रहते हैं अर्थात्

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कुमारी द्वीप भी हमारी आवास भूमि (जन्म भूमि) है। भारत और कुमारी द्वीप को एक ही माना गया है। अन्य पुराणों में यह वर्णन इस प्रकार है—

भारतस्यास्य वर्षस्य नव भेदाः प्रकीर्तिताः।
समुद्रान्तरिता ज्ञेयास्ते त्वगम्याः परस्परम् ॥ वायु पु० ४५।७८
इन्द्रद्वीपः कसेरुश्च ताम्रपर्णो गभस्तिमान्।
नागद्वीपस्तथा सौम्यो गन्धर्वस्त्वथ वारुणः ॥ वही ४५।७९
अयं तु नवमस्तेषां द्वीपः सागरसंवृतः।
योजनानां सहस्रं तु द्वीपोऽयं दक्षिणोत्तरम् ॥ वही ४५-८०
आयतो ह्याकुमारिक्यादागङ्गाप्रभवाच्चवै।
तिर्यगुत्तरविस्तीर्णः सहस्राणि नवैवतु ॥ वही ४५।८१

मार्कंडेय पुराण (५७।५-७), अग्नि पुराण (११८।३-५), कूर्म पुराण (४७।२२-२३) और विष्णु पुराण (२।३।६-७) में इसी प्रकार ८ द्वीपों का नाम देकर नवें द्वीप का संकेत किया गया है। वामन पुराण में इसे कुमार द्वीप कहा गया है।

यदेदं भारतं वर्षं नव द्वीपं निशाचर ॥ वामन पु० १३-८
सागरांतरिताः सर्वे अगम्याश्च परस्परम्।
इन्द्रद्वीपः कसेरुमांस्ताम्रपर्णो गभस्तिमान् ॥ वही १३-९
नागद्वीपः कटाहश्च सिंहलो वारुणस्तथा।
अयं तु नवमस्तेषां द्वीपः सागर संवृतः ॥ वही १३-१०
कुमाराख्यः परिख्यातो द्वीपोऽयं दक्षिणोत्तरः। वही १३-११

वामन पुराण की नवभेद तालिका में सिंहल का नाम प्राप्त होने से ताम्रपर्ण और सिंहल एक नहीं माने जा सकते हैं और इसकी लंका (सीलोन-सिंहल) से पहचान करने में कठिनाई उपस्थित होती है।

इन्द्रद्वीप—डा० वासुदेवशरण अग्रवाल के अनुसार इसकी पहचान अंडमान से की गई है। (ह० च० अ०, पृ० ११९; का० सा० अ०, पृ० २५६)।

कसेरुमान—इसका तादात्म्य मलाया मे किया गया है। (ऐ० जा० पृ० ७५२)।

ताम्रपर्ण (ताम्रवर्ण)—इसकी समानता यूनानी लेखकों द्वारा उल्लिखित 'तप्रवेन' (मेक्रिन्डिल-इण्डिया टॉलमी पृ० २४७) अर्थात लंका से की गई है। (ऐ० जा०, पृ० ७५३) परन्तु वामन पुराण में सिंहल और ताम्रपर्ण दोनों ही का अलग-अलग उल्लेख किया गया है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गभस्तिमान्—पहचान अनिश्चित है। संभवतः यह थाईलैंड है।

नागद्वीप—यह निकोबार ही है।

सौम्य—यह संभवतः सुमात्रा है।

गन्धर्व—संभवतः यह गन्धार का ही पर्याय है और इस कारण इसकी पहचान युन्नान से की जा सकती है।

वारुण—यह आधुनिक बोर्नियो ही है।

कुमारी द्वीप—भारत द्वीप।

कुमारी द्वीप का नाम कुमारी से सम्बद्ध होने के कारण प्रसिद्ध हुआ। स्कन्द पुराण के माहेश्वर खण्ड में **कुमारिका खण्ड** भुवन कोश के समान ही लिखा गया है जिसमें कुमारिका खंड-कौमारिकं—अर्थात् कुमारीद्वीप का माहात्म्य दिया गया है।

महाराज ऋषभ के पुत्र भरत थे, जिनके नाम पर ही यह देश भारत वर्ष कहलाता है। भरत के पुत्र शतशृंग के आठ पुत्र और नवीं पुत्री उत्पन्न हुई जिनके नाम थे—इन्द्रद्वीप, कसेरु, ताम्रद्वीप, गभस्तिमान, नाग, सौम्य, गान्धर्व, वरुण और कुमारिका (स्कन्द पु० १।२।३९।६८-६९)।

महाराज शतशृंग ने इस भारत खंड को नौ भागों में बाँट कर आठों पुत्रों को आठ भाग और नवाँ भाग पुत्री कुमारिका को दे दिया (स्कन्द पु० १-२-३९-११०)।

इन विभेदों का वर्णन करते हुए स्कन्द पुराण बतलाता है—

महेंद्रपरतश्चैव इन्द्रद्वीपो निगद्यते।
पारियात्रस्य चैवार्वाक्खण्डं कौमारिकं स्मृतम् ॥

स्कन्द पु० १-२-३९-११३

अर्थात् महेन्द्र पर्वत (पूर्वी घाट की पर्वत माला) के उस पार स्थित इन्द्र द्वीप कहा जाता है और पारियात्र पर्वत (पश्चिमी विन्ध्यश्रेणी) के पूर्व (इस ओर) में कौमारिक खण्ड बताया गया है। डा० हेमचन्द्र रायचौधरी इन्द्रद्वीप को बंगाल की खाड़ी में स्थित बताते हैं (स्टडीज इन इन्डियन ऐन्टीक्विटीज़, पृ० ८४) और इसकी बर्मा के साथ पहचान की ओर ध्यान दिलाते हैं। संभवतः इन्द्रद्वीप अंडमान द्वीप ही है।

इस प्रकार ये नव द्वीप या नव भेद एक-दूसरे से समुद्रान्तरित (समुद्र द्वारा पृथक) होकर अगम्य बताये गये हैं। समुद्रान्तरित द्वीप ही द्वीपान्तर कहलाते थे। ताम्रपर्ण, नागद्वीप और सिंहल आधुनिक सीलोन के ही विभिन्न

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भाग थे (इन्डियन ऐन्टीकिटीज़ पृ० ८५, नोट १)। वरुण, बोर्नियो ही है और कटाह मलाया प्रायद्वीप का केडा है।

लिंग पुराण (५२।२५-२८) में स्पष्ट कहा गया है कि भारतीय लोग विभिन्न देवताओं की उपासना करने वाले, विभिन्न ज्ञानवादी और कर्मवादी थे। कुछ भारतीय इन्द्रद्वीप को चले गये, कुछ कसेरुद्वीप में गये; कुछ ताम्रद्वीप को गये तो कुछ गभस्तिमत देश को; कुछ नागद्वीप को गये, तो कुछ सौम्य, गन्धर्व और वारुण द्वीप को गये—

इन्द्रद्वीपे तथा केचित्तथैव च कसेरुके।
ताम्रद्वीपं गताः केचित्केचित्केचिद्देशं गभस्तिमत्।
नागद्वीपं तथा सौम्यं गान्धर्वं वारुणं गताः।

सम्पूर्ण पुराण-साहित्य में यह अत्यन्त महत्वपूर्ण उल्लेख है जिससे भारतीयों का अंडमान (इन्द्रद्वीप), निकोबार (नागद्वीप), मलाया (कसेरुमान), सुमात्रा (सौम्य), बोर्निओ (वारुण), थाईलैंड (गभस्तिमत देश), युन्नान (गान्धर्व) और लंका (ताम्रद्वीप) में भारतीयों के प्रसार का स्पष्ट उल्लेख है। भारतीयों की ये बस्तियाँ और यहाँ के लोग भी अपने आपको भारतीयों के अभिन्न अंग मानने लगे। देखिये, समुद्रगुप्त का प्रयाग स्तम्भ लेख भी बताता है कि सभी द्वीपों के रहने वालों ने गुप्त सम्राट को आत्मसमर्पण किया और कन्याओं (नर्तकियों) की भेंट दी तथा उसके अधीन ही शासन करने की राजाज्ञा प्राप्त की। इस प्रकार गुप्त युग में ये द्वीप-द्वीपान्तर—भारत के अभिन्न अंग बन गये और भारत ही अब महद् भारतं वर्षं (वराह पुराण) हो गया जिसे आधुनिक विद्वान वृहत्तर भारत कहते हैं। यहाँ गुप्त कालीन ब्राह्मण संस्कृति और बौद्ध धर्म की गहरी छाप दिखायी पड़ती है। मेहरौली के चन्द्र-अभिलेख में भी चन्द्र के दक्षिण समुद्र पर प्रभाव और हर्ष चरित (१-१४) से प्रवरसेन का प्रभाव भी यही सिद्ध करता है। यही रामायण, महाभारत, पुराणों और बौद्ध साहित्य (विशेषतः दिव्यावदान और आर्य शूर की जातकमाला) से भी सिद्ध होता है। मध्य जावा में चन्द्रगुप्त द्वितीय का सोने का सिक्का भी मिला है। कम्बोडिया के अभिलेख, मूर्तियाँ और मठ भी भारतीय प्रभाव के साक्षी हैं। बर्मा में गुप्त लिपि और गुप्त कालीन शैली पर निर्मित मूर्तियों से भी यही सिद्ध होता है। अतः यह एक ऐतिहासिक तथ्य था कि समुद्र द्वारा अलग होने पर भी ये द्वीप समूह (द्वीपान्तर) भारत के ही उपद्वीप या अनुद्वीप थे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सीमाएँ—नवां द्वीप—कुमारी द्वीप या भारत द्वीप—हिमालय के दक्षिण और समुद्र के उत्तर में स्थित था। इसके पूर्व में किरात और पश्चिम में यवन बसे हुए थे (मार्कंडेय ५४-८)। टॉलमी के अनुसार पूर्व में स्थित किर्हडिया की पहचान किरातों से की गई है। अशोकीय लेखों और महाभारत के अनुसार भी पश्चिम में यवन स्थित थे। डा० बी०सी० ला (जाग्र० एसेज़, पृ० १२१) के अनुसार यह ईसा की पहली शताब्दी का भारत था। गरुड़ पुराण के अनुसार पूर्व में किरात, पश्चिम में यवन, दक्षिण में आन्ध्र और उत्तर में तुरुष्क (गरुड़ १।५५-६) अथवा हिमालय के म्लेच्छ स्थित थे (गरुण १।५५-१७)। यह दक्षिण, पूर्व और पश्चिम में समुद्रों तथा उत्तर में हिमाद्रि से घिरा हुआ था (मार्क० ५४-५९)।

विस्तार—पुराणों (वायु १।४५।८१) के अनुसार उत्तर में गंगा के उद्गम से लेकर दक्षिण में कुमारी अन्तरीप तक एक सहस्र योजन विस्तार वाला कहा गया है। तिर्छा नव सहस्र योजन है। स्कन्द पुराण के अनुसार भारत का विस्तार दक्षिणोत्तर नव सहस्र योजन और पूर्व पश्चिम अस्सी सहस्र योजन कहा गया है।

आकार—कुछ पुराणों (मार्क० ५४-५९) के अनुसार भारत का आकार धनुषाकार है जिसके तीन ओर सागर और उत्तर में धनुष की डोरी की तरह हिमालय स्थित है (मार्कंडेय ५४-५९)।

सांसकृतिक भूखंड

मनु स्मृति में धर्म और आचार के आधार पर इस कर्म भूमि भारत के सांस्कृतिक अधिष्ठानों के रूप में कुछ खंडों का वर्णन किया है—ब्रह्मावर्त, ब्रह्मर्षि देश, मध्य देश, आर्यावर्त और यज्ञिय देश। आर्यावर्त ही यज्ञीय देश था और अन्य क्षेत्रों को म्लेच्छ देश कहा गया है (मनु स्मृति २।१७-२४)। पुराणों पर भी इसकी छाप पड़ी है। मुख्य रूप से दो विभाग किए गये हैं—आर्य और म्लेच्छ। देश के अन्त में म्लेच्छ, पूर्व में किरात, पश्चिमान्त में यवन रहते थे और मध्य में वर्णचतुष्टय के लोग रहते थे (वायु पुराण)। इसी प्रकार संस्कृति और धर्म के आधार पर पुराणों में भी प्रदेशों की गणना मिलती है। भविष्य पुराण (ब्रह्मपर्व १८१।३३-३४) भी मनु के आधार पर ब्रह्मावर्त, ब्रह्मर्षि देश, मध्य देश, आर्यावर्त और यज्ञिय देश तथा उसके बाहर म्लेच्छ देश का उल्लेख करता है।

मध्य देश—विष्णु पुराण (२-३-१५) एक सूत्र में कहता है—

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

"कुरुपांचाला मध्यदेशादयो जनाः" (कुरु-पाँचाल के मध्य देशीय लोग)। उपनिषद युग में कुरुपांचाल संस्कृति और सभ्यता में अत्यन्त उन्नत क्षेत्र था। यहाँ के ब्राह्मण विद्या और विचारों में अग्रणी थे। इसीलिए मनु (२-२०) इनका ही संकेत करते हैं कि ये जगत-गुरु थे। गरुड़ पुराण (२।२।९) इसे धर्म देश कहता है।

भारत का यह एक क्षेत्रीय विभाग भी था जिसे हिमालय और विन्ध्य के बीच विनशन के पूर्व तथा प्रयाग के पश्चिम स्थित माना गया है (मनु २-२१)। स्कन्द पुराण (१-२-२-८५) के अनुसार गंगा और यमुना के मध्य का देश (**गंगायमुनयोर्मध्ये मध्यदेशे**) कहलाता था। गंगा-यमुना के बीच का भू-भाग **अन्तर्वेदी** कहलाता था (स्कन्द १-१-१७-२७४)। इस प्रकार मध्य देश और अन्तर्वेदी को एक ही माना गया है। मनु का अनुसरण करता हुआ भविष्य पुराण इसे हिमालय और विन्ध्य के बीच विनशन के पूर्व तथा प्रयाग के पश्चिम स्थित भूखंड कहता है (भविष्य, ब्रह्म पर्व १८१-४१)।

आर्यावर्त (भागवत ९-६-५) यह एक पुण्य भूमि थी। म्लेच्छों से रहित आर्यों का निवास ही आर्यावर्त (आर्यावर्तेषु निर्म्लेच्छा कृता तेन वसुन्धरा, विष्णु धर्मोत्तर, १-२५-१६)। मनु की तरह ही भविष्य पुराण (ब्रह्म पर्व १८१।४१-४१) में आर्यावर्त को पूर्व और पश्चिम समुद्रों तथा हिमालय और विन्ध्य पर्वत के बीच स्थित बताया गया है। इस प्रकार मनुस्मृति के अनुसार धर्म तथा आचार के आधार पर पुराण भी ब्रह्मावर्तादि देशों का विभाग करते हैं।

ब्रह्मावर्त—सरस्वती और दृषद्वती के बीच में स्थित प्रदेश ब्रह्मावर्त कहलाता था। इसे देव निर्मित देश कहा गया है (भविष्य, ब्रह्मपर्व १८१-४०)।

देश-विभाग

देश को भिन्न-भिन्न स्थलों में विभाजित किया है। पंच-स्थल विभाग की परम्परा का उल्लेख अथर्ववेद (१९।१७।२-९), ऐतरेय ब्राह्मण (३८-३), महाभारत (दिग्विजय पर्व), रामायण (किष्किंधा कांड), पुराणों और काव्यमीमांसा (अ० १७) में किया गया है। परन्तु इन पंच-स्थलों में विन्ध्य पृष्ठ और पर्वताश्रयी भाग को जोड़ कर ७ भाग कर दिए गए। इनके अतिरिक्त अन्तर्नर्मदा (या उत्तर नर्मदा) भी इनमें देश भाग बन गया। मनोरम देश का भी उल्लेख अलग किया गया है—

हरिवंश पुराण में निम्नलिखित देश-विभागों का उल्लेख मिलता है—

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उत्तरापथ देश (हरिवंश पर्व ११-१४),
दक्षिण दिशा (हरिवंश पर्व १-१५),
या दक्षिणापथ (हरिवंश पर्व १८-६८, विष्णुपर्व ३९।१०),
मध्य देश (हरिवंश पर्व १०-२१, विष्णुपर्व ५२।४; ५७।२, ३, ४),
प्राची दिशम् (हरिवंश पर्व ३१-५)
पूर्व पश्चिमजाँश्चैव उत्तरापथिकान् (विष्णुपर्व ५२।५) और
दक्षिणापथिका (विष्णुपर्व ५२।८, ४८)।

हरिवंश 'नाना दिग्देशों' (विष्णु पर्व ५५।८०) के अतिरिक्त उत्तरापथ (विष्णुपर्व १०९।२५), दक्षिणापथ (विष्णुपर्व १०९।२९) और प्राच्य दिश तथा पश्चिमामाश्रिता दिशम् (विष्णुपर्व १०९।३४) में प्रवाहित होने वाली नदियों का भी विभाग-वर्णन करता है। इस प्रकार हरिवंश में भी भूमि-भाग···(भविष्यपर्व ३५।२) की परम्परा 'चतुरन्तां धरां' (भविष्यपर्व ३५।४) पर ही आधारित है।

वायु, मत्स्य और मार्कंडेय पुराणों में निम्नलिखित नौ भूखण्डों का उल्लेख हुआ है—

मध्य देश	वायु पुराण ४५।१११	मत्स्य ११४।३६	मार्कंडेय ५८।३३
मनोरम प्रदेश	वही ४५।११२-११४	वही ११४।३७-३९	वही ५८।३४
अपरांता	वही ४५।११५, १२८	वही ११४।५१	वही ५८।३६, ४९
उदीच्या	वही ४५।१२१	वही ११४।४३	वही ५८।४२
प्राच्या	वही ४५।१२१, १२३	वही ११४।४५	वही ५८।४२
दक्षिणापथ	वही ४५।१२४, १२८	वही ११४।४६	वही ५८।४५, ४९
अन्तर नर्मदा	वही ३५।१३०	वही ११४।५०	उत्तरनर्मदाः वही ५८।५१
			वही ५८।५२
विंध्य (पृष्ठ)	वही ४५।१३१, ११४	वही ११४।५४	वही ५८।५६
पर्वताश्रयिण	वही ४५।१३५	वही ११४।५५	

इन तीन तालिकाओं में प्रायः सभी नाम मिलते हैं। केवल वायु और मत्स्य के अन्तर्नर्मदा खण्ड को मार्कंडेय पुराण में 'उत्तर नर्मदा' खण्ड कहा गया है। इसमे इस खण्ड की स्थिति भी स्पष्ट हो जाती है। वामन पुराण में इसी देश भाग को 'सुनर्मदा' (१३-५२) बताया गया है। वामन पुराण के अनुसार कुमार द्वीप के निम्नलिखित खण्ड हैं—

वामन १३।३५, ३७

१—मध्य देश

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

२—उत्तरापथ	,,	१३।४४
३—प्राच्य	,,	१३।४६
४—दाक्षिणात्य	,,	१३।५०
५—सुनर्मदाः	,,	१३।५२
६—पश्चिम	,,	१३।५३
७—विन्ध्य-मूलस्थ	,,	१३।५६
७—पर्वताश्रयिणः	,,	१३।५७

इस प्रकार यहाँ पर 'मनोरम देश' का उल्लेख नहीं है।

विष्णु पुराण में मध्य देश (२।३।१५), पूर्व देश (२।३।१५), दक्षिण (२।३।१६) और अपरान्त (२।३।१६) का उल्लेख भुवन कोश खण्ड में मिलता है। इसी पुराण में अन्यत्र उत्तरापथ (४-२-१३) और दक्षिणापथ (४।२।१४) तथा दक्षिण पूर्व, प्रतीच्य और दक्षिण (४।१०।३१) तथा उदीच्य (४।१०।३२, ४।१७।५) के भी उल्लेख मिलते हैं। विष्णुधर्मोत्तर पुराण में निम्नलिखित देश-भागों का उल्लेख मिलता है, जिनका उल्लेख गरुड़ पुराण में भी प्राप्त होता है—

१—मध्य देश	वि० धर्म०	१।९।२	गरुड़ पु०, पू०	५५।१०
२—पूर्व	,,	१।९।३	,,	५५।११
३—पूर्व दक्षिण	,,	१।९।४	,,	५५।१२
४—दक्षिणापथ	,,	१।९।५	,,	५५।१३
५—दक्षिण पश्चिम	,,	१।९।६	,,	५५।१४
६—पश्चिम	,,	१।९।७	,,	५५।१५
७—उत्तर पश्चिम	,,	१।९।८	,,	५५।१६
८—हिमवान-उदीची	,,	१।९।९	,,	५५।१७
९—उदक्पूर्व	,,	१।९।१०	,,	५५।१८

विष्णुधर्मोतर का यह दिग्देश (१।९।११) वर्णन अत्यन्त महत्वपूर्ण है। जिसमें मध्य देश से प्रारम्भ होकर परिक्रमानुसार सम्पूर्ण देश के भू भागों का वर्णन किया गया है। आगे चलकर यही 'नव खण्ड' परम्परा प्रसिद्ध हो गई है। राजशेखर भी काव्यमीमांसा में दिग्भागों का विवेचन करते हुए कहते हैं कि दिशा-विभाग (देश-विभाग) अन्तर्वेदी के सम्बन्ध से करना चाहिए। यही (पूर्व) आचार्यों का भी मत था।

परन्तु इस सम्बन्ध में भी महोदय (कन्नौज) को मुख्य केन्द्र मानकर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
देश-विभाजन करना चाहिए (तत्रापि महोदयं मूलमवधीकृत्य" इति यायावरीयः, का० मी० ९४।२४-२५)। दिग्विभाग अनिश्चित ही है, क्योंकि जो वामन स्वामी के पूर्व है वही ब्रह्मशिला के पश्चिम है, जो गाधिपुर के दक्षिण है वही कालप्रिय के उत्तर हैं (का० मी० ९४।२५-२८)।

राजशेखर ने पंच-स्थल विभाग की प्राचीन परम्परा को ही माना है। उनके अनुसार निम्नलिखित देश भाग हैं—

१—पूर्व-देश	का० मी०	९३।२०
२—दक्षिणापथ	वही	९३।२५
३—पश्चाद्देश	वही	९४।४
४—उत्तरापथ	वही	९४।९
५—मध्य देश	वही	९४।१५
द्वीपान्तर	वही	९४।२१-२२

द्वीपान्तर भी एक देश विभाग के रूप में ही उल्लिखित होता है (का० मी० ९४।२१-२२)। रामायण में इसे ही 'सामुद्र' कहा गया है।

पर्वत

पुराणों में कई प्रकार के पर्वतों का उल्लेख मिलता है यथा मर्यादा पर्वत, वर्ष पर्वत और कुलपर्वत। इन पर्वतों से विभिन्न भूखंडों की सीमाएँ और स्वरूप निर्धारित किया गया था। सप्त महाद्वीपों के अन्तर्गत विभिन्न वर्षों की मर्यादा (सीमा) बनाने के कारण ऐसे पर्वतों को **मर्यादा पर्वत** कहते थे। मेरु पर्वत के चारों ओर चारों दिशाओं में दो-दो मर्यादा पर्वत स्थित थे जिनके बहिर्भाग में लोक-पद्म के चार द्वीप (बाद में इन्हें वर्ष कहने लगे), **भद्राश्व** (श्वेत घोड़ों वाला देश, चीन), **भारत, केतुमाल** (अफ़गानिस्तान और अरब से लेकर कृष्णसागर और कैस्पियन सागर तक का भूखंड) और **कुरुवर्ष** (हिमालय के उत्तर में मध्य एशिया और कोरिया तक का प्रदेश) स्थित थे। इन सभी महान् पर्वतों में मेरु को पर्वत राज कहा गया है, जिसके चारों ओर बहुत से केसराचल तथा विष्कम्भक गिरि स्थित थे।

वर्ष पर्वत—महाद्वीपों के उप-विभाग वर्ष कहलाते थे और प्रत्येक वर्ष की प्रमुख पर्वत शृंखलाओं को वर्ष पर्वत कहते थे। ये एक वर्ष को दूसरे वर्ष से अलग करती थीं।

कुल पर्वत—प्रत्येक वर्ष के प्रमुख पर्वतों को कुल पर्वत कहा जाता है। भारतवर्ष में हिमवान् वर्ष पर्वत था और यहाँ के अन्य पर्वत हिमवान् से

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सम्बन्धित अर्थात् उसके कुल वाले ही कहे गए हैं जो उसकी पुत्री पार्वती के विवाह में सम्मिलित भी हुए थे। इनकी संख्या सात होती है।

मार्कंडेय पु० (५८।१०-११) में महेन्द्र, मलय, सह्य, शुक्तिमान्, ऋक्ष-पर्वत, विन्ध्य और पारियात्र बताये गए हैं, जिनके समीप भी हजारों पहाड़ियाँ हैं। इस प्रकार कुलपर्वत के अतिरिक्त अन्य पर्वत क्षुद्र पर्वत हैं। कहीं-कहीं पर ऋक्ष पर्वत के स्थान पर हेम पर्वत (अग्नि ११८-३) का उल्लेख है। शिव-पुराण (उमा, १८-६) में शुक्तिमान् पर्वत के स्थान पर सुदामा पर्वत का नाम है। पहली सूची में प्रायः दक्षिण भारत का ही परिचय मिलता है, क्योंकि शुक्तिमान् को भी महेन्द्र (पूर्वी घाट), विन्ध्य और ऋक्ष पर्वत के मध्य स्थित माना जाता है। दूसरी तालिका में उत्तरी भारत के हेम पर्वत से सम्पूर्ण भारत का ज्ञान होता है। स्कन्द पुराण में कुलपर्वतों की तीन तालिकाएँ मिलती हैं। पहली तो वही है जो ऊपर मार्कण्डेय से उद्धृत की गई है। दूसरी तालिका में शुक्तिमान् और ऋक्ष के स्थानों पर हेमकूट (कैलास) और माल्य-वान के नाम मिलते हैं। तीसरी तालिका में हिमवान्, गन्धमादन और शृंगी पर्वतों के नाम शुक्तिमान्, ऋक्ष और पारियात्र के स्थानों पर मिलते हैं (स्ट० स्क० पु०, पृ० १३४)।

महेन्द्र—यह पूर्वी घाट की पर्वत माला है जो उत्तर में कलिंग से लेकर पांड्य देश तक फैली हुई है। यहीं दक्षिण में वह मलय से मिलकर समुद्र में स्नान करता है। रघुवंश (४-४३) और नैषध (१२-२४) में इसे कलिंग देश में स्थित बताया गया है।

मलय—इसे श्रीखण्डाद्रि (पवनदूत ८) अथवा चन्दनाद्रि (पवनदूत १) भी कहते थे, क्योंकि यहाँ चन्दन विशेष रूप से होता है। यह पश्चिमी घाट का दक्षिणी भाग है जो पाण्ड्य देश में ताम्रपर्णी की घाटी में स्थित है। यहीं चन्दन बन भी था।

सह्य—यह पश्चिमी घाट का उत्तरी भाग है जो अपरान्त या कोंकण प्रदेश में स्थित है। कावेरी से उत्तर में पश्चिमी घाट सह्य कहलाता था और कावेरी से दक्षिण पश्चिमी घाट मलय कहलाता था। दक्षिणापथ में स्थित सह्याचल पर वेणा नदी, शूर्पारक नगर और जनपद, तथा अपरान्त स्थित था (हरिवंश, विष्णुपर्व ३९।१८-३१)।

शुक्तिमान्—अन्य कुल पर्वतों की अपेक्षा इसका उल्लेख कम मिलता है। महाभारत (सभा पर्व ३०-५) में भीम की पूर्व दिग्विजय में इसका उल्लेख

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मिलता है। यहाँ इसे भल्लाट देश के समीप स्थित बताया गया है (भल्लाट-मभितो जिग्ये शुक्तिमन्तं च पर्वतम्)। डा० अली (जा० पु०, पृ० ११२-११३) के अनुसार इसका सम्बन्ध महानदी की घाटी से है। शुक्तिमान् की पहचान के सम्बन्ध में पुराना विवाद है। कनिंघम (आर्केलाजिकल सर्वे रिपोर्ट, १७-२४-२६) और वेगलर (आर्केलाजिकल सर्वे रिपोर्ट ८-१२४) ने इस पर्वत को शुक्तिमती नदी का स्रोत मान कर क्रमशः छत्तीसगढ़—बस्तर के मध्य की पर्वत श्रृंखला तथा हजारीबाग के उत्तर में स्थित पहाड़ से इसकी पहचान की थी। भीम की पूर्व दिग्विजय में इसके उल्लेख के आधार पर पार्जिटर (मार्कंडेय पु० अं०, पृ० २८५) ने इसकी पहचान गारो-खासी और जयन्तिया की पहाड़ियों से की है। डा० आर०सी० मजूमदार ने इसकी पहचान सुलेमान पर्वत से की है। सी० वी० वैद्य (एपिक इंडिया पृ० २७६) ने इसकी पहचान काठियावाड़ की पहाड़ियों से की है। डे (जा० डि०, पृ० १९६) के अनुसार शुक्तिमत विन्ध्य पर्वत का वह भाग है जो पारियात्र और ऋक्ष पर्वत को मिलाता है। इसमें गोंडवाना, छोटा नागपुर और महेन्द्र की पहाड़ियाँ सम्मिलित थीं। डा० रायचौधरी (स्ट० इ० ऐ०, पृ० १२०) के अनुसार शुक्तिमत पर्वत की श्रृंखला रायगढ़ में स्थित शक्ति से लेकर मानभूमि में डालमा पर्वत तक फैली है।

भारत में कुलपर्वतों की स्थिति में एक क्रम है। दक्षिण भारत के उत्तरी पूर्वी किनारे पर पूर्वी तट के साथ-साथ महेन्द्र स्थित है। नानमलई से आनमलई तक मलय है। पश्चिमी तट के साथ उत्तर को मुड़ कर सह्य पर्वत है। सह्य से उत्तर ऋक्ष है और इससे उत्तर विन्ध्य तथा पारियात्र हैं। अतः शुक्तिमत को सह्य और ऋक्ष के मध्य स्थित होना चाहिए। इसे पूर्वी और पश्चिमी घाट के मध्य हैदराबाद और गोलकुन्डा का पठार मान सकते हैं।

ऋक्षपर्वत—रीछों की अधिकता के कारण ही इसे ऋक्षवन्त कहा जाता था (स्ट० इ० ऐ०, पृ० १२१)। यह विन्ध्य से सटा हुआ पर्वत था (हरिवंश, विष्णुपर्व ३८-७)। नर्मदा नदी के निकट इसी पर्वत पर **पुरिका** नाम की नगरी स्थित थी (हरिवंश, विष्णुपर्व ३८-२२)। यह विन्ध्य का मध्य भाग था जहाँ नर्मदा के किनारे माहिष्मती पुरी और दशार्ण नदी थी। इसे सतपुड़ा की पहाड़ी मान सकते हैं।

पारियात्र—यह मध्यदेश की दक्षिणी सीमा पर स्थित विन्ध्य का पश्चिमी भाग था।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विन्ध्य—यह अति प्रसिद्ध पर्वत है जो भारत को दो खंडों—उत्तर और दक्षिण—में विभक्त करता हुआ गुजरात से गया तक फैला हुआ है।

हिमवान्—हिम से लिप्त अंश वाला अनेक धातुओं से युक्त पूर्वी और पश्चिमी समुद्रों में स्नान करता हुआ उत्तर में स्थित यह नगाधिराज है (शिवपुराण)। यही कालिदास (कुमार सम्भव १-१) भी कहते हैं।

सात कुलपर्वतों के अतिरिक्त अन्य क्षुद्र (छोटे) पर्वतों के नाम भी मिलते हैं। मार्कंडेय (५४।१२-१५) में हमें निम्नलिखित नाम मिलते हैं—

कोलाहल—यह पर्वत शुक्तिमती (या केन नदी, बुन्देलखंड में बहने वाली) का स्रोत था (आदि पर्व ६३।३५-३७)। डे के अनुसार (जा० डि०, पृ० १०२) बुन्देलखंड के दक्षिण पश्चिम में स्थित यह भांडेर की पहाड़ी थी जहाँ से केन नदी निकलती है।

वैभ्राज—वायु पुराण में इसका पाठ वैहार है। अतः राजगृह के समीप की पाँच पहाड़ियों में से वैभार गिरि से इसकी पहचान की जा सकती है।

मन्दर—यह अंग जनपद (वर्तमान भागलपुर) का पर्वत था जिसकी पहचान भागलपुर जिले के मन्दार गिरि से की गई है। हिमालय के उस पर्वत शिखर को भी मन्दर पर्वत कहते थे, जो शिव का निवास था (वामन पु० २६।२-५)। वासिष्ठीपुत्र पुलुमायी (१९वें वर्ष) के नासिक लेख में मन्दर पर्वत का उल्लेख हिमवत और मेरु के साथ (हिमवत-मेरु-मन्दर पवत सम सारस) किया गया है।

दर्दुर—यह मलय पर्वत का ही एक शिखर था जो चन्दन की उत्पत्ति के लिए प्रसिद्ध था। यहाँ के राजा ने युधिष्ठिर को चन्दन की भेंट की थी। वर्तमान नीलगिरि की दूदवेत्ति चोटी ही सम्भवतः दर्दुर की पहाड़ी थी।

वातस्वन—बेगलर (ए० यस० आर०, ८, पृ० ४६) ने इसकी पहचान दक्षिण बिहार के बथन पहाड़ से की है। डा० रायचौधरी इसे पूर्व विन्ध्य से सम्बन्धित पहाड़ बताते हैं (स्ट० इ० ऐ०, पृ० १३५)। अन्य पुराणों में इसके स्थान पर वातधूम (वामन पु०) और वारन्धम (वराह पु०) पाठ मिलते हैं।

वैद्युत—यह कैलास पर्वत के निकट स्थित था। आगे देखिये पृ० २५६।

मैनाक—सम्भवतः यह वह पहाड़ी थी जहाँ से सोन नदी निकलती है। इस नदी को मैनाक-प्रभा कहते थे (मार्कंडेय, अंग्रेजी, पृ० २८७)। यह हिमालय का भी एक शिखर था (किष्किन्धा, ४३-२९) और डे इसकी पहचान शिवालिक की पहाड़ियों से करते हैं (जा० डि०, पृ० १२१)। इसका सम्बन्ध और स्थिति दक्षिण की पहाड़ियों—ऋक्ष, त्रिकूट, ऋषभ आदि—के

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

साथ भी था (भागवत ५-१९-१६; दे० भा० ८-११-८)। यह दक्षिण समुद्र के निकट स्थित था (सुन्दर कांड ११९१-१०५)। इसके एक ओर उत्तर में मलय और दक्षिण में त्रिकूट था जिस पर लंका स्थित बतायी गयी है। महाभारत (वनपर्व, १३५।३-४) में पश्चिम दिशा में विनशन तीर्थ के निकट स्थित कहा गया है। गंगा और कनखल की पहाड़ियाँ (वनपर्व १३५।४-५) भी अधिक दूर न थीं। अतः यहाँ वर्णित मैनाक शिवालिक ही है जो गंगा से लेकर व्यास तक फैला हुआ है। यह पुण्य सरोवर और बहुत ही फल-मूल से सम्पन्न पर्वत था जहां कक्षसेन और च्यवन ऋषि के आश्रम थे (वन पर्व ८९।१-१३)।

स्वरस, तुंगप्रस्थ और **रोचनगिरि** अज्ञात हैं।

नाग गिरि—सम्भवतः यह आसाम की नागा पहाड़ियाँ हैं। वायु पु० (११४५।९१) में इसके स्थान पर कृष्ण गिरि (=कन्ह गिरि या कन्हेरी) है।

पाण्डुर—सम्भवतः यह राजगृह की ५ पहाड़ियों में से एक पहाड़ी थी। इसके अतिरिक्त भी दो अन्य पांडु पहाड़ियाँ थीं—एक तो बैराट के उत्तर पश्चिम अलवर में थी (आर्क० सर्वे० रिपोर्ट ६, पृ० ९५-१०१) और दूसरा पहाड़ बुन्देलखंड में केन नदी के निकट हट्ट के उत्तर था (मार्क० अं० पृ० २८७)। दक्षिण में अर्काट से चार मील दक्षिण पश्चिम पंचपाण्डमई भी पाण्डुराचल था।

वस्तुतः यह हिमालय का एक शिखर था जिसे पांडु शिला कहते थे और जो क्रौंच गिरि के पास ही था (वायु पु०, ११४१।४२)।

पुष्पगिरि—यह मलय पर्वत का एक भाग था जहाँ से कृतमाला नदी निकलती है। यह मद्रास (तामिलनाड) में कडापा स्टेशन से १० मील उत्तर पश्चिम है।

उज्जयन्त (**दुर्जयन्त** अशुद्ध पाठ है)—यह उज्जयन्त (वायु० १-४५-९२) ही है जो गिरिनगर की पहाड़ी का नाम था। रुद्रदामन प्रथम और स्कन्द-गुप्त के जूनागढ़ शिला लेखों में इसे ऊर्जयत कहा गया है। इससे सुवर्णसिकता और पलाशिनी नदियाँ निकलती थीं (रुद्रदामन का लेख पंक्ति ५-६)। इन्हें स्कन्द गुप्त के लेख (पं० १६) में रैवतक से निकलने वाली कहा गया है। अतः स्पष्ट है कि ऊर्जय। शिखर रैवतक पर्वत का ही एक भाग था जो समुद्र-तट पर (महोदधेरूर्जयता प्रियेप्सुना, स्कन्द गुप्त का लेख पंक्ति १६) गिरि-नगर (जूनागढ़-गिरिनार) के सिर पर स्थित था (उत्थितमिवोर्जयतोऽचलस्य

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

………पुरस्य मूर्ध्नि; स्कन्दगुप्त का लेख श्लोक ४६) । यह काफी ऊँचा था जिससे पक्षियों का मार्ग भी रुक जाता था (श्लोक ४७) ।

रैवतक—रैवत और ऊर्जयत सौराष्ट्र के पहाड़ थे । यह द्वारका के निकट स्थित है । गिरनार के निकट ऊर्जयत पहाड़ था जो द्वारका से लगभग ११० मील दूर है । इसीलिए ऊर्जयत और रैवत को पृथक्-पृथक् लिखा गया है ।

अर्बुद—यह राजस्थान का आबू या अरावली पर्वत है ।

श्रीपर्वत—यह दक्षिण का श्री शैल है । अग्नि पु० (११३-४) के अनुसार यहाँ श्री रूपिणी गौरी ने तपस्या की थी । इसीलिए यह सौ योजन तक पवित्र पुण्य क्षेत्र बन गया (अग्नि ११४।५-५) । यह कर्नूल के बालाघाट क्षेत्र में कृष्णा नदी के दक्षिण स्थित तीर्थ है जहाँ मल्लिकार्जुन शिव का मन्दिर है ।

ऋष्यमूक—रामायण का यह प्रसिद्ध पर्वत किष्किंधा राज्य में स्थित था । यह तुंगभद्रा के क्षेत्र का प्रसिद्ध पर्वत था जहाँ से निकल कर पम्पा नदी तुंगभद्रा नदी में गिरती है ।

गोमन्त—यह गोआ के पास की पहाड़ी है ।

कूट शैल—यह संभवत: भागवत में उल्लिखित कुटक ही है जिसे कर्णाटक, वेंकट और कोंकण के निकट रखा गया है (भागवत ५-६-७) । शायद मद्रास में नील गिरि में कोटा पहाड़ी राज्य में यह स्थित था ।

कृतस्मर—यह सौराष्ट्र का पर्वत है जो प्रभास के निकट स्थित था (स्ट० स्क० पु०, पृ० ८७) ।

चकोर—यह गौतमी पुत्र शातकर्णी के राज्य में स्थित था ।

गोवर्धन गिरि (वायु० १।४५।९१)—वायु पुराण में गोवर्धन गिरि (=नासिक की पहाड़ी) का भी उल्लेख है ।

ऐसे सैकड़ों पहाड़ थे ।

पुराणों में पर्वतों, नदियों की उँचाई, नदियों के मार्ग को सूचित करने वाली रेखा, उनकी गति और बहाव तथा उनके माहात्म्य पर चिन्तन किया गया था (हरिवंश, भविष्य पर्व, ३५।२-३) । पुराणों में नदियों की सूचियाँ सात कुलपर्वतों के अनुसार ही दी गई हैं अर्थात् प्रत्येक कुलपर्वत से निकलने वाली नदियों के नाम अलग-अलग दिए गए हैं । पुराणों में इन नदियों का अन्य प्रकार से भी वर्गीकरण किया गया है । उनके बहाव को ध्यान में रख कर बताया गया है कि (१) पूर्व की ओर मुँह करके बहने वाली (प्राङ्-मुखा:), (२) दक्षिण की ओर मुँह करके बहने वाली (दक्षिणास्यास्तु),

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(३) उत्तर की ओर बहने वाली (उत्तर प्रभवा:) अथवा (४) पश्चिम की ओर बहने वाली (पश्चिमाग्रा:) नदियाँ थीं। हरिवंश (भविष्य पर्व अ० ३५) में चारों दिशाओं में स्थित पर्वतों और उनसे निकलने वाली प्रमुख नदियों का उल्लेख किया गया है (भविष्य पर्व, ३५-५०)—

सर्वासु दिक्षु क्षतजोपमाक्षश्चकार शैलान् विविधाभिधानान्।
हिताय लोकस्य च लोकनाथ: पुण्याश्च नद्य: सलिलोपगूढा: ॥

कुलपर्वतों से निकलने वाली ही प्रमुख नदियाँ थीं। अन्य छोटी-छोटी नदियाँ उनकी सहायक नदियों के रूप में उनसे मिलती थीं।

हिमालय से निकलने वाली नदियाँ (हिमवत्पादनि:सृता:)

हिमालय से निकलने वाली नदियों में हमें, गंगा, सरस्वती, सिन्धु, चन्द्र-भागा (चिनाब), यमुना, शतद्रु (सतलज), वितस्ता (झेलम), इरावती (रावी), कुहु (काबुल नदी, कुभा), गोमती (गंगा की सहायक, नैमिष गोमती जिसे पापों को धोने वाली कहा गया है—गोमती धूतपापा) अथवा धूतपापा (शारदा), बाहुदा (राप्ती), दृषद्वती (घग्घर की सहायक चितंग नदी), विपाश (व्यास), देविका (रावी की सहायक डीग), रंक्ष (डा० अग्रवाल के अनुसार यह वक्ष या ऑक्सस है। परन्तु इसके स्थान पर वायु पुराण में 'इक्ष' पाठ मिलता है, जो ठीक है) या इक्ष (काली नदी या ईखन जो संकिशा के पास फरुखाबाद और कन्नौज के निकट बहती है।), निश्चीरा, गंडकी (गंडक), कौशिकी (नैपाल व बिहार में बहने वाली कोसी) और आपगा (आपया, ऋग्वेद कालीन नदी जो ब्रह्मावर्त में बहती थी। वामन पुराण (३४।७, ३६।२) में इसका कुरुक्षेत्र के तीर्थों में वर्णन किया गया है।

ऊपर की नदियों में गंगा, यमुना, सरस्वती, दृषद्वती, सिन्धु, चन्द्रभागा, शतद्रु, वितस्ता, इरावती, विपाशा, गोमती, गण्डकी और कौशिकी प्रसिद्ध नदियाँ हैं जो काबुल कन्दहार (गान्धार) से लेकर उत्तरी बिहार तक उत्तरी भारत को सींचती हैं। ब्रह्म (२७-२७), और ब्रह्माण्ड (२।१६।२७) में रंक्ष के स्थान पर चक्ष तथा वायु (१।४५।९६) में इक्ष पाठ मिलता है। यहाँ पर इक्ष पाठ ही समीचीन लगता है; क्योंकि चक्ष नदी का वर्णन सीता और अलकनन्दा के साथ किया जाता है। वायु (१।४५।९४), ब्रह्माण्ड (२।१६।२५) और मत्स्य (११३।२१) में शरयू या सरयू (सरजू) का भी नाम हिमालय से निकलने वाली नदियों में मिलता है। इसी प्रकार लोहित (वायु १।४५।९६; ब्रह्माण्ड २।१६।२८) या ब्रह्मपुत्र का नाम भी मिलता है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विष्णुधर्मोत्तर (प्रथम खंड) के अ० ११ में हिमालय से निकलने वाली नदियों का उनके स्वरूप और लक्षणों के अनुसार विशेष वर्णन किया गया है। यह इस प्रकार है—

कौशिकी—कौशेय (रेशम) के समान रंग के जल वाली (कौशेयवर्ण-सलिला) और कमलों से सुशोभित (कुशेशय विमिश्रिता) तथा नित्य ही कौशिक (विश्वामित्र) को प्रिय लगने वाली कौशिकी नदी (बिहार की कोसी) है (वि० ध० १।११।२)। यह नैपाल और तिरहुत (उत्तरी बिहार में बहती है।

निश्चरा—मार्कंडेय पुराण में निश्चीरा, ब्रह्म पुराण में निष्ठीवा और मत्स्य में निश्चरा आदि पाठ हैं। परन्तु निश्चरा पाठ ही ठीक लगता है। "इसमें स्नान करते ही पापों का मल दूर करने के कारण इसे निश्चरा नाम की श्रेष्ठ नदी कहा गया था (वि० ध० १।११।३)। अग्नि पु० (११६-८) के अनुसार गया क्षेत्र में निश्चीरा के तट पर पिंड देना पुण्य कर्म था (निश्चि-रायां च पिंडदः)। अतः यह गया क्षेत्र की नदी है। डे (जा०डि०, पृ० १८१) के अनुसार यह लीलाजन नदी है जो गया के निकट मोहना से मिलती है और इन दोनों की मिली धार को ही फल्गू कहते हैं।

गण्डकी—गंगा के समान पवित्र गंडकी नदी को हाथियों से टूटा हुआ किनारों वाली कहा गया है। इसकी घाटी में गन्धर्व गीत गाते थे और गायें भी बहुत थीं (वि० ध० १।११।४)। इससे सिद्ध होता है कि इसकी ऊपरी पहाड़ी घाटी में हाथी और गन्धर्व बहुत थे तथा मैदानी भाग में गायें बहुत थीं।

लोहित्य महानद—लोकनाथ (विष्णु) ने लोकों को पवित्र करने के लिए मनोरम लोकदृष्टि वाली लोहित्य महानद (ब्रह्मपुत्र) की रचना की (वि० ध० १।११।५)। कैलास पर्वत के दक्षिण पूर्व दिशा में लोहित नामक एक गिरि है और उस पर्वत के मूल में लोहित नाम का सरोवर है जिससे पवित्र और महान लौहित्य नदी निकलती है। उसके तट पर **देवारण्य** वन है जिसमें मणिधर यक्ष और गुह्यकों का निवास था (ब्रह्मांड २।१८।९-१२)। गुह्यकों की पहचान आधुनिक 'गुह' उपनाम धारी लोगों से की जा सकती है।

दृषद्वती—यह सदा विप्रों से सेवित पुण्य नदी थी और इसका जल दर्श-नीय था (वि० ध० १।११।६)।

बाहुदा—लिखित मुनि (शंख के भाई) को पुनः बाँह देने वाली (लिखितस्य च बाहुदा) बाहुदा थी (वि० ध० १।११।७)। उनकी बाँह कट

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गई थी, क्योंकि शंख की अनुपस्थिति में उनके आश्रम में बिना पूछे ही उन्होंने फल खाये थे। कुछ लोग इसकी पहचान धवला (आधुनिक धुपेला या बूढ़ी राप्ती) से करते हैं और कुछ लोग इसकी पहचान रामगंगा से करते हैं। यह नदी बहुत ही पुण्य देने वाली थी (बहुदा)।

गोमती—धूतपापा महानदी गोमती का ही विशेषण प्रतीत होता है। कहा गया है कि इसके सेवकों को धर्म (पुण्य) देने वाली और उनके पापों को धोने वाली गोमती महानदी गोकुलों से सम्पन्न थी और इसमें गजेन्द्र भी नहाते रहते थे (वि० ध०, १।११।८)। यदि धूतपापा को पृथक नदी मानें तो यह शारदा ही हो सकती है।

कुहु—कदम्ब वृक्षों, इसके फूलों तथा कादम्ब (कदम्ब-पुष्पों से बनी शराब) और मयूरों की ध्वनि से गुंजायमान कुहू (काबुल नदी) की घाटी में गन्धर्वों और यक्षों का निवास था (वि० ध० १।११।९)। यह काबुल नदी थी जो गन्धार में बहती थी।

देविका—कुमुदोत्पल और कह्लार कुसुमों से सुगन्धित जल वाली देवदेव शंकर की प्रिया (देवी) नदी देविका थी जो लोगों को देवलोक-गति देने वाली थी (वि० ध० १।११।१०, ११ क)। यह मुद्रदेश की नदी थी—

हरस्य दयिता भार्या शैलराजसुता वरा।
उमादेवीति मद्रेषु देविका या सरिद्वरा॥

वि० ध० १।१५७।१५

इसके दोनों किनारों पर चार कोस के विस्तार का क्षेत्र (पवित्र देश) था, जहाँ नृसिंहतीर्थ में सौवीर-नरेश के पुरोहित ने विष्णु-मन्दिर का निर्माण कराया था (वि० ध० १।१६७।१६-२०)। देविका पंजाब की प्रसिद्ध नदी थी जो जम्मू की पहाड़ियों से निकल कर स्यालकोट—शेखूपुरा जिलों में होती हुई देग के नाम से रावी में मिल जाती है" (भा० पु० अध्ययन पृ० १४६)।

वितस्ता—विस्तारित किनारों और विषम द्वीपों को बनाती हुई बहने वाली (विस्तारित महाकूला विषम द्वीपवीजिता) तथा पापों को नष्ट कर विष्णु लोक देने वाली वितस्ता (झेलम) नदी थी (वि० ध० १।११।११ ख-१२ क)।

चन्द्रभागा—चन्द्रमा के समान शीतल जल वाली और अमरत्व को देने वाली चन्द्रभागा (चिनाब) पवित्र नदी थी (वि० ध० १।११।१२ ख-१३ क)।

सरयू—नदियों में श्रेष्ठ सरयू कमलों और तीर्थों से भरी हुई थी (वि०

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ध० १।११।१३ ख) । कैलास पर्वत के दक्षिण या त्रिककुत्-अंजन गिरि के निकट ही वैद्युत पर्वत था । उसके नीचे मूल भाग में स्थित मानस सर से ही सरयू नदी निकलती है । इसके किनारे वैभ्राज वन था (वायु, १।४७।१३-१५) । इसके तट पर कोशल की राजधानी अयोध्या स्थित थी (वि० ध० १।१३।२) । आज भी यह अयोध्या में प्रसिद्ध और पवित्र नदी है ।

इरावती—सदा सज्जनों और ऐरावत हाथियों से सेवित तथा नीलकमलों से सुशोभित इरावती (रावी) देवी एक पवित्र नदी थी (वि० ध० १।११। १४-१५ क) ।

विपाशा—विशिष्ट पाश (बन्धनों) को काटने में कुशल होने के कारण इसे विपाशा (व्यास) कहा गया था (वि० ध० १।११।१५ ख) ।

शतद्रु—सभी पापों को नष्ट करने वाली तथा वशिष्ठ-विद्रुता यह पुण्य नदी (देवी) तेज वहने वाली (शतद्रुर्द्रुतगामिनी) थी (वि० ध० १।११। १६) । यह सतलज है ।

यमुना—यह पुण्य नदी शिवलोक को देने वाली कृष्णा (काले) जल वाली और कृष्ण को अपना अमृत जल पिलाने वाली तथा यम की बहन कही गई है जो यम-यातना को नष्ट करने वाली है (वि० ध० १।११।१७-१७ क) ।

सरस्वती—इसे सात प्रकार की कहा गया है (सप्तप्रकारा च नदी तथा देवी सरस्वती) जो सात स्थानों में (सप्तसु भागेषु) में बहती थी और वहाँ उसके सात नाम थे—

(१) पुष्कर में सुप्रभा,
(२) नैमिष में कातराक्षी,
(३) गया में विशाला,
(४) कोशल में मानसह्रदा,
(५) कुरुक्षेत्र में सरस्वती,
(६) गंगाद्वार में ओघनादा और
(७) हिमाचल में सुवेणु ।

इनमें कुरुक्षेत्र की सरस्वती ही नदीतमा थी ।

गंगावतरण

हिमालय से निकलने वाली नदियों में गंगा सबसे पवित्र मानी गई है । प्रायः सभी पुराणों में गंगावतरण की कहानी बतायी गयी है । तपस्या द्वारा

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गंगा को पृथिवी पर लाने का श्रेय राजा भगीरथ को है। इसके जल को स्पर्शकर सगर के पुत्र स्वर्ग को चले गए जिन्हें कपिल के शाप ने भस्म कर दिया था। इस जल के स्पर्श से सभी स्वर्ग को जाते हैं, तभी से ऐसा विश्वास बन गया है।

बिन्दुसर—आकाश से उतरने के पहले गंगा जी ने सोचा कि वह शंकर को भी बहाकर ले जायगी। परन्तु शंकर ने उन्हें अपनी जटाओं में ही रोक लिया। शिर की जटाओं से कुछ बूंदें पृथिवी पर गिरीं जिससे बिन्दुसर बन गया (वि० ध० १/१९/१८-१९)। फिर शिव-जटाओं से मुक्त होकर गंगा भी बिन्दुसर में समा गईं। यहीं से उसकी सात धाराएँ फूट कर विभिन्न दिशाओं में बहने लगीं (वि० ध० १।१९।२२-२३)। मार्कण्डेय पुराण के अनुसार पहले यह मेरु शिखर पर गिरी। फिर यह चार धाराओं में विभक्त होकर मन्दर पर्वत होती हुई आगे बही। इनमें पूर्व की ओर बहने वाली सीता नदी है जो भद्राश्व वर्ष में होती हुई समुद्र में गिरती है। दक्षिण की ओर बहने वाली धारा का नाम अलकनंदा है जो मानस सरोवर और गंधमादन पर्वत (बद्री-नारायण की पहाड़ियाँ) होकर हिमवन्त पर गिरी और शिव की जटाओं में रुक रही। भगीरथ की तपस्या से गंगा मुक्त हुई और शंकर की जटाओं से मुक्त होकर वह सात भागों में बट गई। तीन भाग या नदियाँ पूर्व की ओर जाकर समुद्र में मिल गयीं। एक धारा भगीरथ के पीछे-पीछे जाती हुई दक्षिण समुद्र में मिली है। मेरु के पश्चिम में बहने वाली सुचक्षु नदी है। उत्तर की ओर भद्रसोमा उत्तर-सागर से मिली है (मार्क० ५३।१-१८)। मार्कण्डेय पुराण का यह वर्णन अधूरा है, क्योंकि यहाँ सातों धाराओं के नाम नहीं मिलते हैं। अन्य पुराणों के अनुसार (वायु, पूर्व० ४७।३७-४०; मत्स्य अ० १२०, वि० ध० I, अ० २२) इनमें नलिनी, ह्लादिनी और पावनी मेरु से पूर्व की ओर बहने वाली हैं; सीता, चक्षु और सिन्धु मेरु से पश्चिम की ओर बहने वाली हैं, तथा भागीरथी (गंगा) दक्षिण में हिमाह्वय (भारत) वर्ष को सींचती हुई लवणोदधि में मिल जाती है। इन सातों नदियों को बिन्दुसर से निकलने वाली कहा गया है। इनमें गंगा और सिन्धु सुपरिचित नदियाँ हैं।

सीता—यह नदी सिरिन्ध्र (शिलीन्ध्र), कुन्तल, चीन, बर्बर, यवन आदि देशों में बहती हुई पश्चिम समुद्र में गिरती थी। पं० जयचन्द विद्यालंकार (भारतभूमि, पृ० १२३) के अनुसार यह यारकन्द (या जरफशां) है जिसे चीनी उसके प्राचीन संस्कृत नाम सीता के अनुसार अब तक सी-तो कहते हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सीता के स्रोत के पूरब तिब्बत और पच्छिम पामीर है। डा० सरकार इसे जक्सर्टस या सर दरिया मानते हैं।

चक्षु—इसे चीन-मरु, तुषार, लम्पाक, पह्लव, दरद, शक आदि जनपदों से होकर बहने वाली कहा गया है। यह आधुनिक आक्सस या आमू दरिया है।

सिन्धु—सिन्धु नदी दरद, जगुड, गन्धार, औरस, कुहु, शिव, पौर, इन्द्रमरु, वसाति, सैन्धव, बर्बर, आदि देशों में होकर बहती थी। यह आधुनिक सिन्ध नदी है।

गंगा—गन्धर्व, किन्नर, यक्ष, राक्षस, विद्याधर, उरग, कलापग्राम वासी, किम्पुरुष, किरात, पुलिन्द, कुरु, भरत, पांचाल, कौशिक (काशयान्), मत्स्य (वत्स), मगध, अंग, ब्रह्मोत्तर, वंग, ताम्रलिप्त और श्रावस्ती नामक **आर्य देशों** को पवित्र करती है। विन्ध्य गिरि से अवरुद्ध होकर दक्षिणोदधि में गिरती है।

ह्लादिनी—पूर्व की ओर बहने वाली ह्लादिनी नामक नदी निषादों, धीवरों, ऋषिकों, नीलमुख, केकरों, किरातों और कुशिकों आदि के देशों से होती हुई समुद्र में मिलती है। डा०सरकार के अनुसार, सम्भवतः, यह ब्रह्मपुत्र थी। परन्तु ब्रह्मांड (२।१८।५५) के अनुसार इसे **स्वर्ण भूमि** (सुवर्णभूमि= लोअर बर्मा) से होकर समुद्र में मिलने वाली कहा गया है। अतः यह बर्मा की नदी मालुम पड़ती है।

नलिनी-पावनी—पूर्व की ओर बहती हुई नलिनी कुपथ देश, इन्द्रद्युम्न सर, खरपथ, वेत्रशंकुपथ, उज्जानकमरु, कुथप्रावरण देशों से होती हुई इन्द्रद्वीप के निकट समुद्र में गिरती थी (मत्स्य १२०।५५-५८)। परन्तु वायु पुराण (१।४७।५३-५५) के अनुसार यह वर्णन पावनी नदी का है। डा० सरकार पावनी को ही इन्द्रद्वीप के निकट समुद्र में गिरता हुआ मानकर इसकी पहचान इरावदी नदी से करते हैं। नलिनी की पहचान सालवीन या मीकांग से की गई है (जा० ए० मे० इ०, पृ० ५९)। वायु पुराण के अनुसार नलिनी पूर्व की ओर बहती हुई तोमर, हंसमार्ग, हूहुक आदि पूर्व देशों से होती हुई समुद्र में गिरती थी (वायु १।४७।५६-५८)। इन देशों के अतिरिक्त पावनी की घाटी में शैमिमण्डल भी स्थित कहा गया है (मत्स्य १२०।५७-५९)। इनकी पहचान कठिन और संदिग्ध है।

पद्म पुराण (१।३।६५-६६) में गंगा की इन सात धाराओं के नाम, वटोदका-नलिनी, पावनी, सरस्वती, जम्बूनदी, सीता, गंगा और सिन्धु हैं।

मन्दाकिनी—हिमालय के बीच में कैलास स्थित है। वहीं कैलास के नीचे शीतल जल से युक्त और मन्दार पुष्प से पूर्ण एक सरोवर था जिससे

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मन्दाकिनी नदी निकलती है (मत्स्य १२०।२-४)। यह अलकनन्दा की एक शाखा है।

अच्छोदा—कैलास के पूर्वोत्तर दिशा में चन्द्रप्रभ गिरि है जिसके समीप अच्छोद सरोवर से अच्छोदा नामक नदी निकलती है (मत्स्य १२०।५-७)।

मन्दाकिनी और अच्छोदिका दोनों ही समुद्र में मिलती हैं (मत्स्य १२०।८-९ क)।

शैलोदा—कैलास के पश्चिम में अरुण पर्वत के नीचे शैलोद सरोवर से निकलने वाली शैलोदा नदी सीता और चक्षु नदियों के बीच बहती हुई पश्चिम सागर में गिरती थी (मत्स्य १२०।१९-२३)। इस प्रकार स्पष्ट है कि हिमालय से निकलने वाली नदियाँ उत्तर में मध्य एशिया और दक्षिण में उत्तरी भारत तथा बर्मा को सींचती थीं।

पारियात्र से निकलने वाली नदियाँ

पारियात्र (विन्ध्य के पश्चिमी भाग) से निकलने वाली नदियों के प्रसिद्ध नाम निम्नलिखित हैं—

सिन्धु—मध्य प्रदेश की सिन्धु (कालीसिन्धु) है। सिन्धु और मधुमती नदियों के संगम पर सुवर्णबिन्दु नामक शैव तीर्थ स्थित था (मालती माधव ९।३ के बाद)।

पारा—यह वर्तमान पार्वती नदी है जो सिंधु नदी में विजयनगर के निकट गिरती है (जा०डि०, पृ० १४८)। पारा और सिन्धु के संगम पर ही पद्मावती नगरी स्थित थी (मालतीमाधव ९।१)

चर्मण्वती—यह चम्बल है। पश्चिमी पार्वती (पारा) चम्बल में गिरती है।

वेत्रवती—बेतवा है और **विदिशा** (आधुनिक बेस नदी) विदिशा के निकट वेत्रवती में मिलती है।

शिप्रा—उज्जयिनी की प्रसिद्ध नदी है जो चम्बल की सहायक नदी है।

वेण्वासा (वर्णासा-पर्णासा)—राजस्थान की आधुनिक बनास है जो चम्बल की सहायक नदी है।

वेदस्मृति—मालवा की आधुनिक बेसुला है।

वृत्रघ्नी—की पहचान साभरमती की सहायक वात्रक से की गई है (जा० ए० मे० इ०, पृ० ४५)।

चन्दना—साभरमती नदी को चन्दना भी कहते थे।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मही—यह मालवा की नदी है जो खम्भात की खाड़ी में गिरती है। मही सागर-संगम पर स्तम्भ तीर्थ (कैम्बे) प्रसिद्ध तीर्थ था।

इस सूची की अन्य नदियों—सदानीरा, नूपी, और अवर्णी आदि की पहचान नहीं हो सकती है।

ऋक्ष पर्वत से निकलने वाली नदियाँ (मार्क० ५४।२१-२३)

"इस सूची में वे नदियाँ हैं जो विंध्य पर्वत के चारों ओर के तटान्तों से निकलकर कई दिशाओं में बह जाती है।" इनमें नर्मदा, शोण (सोन), दशार्ण (धसान, जो बेतवा की सहायक नदी है), मन्दाकिनी (वर्तमान मन्दाकिन जो चित्रकूट पर्वत के पास बहती हुई यमुना नदी की सहायक नदी पयस्विनी या पयसुनी में मिल जाती है), तमसा (टोंस नदी जो इलाहाबाद के नीचे गगा में मिली है), और चित्रकूटा (चित्रकूट पर्वत से निकल कर उससे दक्षिण-पूर्व में बहने वाली छोटी नदी जो करवी के पास यमुना से मिलती है) प्रसिद्ध ही हैं।

सुरथा के स्थान पर ज्योतिरथा पाठ ठीक माना गया है। ज्योतिरथा शोण की सहायक नदी है जिसे अब जोहिला कहते हैं। यह भी अमरकंटक के पच्छिमी ढलान से निकलती है। रघुवंश (७।३६) में भी ज्योतिरथा का उल्लेख है (मा० पु० अ०, पृ० १४८)। डा० अली सुरथाद्रि को अमरकंटक मानते हैं (जा० पु०, पृ० ११८)। परन्तु सुरथा और अद्रिजा नदियाँ हैं।

कर्मोदा को पार्जिटर ने कर्मनासा माना है जो सोन से आगे गंगा में मिलती है। पिप्पलिश्रोणि, पिशाचिका, विपाशा, वंजुला, सुमेरुजा, शकुली, त्रिदिवा आदि नदियों की पहचान नहीं हो सकती है। पार्जिटर ने विपाशा की पहचान बिआस से की है जो सागर के पास बहती हुई केन नदी में मिल जाती है।

विन्ध्याचल से निकलने वाली नदियाँ (मार्क० ५४।२४-२५)

इनमें शिप्रा, पयोष्णी, निर्विन्ध्या, तापी, निषधावती, वेण्या, वैतरणी, सिनीवाली, कुमुद्वती, करतोया, महागौरी, और अन्तःशिवा (या अन्तः शिरा) हैं।

शिप्रा—यह अवन्ति (पश्चिमी मालवा) की प्रसिद्ध नदी है जिसके तट पर उज्जैनी स्थित है।

पयोष्णी—यह विदर्भ (बरार) की नदी थी। इसकी पहचान ताप्ती की सहायक नदी पूर्णा से की गई है (पार्जिटर)।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

निर्विन्ध्या—मेघदूत (१।२८-२९) के अनुसार यह वेत्रवती (बेतवा) और उज्जैनी के बीच बहती हुई चम्बल में गिरती थी। इसकी पहचान नेवाज से की गई है (अली)। कुछ लोग इसकी पहचान सिन्धु से करते हैं (डे, जा० डि०, पृ० १४१; बी० सी० ला रिवर्स ऑफ इन्डिया, पृ० ४०)।

तापी—यह ताप्ती है।

निषधावती—यह निषध देश (नल का राज्य) की नदी है जिसकी पहचान डा० अली सिन्ध से करते हैं। इसके तट पर निषध देश की राजधानी नलपुर (नरवर) स्थित थी।

वेण्या (या वेण्वा)—इसकी पहचान वेनगंगा से की गई है (अली)।

वैतरणी—यह उड़ीसा में बहती है। यह उड़ीसा में लोहारदगा जिले से निकलकर ब्राह्मणी नदी में मिलती है। बालेश्वर जिले में ब्राह्मणी और वैतरणी संगम के बाद यह धारा घामरा कहलाती है और बंगाल की खाड़ी में गिरती है। ब्रह्म पुराण (२६२।४) के अनुसार यह विरज क्षेत्र (उड़ीसा में जाजपुर के आस पास के भूखंड) में बहती है।

अन्य नदियाँ अज्ञात हैं।

सह्यपर्वत से निकलने वाली नदियाँ (मार्क० ५४।२६-२७ क)

गोदावरी, भीमरथी (आधुनिक भीमा), कृष्णवेणा (कृष्णा, कृष्णा और वेणा की मिश्रित धारा), तुंगभद्रा, वाह्या (वरदा) और कावेरी सह्य (पश्चिमी घाट) से निकलने वाली प्रसिद्ध नदियाँ हैं।

मलय से निकलने वाली नदियाँ (मार्क० ५४।२७ ख–२८ क)

कृतमाला (वैगाई), ताम्रपर्णी (तांबपन्नी, पांड्य देश की प्रसिद्ध नदी), पुष्पजा (मलय के एक भाग पुष्पगिरि से निकलने वाली, आधुनिक पम्बिआर नदी) और उत्पलावती (केरल की पेरियर नदी) हैं।

महेन्द्र से निकलने वाली नदियाँ (मार्क० ५४।२८ख-२९क)

पितृसोमर्षिकुल्या—ऋषिकुल्या की तीन धाराएँ ही त्रिभागा (मत्स्य ११३।३१) कहलाती हैं। यहाँ भी पितृसोमा और ऋषिकुल्या को एक ही साथ पितृसोमर्षिकुल्या (मार्क० ५४-२८) कहा गया है।

इक्षुका—की पहचान बाहुदा से की गई है जिसके तट पर इच्छापुरम स्थित है (अली)।

त्रिदिवा—लांगूलिनी नदी की तीन शाखाओं—वेगवती, नागवती, और सुवर्णमुखी—की मिली धारा को त्रिदिवा कहते थे (अली)।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लांगूलिनी—यह आधुनिक लांगुलिया नदी है जो चिकाकोल (श्रीकाकुलम) के पास आंध्र प्रदेश से होकर बहती है।

वंशकरा (वंशधरा)—आज भी अपने पुराने नाम से चिकाकोल के निकट कलिंगपुरम के पास बहती है।

शुक्तिमत से निकलने वाली नदियाँ (मार्क० ५४।२९ख-३०)

ऋषिकुल्या—यह उड़ीसा में बहने वाली नदी है जिसे महेन्द्र पर्वत से निकलने वाली पितृसोमा के साथ रखा गया है।

कुमारी—डा० अली ने इसकी पहचान सुक्तेल नदी से की है जो उड़ीसा में सोनपुर के निकट महानदी से मिलती है।

मन्दगा—यह आधुनिक मन्द नदी है जो महानदी की एक सहायक नदी है।

कृपा—इसकी पहचान अर्प नदी से की गई है जो सूनी (सिउनाथ) से मिल कर महानदी में मिलती है (अली)।

पलाशिनी—डा० अली के अनुसार यह या तो महानदी की सहायक जोंक नदी है जिसके किनारे परस्वनी नगर स्थित है या पैरी नदी है जो सन्दूर से मिलने के बाद महानदी में गिरती है।

सभी नदियाँ सरस्वती और गंगा के समान पुण्य थीं। सभी नदियाँ सम्पूर्ण प्रजा का भरण-पोषण करने वाली (विश्वस्य मातरः सर्वा) थीं। इनके अतिरिक्त भी बहुत सी छोटी-छोटी नदियाँ थीं। कुछ ऐसी थीं जो बरसात में बहती थीं (प्रावृटकाल वहाः) और कुछ नदियाँ हमेशा बहने वाली थीं (सर्वकाल वहाश्च याः)।

जनपद वर्णन

मार्कंडेय पुराण (५४।३२-५७) में भारतवर्ष को सात खंडों में विभक्त किया गया है। यहाँ भारतवर्ष की चौहद्दी भी दी गई है। इसके दक्षिण, पश्चिम और पूर्व में समुद्र था तथा उत्तर में धनुष की डोरी की भाँति हिमालय पर्वत (पूर्व और पश्चिम के समुद्रों को छूता हुआ स्थित है (एतत्तु भारत वर्षं चतुः संस्थान संस्थिततम्। दक्षिणापरतो ह्यस्य पूर्वेण च महोदधिः। हिमवानुत्तरेणास्य कार्मुकस्य यथा गुणः)। यह वही भारतवर्ष है (तदेतत् भारतवर्षं, मार्क० ५४।५८-६०) जो समस्त लोकों में कर्मभूमि है (मार्क० ५४।६२)। स्पष्ट है कि यह भारत कुमारी द्वीप या भारत द्वीप ही है इसमें इसके नवभेदों के आठ द्वीप सम्मिलित नहीं है। इसके सात खंड निम्नलिखित हैं—(१) मध्य देश, (२) उदीच्य, (३) प्राच्य, (४) दक्षिणापथ, (५)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अपरान्त (६) विन्ध्य पृष्ठ और (७) पर्वताश्रयी (पर्वतीय) भाग। ब्रह्म पु० (२७।४२-६४), मत्स्य (११३।३४-५६), वायु (१।४५।१०९-१३६) और ब्रह्मांड पु० (२।१६।४०-६८) में भी इन सात भागों का उनमें स्थित जनपदों के साथ वर्णन किया गया है। वामन पु० (१३।३५-५७) में भी इन सात देश भागों का वर्णन मिलता है। वामन में उदीच्य के स्थान पर उत्तरापथ (१३।४४) और अपरान्त के स्थान पर पश्चिम-दिशा (पश्चिमाशा, १३।५३) का उल्लेख है। ये सभी प्रदेश कुमार द्वीप में ही स्थित थे (वामन, १३।५९)। कुमार द्वीप ही कुमारी द्वीप, कुमारिका खंड या भारत द्वीप है। मार्कंडेय पुराण में प्रारम्भिक पहले श्लोक की पंक्तियाँ (जिनमें कुरु, पांचाल, साल्व, जाँगल, शूरसेन, भद्रकार, बोध और पटच्चर का उल्लेख है) छोड़ दी गयी हैं। मार्कंडेय पु० पर महाभारत का विशेष प्रभाव पड़ा है (मार्क० ४।४२)। परन्तु महाभारत की जनपद-तालिका में भी इन नामों का उल्लेख हुआ है (भीष्म ९।३९)। इनमें उल्लिखित जनपदों के नाम मिलाने से सही नाम जानने में सहायता मिलेगी—

मध्यदेशाः जनपदाः

वायु	ब्रह्मांड	मत्स्य	ब्रह्म	वामन	मार्कंडेय
१. कुरु	वही	वही	×	×	×
२. पांचाल	वही	वही	×	पांचाल	×
३. शाल्व	वही	वही	×	×	×
४. जांगल	वही	वही	×	×	×
५. शूरसेन	वही	वही	×	×	×
६. भद्रकार	वही	वही	×	×	×
७. बोध	वही	बाह्य	×	×	×
८. शतपथेश्वर(?)	पटच्चर	वही	×	×	×
९. वत्स	मत्स्य	मत्स्य	मत्स्य	मत्स्य	मत्स्य
१०. किसष्ण	कुशल्य	किरात	मुकुट	कुशट्ट	अश्वकूट
११. कुल्य	सौशल्य	कुल्य	कुल्य	कुणि	कुल्य
१२. कुन्तल	वही	वही	वही	कुण्डल	कुन्तल
१३. काशि	वही	वही	वही	वही	वही
१४. कोशल	वही	वही	वही	वही	वही
१५. तिलंग	कलिंग	कलिंग	कलिंग	भूलिंग	कलिंग

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

१६. मगध	कलिंग	×	×	शक	अथर्व (अर्बुद)
—	माद्रेय	×	शमक	समशक	मलक
—	गोध	×	वृक	वृक	वृक
—	भद्र	×	×	शवर	×
—	उत्कल	×	×	कौवीर	×
		मूक	×	×	×
		अन्धक	अन्ध्रक	×	×
मनोरम देश	वही	वही	वही	×	वही

गरुड़ पुराण चार दिग्भागों और चार उपदिग्विभागों तथा मध्य देश सब मिलाकर नौ खंडों में भारत को विभक्त करता है। इसके अनुसार मध्य देश में पांचाल, कुरु, मत्स्य, यौधेय, पटच्चर, कुन्ति और शूरसेन जनपद सम्मिलित थे। यहाँ काशि-कोशल को पूर्व देश में स्थित कहा गया है। मगध तो पूर्व देश का ही जनपद था। कुन्तल दक्षिण का राज्य था। मध्य देश में स्थित कुन्तल का पाठ गलत है और इसके स्थान पर कुन्ति का पाठ ही ठीक होना चाहिए। किसष्ण-कुशल्य के स्थान पर मत्स्य पुराण में किरात पाठ है। कांतिपुर के पूर्वोत्तर में पर्वत और कुमार धारा के निकट मध्य देश में (मिर्जापुर में कान्तित के निकट) किरात रहते थे (ब्रह्मांड २।१३।९५-९६)। कुल्य—सौशल्य के स्थान पर 'कुणि' (वामन पु०) पाठ है जो कुणिद का ही परिचायक है। वत्स (वायु पु०) और मत्स्य दोनों ही मध्य देश के प्रसिद्ध जनपद थे। शतपथेश्वर (वायु) के स्थान पर पटच्चर ही शुद्ध पाठ है। शाल्व, जांगल, भद्रकार, बोध, कुरु-पांचाल और शूरसेन मध्य देश के प्रसिद्ध जनपद थे। काशी—कोशल को भी मध्य देश में रख सकते हैं। अतः मध्य देश में कुरु, पांचाल, शाल्व (अलवर प्रान्त), जांगल, शूरसेन, भद्रकार, बोध, पटच्चर, वत्स, मत्स्य, कुणिद, यौधेय, काशि और कोशल प्रसिद्ध जनपद थे। मत्स्य पुराण में उल्लिखित 'मूक' मुख नामक जाति का ही परिचायक देश था, जिन्हें मुखर या मौखरी कहा गया है। वामन में शकों का भी उल्लेख है जो शूरसेन (मथुरा) में बसे थे। अर्बुद (आबू का पर्वतीय प्रदेश) पश्चिम देश में स्थित था। इसी प्रकार मनोरम देश की पहचान गोदावरी-तट देश से कर सकते हैं जो दक्षिण का प्रसिद्ध अश्मक राज्य था। मध्य देश के जनपदों में जांगल देश को छोड़ कर सभी जनपदों का विवेचन पीछे हो चुका है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जांगल देश—पार्जिटर और बी० सी० ला आदि विद्वान इसकी पहचान कुरु-जांगल (श्रीकंठ देश) से करते हैं। वे यह भी मानते हैं कि कुरु-जांगल कुरु राज्य का एक भाग था। अतः जांगल देश की पहचान कुरु-जांगल से नहीं हो सकती है। स्कन्द पु० (न० कि० सं० ३३.७४) में जांगल देश का उल्लेख है जो कुमारिका खंड के ७२ प्रदेशों में से एक प्रदेश था। इसमें सवा लाख गाँव सम्मिलित थे। इसकी पहचान मरु जांगल से की गई है जिसमें बीकानेर और उत्तरी मारवाड़ सम्मिलित थे।

अश्वकूट—इसकी पहचान कुमारिका खंड में उल्लिखित अश्व मुख अथवा अयोमुख से की जा सकती है जो रायबरेली—प्रतापगढ़ प्रान्तों का प्राचीन नाम था।

उदीच्य जनपद

इस खंड को उत्तरापथ भी कहा गया है जो सरस्वती नदी के उत्तर-पश्चिम पंजाब और सीमान्त प्रदेश में स्थित था। इसमें स्थित निम्नलिखित देश थे—

वाह्लीक, वाटधान, आभीर, कालतोयक, अपरान्त, पुरन्ध्र, शूद्र, पल्लव, चर्मखण्डिक, गान्धार, गबल (यवन) सिन्धु-सौवीर, मद्र, शतद्रुज, कलिंग (कुलिंद) पारद, हारभूषिक (हारपूरिक) माठर (रमठ), बहुभद्र, कैकेय, दशमालिक (दंभालिक, दशमानिक) काम्बोज, दरद, बर्बर, हर्षवर्धन, चीन (वीर), तुखार, आत्रेय, भरद्वाज, पुष्कल, कुशेरुका (दशेरक, कशेरुक) लंपाक, शूलकार, चुलिक (कुलिक), जागुड, औषध, अनिमद्र, किरात-जातियाँ, तामस (तोमर), हंसमार्ग, काश्मीर, तंगण, शूलिक, कुहक, ऊर्ण, (हूण) और दार्व। शतद्रुजा के स्थान पर वायु, ब्रह्मांड और मत्स्य में शक-देश का उल्लेख मिलता है। ब्रह्मांड में ऊर्ण के स्थान पर हूण देश का उल्लेख है। बाह्लीक के स्थान पर ब्रह्म पुराण में वाहीक तथा इसी पुराण में चर्म-खंडिका के स्थान पर वाह्लीक का उल्लेख है। वाह्लीक, वाटधान, आभीर, शूद्र, पल्लव, गान्धार, यवन, काम्बोज, सिन्धु, सौवीर, मद्र, कुलिंद, पारद, रमठ, कैकेय (या कैकय), दरद, बर्बर, चीन, तुखार, भारद्वाज, पुष्कल (पुष्कलावत देश), दशेरक, लम्पाक (लमगन), किरात, काश्मीर, तंगण और दार्व जन-पदों का वर्णन पीछे किया जा चुका है।

चर्मखण्डिक—पार्जिटर ने इसकी पहचान समरकन्द से की है।

शतद्रुज—यह सतलज नदी की घाटी का नाम था।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आत्रेय—द्वैतवन में आत्रेय रहते थे। बृहत्संहिता (१४।१४) में दक्षिण दिशा में इसे स्थित कहा गया है। इसकी ठीक-ठीक पहचान नहीं हो सकती है।

जागुड—इसकी पहचान गजनी देश (दक्षिण अफगानिस्तान) से की गई है।

कुहक—यह प्रदेश कुहा (कुभा) या काबुल नदी की घाटी में स्थित था।

ऊर्ण—इसकी पहचान यूनानियों द्वारा उल्लिखित आरनॉस पुर के समीप क्षेत्र से होनी चाहिए। आरनॉस की पहचान सिन्धु और स्वात नदियों के बीच स्थित 'ऊन' से की गई है (पो० हि० ऐ० इ०, पृ० २४६, नोट २)।

प्राच्य देश के जनपद

पूर्व देश में स्थित अंग, वंग (ब्रह्म पु०, मत्स्य) मुद्गर (मोदा गिरि=मुंगेर प्रान्त, बिहार), अन्तर्गिरि, बहिर्गिरि, विदेह, प्राग्ज्योतिष, मल्ल, मगध और ताम्रलिप्ति प्रसिद्ध प्रदेश थे (पीछे देखिये)। वायु पु० में मालदा का उल्लेख है जिसकी पहचान आधुनिक मालदा प्रान्त से की जा सकती है। सुह्मोत्तर या ब्रह्मोत्तर भी प्राच्य का प्रसिद्ध देश था, परन्तु इसकी ठीक-ठीक पहचान नहीं हो सकती है।

रंगेय—इसकी पहचान गंगा मार्टी (रक्तमृत्तिका) क्षेत्र से की गई है।

गरुड़ पुराण (१।५५।११) में **पाद्म** नामक जनपद को भी पूर्व में स्थित बताया गया है। इसकी पहचान दक्षिणी बंगाल के डेल्टा क्षेत्र से हो सकती है जहाँ गंगा की एक शाखा पद्मा बहती है। कूर्म (१।४६।४१) पुराण में पूर्व देश में **कामरूप** (आसाम) का उल्लेख मिलता है।

दक्षिणापथ के जनपद

पाण्ड्य, केरल, चोल सेतुक (सेतुबन्ध रामेश्वर के पास का क्षेत्र), **मूषिक** (हैदराबाद-दक्षिण में मूसी नदी का तटवर्ती भाग), **वानवासक, महाराष्ट्र, माहिषक** (मैसूर), **कुमार** (कन्या कुमारी प्रान्त), **कावेर** (कावेरी का तटवर्ती प्रदेश), अटवी में रहने वाले **शबर पुलिंद,** (विन्ध्याचल के दक्षिण जंगलों में रहने वाले), **पौरिक** (कोंकण में पुरी नामक स्थान के निवासी), **मौलिक** (मूलक, वर्तमान औरंगाबाद जिला), **विदर्भ, अश्मक** (गोदावरी तट देश), भोगवर्धन (औरंगाबाद का भोकर्दन तालुका), **कुंतल** (नार्थ कनारा प्रान्त), अन्ध्र और उद्भिद (शुंग जाति के लोग जो उद्भिद पहाड़ी पर रहते थे) दक्षिण के देश थे। इनमें उद्भिद नाम नया है और

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

महत्वपूर्ण है (देखिए, अवस्थी—प्राचीन भारत का इतिहास पृ० १३१-१३२)। कूर्म पुराण (१।४६।४२) में कलिंग को भी दक्षिण का देश बताया गया है। इनमें अधिकांश प्रसिद्ध राज्य हैं जिनका वर्णन पीछे किया जा चुका है।

अपरान्त या पश्चिम के जनपद

शूर्पारक, कोलवन (कोल्हापुर), तालीकट (तलकाड), दुर्गा (साबरमती की सहायक नदी की घाटी), मुरल (अपरान्त में मुरला की घाटी), पुलिन्द, नासिक्य (नासिक), उत्तरनर्मद (या अन्तर्नर्मद), भरुकच्छ, माहेय (मही नदी की घाटी), सारस्वत (गुजरात में सरस्वती नदी की घाटी), कच्छीय (कच्छ), सुराष्ट्र और आर्बुद (आबू की पहाड़ी का क्षेत्र) अपरान्त (पश्चिम) में स्थित थे। कूर्म पु० (१।४६।४२-४३) के अनुसार शूद्राभीर (शूद्र और आभीर जनपद), मालव, पारियात्र-क्षेत्र, सौवीर, सैन्धव, हूण और पारसीक भी पश्चिम में बसे हुए थे। पारसीकों से अरब विजेताओं का ज्ञान होता है जो ललितादित्य और यशोवर्मन के समय सिन्ध प्रान्त में बस चुके थे। हूण भी राजस्थान में बस चुके थे।

विन्ध्य-निबासी

मालव, करूष (बिहार का शाहाबाद प्रान्त), **मेकल, उत्कल, ओड्र** (उड़िसा), **दशार्ण** (पूर्व मालवा, विदिशा क्षेत्र), **भोज, किष्किन्ध, तोशल** (भुवनेश्वर के पास धौली को तोसली कहते थे जो तोशल की राजधानी थी), **कोसल** (दक्षिण कोसल), त्रैपुर (त्रिपुरी या तेवर—जो जबलपुर के निकट स्थित था—के आसपास का क्षेत्र अर्थात् जबलपुर प्रान्त), वैदिश (विदिशा), तुम्बुर (तुम्बवन, तुमाइन के आसपास का क्षेत्र—ग्वालियर प्रान्त), पटु, नैषध (निषध देश=नलराज्य या नलपुर अथवा नरवर के आस पास ग्वालियर प्रान्त का भाग), अनूप (नर्मदा तटवर्ती माहिष्मती के आस पास का प्राचीन हैहय देश), तुंडिकेर और वीतिहोत्र (भी हैहयों की शाखाएँ थीं) तथा अवन्ति (अवन्ति दक्षिणापथ) प्रसिद्ध देश थे जो विन्ध्य पर्वत पर और नर्मदा की घाटी में स्थित थे।

पर्वताश्रयी देश

"प्राचीन भारतवर्ष मे पर्वताश्रयी या पहाड़ी जनपदों के दो समूह थे। एक कुल्लू कांगड़ा से लेकर जम्मू के डोगरा प्रदेश तक और दूसरा कश्मीर के पूंछ-हजारा से लेकर अफगानिस्तान के पहाड़ी इलाकों तक। यहाँ इन दोनों को सूची में गिनाया है" (अग्रवाल)।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नीहार, हंसमार्ग, कुरु (उत्तर कुरु), तंगण, खस, कुन्तलप्रावरण (कुथ-प्रावरण), ऊर्ण (पीछे देखिए) या हूण, दार्व, हूहुक, त्रिगर्त मालव, किरात और तामस (या तोमर) पर्वतीय देश थे।

नीहार (या निर्गहर)—यह काबुल नदी की घाटी में स्थित नग्नहार या आधुनिक जलालाबाद के आसपास का क्षेत्र था।

हंसमार्ग—हुंजा क्षेत्र, जो उत्तरी काश्मीर में स्थित है।

अन्य देशों का वर्णन पीछे किया जा चुका है। इस प्रकार मार्कण्डेय पु० के अ० ५४ या ५७ का भुवनकोश वर्णन भारत-गौरव (५७।५८-६४) के साथ ही समाप्त होता है।

पाठ्य ग्रन्थ

डा० वासुदेव शरण अग्रवाल	मार्कण्डेय पुराण—एक सांस्कृतिक अध्ययन
डा० डी० सी० सरकार	जाग्रफी ऑफ ऐंशेन्ट ऐण्ड मेडिवल इन्डिया,
पार्जिटर	मार्कण्डेय पुराण—अंग्रेजी अनुवाद (=मार्क० अं०)
डा० बी० सी० ला	जाग्रफिकल एसेज़
डा० यस० यम० अली	जाग्रफी आफ दि पुराणाज
डा० ए० बी० एल० अवस्थी	प्राचीन भारत का भौगोलिक स्वरूप,
	यौधेयों का इतिहास
	स्टडीज इन स्कन्द पुराण—अ० १
	गरुड़ पुराण एक अध्ययन—अ० २

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अध्याय १२

कूर्म संस्थान

वराहमिहिर की वृहत्संहिता भी ब्राह्मण-संस्कृति का एक छोटा-मोटा विश्वकोश है जहाँ विभिन्न शास्त्रों और विद्याओं का वर्णन मिलता है। यहां वास्तु, शिल्प, प्रतिमालक्षण, ज्योतिष विचार, संस्कार, स्त्री-पुरुष लक्षण, हस्ति-अश्व-रत्न लक्षण, भूगोल और आर्थिक जीवन (कृषि-पशुपाल्य) आदि का वर्णन भी मिलता है। भूगोल का विशेष रूप से महत्व है जिसके लिए एक स्वतन्त्र ग्रन्थ (मिहिरकोश) की आवश्यकता है। फ्लीट महोदय ने कूर्म-विभाग के आधार पर भौगोलिक तालिका बनायी थी। यहाँ स्थानाभाव से हम कूर्म-विभाग का ही विवेचन करेंगे।

वृहद्नारदीय पुराण का कूर्म-संस्थान

वृहद्नारदीय पुराण (पूर्व खंड, अ० ५६।७३९-७४५) में भी भारत-भूमि-स्वरूप कूर्म को नौ भागों में बाँट कर उसके नौ अंगों में स्थित देशों का वर्णन किया गया है। यह संक्षिप्त देश-तालिका है—

देश भाग	जनपद
१. नाभि मंडल (मध्य)	अन्तर्वेद, पांचाल।
२. प्राच्य या मुख मंडल	मगध, लाट (राढ)।
३. बाहु मंडल	स्त्री कलिंग, किरात।
४. पार्श्व मंडल (१)	अवंति, द्रविड, भिल्ल।
५. पाद मंडल (१)	गौड, कौंकण, शाल्व, आन्ध्र, पौंड्र।
६. पुच्छ मंडल	सिंधु, काशि, महाराष्ट्र, सौराष्ट्र।
७. पाद मंडल (१)	पुलिंद, चीन, यवन, गुर्जर।
८. पार्श्व मंडल (२)	कुरु, काश्मीर, माद्रेय, मत्स्य।
९. पाणि मंडल	खस, अंग, वंग, बाह्लीक, कांबोज।

प्राङ्मुखस्य तु कूर्मस्य नवांगेषु धरामिमाम्।
विभज्य नवधा खंडे मंडलानि प्रदक्षिणम्॥
अन्तर्वेदाश्च पांचालस्तस्येदं नाभिमंडलम्।
प्राच्यामागधलाटोत्था देशास्तन्मुखमंडलम्॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

स्त्रीकलिंगकिराताख्या देशास्तत्पार्श्वमंडलम् ।
गौडकौंकणशाल्वांध्रपौंड्रस्तत्पादमंडलम् ।।
सिंधुकाशिमहाराष्ट्र सौराष्ट्राः पुच्छमंडलम् ।
पुलिंदचीनयवनगुर्जराः पादमंडलम् ।।
कुरु काश्मीर माद्रेय मत्स्यास्तत्पार्श्वमंडलम् ।
खसांगवंगबाह्लीक कांबोजाः पाणिमंडलम् ।।

स्कन्द पुराण के अनुसार कूर्म रूपी विष्णु भारत पर स्थित हैं। उसमें नक्षत्र-विन्यास के अनुसार ही देशों को स्थित माना गया है (स्क०, ७।१।११। १४-१७)। भारत की स्थिति और आकृति रूपी कूर्म पूर्व की ओर मुख करके भारत के नव भेदों को ढक कर बैठे हुए हैं (प्राङ्मुखो भगवान्देवो कूर्मरूपी व्यवस्थितः। आक्रम्य भारतंवर्षं नवभेदमिदं; स्कन्द ७।१।११।१८-१९)। ये नव भेद हैं—मुख, पूर्व दक्षिण पाद, दक्षिण कुक्षि, नैऋत, पृष्ठ, वायव्य पाद, वामकुक्षि, ईशपाद और मध्य; स्कन्द, ७।१।११।१९-३७)। कूर्म-देशों का यहाँ वर्णन नहीं दिया गया है। केवल सौराष्ट्र को इस कूर्म रूपी भारत के नैऋत (दक्षिण-पश्चिम) पाद में स्थित कहा गया है; (स्कन्द, ७।१।११। ३७; ७।१।१६७।३३)। इस कूर्म-निवेश से हमें कूर्म की पीठ की तरह भारत के आकार (कूर्मपृष्टोपमोर्वी, स्कन्द २।१।३६।४५) का ज्ञान होता है।

कूर्मरूपी भारत के नव भेद

बृहत्संहिता	मार्कंडेय पुराण	वृ० नारदीय पु०	स्कन्द पु०
१. मध्य	वही	नाभि मंडल या अन्तर्वेद	मध्य
२. प्राग् या पूर्व	कूर्म-मुख	वही	वही
३. आग्नेय (पूर्व दक्षिण)	पूर्व दक्षिणपाद	बाहु मंडल	पूर्व दक्षिण पाद
४. दक्षिण	दक्षिण कुक्षि	पार्श्व मंडल	दक्षिण कुक्षि
५. नैऋत (दक्षिण पश्चिम)	बाह्यपाद या अपर-दक्षिणपाद	पाद मंडल	नैऋत
६. अपर-पश्चिम	पुच्छ भाग	पुच्छ मंडल	पृष्ठ
७. पश्चिमोत्तर	वाम-पाद (अपर)	पाद मंडल	वायव्य पाद
८. उत्तर	वाम कुक्षि	पार्श्व मंडल	वाम कुक्षि
९. ईशान कोण (उत्तर पूर्व)	पूर्वोत्तर	पाणि मंडल	ईशपाद

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इससे स्पष्ट है कि बृहत्संहिता ने केवल दिग्भागों के आधार पर देश-वर्णन किया है; जबकि अन्य पुराणों ने कूर्म के अंगों के अनुसार देशों की स्थिति का वर्णन किया है। इससे सिद्ध होता है कि वराह मिहिर ने कूर्म-अंग-संस्थान पर ध्यान न देकर दिग्भागों का वर्णन किया है।

प्राचीन भारतीय भूगोल में वराहमिहिर का नाम उल्लेखनीय है। उनके ग्रन्थ—**बृहत्संहिता**—के अध्यायों में भूगोल की नाम-मुद्राएँ अंकित हैं। अध्याय १४ (कूर्म विभाग) में भारतवर्ष के मध्यदेश से पूर्व आदि दिशाओं में क्रमानुसार नव भाग कर उनमें स्थित देशों का वर्णन किया गया है। इस कूर्म-विभाग का वर्णन पराशर के ग्रन्थ में भी हुआ है और पुराणों ने भी इस कूर्म-विभाग की देश-व्यवस्था को ज्योतिषाचार्यों से लिया है। **मार्कण्डेय पुराण** में भुवन-कोश वर्णन के बाद ही अध्याय (५५ या ५८) में **कूर्म-संस्थान** का वर्णन मिलता है। यहां भी भारत को नौ भागों में विभक्त कर प्रत्येक भाग में स्थित देशों का वर्णन किया गया है। कूर्म रूपी विष्णु को इस सम्पूर्ण भारत को ढक कर पूर्व की ओर मुंह किए हुए बैठा माना गया है। उस कूर्म के ही विभिन्न अंगों में स्थित देशों का वर्णन किया गया है। (बृ०ना०पु०, १।५६।७३९-७४८) प्रत्येक देश में राशि और ग्रहों की स्थिति के अनुसार शुभाशुभ का वर्णन किया गया है। मार्कण्डेय पुराण और बृहत्संहिता के कूर्म-संस्थान में इतनी अधिक समानता है कि मार्कण्डेय पुराण के लेखक ने इस अध्याय को बृहत्सहिता से लेकर उसे भागवतीय रंग से रंगा। नीचे हम दोनों की देश तालिका देते हैं इससे भ्रष्ट और अशुद्ध पाठों को भी सुधारने में सहायता मिलेगी।

मार्कंडेय पु० अ० ५५ या ५८	श्लोक संख्या	बृहत्संहिता अ० १४	श्लोक संख्या	विशेषोल्लेख
		मध्यदेशीय (जना मध्यनिवासिनः)		
वेदि	६	भेद	२	बृहत्संहिता में उल्लिखित मरु,
मद्रारि	६	भद्रारि	२	यामुन और माध्यमिका को
माण्डव्य	६	वही	२	मार्कण्डेय में नहीं पाते हैं।
शाल्व	६	वही	२	मार्कण्डेय में उल्लिखित शक,
नीप	६	वही	२	और खश को यहाँ बृ० सं० में
शक	६	माध्यमिक	२	नहीं पाते हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उज्जिहान	६	वही	२
वत्स	६	वही	२
घोष	६	वही	२
संख्य	६	संख्यात	२
खश	६	यामुन	२
सारस्वत	७	वही	२
मत्स्य	७	वही	२
शूरसेन	७	वही	३
माथुर	७	वही	३
धर्मारण्य	७	वही	३
ज्योतिषिक	७	उपज्योतिष	३
गौरग्रीव	७	वही	३
गुड	७	वही	३
अश्मक	७	अश्वत्थ	३
वैदेहक	८	उद्देहिक	३
पांचाल	८	वही	३
संकेत	८	साकेत	४
कंक	८	वही	४
मारुत	८	मरु	२
कालकोटि	८	वही	४
पाषण्ड	८	कुकर	४
पारियात्रनिवासिनः	८	वही	४
वाह्य	९	×	
कापिंजल	९	कापिष्ठल	४
कुरु	९	वही	४
उदुम्बरा जनाः	९	औदुम्बर	४
गजाह्वय	९	वही	४

पूर्व दिशा में स्थित देश

वृषध्वज	११	वही	५	
अंजन	११	वही	५	
जम्बू	११	पद्म	५	(शुद्ध पाठ पद्म ही है)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मार्क०	श्लोक	बृ० सं०	श्लोक	
मानवाचल	११	माल्यवत्	५	मानवाचल माल्यवान् का ही
शूर्पकर्ण	११	वही	५	दूसरा नाम प्रतीत होता है।
व्याघ्रमुख	११	वही	५	
मुर्वर (खर्मक)	११	सुह्म	५	सुह्म ही शुद्ध पाठ है
कर्वटाशन	११	वही	५	
चन्द्रेश्वर	१२	चान्द्रपुर	५	
खश	१२	वही	६	
मगध	१२	वही	६	
शिबि	१२	वही	६	
मैथिल	१२	वही	६	
शुभ्रास्तथ	१२	समतट	६	शुद्ध पाठ समतट ही है।
वदन	१२	अश्ववदन	६	सही पाठ अश्ववदन है
दन्तुरा	१२	वही	६	
प्राग्ज्योतिष	१३	वही	६	
लौहित्य	१३	वही	६	
सामुद्र	१३	वही	६	बृहत्सं० में सामुद्र के स्थान
पुरुषाद	१३	वही	६	पर क्षीरोद समुद्र पाठ है।
पूर्ण	१३	पौण्ड्र	७	पुंड्र ही शुद्ध है।
उत्कट	१३	उत्कल	७	उत्कल ही शुद्ध पाठ है।
भद्र	१३	वही	७	
गौर	१३	गौड	७	गौर का शुद्ध पाठ गौड देश है।
उदयगिरि	१३	वही	७	
काशि	१४	वही	७	
मेखल	१४	मेकल	७	
अमुष्ट	१४	अम्बष्ठ	७	अम्बष्ठ शुद्ध पाठ है।
ताम्रलिप्त	१४	वही	७	
एकपाद	१४	वही	७	
वर्द्धमान	१४	वही	७	
कोसल	१४	वही	७	

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मार्क०	श्लोक	वृ०सं०	श्लोक	
दक्षिणपाद देशाः १५ आग्नेय (दक्षिण पूर्व) दिशा				
(पूर्व दक्षिणपाद १९)				
कलिंग	१६	वही	८	
वंग	१६	वही	८	
जठर	१६	वही	८	
×		अंग	८	
×		उपवंग	८	
मूषिक	१६	×		
चेदि	१६	वही	८	
ऊर्द्धकर्ण	१६	ऊर्ध्वकण्ठ	८	
मत्स्य	१६	वत्स	८	
आंध्र	१६	वही	८	
विन्ध्यवासी	१६	विन्ध्यान्तवासी	९	
विदर्भ	१७	वही	८	
ऐलिक	१७	शौलिक	८	
नारिकेल	१७	वही	९	नारिकेल द्वीप
×		वृष	९	वृष द्वीप
धर्म द्वीप	१७	चर्म द्वीप	९	
व्याघ्रग्रीव	१७	व्यालग्रीव	९	
महाग्रीव	१७	व्यालग्रीव	९	
त्रैपुर	१७	त्रिपुरी	९	
श्मश्रुधारी	१७	वही	९	
कैष्किन्ध्य	१८	किष्किन्धक	१०	
हैमकूट	१८	हैमकुडय	९	
निषध	१८	×		
कटकस्थल	१८	कण्टकस्थल	१०	
दशार्ण	१८	वही	१०	
हारिक	१८	पुरिक	१०	
नग्न	१८	वही	१०	
काकुलालक	१८	×		

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मार्क०	श्लोक	वृ०सं०	श्लोक	
पर्ण		वही	१०	
शबर		वही	१०	
दक्षिण कुक्षि में स्थित	**२८**	**दक्षिण दिशा**	**११**	
लंका	२०	वही	११	
कालाजिन	२०	वही	११	
शैलिक	२०	सैरिकीर्ण	११	
निकट	२०	तालिकट	११	
		गिरिनगर	११	
महेन्द्र	२१	वही	११	
मलयाद्रि	२१	वही	११	
दर्दुर	२१	वही	११	
कर्कोटकवन	२१	कंकटक	१२	वृ० सं० का पाठ—कङ्कटङ्कर्ण के स्थान पर कर्कोटक (कङ्क-टक) वन शुद्ध है।
भृगुकच्छ	२१	वही (भरुकच्छ)	१२	
कोंकण	२१	वनवासि	१२	
×		शिबिक	१२	
आभीर	२१	वही	१२	
वेण्यातीरवासी	२१	वेणावर्त्तक	१२	
अवन्ति	२१	×		
आकरिण	२१	आकर	१२	मार्कंडेय पु० का 'आकरिणो जनाः' से आकर देश का ही ज्ञान होता है।
दासपुर	२१	दशपुर	१२	
×		फणिकार	१२	
गोनर्द	२३	गोनर्द	१२	
×		केरल	१२	
महाराष्ट्र	२३	महाटवि	१३	महाराष्ट्र शुद्ध है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मार्क०	श्लोक	वृ०सं०	श्लोक	
कर्णाट	२३	वही	१३	
चित्रकूट	२३	वही	१३	
चोल	२३	वही	१३	
कोलगिरि	२३	वही	१३	
क्रौंचद्वीप	२३	वही	१३	
जटाधर	२३	वही	१३	
कावेरी	२४	वही	१३	
ऋष्यमूक	२४	वही	१३	
नासिक्य	२४	वही	१४	
शंख	२४	×		शंख द्वीप
शुक्ति	२४	मुक्ता	१४	मुक्ता द्वीप (रत्नद्वीप)
वैदूर्य शैल	२४	मुक्ता	१४	
तथा	२५	अत्रि	१४	
वारिचर	२५	वही	१४	
कोल	२५			
चर्मपट्टन द्वीप	२५	धर्मपट्टन द्वीप	१४	
गणबाह्य	२५	गणराज्य	१४	
कृष्णद्वीप	२५	कृष्णा	१४	
सूर्याद्रि	२६	शूर्पाद्रि	१४	
कुमुदाद्रि	२६	कुसुमनग	१४	
औखावन	२६	तुम्बवन	१५	तुम्बबन पाठ शुद्ध है।
पिशिक	२६	×		
कर्मनायक	२६	कार्मणेयक	१५	
दक्षिण कौरुष	२७	याम्योदधि	१५	
ऋषिक	२७	वही	१५	
तापसाश्रम	२७	वही	१५	
ऋषभ	२७	वही	१४	
सिंहल	२७	वही	१५	
कांची	२७	वही	१५	
×		मरुचीपट्टन	१५	

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मार्क०	श्लोक	वृ०सं०	श्लोक
×		चेर्य	१५
×		आर्यक	१५
तिलंग-त्रिलंग	२८	तिमिंगिलाशन	१६
कुञ्जरदरी	२८	वही	१६
कच्छ	२८	वही	१६
ताम्रपर्णी	२८	वही	१६
×		बलदेव पट्टन	१६
×		दण्डकावन	१६
×		भद्र	१६

दक्षिणपाद में स्थित ३३ नैऋत्य (दक्षिण-पश्चिम) १७

काम्बोज	३०	वही	१७
पह्लव	३०	वही	१७
सिन्धु	३०	वही	१७
सौवीर	३०	वही	१७
आनर्त्त	३०	वही	१७
वनितामुख	३०	नारीमुख	१७
वडवामुख	३०	वही	१७
×		आरव	१६
द्राविण	३१	×	
सार्गिग	३१	मार्गर	१८
शूद्र	३१	वही	१८
कर्णाप्राधेय	३१	कर्णप्रावेय	१८
बर्बर	३१	वही	१८
किरात	३१	वही	१८
पारद	३१	×	
पांड्य	२१	×	
पारशव	३१	वही	१८
कल	३१	×	
धूर्त्तक	३२	चंचूक	१८

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मार्क०	श्लोक	वृ०सं०	श्लोक	
हैमगिरिक	३२	वही	१९	
सिन्धु	३२	वही	१९	
कालक	३२	वही	१९	
वैरत	३२	रैवत	१९	रैवत शुद्ध पाठ है ।
सौराष्ट्र	३२	सुराष्ट्र	१९	
दरद	३२	बादर	१९	दरद शुद्ध पाठ है ।
द्राविड	३२	वही	१९	
महार्णव	३२	वही	१९	
कूर्म की पूछ में ३७		**पश्चिम दिशा २०, २१**		
मणि	३४	मणिमान्	२०	
मेघ	३४	मेघवान	२०	
क्षुराद्रि	३४	क्षुरार्पण	२०	
खंजन	३४	वनौघ	२०	
अस्तगिरि	३४	वही	२०	
अपरान्तिक	३४	अपरान्तक	२०	
हैहय	३४	वही	२०	
शान्तिक	३४	वही	२०	
विप्रशस्तक	३४	प्रशस्ताद्रि	२०	
कोंकण	३५	वोक्काण		कोंकण का पाठ अशुद्ध है। मार्क० श्लोक २१ में कोंकण का उल्लेख हो चुका है।
पंचनदका	३५	वही	२१	
वमन	३५	रमठ	२१	
अवर	३५	पारत	२१	
तारक्षुर	३५	तारक्षिति	२१	
अगतक	३५	जुंग (जून्ग)	२१	
शर्कर	३५			
शाल्म	३५			
वेश्मक	३५	वैश्य	२१	

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मार्क०	श्लोक	वृ०सं०	श्लोक	
		कनक	२१	
		शक	२१	देखिये गरुड़ पु० एक
		म्लेच्छ	२१	अध्ययन पृ० २९।

वामपाद में स्थित देश ४० वायव्य (पश्चिमोत्तर) देश २२

गुरुस्वर	३६			
फल्गुणक	३६	वही	२३	
वेणुमती-तट	३६, ३९	वही	२३	
फल्गुलुक	३६	वही	२३	
घोर	३६			
गुरुहा	३६	गुलुहा	२३	
कला	३६			
एकेक्षण	३७	एकविलोचन	२३	
वाजिकेश	३७			
दीर्घग्रीव	३७	वही	२३	
चूलिक	३७	शूलिक	२३	
अश्वकेश	३७	अस्यकेश	२३	

मार्क० ३६-३७ के देश श्लोक ४० में भी गिनाए गए हैं। इनकी स्थित यहीं वामपाद या पश्चिमोत्तर में ३८-३९ के बाद होनी चाहिए।

माण्डव्य	३८	वही	२२	
चण्डखार	३८	तुषार	२२	तुषार पाठ शुद्ध है।
अश्वक	३८	अश्मक	२२	
आलनद	३८			
		हल	२२	
		मद्र	२२	
कुशात्तालडहा या कुन्यतालडहा (कलकत्ता सं०)	३९	कुलूतहलडा: या कुलूतलहडा (लाहौर सं०)	२२	यहाँ दो जनपद नाम हैं—कुलूत और लहडा। मार्क० का पाठ भ्रष्ट है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मार्क॰	श्लोक	वृ॰सं॰	श्लोक	
कुशात (कुन्यत)		कूलूत		
लडह		लहड		
स्त्रीबाह्य	३९	स्त्रीराज्य	२२	
बालिक	३९			बालिक का शुद्ध पाठ बाह्लिक (वाहीक) या बाह्लीक मालुम पड़ता है।
नृसिंह	३९	नृसिंह	२२	
बल		वन	२२	
वस्था	३९	खस्थ	२२	
धर्मबद्ध	४०	चर्मरंग	२३	
उलूक	४०			
उरुकर्म	४०	मरुकुच्छ या गुरुकुत्स	२३	

वामकुक्षि में स्थित देश ४७ उत्तर में स्थित देश २४

मार्क॰ श्लोक ४१ ख में वृ॰ सं॰ २४ का 'उत्तरतः' छोड़ दिया गया है।

कैलास	४१ ख	वही	२४
हिमवान्	४१ ख	वही	२४
धनुष्मान्	४१ ख	वही	२४
वसुमान्	४१ ख	वही	२४
क्रौंच	४२	वही	२४
कुरुषक	४२	उत्तर कुरु	२४
क्षुद्रवीण	४२	क्षुद्रमीन	२४
		मेरु	२४
रसालय	४२		
कैकेय	४२	वही	२५
भोगप्रस्थ	४२	वही	२५
यामुन	४२	वही	२५
अन्तर्द्वीप	४३	वही	२५
त्रिगर्त्त	४३	वही	२५

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मार्क०	श्लोक	वृ०सं०	श्लोक	
अग्नीज्य	४३	अग्नीध्र	२५	
आर्दनाजन	४३	आर्जुनायन	२५	
अश्वमुख	४३	वही (लाहोर सं०)	२५	वृ० सं० (वाराणसी सं०) में श्वमुख पाठ है।
प्राप्त	४३	वसाति	२५	
चिबिड	४३	चिपिट	२६	वृ० सं० में चिपिटनासिक पाठ है।
केशधारी	४३	केशधर	२६	
		आदर्श	२५	
		तुरगानन	२५	
दासेरक	४४	वही	२६	
वाटधान	४४	वही	२६	
शवधान	४४	शरधान	२६	
पुष्कलाधम	४४	पुष्कलावत	२६	
कैरात	४४	कैलावत	२६	कैरात पाठ शुद्ध है।
तक्षशिला	४४	वही	२६	
		कण्ठधान	२६	
अम्बष्ठ	४५	अम्बर	२७	
अम्बाला (कलकत्ता सं०)				
मालव	४५	वही	२७	
मद्र	४५	मद्रक	२७	
वेणुक	४५			
वदन्तिन	४५			
पौरव	५२	वही	२७	मार्क० ५२ में इसे पूर्वोत्तर कूर्म पाद में रखा गया है।
		कच्छार	२७	
		दण्ड	२७	
पिंगल	५२	पिंगलक	२७	
मानकलह	५२	माणहल	२७	

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मार्क०	श्लोक	वृ०सं०	श्लोक	
हूण	५२	वही	२७	
कोहलक	५२	कोसल	२७	
माण्डव्य	४६	वही	२७	
भूतियुवक	४६	भूतपुर	२७	
शातक	४६	शीतक	२७	
हेमतारक	४६	हेमताल	२८	
यशोमत्य	४६	यशोवति	२८	
गान्धार	४६	वही	२८	
श्वरस	४६	खचर	२८	खरसागरराशयः (मार्क० ४६) और खचरगव्याश्च (वृ० सं० २८) में शुद्ध नामों का ज्ञान कठिन हैं।
गरराशि	४६	गव्य	२८	
यौधेय	४७	वही	२८	
दासमेय	४७	वही	२८	
राजन्य	४७	वही	२८	
स्यामक	४७	श्यामक	२८	
क्षेमधूर्त	४७	वही	२८	

पूर्वोत्तर पाद में स्थित देश ५१ ईशान कोण (पूर्वोत्तर) देश २९

येन	४८	मेरु	२९	यहाँ मेरु का कोई आवश्यक प्रसंग नहीं है। येन को ही मेरु माना गया है और 'कनष्ट राज्य' के स्थान पर कन्नरराज्य शुद्ध पाठ है।
किन्नर राज्य	४८	कनष्ट राज्य	(२९)	के स्थान पर 'येनकिन्नर राज्यं' (मार्क ४८) शुद्ध है।
पशुपाल	४८	वही	२९	
कीचक	४८	कीर	२९	
काश्मीर	४९	वही	२९	

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मार्क०	श्लोक	वृ०सं०	श्लोक
अभिसार	४९	वही	२९
दरद	४९	वही	२९
त्वंगण	४९	तंगण	२९
कुलट	४९	कूलूत	२९
वनराष्ट्र	४९	वही	२९
सेरिष्ठ	५०	सैरिन्ध्र	
ब्रह्मपुरक	५०	वही	३०
तनबाह्य	५०		
किरात	५०	वही	३०
		चीन	३०
कौशि (कौशिक)	५०	कुचिक	३०
कानन्द	५०	कौणिन्द	३०
पह्लव	५०	भल्ल	३०
लोलन	५०	पलोल (पटोल)	३०
दार्व	५१	वही	३०
दामरक	५१	डामर	३०
कुरट	५१	कुनठ	३०
खश	५१	खस (खख)	३०
घोष	५१	वही	३०
अन्नदारक	५१	अनुविद्ध	३०
एकपाद	५१	एकचरण	३१
स्वर्गभौम	५१	सुवर्णभू	३१
अनवद्यक	५१	अनुविद्ध	३१
		जटासुर	३०
		वसुवन (वसुधन)	३१
यवन	५२		
हिंग	५२	चीरनिवासि	३१
चीरप्रावरण	५२	वही	३१
त्रिनेत्र	५२	वही	३१
पौरव	५२	मुंजाद्रि	३१

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वृहत्संहिता में इस अध्याय के अन्त में पांचाल, मगध, कलिंग, अवन्ति, आनर्त, सिन्धु-सौवीर, हारहूर, मद्र और कुणिन्द का उल्लेख (वृ० सं० १४।३२-३३) मिलता है। इस प्रकार स्पष्ट है कि मार्कण्डेय पुराण (अ० ५५ या ५८) के कूर्म संस्थान और वृ०सं० में कितनी समानता है। परन्तु वृ०सं० में पश्चिम दिशा का वर्णन करते हुए एक पंक्ति मिलती है—

निर्मर्यादा म्लेच्छा ये पश्चिमदिक् स्थितास्ते ॥ वृ० सं० १४।२१

यह पंक्ति मार्कण्डेय पु० में नहीं है। इसलिए हम यह नहीं कह सकते कि मार्कण्डेय पु० ने वृहत्संहिता से कूर्म विभाग की सामग्री ली। ये पश्चिम दिशा में 'निर्मर्यादा म्लेच्छा' सिन्ध के नास्तिक म्लेच्छ (सैन्धवा म्लेच्छा नास्तिका यवनास्तथा; गरुड़ पु० १।५५।१५) अथवा सिन्ध में बसे हुए विजेता अरब ही थे। वृ० सं० (४६-७६) में नास्तिकों का उल्लेख है। अतः वृहत्संहिता ने ही ईसा की आठवी शताब्दी के मध्य में यह जनपद तालिका मार्कण्डेय पुराण से अथवा किसी अन्य ज्योतिष के ग्रन्थ से सामग्री ली और उसी से मार्कण्डेय पुराण ने भी यही सामग्री ली। ऊपर के दिग्भागों से स्पष्ट है कि वृहत्संहिता दिशाओं का वर्णन करती है और मार्कण्डेय पु० में जनपदों की स्थिति कूर्म के अंगों—मुख भाग, पाद, पुच्छ आदि—में बतायी गई है।

मध्य या मध्यदेश में स्थित प्रदेश

भद्रारि (वृ० सं० १४-२)—यह आगे उल्लिखित भद्र से भिन्न जनपद है। भद्र जनपद को पूर्व देश में स्थित कहा गया है (वृ० सं० १४।९)। दक्षिण में भी भद्र नाम का एक जनपद था (वृ० सं० १४-१६)। पुराणों (वायु १।४५।१२०) में उल्लिखित 'आलिभद्र', आनिमद्र, आनिभद्र या आलिभद्र (जा० ऐ० मे० इ०, पृ० २६) को ही यहाँ भद्रारि लिखा गया है। यहां इन्हें उदीच्य के किरातों से सम्बन्धित बताया गया है।

मेद (बंबई सं० के मार्कण्डेय पुराण ५५।६)—में वेदिमद्रारि और कलकत्ता सं० (५८।६) में वेदमन्त्र का पाठ है जो शुद्ध नहीं है। मेद नामक देश भी अज्ञात ही है। स्कन्द पुराण की कुमारिका खंड देश तालिका में वेदसंज्ञ नामक देश का उल्लेख है। इसकी भी स्थिति निश्चित नहीं है।

मांडव्य (वृ० सं० १४-२)—मध्यदेश के अतिरिक्त उत्तर पश्चिम (वृ० सं० १४-२२) और उत्तर (वृ० सं० १४-२७) में भी माण्डव्य नामक देश स्थित थे।

शाल्व (वृ० सं० १४-२)—यह मध्य देश का प्रसिद्ध जनपद था जिसका

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वृहत्संहिता में कई जगहों (वृ० सं० ५-७६, १६-२१, १७।१३,१८) पर उल्लेख हुआ है। डे (जा०डि० पृ० १७५) के अनुसार साल्व मार्तिकावत भी कहलाता था। महाभारत (विराटपर्व १।१२) में इसे कुरुक्षेत्र के निकट स्थित बताया गया है। यह सावित्री के श्वसुर और सत्यवान के पिता का राज्य था। मार्तिकावत के राजा साल्व ने द्वारावती पर आक्रमण किया था। इस देश में अलवर तथा जोधपुर-जयपुर के भी कुछ भाग सम्मिलित थे। राजा साल्व की राजधानी, साल्वपुर, आधुनिक अलवर था जिसे शोभनगर भी कहते थे।

उज्जिहान (वृ० सं० १४-२)—इसकी पहचान रामायण (अयोध्या कां० ७१-१२) में उल्लिखित उज्जिहाना नगरी (वर्तमान उझानी, जिला बदायूं, उ० प्र०) के आसपास के क्षेत्र से की जा सकती है।

धर्मारण्य—गया के निकट वन को धर्मारण्य कहते थे।

संख्यात (संख्या)—अज्ञात है।

मरु, वत्स, यामुन, सारस्वत, मत्स्य, माध्यमिक (महाभारत), शक, माथुर, शूरसेन, पांचाल, कुरु, औदुम्बर और गजाह्वय (हस्तिनापुर) प्रसिद्ध और परिचित देश हैं (पीछे देखिए)।

नीप, संख्यात, घोष, उपज्योतिष (ज्योतिषिका) गौरग्रीव, और कंक अज्ञात हैं।

गुड—मध्य देश में स्थित गुड देश गौड देश ही है जिसमें श्रावस्ती स्थित थी (श्रावस्ती गौड देशे, मत्स्य पु० ३०-१२; कूर्म, १।२०।१९; शावस्ती गौड़ देशे, लिंग ६५-३४)। श्रावस्ती गोंडा-बहरायच सीमा पर बलरामपुर के निकटस्थ सहेत-महेत है। अतः गुड या गौड देश आधुनिक गोंडा प्रान्त और इसके आसपास का क्षेत्र था।

अश्वत्थ—मार्क० पु० में अश्मक पाठ है जिसे वृहत्संहिता में उत्तर पश्चिम में स्थित बताया गया है (वृ० सं० १४-२२)। मध्य देश में स्थित अश्वत्थ या अश्मक अज्ञात है।

उद्देहिक—मार्क० पु० में पाठ वैदेहक या विदेह (उत्तरी बिहार में तिरहुत) है। वृ० सं० में उद्देहिक पाठ है। मौर्य साम्राज्य के पतन और पुष्यमित्र शुंग के बाद बहुत से राजतन्त्र और गणतन्त्र राज्यों का अस्तित्व उनके सिक्कों से ज्ञात होता है। उद्देहिकों के भी सिक्के मिले हैं। अलबरूनी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इनके देश को बजन के निकट कनौज से ११२ मील दक्षिण-पश्चिम में स्थित बताता है।

साकेत—मार्क० पु० में पाठ संकेत है। अतः सुप्रसिद्ध साकेत ही शुद्ध पाठ है। यह कोसल में अयोध्या को ही साकेत कहते थे। टॉलमी इसे 'सागेद' बताते हैं। पाली बौद्ध साहित्य से ज्ञात होता है कि साकेत और श्रावस्ती के बीच बहुत आना जाना होता था। इसकी पहचान उन्नाव जिले के खंडहर—संचानकोट—से भी की गई है। गुप्त युग का यह प्रसिद्ध कोसल राज्य ही था।

कुरु—मार्क० पु० में 'मारुत' पाठ है। इसका शुद्ध पाठ कुरु ही है जो मध्य देश का प्रसिद्ध राज्य था।

कंक—इसकी पहचान कनखल (सहारनपुर प्रान्त) के आस पास के भूखंड से की जा सकती है। यहीं दक्ष ने यज्ञ की थी। यही दक्ष का यज्ञदेश भी कहलाता था जो गंगाद्वार (हरिद्वार) के निकट स्थित था (कूर्म १।१५।४७)। यही अपराजितपृच्छा (३८-५) का दक्षराज्य भी है जिसमें साढ़े सात लाख ग्राम थे।

कालकोटि—कनखल की पहाड़ियों के निकट ही कालकूट पहाड़ भी था (महाभारत, पीछे देखिए)। अतः यह राज्य भी देहरादून में कालसी के आस पास स्थित था।

कुकुर—मार्क० पु० में पाषण्ड पाठ है। गौतमीपुत्र के राज्य में भी कुकुर राज्य सम्मिलित था। यहां के लोग बौद्ध या जैन थे। इसीलिए इसे पाषण्ड भी कहा गया है। यह अरावली पहाड़ के पास ही स्थित था।

पारियात्र-निवासी—पारियात्र को मध्य देश की दक्षिणी सीमा माना गया है (सौन्दरनन्द २।६२)। यह प्रसिद्ध कुलपर्वत था। यदि मार्क० पु० का पाठ "पाषण्डाः पारियात्रनिवासिनः" एक ही देश का परिचायक है तो हम कुकुरों को पारियात्र पर स्थित मान सकते हैं।

कापिष्ठल—मार्क० पु० में कापिंजल पाठ है। यह अज्ञात है। अतः कापिष्ठल पाठ ही ठीक है। अल्बरूनी (अ० इं०, १, पृ० २०६) ने इसे कवितल कहा है और इसकी पहचान कैथल (कर्नाल प्रान्त, हरियाना) से की गई है।

पूर्व दिशा या कूर्म-मुख भाग में स्थित देश

वृहत्संहिता में अंजन, वृषभध्वज (मार्क०, वृषध्वज), पद्म और माल्यवान् को पर्वत बताया गया है (पूर्वस्यामंजनवृषभध्वजपद्ममाल्यवद्गिरयः) और

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पूर्व में इन पर्वतों पर स्थित इन्हीं नाम के जनपद थे। काव्यमीमांसा में पूर्व के पर्वतों या जनपदों में इनका उल्लेख नहीं है। इनकी स्थिति अज्ञात ही है। ब्रह्मांड पुराण में माल्यवान् को अमरकंटक का एक भाग कहा गया है (ब्रह्मांड ३।१३।४-१०)। अतः माल्यवत नामक पहाड़ी देश मेकल जनपद के पड़ोस में ही स्थित रहा होगा। व्याघ्रमुख, शूर्पकर्ण, कर्वट, चन्द्रपुर, अश्ववदन (=अश्वमुख ?), दन्तुरक और एकपद अज्ञात हैं। महाभारत में उल्लिखित एकपाद को काठियावाड़ में स्थित माना गया है (मोतीचन्द्र)। सुह्म (या राढ), मगध, मिथिल, समतट, उड्र, प्राग्ज्योतिष-लौहित्य, गौड (बंगाल का मुर्शिदाबाद प्रान्त), पौण्ड्र (पुंड्रवर्धन), उत्कल, काशी, मेकल, ताम्रलिप्त, वर्धमान और कोसल, प्रसिद्ध देश हैं। अम्बष्ठ, खस और शिबि परिचित प्रदेश होते हुए भी पूर्व में अज्ञात हैं।

वर्धमान—इसे अभिलेखों में वर्धमान भुक्ति कहा गया है। यह आधुनिक बर्दवान है।

कूर्म के दक्षिण-पाद या दक्षिणपूर्व में स्थित देश

इस क्षेत्र में स्थित कोसल, कलिंग, बंग, अंग, विदर्भ, वत्स, (मत्स्य) अन्ध्र, चेदि, त्रिपुरी (त्रैपुर), दशार्ण, निषाद (मार्क० निषध), किष्किन्धा, पुरिक, शबर, और विन्ध्य देश परिचित प्रदेश हैं।

उपवंग (वंग का कोई भाग) जठर, ऊर्ध्वकण्ठ (ऊर्द्धकर्ण), श्मश्रुधर, व्यालग्रीव, महाग्रीव, कण्टकस्थल और पर्ण अज्ञात हैं।

वृहत्संहिता के अनुसार वृष, नारिकेल और चर्म द्वीप (मार्क०, धर्मद्वीप) द्वीप थे। मंजुश्रीमूल कल्प (३१।३६-३७) में भी इनका उल्लेख मिलता है—

> कर्मरंगाख्य द्वीपेषु नाडिकेसरमुद्भवे ॥
> द्वीपवारुषके चैव नग्नवालिसमुद्भवे ।
> यवद्वीपिषु सत्वेषु तदन्य द्वीप समुद्भवा ॥

वृष (वृ० सं० १४-९) द्वीप—यह मंजुश्रीमूलकल्प का वारुषक द्वीप है।

नारिकेल (वृ० सं० १४-९) द्वीप—मजुश्रीमूलकल्प का नाडिकेसर पाठ अशुद्ध है। इसके स्थान पर नारिकेल (नाडिकेर) समुद्भवे (रमुद्भवे के स्थान पर) शुद्ध है। योग वसिष्ठ (३।३६।२९) भी इसी क्षेत्र में नालिकेर का उल्लेख करता है।

चर्मद्वीप (धर्मद्वीप पाठान्तर) का ही अन्य पाठ कर्मरंग द्वीप मंजुश्रीमूल कल्प में है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नग्न (बृ० सं० १४-१०) ही मंजुश्रीमूलकल्प का नग्नद्वीप (निकोबार) है।

शौलिक (बृ० सं० १४-८)—यह उत्तर पश्चिम का जनपद था (बृ० सं० १४-२३)। मार्कंडेय पु० में इसके स्थान पर मूषिक पाठ है। मूषिक की पहचान हैदराबाद-दक्षिण में मूसी नदी की घाटी से की गई है।

दक्षिण देश (कूर्म की कुक्षि में स्थित देश)

लंका, तालिकट, महेंद्र, मलय, दर्दुर, गिरिनगर, भरुकच्छ, वनवासि, कोंकण, आभीर, वेणावर्त्तक (वेण्यातट), आकर (मार्क०, आकरिणो जनाः), दशपुर (दासपुर), अवन्ति, तुंबवन, केरल, कर्णाट, महाराष्ट्र (मार्क०), महाटवि (महाटवी), चित्रकूट, चोल, कोल्लगिरि, नासिक्य, कावेर (कावेरी तट), ऋष्यमूक, कृष्ण (कृष्णा द्वीप—कृष्णा नदी की घाटी), वेल्लूर (एलोरा), कांची, त्रिलंग (तिलंग=तेलिगांना), मरुचीपट्टन (मुजीरिस), सिंहल, दंडकावन, कच्छ और ताम्रपर्णी दक्षिण के परिचित देश हैं।

कर्कोटक वन (मार्क०), कालाजिन, सौरिकीर्ण, मालिन्द्य, कंक, टंकण, शिषिक, फणिकार, क्रौंचद्वीप, जटाधर, पिशिक, कार्मणेयक, चेर्य, आर्यक, बलदेव पट्टन, तिमिंगलाशन, भद्र और तापसाश्रम की स्थितियाँ अज्ञात हैं। क्रौंच द्वीप की पहचान वनवासि देश से की गई है (पार्जिटर, मार्कंडेय पु०, अं०, पृ० ३६४)। परन्तु वनवासी का उल्लेख अलग से इसी लिस्ट में मिलता है।

'वैदूर्य शंखमुक्ताऽत्रिवारिचरधर्मपट्टनद्वीपाः (बृ० सं० १४-१४ क) के स्थान पर मार्कंडेय पु० (५५-२४ क) में 'शंखशुक्त्यादिवैदूर्यशैलप्रान्तचराश्चये' पाठ मिलता है। इन क्षेत्रों की भी पहचान संदेह युक्त है। वैदूर्य तो दक्षिण का बीडर प्रतीत होता है। शंख-मुक्ता का प्रदेश पांड्य देश था (किष्किंधा कांड) जहाँ ताम्रपर्णी नदी की घाटी में मुक्ता आदि मिलते थे। परन्तु ताम्रपणी का उल्लेख (बृ० सं० १४-१६; मार्क० ५५-२८) हुआ है। अतः यह पहचान भी संदिग्ध ही है। बृहत्कथा-मंजरी में शंख द्वीप और मुक्ता द्वीप के उल्लेख हैं। वैद्युत पर्वत दक्षिण समुद्र में लंका के निकट सूर्यवान पर्वत के दक्षिण स्थित था (किष्किंधा काण्ड)।

कूर्म के दक्षिण, बाह्यपाद (दक्षिण पश्चिम) में स्थित देश

पह्लव, काम्बोज, सिंधु-सौवीर, आनर्त, यवन, पारशव (=पारसीक),

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शूद्र, अम्बष्ठ, बर्बर, किरात, आभीर, रैवतक, सुराष्ट्र और द्रविड (वृ० सं०) प्रसिद्ध देश हैं। वडवामुख, कपिल, नारीमुख, फेणगिरि, कर्णप्रावेय, क्रव्याद, चंचूक (मार्क० धूर्त्तक) और हेमगिरि की स्थिति अज्ञात है। महार्णव तो पश्चिम सागर ही है। बृहत्संहिता (१६-६) में महार्णवद्वीपों (समुद्र द्वीपों) का ही परिचायक महार्णव था जो भारत के दक्षिण में स्थित हैं।

आरव (वृ० सं० १४-१७)—यह अमरकोश का आर्व और अरब देश या अरब जाति का परिचायक है।

कूर्म के पुच्छ भाग (पश्चिम) में स्थित देश

मणिमान्, मेघवान् (मार्क०, मणि और मेघ), वनौघ, क्षुरार्पण (मार्क०, क्षराद्रि), खंजन (मार्क०), शान्तिक, प्रशस्ताद्रि (विप्रशस्तक, मार्क०), तारक्षिति (तारक्षुर, मार्क०), जृन्ग या जुंग (अंगतक), वैश्य (वेश्म, मार्क०), कनक, शर्कर (मार्क०) ओर शाल्म (मार्क०) अज्ञात हैं।

अपरान्तक, शक, हैहय (माहिष्मती के आसपास का देश), वोक्काण (वखान), पंचनद, रमठ, पारत (पारद) प्रसिद्ध देश हैं जिनका उल्लेख पीछे हो चुका है।

पश्चिम में स्थित म्लेच्छों की पहचान ताजिकों या अरबों से की जानी चाहिये जो सिन्ध में जम गए थे।

मार्कंडेय पुराण में गुरुस्वर, फाल्गुनक, वेणुमती-तट देश, फल्गुलुका, घोर, गुरुह, कल, एकेक्षण, वाजिकेश, दीर्घग्रीव, चूलिक और अश्वकेश कूर्म के पुच्छ भाग में स्थित बताये गये हैं। परन्तु बृहत्संहिता में ये देश पश्मिोत्तर दिशा में स्थित कहे गए हैं।

कूर्म के दूसरे वाम पाद या पश्मिोत्तर दिशा में स्थित देश

मांडव्य—वृ० सं० में मांडव्य का कई स्थानों पर उल्लेख है। इसे मध्य देश (वृ० सं० १४।२), उत्तर पश्चिम (१४।२७) और उत्तर (१४-२७) में स्थित बताया गया है। अतः इसकी ठीक-ठीक पहचान कठिन है। इसकी पहचान राजतरंगिणी (३।४८३, ५।८९, ३०७; ८।४१, ९७०, १००५ आदि) के मडव राज्य से हो सकती है।

तुषार—यह तुखारिस्तान है जो बल्ख और बदख्शां सहित आक्सस (चक्षु) नदी की ऊपरी घाटी में स्थित था।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अश्वक (मार्क०) या **अश्मक** (वृ० सं०)—उत्तर पश्चिम का अश्मक या अश्मक वही देश था जहाँ असकेनियन लोग रहते थे और जो सुवास्तु तथा गौरी नदियों की घाटी में स्थित था।

कुलूत—यह कांगड़ा जिले की कुल्लू-घाटी है।

हलड (लहड), स्त्री राज्य, नृसिहवन, स्वस्थ, फल्गुलुका, गुलुहा, मरु-कुच्छ, चर्म रंग, एक विलोचन, शूलिक, दीर्घ ग्रीव और अस्यकेश (या अश्व-केश) अज्ञात हैं।

लहड—वृ० सं० (काशी सं० १३-२२) में पाठ हलड है। परन्तु इसके लाहौर संस्करण में लहड है जिसकी पहचान काश्मीर और दर्दिस्तान के बीच स्थित सीमावर्ती क्षेत्र से की गई है (जा०डि०, पृ० ११२)। यह लहंदा भाषा का क्षेत्र था।

वनखस्थ (वृ० सं० १४-२२)—यह अशुद्ध पाठ मालूम होता है। राज-तरंगिणी (९-१९२९) में उल्लिखित वनप्रस्थ स्थान ही शुद्ध पाठ है।

स्त्री राज्य—यह प्रसिद्ध राज्य है। परन्तु इसकी स्थिति निश्चित नहीं है। इसकी पहचान ब्रह्मपुर (=गढ़वाल-कमायूँ) के उत्तरी क्षेत्रों से की गई है। गरुड़ पु० (१।५५।१५) में स्त्रीराज्य को पश्चिम में स्थित बताया गया है। इसमें स्त्रियों का प्राधान्य था (राजतरंगिणी, ४।१७३-१७४)।

कूर्म की वामकुक्षि या उत्तर दिशा में स्थित देश

उत्तर दिशा में सबसे पहले 'कैलासो हिमवांश्चैव धनुष्मान्वसुमांस्तथा' (मार्क०) और वृ० सं० में उत्तरतः कैलासो हिमवान् वसुमान् गिरिधनु-ष्मांश्च अर्थात उत्तर में **कैलास** (कैलास रेंज या कैलास पर्वत श्रेणी है) और सम्पत्ति का घर (वसुमान्) तथा धनुष की तरह स्थिति **हिमालय श्रंखला** है। रामायण में भी उत्तर दिशा को हिमालय से सुशोभित कहा गया है। क्रौंच भी कैलास श्रेणी का वह भाग है जहाँ मानसरोवर स्थिति है। इसलिये कैलास-क्रौंच प्रदेश कैलास-मानसरोवर क्षेत्र है।

मेरु से पामीर क्षेत्र का ज्ञान होता है।

उत्तर-कुरु (वृ० सं० १४-२४)—यह पवित्र और प्रसिद्ध राज्य था, जो मेरु, कैलास, क्रौंच, श्रृंखला के उत्तर में स्थित था। इसकी ठीक-ठीक स्थिति निश्चित नहीं है। परन्तु मार्कंडेय पुराण में उल्लिखित कुरुबकाः (५५।४२) का आधुनिक कोरिया के नाम से तादात्म्य है। मध्य एशिया और कोरिया

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

में संस्कृत और बौद्ध सभ्यता तथा साहित्य का प्रभाव सुविदित है। यह स्त्री राज्य के निकट स्थित था (राजतरंगिणी ४।१७४)।

क्षुद्रमीन (क्षुद्रवीण) क्षुद्र लोग पंजाब के शुद्रक या आक्सीड्रकॉय ही थे। मीन या वीण अज्ञात है।

वसाति—यह भी पंजाब का एक गणराज्य था जिसको यूनानी इतिहासकारों ने 'ओस्सडी' कहा है।

भोगप्रस्थ—यह मेरठ प्रान्त (उ०प्र०) का आधुनिक बागपत है।

शरधान—यह मेरठ प्रान्त (उ०प्र०) का सरधना है।

कण्ठधान—संभवत: यह मुरादाबाद प्रान्त में आधुनिक कांठ के आसपास का प्रदेश था।

अम्बर—वृहत्संहिता में **अम्बर** (१४-२७) और मार्कंडेय पुराण (कलकत्ता सं०, ५८-४५ क) में अम्बाला मिलता है। मार्कंडेय पु० (बम्बई सं० ५५-४५) में अम्बष्ठ है। अत: पूर्वी पंजाब के आधुनिक (अम्बाला) नगर को अम्बर कहते थे। आगे चलकर इसी को अम्बाला कहने लगे। यही अम्बष्ठ जाति का मुख्य अधिष्ठान भी था। अत: अम्बष्ठ जाति त्रिगर्तों के समीप ही बसती थी। इसी निकट सम्पर्क के कारण महाभारत युद्ध में अम्बष्ठों और त्रिगर्तों को अर्जुन के विरुद्ध एक साथ लड़ते हुए पाते हैं।

केकय, यामुन, आर्जुनायन, आदर्श (=विनशन के आसपास का क्षेत्र), त्रिगर्त, दासेरक, वाटधान, तक्षशिल, पुष्कलावत, मद्रक, हूण (हारहूर या हलहूण), मालव, पौरव, गान्धार, राजन्य, यौधेय और दासमेय प्रसिद्ध और परिचित राज्य हैं जिनका वर्णन पीछे हो चुका है।

आग्नीध्र, अन्तर्द्वीप, तुरगानन (किन्नर), श्वमुख, केशधर, चिपिटनासिक, कैलावत, कच्छार, दण्ड, पिंगलक, कोहल, शीतक, मांडव्य, भूतपुर, यशोवति, हेमताल, खचरगव्य, श्यामाक और क्षेमधूर्त अज्ञात हैं।

श्यामाक की पहचान राजतरंगिणी (४-१५९) के क्रमुक-श्याम लोगों से हो सकती है जो क्रमु (कुर्रम) नदी की घाटी में बसे थे।

कूर्म के पूर्वोत्तर पाद (उत्तरपूर्व दिशा) में स्थित देश

मेरुक—मेरु या पामीर के आसपास का देश।

कीर—यह कांगड़ा प्रान्त (हिमाचल प्रदेश) है।

सौरिन्ध्र—यह पूर्वी पंजाब का सरहिन्द है।

ब्रह्मपुर—यह गढ़वाल-कुमायूँ क्षेत्र है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कुचिक—मध्य एशिया में मेरुक देश से आगे सीता नदी (यारकन्द—तरीम) की घाटी का कुचि प्रदेश जो बौद्ध धर्म और कला का एक प्रसिद्ध केन्द्र था।

काश्मीर, अभिसार, दार्व, दरद, डामर (काश्मीर के निकटस्थ जाति), तंगण, कुलूत, किरात, चीन, कौणिन्द (कुणिन्द), खस, पौरव और गान्धर्व उदीची (उदीच्य) के परिचित और प्रसिद्ध राज्य हैं।

डामर (वृ० सं० १४,३०)—मार्कंडेय पुराण (५५।५१) में इन्हें दामरक कहा गया है। यह दार्व देश के निकट (दार्व डामर) काश्मीर के उत्तर में पहाड़ी प्रदेश था जिसका राजतरंगिणी में विशेष उल्लेख मिलता है।

खसों का पर्वतीय प्रदेश भी इनके निकट ही स्थित था (डामराश्च कतिचित् खशिकाश्चाद्रिसंश्रयाः राजतरंगिणी ७।१३०३) सर आरियल स्टाइन डामर को एक सामन्त-वाचक शब्द मानते हैं (राजतरंगिणी, II, पृ० ३०४-३०८, नोट जी)। यह अमान्य है।

किन्नर राज्य (मार्क० ५५-४८)—वृहत्संहिता (१४-२९) में नष्ट राज्य का उल्लेख भ्रष्ट पाठ है। इसके स्थान पर मार्कंडेय पुराण में उल्लिखित किन्नर राज्य शुद्ध पाठ है। किन्नर राज्य ईशान कोण (पूर्वोत्तर) का प्रसिद्ध राज्य था जिसकी पहचान किन्नौर से की गई है।

मुंजाद्रि—यह वैदिक युग का मुजवन्त ही है। यह काश्मीर के दक्षिण स्थित था।

पशपाल, वनराष्ट्र, वनराज्य, भल्ल, पटोल, जटासुर, कुनट, घोष, एकचरण (=एक पाद), अनुविद्ध (अनवद्य), सूवर्णभू (स्वर्गभौम), वसुधन, दिविष्ट, चीरनिवासि (चीरप्रावरण), त्रिनेत्र (=ललाटाक्ष या लद्दाख का प्रान्त ?) अज्ञात हैं।

गान्धर्व देश अर्जुन की उत्तरी दिग्विजय में उल्लिखित हिमालय पर स्थित था।

इस प्रकार कूर्म विभाग वर्णन के अन्त में पांचाल, मगध, कलिंग, अवन्ति, आनर्त, सिन्धु-सौवीर, हारहूर, मद्र और कुणिन्द देशों का उल्लेख (वृ० सं० १४।३२-३३) किया गया है। वृहत्संहिता के इस अध्याय (१४) और मार्कंडेय के कूर्म संस्थान अध्याय (५५) में अधिकांशतः सुविदित देशों को ग्रह-नक्षत्रों की स्थिति के अनुसार स्थिति बताकर वर्णन किया गया है। बहुत से देशों के नाम—घोष (अहिर—घोसी), गौरग्रीव, कुकुर, वृषध्वज,

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

व्याघ्रमुख, कर्वट (कैवर्त=केवट), शूर्पकर्ण, अश्ववदन, दन्तुरक, पुरुषाद, ऊर्ध्वकण्ठ, श्मश्रुधर (दाढ़ी रखने वाले), व्यालग्रीव, महाग्रीव, निषाद, नग्न, पर्णशबर, वनवासि, फणिकार, जटाधर, वारिचर, तापसाश्रम, तिमिंगिलाशन, वडवामुख, नारीमुख, कर्णप्रावेय, शूद्र, बर्बर, किरात, क्रव्याद, एकविलोचन, दीर्घग्रीव, अश्वकेश, क्षुद्रमीन, तुरगानन, श्वमुख, केशधर, चिपिट नासिक, कण्ठधान, पिंगलक, श्यामाक, एकचरण, चीरप्रावरण और त्रिनेत्र आदि देशों या जातियों के नाम सोशल और कल्चरल एन्थ्रोपोलॉजी (सामाजिक एवं सांस्कृतिक नृशास्त्र) के अध्ययन का रोचक और महत्वपूर्ण विषय है। (दृष्टव्य—डा० डी० यन० मजूमदार—ट्राइब्स ऑफ़ इण्डिया; अवस्थी—यौधयों का इतिहास)।

पाठ्यग्रन्थ

इण्डियन ऐन्टीकिरी, जिल्द २२, १८९३, डा० फ्लीट, वृहत्संहिता की देश तालिका जाग्रफिकल एसेज—डा० बी० सी ला०।

बृहत्संहिता—वाराणसी—चौखम्बा संस्करण एवं लाहोर संस्करण।

मार्कंडेय पुराण—कलकत्ता (जीवानन्द संस्करण) एवं बम्बई संस्करण।

मार्कंडेय पुराण एक अध्ययन—डा० वासुदेवशरण अग्रवाल।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अध्याय १३

युअनच्वांग (ह्वेनसांग) का भारत वर्णन

भारतीय ब्राह्मणों और श्रमणों ने मध्य एशिया के बालुकार्णव में धर्म, साहित्य, कला और जीवन के उदार सिद्धान्तों का बीजारोपण किया। वे लहलहाते वृक्ष बन गये जिसमें चक्षु, भद्रा (यारकन्द), सीता (तरीम) और शैलोदा नदी के उसपार रेगिस्तान में भारतीयों के विचार फलीभूत हुए। विभिन्न जातियों और देशों ने बौद्ध धर्म स्वीकार कर लिया था। मध्य एशिया के देशों से ही बुद्ध-ज्योति चीन में भी जली और धीरे-धीरे चीनियों के मन में भी बौद्ध धर्म की चाह जगी। वे चीन में ही बौद्ध धर्म के उपदेशों और बौद्ध साहित्य के अध्ययन से सन्तुष्ट नहीं रह सके। वे बुद्ध-भूमि भारत में धर्म और साहित्य की जिज्ञासा लेकर बुद्धामृत पीने की अदम्य तृष्णा से असीम कठिनाइयों को सहते हुए आये। उन्होंने अध्ययन किया और घूमते तथा देखते-भालते रहे। जो कुछ भी उन्होंने देखा-भाला उसका वर्णन किया। जब भारत का साहित्य भ्रान्त मदान्धों की आग में घास की तरह जलकर खाक हो गया, इन चीनी विद्वानों के विवरण अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं।

फ़ाहियान-यात्रा—मध्य एशिया से होते हुए फ़ाहियान ने हैमवत (मेरु, कैलास, क्रौंच, हिमवान) को पार कर उत्तरी भारत में प्रवेश किया। तो-ली (दरद) होते हुए वह **सिन्-तो** (सिन्धु नद) पार करते हुए **ओ-चांग** (उद्यान) देश में आया। इसके निकट ही न-किये (नग्राक=नगरहार, आधुनिक जलालाबाद) स्थित था। दक्षिण में वह **सु-ह-तो** (सुवास्तु=स्वात घाटी) में आया। इससे पूर्व की ओर चलता हुआ वह किन-तो-वै (गान्धार) से आया। किन-तो-वै स्पष्टतः गन्-ध-र्व (गन्धर्व) का चीनी रूप है। यहाँ से पूर्व को चलते हुए सात दिनों के बाद वह **त्चु-श-सि-लो** (तक्षशिल) में आया। यहाँ से दक्षिण चलकर वह फो-लौ-श (पुरुषपुर) या पेशावर में आया। इसके बाद वह बर्फीली पहाड़ियों को पार कर लो-ई (लोह या रोही) जाति के देश में होते हुए पो-न (वर्णु=बन्नू) आया। इसके आगे

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चलते हुए सिन्ध पार कर वह पि-च देश में आया। संभवतः यह पंचनद देश था।

मध्य देश में म-तिओ-लो (मथुरा), संग-क-शि (सांकाश्य=संकिसा, फरुखाबाद प्रान्त), कि-जौ-इ (कनौज), हो-ली (हलदोय या हरदोई) का जंगल और श-ची (संचान कोट, उन्नाव में बांगरमऊ के निकट) होता हुआ वह क्यु-स-लो (कोसल) के प्रमुख नगर शे-वेई (श्रावस्ती) में आया। वह श्रावस्ती से तो-वै (आधुनिक तौहिलवा—नैपाल की तराई में—प्राचीन कपिलवस्तु) में आया। यहाँ से न-पि-क होता हुआ वह कनकमुनि बुद्ध के जन्म स्थान (सोधवती) को आया जो आधुनिक निगली सागर है तथा यह तौलिहवा (कपिलवस्तु) के सन्निकट ही है। तो-वै आधुनिक तौलिहवा ही है। इसी के निकट बन को कपिलवस्तु बन कहते हैं। तौलिहवा को ही कपिलवस्तु मानते हैं। यही क-वे-लो-वे (कपिलवस्तु) है जो शाक्यों की राजधानी थी। यहाँ से पाँच योजन चल कर वह लान-मो (रामग्राम) आया यहाँ से आगे वह **कुशीनगर** और लिच्छवि राज्य, (वैशाली), होता हुआ मगध में पा-लिन-फो (पाटलिपुत्र) में आया जहाँ गृध्रकूट पर्वत स्थित था। पाँच पहाड़ियों से घिरे राजगृह को भी उसने देखा था। गया, कुक्कुटपाद-गिरि काशी राज्य में पो-लो-नई (वाराणसी) और कौ-चांग-मी (कौशाम्बी) में भी वह गया था।

ता-क्सीन (दक्षिण) में उसने पर्वतीय गुफाओं का वर्णन किया है।

गंगा के मार्ग द्वारा वह त्चेन-पो (चम्पा) होता हुआ ताम्रलिप्ति राज्य में आया। यहाँ से वह जलयान द्वारा सिंहल द्वीप में आया जिसके चारों ओर अन्य द्वीप थे। उनमें मुख्यतः रत्न होते थे। एक प्रदेश में मणि मिलती थी। रत्नों के कारण ही इसे **रत्नद्वीप** भी कहते थे। वृहत्संहिता और मार्कण्डेय पुराण में, मणि देश का उल्लेख है। सिंहल व्यापारियों का प्रिय देश था। फ़ाहियान सिंहल में दो वर्ष रहने के बाद एक व्यापारी जहाज पर तूफानों और संकटों को सहता हुआ **यो-पो-ति** (यव द्वीप) पहुँचा। व्यापारी उसके विरुद्ध थे। परन्तु भाग्यवश वह बच गया और किसी तरह अपने ग्रन्थों और मूर्तियों के साथ चीन पहुँच सका। इस प्रकार फाहियान की यात्रा से भारत के बौद्ध क्षेत्रों और भारत का पड़ोसी देशों तथा द्वीपों के साथ सम्बन्धों पर महत्वपूर्ण प्रकाश पड़ता है। इससे भारत और चीन के बीच प्रचलित

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सामुद्रिक मार्ग पर भी प्रकाश पड़ता है। उसने भारतवर्ष में १५ वर्ष तक, ३९९ ई० से ४१४ ई० तक, यात्रा की थी। उसने ३० राज्य देखे थे।

युअनच्वाङ्

हमें **युअनच्वांग की यात्रा का विवरण** उसके संस्मरणों तथा उसके शिष्यों—होइली और येनत्सांग—के पाश्चात्य देशों (चीन के पश्चिम में स्थित भारत) के वर्णन से ज्ञात होता है। इन ग्रन्थों को जुलियन ने फ्रेंच में अनुवाद किया था। अंग्रेजी में सैमुअल बील और वाटर्स के ग्रन्थ हैं। उसकी यात्रा और इसका विवरण पहले के सभी बौद्ध यात्रियों से महत्वपूर्ण हैं जो चीन से भारत आए थे।

सत्यतः युअनच्वांग एक नैष्ठिक साधक और जिज्ञासु खोज करने वाला (अनुसन्धानी) था। वह महान यात्री और भूगोलवेत्ता था—

"Hiouen Tsang was gifted with a real aptitude for this kind of investigation, and had he lived at a different time, and amongst ourselves, he would certainly have been classed among the most learned and illustrious geographers and travellers."

वह एक प्रतिष्ठित परिवार में केऔ-ची प्रान्त के त्चीन-लिएओ स्थान में पैदा हुआ था। उसके पिता होएई ने विद्या-प्रेम के कारण स्वयं ही अपने बच्चों को पढ़ाया और सबसे छोटे पुत्र ह्वेनसांग (या युअनच्वांग) की प्रतिभा को पहचान लिया। पिता भी उसके बौद्धिक और चारित्रिक गुणों के विकास में जुट पड़ा। इसका फल भी अच्छा ही मिला। अपने चरित्र और विद्वत्ता के कारण युअनच्वांग १३ वर्ष की अवस्था में बिना किसी परीक्षा के बौद्ध भिक्षु हो गया। उसकी अभिलाषा बौद्ध धर्म का प्रचार करना था। वह महायान-धर्म और इसके शास्त्र का महान पंडित बन गया। उसने अपने सम्राट से भारत जाने की आज्ञा मांगी। परन्तु राजाज्ञा न मिली। इस समय वह छब्बीस वर्ष का था। वह बिना आज्ञा के ही बुद्ध-भूमि की ओर चल पड़ा। उठ गया जिसका कदम वह कब रुका है। वह चुपके चुपके खिसक गया और रात में चलता था तथा दिन में छिपा पड़ा रहता था। इस तरह पुलिस और गुप्तचरों के चंगुलों से बचता हुआ मध्य एशिया 'बालू के समुद्र' (बालुकार्णव) की आंधियों और आपत्तियों को सहता हुआ वह भारत के उत्तर-पश्चिमी द्वार के निकट समरकन्द (चर्मखंड), बल्ख, और बामिआन आ पहुँचा। यहाँ

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

से हिन्दुकुश पार कर वह कपिश और लम्पाक (लमगन) होता हुआ नगरहार में आया। उद्यान, सिन्ध की ऊपरी घाटी, पंजाब, काश्मीर, जालन्धर, स्रुघ्न, मातीपुर (मंडावर, बिजनौर जिला), कान्यकुब्ज, अयोध्या, हयमुख, श्रावस्ती, कपिलवस्तु, कुशीनगर, मगध (पाटलिपुत्र), नालन्दा, गया, आदि मध्यदेश के प्रसिद्ध बौद्ध मठों और बिहारों में होता हुआ वह कामरूप, समतट और ताम्रलिप्ति तक पूर्व देश में गया था। दक्षिण भारत में सिंहल जाने के लिए कांचीपुर तक गया था। द्रविड़ देश के बाद कोंकण, मालवा आदि पश्चिमी भारत के राज्यों में आया। पुनः वह सिन्ध तट पर आ गया। इसके उद्गम स्थान के पास से होता हुआ वह पर्वतीय राज्य में आया। यहाँ से वह मगध में पुनः आया और नालन्दा में कुछ समय तक रहा। हर्ष के साथ कुछ समय तक रह कर वह चीन को लौट गया। कपिश होते हुए हिन्दुकुश पार कर स्थल मार्ग से ही वापस चला गया। ईसा की सातवीं शताब्दी का भारत ऐसे विद्वान् के विवरणों के लिए कृतज्ञ है। वह उस युग का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

"We must therefore conclude that in the seventh century after Christ, at the time when the Chinese pilgrim travelled over India, there were to be found in Sanskrit literature works which described more or less faithfully the history, statistics, and geography of the country; none of which have come down to us."

भारतीय भूगोल

यहाँ युअनच्वांग के भूगोल-वर्णन का पूर्ण विवेचन असम्भव है। कनिंघम महोदय का 'भारत का प्राचीन भूगोल' (Ancient Geography of India) युअनच्वांग के विवरणों और उनकी खोजों पर आधारित इस विषय का प्रामाणिक ग्रन्थ है। युअनच्वांग का भारत-वर्णन भारत के संस्कृत ग्रन्थों और अपनी यात्राओं तथा जनश्रुति पर आधारित है। अल्बरूनी ने पुराणों और ज्योतिष ग्रन्थों का उपयोग किया था। परन्तु युअनच्वांग ने किन संस्कृत ग्रन्थों का प्रयोग किया था? इसका उत्तर आज विद्वानों के पास नहीं है। युअनच्वांग ने 'शास्त्रों' (वाटर्स, १, पृ० ३३,) और 'सूत्रों' से अपने विवरण लिए थे। परन्तु इनको खोजने का प्रयत्न नहीं किया गया है।

युअनच्वांग के अनुसार भारत में उस समय ७० राज्य थे (वाटर्स, I,

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पृ० १४०; बील, II पृ० १२९; कनिंघम, ऐ० जा०, पृ० ११, नोट २)। स्कन्द पुराण की कुमारिका खंड देश-तालिका में भारत के ७२ प्रदेशों का उल्लेख है; परन्तु इसमें ७५ देशों का वर्णन किया है। युअनच्वांग ने भी ८० या ८२ देशों का वर्णन किया है। संस्कृत साहित्य में अभी तक केवल कुमारिका खंड में दी हुई ७२ देशों की तालिका उपलब्ध है। अतः युअनच्वांग ने कुमारिकाखंड के अध्ययन और अपने अनुभव के आधार पर देश तालिका दी है। **अपराजित पृच्छा** (सूत्र ३८) में भी भारतक्षेत्र के लगभग ३५ देशों और उनकी ग्राम संख्या का वर्णन किया गया है। यह देश-सूची अधूरी है और कुमारिकाखंड की देशतालिका (प्रा० भा० भौ० स्वरूप, पृ० १२३-१३४) पर आधारित है। स्कन्द पुराण के अतिरिक्त संस्कृत बौद्ध साहित्य—महावस्तु, ललितविस्तर, दिव्यावदान आदि का भी युअनच्वांग के भूगोल पर यथेष्ट प्रभाव पड़ा है। युअनच्वांग द्वारा उल्लिखित देशों में लँपो (लम्पाक), गान्धार, उद्यान (उड्डियान), तक्षशिला, उरस, काश्मीर, कुलूत, शतद्रु, मथुरा, मातीपुर (माचीपुर), ब्रह्मपुर, कान्यकुब्ज, नैपाल, मगध, पुंड्र, कामरूप, समतट, ताम्रलिप्ति, उड्र, कलिंग, कोसल, अन्ध्र, सिंहल, कोंकण, महाराष्ट्र, भरुकच्छ, मालव, कच्छ, आनर्त्त (आनन्दपुर), सिन्ध, मूलस्थान, लांगल, पोलसी (पारसीक), सकुट (जगुड) ऐसे देश हैं जिनका उल्लेख मार्कण्डेय पु०, बृहत्संहिता और कुमारिकाखंड की जनपद तालिकाओं में मिलता है। कुछ नाम, यथा—श्रावस्ती, कपिलवस्तु, लन्-मो (रामग्राम), फेशिली (वैशाली), ऐसे हैं जो बौद्धधर्म के इतिहास में प्रसिद्ध हो गए थे और इसीलिए वह वहाँ गया था या इनके नाम उसने बौद्ध साहित्य के आधार पर जोड़ दिए। चीनी लिखावट और उच्चारण की कठिनाई के कारण विद्वानों को उनकी पहचान करने में कठिनाई होती है। उदाहरण के लिए पो-लु-लो की पहचान बोलोर अथवा आधुनिक बाल्ती या बाल्तिस्तान से की गई है। वास्तव में पो-लु-लो (पुष्कल) या पुष्कलावत ही है जो ओहिन्द और तक्षशिला के निकट स्थित था। परन्तु कनिंघम इसे बोलोर या बाल्तिस्तान ही मानते हैं जिसका उल्लेख भारत की जनपद-तालिकाओं में अप्राप्य है। युअनच्वांग की दूरी और दिशा के विषय में भूल हो सकती है। इतना निश्चित है कि उसने अपने देश-भ्रमण में भारत की देश-तालिकाओं को देखा था।

युअनच्वांग प्रत्येक देश के विस्तार—लम्बाई, चौड़ाई और क्षेत्रफल—का

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वर्णन करने के बाद उसके मुख्य नगर, आबादी, धर्मों, मन्दिरों तथा बौद्ध मठों और बिहारों के अतिरिक्त वहाँ की प्राकृतिक दशा, जलवायु और उत्पाद का भी उल्लेख करता है।

देश—इसका नाम-रूप

भारत के विभिन्न नामों का अध्ययन करने के बाद युअनच्वांग का विचार है कि भारतीयों द्वारा दिया गया इसका सत्य नाम इन्दु ही है। वह कहता है कि इसके १२०० वर्ष पूर्व भी देश का यही नाम था और हेरोडोटस ने भी इसी नाम का उल्लेख किया है। यह नाम भारत का चन्द्र के साथ सादृश्य पर आधारित है। चन्द्र-ज्योति की भाँति यहाँ के संतों और महात्माओं की जीवन-ज्योति विश्व को प्रकाश दिखाती रही है (बील, II, पृ० १२९ वाटर्स, I, पृ० १३८)। यह नाम 'शिन्तु' या सिन्धु (हिन्दु) था। वाटर्स (युअनच्वांग, I पृ० १३२) मानते हैं कि बौद्ध साहित्य में भारत के लिए जम्बूद्वीप का प्रयोग होता है और इसके भागों को आर्य देश और मध्य देश कहते थे। इतना सत्य है कि शिन्तु या इन्दु देश उस भूभाग का परिचायक हैं जो उत्तर में कपिश देश से लेकर दक्षिण में सिंहल तक तथा बंगाल की खाड़ी और अरब सागर के बीच स्थित है। चीनी साहित्य में इसका प्रयोग इसी क्षेत्र के लिए होता है (वाटर्स, I, पृ० १३७)। चीनी यात्रियों की भारत से चन्द्र की समानता देश के चन्द्राकार पर आधारित मालुम पड़ती है। कूर्म रूप भी पूर्ण चन्द्र के समान ही होता है।

चीनी यात्री ने भी भारत के **पंच-स्थल-विभाग** परम्परा को मान कर इसे 'फाइव इन्डीज़' कहा हैं। ये देश-भाग ही हैं—मध्य, पूर्व देश, दक्षिण, पश्चिम और उत्तर।

कनिंघम (ऐ० जा० पृ० १०) के अनुसार—

I. **उत्तर भारत** में पंजाब (पूर्वी पंजाब, पश्चिमी पंजाब और हिमाचल तथा हरियाना प्रदेश), काश्मीर और आस पास के पहाड़ी राज्य, और पूर्वी अफगानिस्तान सम्मिलित थे।

II. **पश्चिम भारत** में सिन्ध, पश्चिमी राजस्थान, कच्छ, गुजरात, और पड़ोस का समुद्रतटीय क्षेत्र तथा नर्मदा नदी की निचली घाटी शामिल थी।

III. **मध्यदेश** में सम्पूर्ण गंगा नदी की घाटी जिसमें थानेश्वर से लेकर डेल्टा के शीर्ष भाग तक और हिमालय से नर्मदा तक क्षेत्र सम्मिलित थे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

IV. **पूर्वी भारत** में आसाम, बंगाल, गंगा का डेल्टा, संभलपुर, उड़ीसा और गंजाम सम्मिलित थे।

V. **दक्षिण भारत** में दक्षिण का सम्पूर्ण प्रायद्वीप जिसमें पश्चिम में नासिक तथा पूर्व गंजाम से लेकर कन्याकुमारी तक भू-भाग सम्मिलित थे।

उत्तरापथ

उत्तर पश्चिम में कापिश और उत्तर में हिमालय की पहाड़ियों से लेकर मध्य देश की पश्चिमी सीमा—सरस्वती नदी—तक का प्रदेश उत्तरापथ कहलाता था।

काश्रोफू (अफ़गानिस्तान)

Acc.No. 7599

कनिंघम के अनुसार सिन्ध नदी के उस पार की भारतीय भूमि अर्थात् सम्पूर्ण अफ़गानिस्तान को काओफू के नाम से जानते थे। इस क्षेत्र में १० राज्य सम्मिलित थे जिनमें **कपिश राज्य** प्रमुख था।

१. **कपिसेने**—कपिश या कपिसेन का विस्तार ४००० ली या लगभग ६६६ मील था। इसमें काफिरिस्तान तथा घोरबन्द और पंजशीर की घाटियाँ सम्मिलित थीं। यह पर्वतों से घिरा हुआ राज्य था। इनमें हिन्दुकुश की बर्फीली पहाड़ी थी। प्लिनी ने कपिसेने और इसकी राजधानी कपिश का उल्लेख किया था। टॉलमी के अनुसार यह परोपमिसडाय में काबुल से उत्तर स्थित था। पंजशीर नदी के दाहिने किनारे पर स्थित **कर्सन अथवा कर्तन या तेत्रगॉनिस** नामक नगर की पहचान बेग्राम से की गई है। यहाँ बहुत से **प्राचीन बौद्ध अवशिष्ट** प्राप्त हुए हैं।

२. **कोफेन (काबुल)**—काबुल के आसपास के क्षेत्र को कोफेन कहते थे जिसे पुराणों में में कुहक या कुह कहा गया है (मार्कं०, ५७।४१; ब्रह्म पु० २६।५०), जो कुहु (कुभा या काबुल) नदी की घाटी में स्थित था। इसे किपिन भी कहते थे। युअनच्वांग द्वारा उल्लिखित हु-फि-न की पहचान किपिन से की गई है।

३. **अर्कोसिया** (या गजनी)—चीनी यात्री के अनुसार सौ-कु-ट देश हुफिन या कोफेन के दक्षिण और फलन (बन्नू) के उत्तर पश्चिम में स्थित था। सौ-कु-ट या सकुट पुराणों का जगुड देश ही है (मार्कंडेय पु०, ५७। ४०; मत्स्य १२०।४६)। यह उदीच्य का देश था जहाँ सिन्धु नदी बहती थी। यह गजनी देश था जो गज, गर्जनक, गज्जण या गाजना देश कहलाता था। गज शैल पर स्थित होने के कारण गज लोगों का देश इस नाम से

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
विख्यात था। काव्यमीमांसा में इसे सहुड कहा गया है (प्रा० भाव० स्व०, पृ० ९५)।

४. **लम्पाक (लैन्-पो)**—युअनच्वांग द्वारा उल्लिखित लैम्पो पुराणों का लम्पाक (आधुनिक लमगन) देश ही है। इसे उदीच्य में स्थित बताया गया है (मत्स्य ११३।४३; विष्णुधर्मोत्तर १।९।९)। लम्पक या लम्पाक को मुरुण्ड भी कहते थे। इसके उत्तर में बर्फीली पहाड़ियाँ थीं। यह एक स्वतन्त्र राज्य था। परन्तु इस समय यह कपिसेने के आधीनस्थ देश था।

५. **न-किये-लो-हो (नगरहार)**—चीनी यात्री लमगन से नग्नहार (नगरहार, आधुनिक जलालाबाद) को आया। यह लम्पाक से दक्षिणपूर्व लगभग १७ मील दूर काबुल नदी के उस पार स्थित था। इसके पश्चिम में जंगदलक दर्रा और पूर्व में दर्रा खैबर तथा उत्तर में काबुल नदी और सफेद कोह दक्षिण में था। फ़ाहियान ने इसको न-किये (नगर) बताया था।

६. **किएन-तो-लो (गन्धार)**—चीनी विद्वानों के अनुसार यह सिन्ध नदी के पश्चिम में स्थित था जिसकी राजधानी पु-लु-ष-पुलो (पुरुषपुर, आधुनिक पेशावर) थी। फ़ाहियान ने इस राजधानी को फो-लु-ष (पुरुष या पोरुष) कहा है। युअनच्वांग **पु-से-किअ-लो-फ-ती** (पुष्कलावती) नगर में भी आया था जो काबुल नदी के उस पार स्थित था।

युअनच्वांग पो-लु-ष, वरुष या पलोढेरी नामक नगर में भी गया था। वह **उ-तो-किअ-हन्-च** था ओहिन्द और फिर आगे चलकर सो-लो-तु-लो (शलातूर, पाणिनि के जन्म स्थान) को भी गया था। यहीं पाणिनि मुनि ने शब्द-विद्या-शास्त्र की रचना की थी। शलातूर से उत्तर की ओर पर्वतों और नदी के उस पार वह उ-चंग-न (उद्यान) देश में पहुँचा।

७. **उ-चंग-न (उद्यान)**—यह देश सु-पो-फ-सु-तु (शुभवस्तु) या सुवास्तु (स्वात) नदी के किनारे स्थित था। कनिंघम कहते हैं कि उचंग तो उज्जान (उद्यान का पाली रूप) ही है। इसे उड्डियान (कालिका पु० १८।४२, स्कन्द पु० ७-१-१०७-८३) भी कहते थे। उच्छ्रियाण (स्कन्द, ७-१-१०७-८३) का ही चीनी रूप उचंगन मालुम पड़ता है। बृहत्संहिता (३२-१९; लाहोर सं०) में सुवास्तु देश का उल्लेख है। यह उपजाऊ प्रदेश था। इसमें पंजकोर, बिजावर, स्वात और बुनीर के आधुनिक प्रान्त सम्मिलित थे। फ़ाहियान ने उद्यान के दक्षिणी भाग सु-हो-तो (स्वात) का उल्लेख किया है। सुहोतो या स्वात को ही शिबिक भी माना गया है (ऐ० जा०, पृ० ६९)। उद्यान

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

की राजधानी मुंग-किए-ली (मुंगली या मंगल, आधुनिक मंगोर या मंगलोर) थी (ऐ०जा०, पृ० ६९)। सेंट मार्टिन ने इसकी पहचान स्वात नदी के किनारे स्थित मंगलपुर से की है। राजधानी से लगभग ४२ मील उत्तर पूर्व चलने के बाद वह थ-लि-लो या दरेल पहुँचा जहाँ दर्द लोग बसते है।

पो-लु-लो (बोलोर)—दरेल से लगभग ८३ मील तक पर्वत श्रेणी पर सिन्ध की ऊपरी घाटी में चलता हुआ वह पोलुलो या बोलोर पहुँचा जिसकी पहचान आधुनिक बाल्ती से की गई है।

फ-ल-न (बन्नू)—यह गजनी के दक्षिण पूर्व और लमगन के दक्षिण में स्थित था। इसका प्राचीन नाम वर्ण था।

ओ-पो-किएन (अपगण, अवगन या अफगानिस्तान)—यह फ़लन और गजनी के मध्य स्थित था। इसकी पहचान फ़ाहियान के लोई (लोह) अथवा रोह से की गई है। बृहत्संहिता (१६।३८) में अवगाण का उल्लेख है।

काश्मीर राज्य

इस समय चीनी यात्री के अनुसार, काश्मीर में काश्मीर के अतिरिक्त सिन्ध और चिनाब नदियों के बीच का सम्पूर्ण पहाड़ी क्षेत्र सम्मिलित था जो दक्षिण में साल्ट रेंज (नामक पहाड़ी) तक विस्तृत था। इसमें इस समय कई प्रान्त सम्मिलित थे जिन्हें युअनच्वांग ने देखा था। ये देश उरस (काश्मीर के पश्चिम), तक्षशिला और सिंहपुर (जो काश्मीर के दक्षिण-पश्चिम में स्थित) थे। पूंछ और रजौरी काश्मीर के दक्षिण में स्थित थे।

काश्मीर (केअ-शि-मि-लो)—यह प्राचीन देश था। इसका विस्तार ६००० ली था। यह चारों ओर पहाड़ियों से घिरा था। युअनच्वांग ने हुष्कर विहार में निवास किया था जो हुष्कपुर बार्मूला से २ मील दूर (आधुनिक उष्कूर गाँव) का बौद्ध विहार था। इसे कुषाण सम्राट हुष्क (हुविष्क) ने बनवाया था (राजतरंगिणी १।१६८-१६९)। राजतरंगिणी के अनुसार हुष्कपुर, जुष्कपुर और कनिष्कपुर (तीनों नगरों को कुषाण सम्राटों ने बसाया था) भी यहीं के नगर थे।

यहाँ की जलवायु शीत और लोग सुन्दर होते हैं। देश फल-फूलों से सम्पन्न था। श्री नगरी इसकी राजधानी थी। प्रवरसेनपुर भी मुख्य नगर था। यह हिमालय की कुक्षि में स्थित वितस्ता नदी की घाटी में स्थित विद्या, कला और दर्शन के लिए प्रसिद्ध प्राचीन देश था जिससे विद्वान और विचारक, ब्राह्मण और श्रमण, मध्य एशिया तक आते-जाते रहते थे। प्रसिद्ध बौद्ध विद्वान कुमारजीव ने यहीं शिक्षा पाई थी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उ-ल-शि (उरस)—राजतरंगिणी (५।२१६) में उरस और इसके निवासियों औरशों का उल्लेख मिलता है। मत्स्य पु० (१२०।४६) में औरसों के देश (उरस) को सिन्धु नदी की घाटी में स्थित कहा गया है। दरद, जगुड, गान्धार, और कुहु देश पास-पास ही सिन्धु नदी के किनारे स्थित थे। उरस की पहचान आधुनिक हजारा प्रान्त से की गई है।

त-च-शि-लो (तक्षशिला)—यह उत्तरापथ का प्रसिद्ध नगर व देश था। यह सिन्ध नदी पर स्थित ओहिन्द से तीन दिन की यात्रा की दूरी पर स्थित था। यह देश २००० ली या लगभग ३३३ मील की परिधि में विस्तृत था। इसके पश्चिम में सिन्धु नदी, उत्तर में उरस जनपद, पूर्व में झेलम या बेहत नदी और दक्षिण में सिंहपुर प्रान्त स्थित था। यहाँ विभिन्न सम्प्रदायों के लोग रहते थे।

सेन्ग-हो-पु-लो (सिंघपुर)—यह भूखंड तक्षशिला से दक्षिण पूर्व ७०० ली या लगभग ११७ मील दूर स्थित था। मार्टिन के अनुसार झेलम जिले का संगोही ही प्राचीन सिंघपुर का आधुनिक नाम था। परन्तु कनिंघम के अनुसार इसकी राजधानी केतास (झेलम जिला) थी। अर्जुन ने इसे जीता था (सभा पर्व २७-२०)। यह अभिसार और उरग (उरस) के निकट ही स्थित था। बृहत्संहिता (५-४२) के अनुसार यह दरदों और बर्बरों के निकट स्थित था। इसके पश्चिम में सिन्ध नदी बहती थी।

पुअन-नु-त्सो (पूंछ)—इसमें बहुत-सी पहाड़ियाँ और नदियाँ थीं। यह आधुनिक पूंछ राज्य है जो जम्मू-काश्मीर के निकट स्थित है।

राजपुर (हो-लो-शे-पु-लो)—पूंछ से चलकर चीनी यात्री हो-लो-शे-पु-लो में आया जिसकी पहचान राजपुर या रजौरी से की गई है (ऐ०जा०इ०, पृ० १०८-१०९; बील II, पृ० २००; वार्टस I, पृ० २८४)।

युअनच्वांग का मत है कि लम्पा से लेकर राजपुर तक भूखंड के निवासी देखने में सीधे और व्यवहार में उग्र थे। उनकी बोली भी गाँवों में बोली जाने वाली थी। वे भारत के प्रत्यन्त (सीमावर्ती) लोग थे।

चेह-क (टक्क) से मथुरा तक (वार्टस I अ०९)

राजपुर से दक्षिणपूर्व चलता हुआ युअनच्वांग चेह-क देश में पहुँचा। यह पश्चिम में सिन्धु नदी और पूर्व में पि-पो-शे (विपाश=व्यास) नदी के बीच स्थित था। इसका विस्तार १०००० ली से भी अधिक था। इस भूखंड में शाकल अत्यन्त प्राचीन नगर था जो राजपुर से लगभग १२० मील

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दक्षिण पश्चिम में स्थित था (कनिंघम)। यहाँ एक बौद्ध विहार था जहाँ हीनयान मानने वाले भिक्षु रहते थे। कनिंघम के अनुसार चेह-क (या सेकिअ) एक नगर का नाम था जिसकी पहजान असरूर से की गई है।

चीन-पुह-ती (चीन भुक्ति)—चेहक (टक्क) से पूर्व की ओर चलता हुआ यात्री चीन भुक्ति (चीन-पुह-ती) नामक देश में पहुँचा। चीन भुक्ति उस प्रान्त का परिचायक था जहाँ कनिष्क के राज्यकाल में चीनी राजकुमारों को बन्दी बनाने के बाद भारत में बसाया गया था।

त-मो-सु-फ-न (तमसावन; वार्टर्स, I पृ० २९४)—चीन भुक्ति से चलकर चीनी यात्री तमासुफन (तमसावन) में आया। यह बौद्ध धर्म का प्राचीन और प्रसिद्ध केन्द्र था।

शे-लन्-त-लो (जालन्धर)—तमसावन विहार से चलकर चीनी यात्री शेलन्तलो या जालन्धर देश में आया। इस देश का विस्तार पूर्व से पश्चिम में १००० ली या १६७ मील और उत्तर से दक्षिण तक ८०० ली या १३३ मील था। यहाँ धान्य (शलि) बहुत पैदा होता था और फल-फूल भी अधिक होते थे। जालन्धर ही इस देश की राजधानी थीं जो १२ या १३ ली (लगभग २ मील) परिधि में स्थित था। कुमारिका खंड के अनुसार ज़ालन्धर प्रदेश में ९ लाख ग्राम थे। इसे ही प्राचीन काल में त्रिगर्त जनपद कहते थे (जालन्धरा-स्त्रिगर्ता स्युः)। इस प्रदेश का जालन्धर नाम तो शिवभक्त जालन्धर दैत्य के नाम पर ही पड़ा (स्ट० स्क० पु०, पृ० ३५)।

कनिंघम के अनुसार उत्तर में स्थित चम्बा, पूर्व में स्थित मंडी और सुखेट तथा दक्षिण पूर्व में शतद्रु भी इसमें सम्मिलित थे।

चम्पा—यह आधुनिक चम्बा का पहाड़ी राज्य है जो रावी नदी के उद्गम और ऊपरी चिनाब की घाटी है। इसमें लाहुल और काष्टवार के बीच का भूखंड सम्मिलित था। यह काश्मीर के इतिहास से सम्बद्ध देश था।

कुलूत (वियू-लु-तो)—यह जालन्धर से ७०० ली या ११७ मील दूर उत्तर-पूर्व में स्थित था। यह आधुनिक कुलू और प्राचीन कुलूत राज्य है। इसके उत्तर पूर्व में लो-हु-लो (लाहुल) स्थित था।

मंडी—मंडी और सुखेट का एक ही राज्य था जो व्यास नदी के तट पर कांगड़ा के पूर्व और कूलू के पश्चिम स्थित था। संभवतः यह पुराणों और बृहत्संहिता में उल्लिखित माण्डव्य राज्य था।

शे-तो-तु-लो (शतद्रु)—बृहत्संहिता और पुराणों में भी शतद्रु नामक

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जनपद का उल्लेख मिलता है। यह शतद्रु या सतलज के किनारे का भूखंड था। कनिंघम (ऐ० जा०, पृ० १२२-१२३) ने इसकी राजधानी की पहचान सरहिन्द से की है।

ताकि-पंजाब

तेकिअ-ताकि—युअनच्वांग द्वारा उल्लिखित तेकिअ अथवा ताकि देश (मासूदी का ताकिन) में पंजाब का सम्पूर्ण मैदानी भाग सम्मिलित था। ईसा की ७वीं शताब्दी में ताकि देश और इसकी राजधानी दोनों का ही नाम था। यह शे-किअ-लो (शाकल या स्यालकोट) से दूर न था। महाभारत में शाकल देश को ही मद्र, आरट्ट, जार्तिक और बाहीक कहा गया है। राजतरंगिणी (५-१५०) में टक्क देश का उल्लेख है। अभिधान चिन्तामणि (४-२५) के अनुसार वाहीक देश (सिन्धु और व्यास नदियों के बीच स्थित देश) को ही टक्क देश कहते थे (वाहीकाष्टक्कनामानः)। टक्क देश की प्राचीन राजधानी शाकल या स्यालकोट थी। कनिंघम के अनुसार इसकी नई राजधानी ताकि या तक्कावर (आधुनिक तहोर) थी। राजशेखर (काव्यमीमांसा, ५१।६) के अनुसार टक्क देश के लोग अपभ्रंश-मिश्रित भाषा का प्रयोग करते थें।

कनिंघम के अनुसार इस राज्य में सिन्धु तथा व्यास के बीच का सम्पूर्ण मैदानी भाग सम्मिलित था जिसमें पहाड़ों की तराई से लेकर मुल्तान के नीचे तक शामिल था जहाँ पर पाँचों नदियों का संगम है। इसमें तीन राज्य सम्मिलित थे।

१—ताकि (टकी, तकी या ताकि) या उत्तरी और पश्चिमी भाग

२—शोरकोट या पूर्वी भाग और

३—मुल्तान या दक्षिणी भाग

ताकि—इसमें सिन्ध और व्यास नदी के बीच का मैदानी भाग सम्मिलित था जो मुलतान प्रान्त के उत्तर में है। इसमें सिन्ध-सागर द्वाब, और बारी द्वाब के उत्तरी भाग शामिल थे। इसी क्षेत्र में बहुत से प्रसिद्ध नगर थे, जिनमें सागल अति प्रसिद्ध था।

शोरकोट—शोरकोट की पहचान चनाब नदी के तट पर स्थित झंग से की गई है। यह विस्तृत राज्य था जिसकी पूर्वी सीमा सतलज, उत्तरी सीमा ताकि, दक्षिण में मुलतान और पश्चिम में सिन्धु नदी थी। शोरकोट क्षेत्र में

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ही प्राचीन शिबि राज्य (सिव्वॉय) सम्मिलित था। कुमारिका खंड में शिव देश को १० हजार ग्रामों का प्रदेश कहा गया है।

मुल्तान (मूलस्थान)—यह पंजाब का दक्षिणी भाग था जिसका घेरा ६६७ मील बताया गया है। मुल्तान ही इसकी राजधानी थी जिसे प्राचीन काल में मूलस्थान या शाम्बपुर भी कहते थे। कुमारिकाखंड के अनुसार मूलस्थान भारत का एक प्रदेश था जिसमें २५ हजार ग्राम सम्मिलित थे। यहाँ का सूर्य मन्दिर अत्यन्त प्रसिद्ध था।

पश्चिमी भारत

युअनच्वांग के अनुसार पश्चिमी भारत में तीन प्रसिद्ध राज्य थे—(१) सिन्ध, (२) गुर्जर और (३) बलभी। सिन्ध राज्य में पंजाब से लेकर समुद्र तक की सिन्धु घाटी सम्मिलित थी; और इसी में सिन्ध नदी का डेल्टा तथा कच्छ भी शामिल था। गुर्जर देश में पश्चिमी राजपूताना (मरुभूमि) तथा बलभी राज्य में गुजरात और पड़ोस का समुद्री तट सम्मिलित था।

सिन्ध (सिन्-तु)

चीनी यात्री के अनुसार इसका विस्तार ७००० ली था और इसकी राजधानी पि-शेन-पो-पुलो या विचवपुर थी। गेहूँ और ज्वार (जोंधरी) यहाँ की मुख्य उपज थी। सोना, चांदी और तांबा भी मिलता था। बैल, भेंड़, ऊँट, खच्चर आदि यहाँ के पशु थे। नमक कई तरह का मिलता था। कनिंघम के अनुसार ईसा की सातवीं शताब्दी में सिन्ध चार प्रदेशों में बँटा था—

ऊपरी सिन्ध, मध्य सिन्ध, निचला सिन्ध और कच्छ।

कुमारिका खंड में सिन्ध और अतिसिन्ध तथा कच्छ को भारत के ७२ प्रदेशों में अलग-अलग देश बताया गया है।

ऊपरी सिन्ध—ऊपरी सिन्ध और अतिसिन्ध एक ही हैं। अतिसिन्ध में १० हजार ग्राम थे। इस क्षेत्र में अलोर, रोरी (रोरुकपुर), महोर्त प्रसिद्ध नगर थे।

मध्य सिन्ध—इसका विस्तार २५०० ली या ४१७ मील था। इसमें आधुनिक हैदराबाद (सिन्ध) का उत्तरी भाग और सीवान प्रान्त सम्मिलित थे। इसकी राजधानी ओ-फन्-च (बंभर या ब्रह्मनाबाद-ब्रह्मवाह) थी।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

काव्यमीमांसा (९४।५) और कुमारिकाखंड के अनुसार ब्रह्मणवाह या **बंभण-वाहक** एक पृथक प्रदेश था जिसमें साढ़े तीन लाख ग्राम सम्मिलित थे।

निचला सिन्ध—पितसिला या लोअर सिन्ध का विस्तार ३००० ली या ५०० मील था। इसमें हैदराबाद से लेकर समुद्र तक का सम्पूर्ण डेल्टा भाग सम्मिलित था। डेल्टा के दोनों ओर—पूर्व तथा पश्चिम के—भी कुछ भाग सम्मिलित थे। सिकन्दर के समय पटल प्रसिद्ध स्थान था। उसने बर्के नामक नगर को सिन्धु-नदी के तट पर बसाया था। टॉलमी और पेरिप्लस के लेखक ने इसी क्षेत्र में बर्बरिकम और मीननगर को स्थित बताया है। पितसिल को ही कनिंघम पटल मानते हैं। सिन्ध नदी और समुद्र का संगम—सिन्ध सागर संगम—पवित्र क्षेत्र था जहाँ देवल ऋषि का आश्रम था (दृष्टव्य देवल स्मृति)। यही देवल के नाम से प्रसिद्ध नगर भी था। इसकी पहचान लार बन्दरगाह से की गई है जो सिन्ध की मुख्य धारा बघार के किनारे स्थित है।

कच्छ—सिन्ध राज्य का चौथा भाग कच्छ था। इसका विस्तार ५००० ली या ८३३ मील था। कुमारिकाखंड के अनुसार कच्छ मंडल में १४२२ ग्राम थे। यह महानिम्न भाग में स्थित होने के कारण कच्छ कहलाता था। ओ-तिएन-पो-चि-लो की समानता औदुम्बतीर या औदुम्बर से की गई है। प्रो० लासेन के अनुसार कच्छ के निवासी भी औदुम्बर कहलाते थे। इसकी राजधानी किय-ती-शि-फ-लो अथवा कच्छेश्वर या कनिंघम के अनुसार कोटी-श्वर कच्छ के पश्चिमी समुद्र तट पर प्रसिद्ध तीर्थ था जो (कोटेसर) सिन्ध नदी के कोरी नामक शाखा के तट पर स्थित है।

गुर्जर (क्यु-चे-लो)—क्युचेलो की पहचान गुर्जर देश से की गई है। यह वलभी से १८०० ली या ३०० मील उत्तर तथा उज्जैन से १८०० ली या ४६७ मील उत्तर पश्चिम में स्थित था। इसकी राजधानी पि-लो-मि-लो (भिनमाल या श्रीमाल) थी। यह गुर्जरात्र भी कहलाता था जिसमें ७० हजार ग्राम थे (स्क०पु०अ०, पृ० ४०)। पृथ्वीराजरासो (१०-१९-७, सतरिसहस धर गुज्जरनि) भी यही बताता है। यह दक्षिणी मारवाड़ था। अग्निपुराण (१३०-७) में भी गुर्जर देश का उल्लेख है। प्रभाकरवर्धन (गुर्जरप्रजागरः) ने गुर्जर देश को जीता था।

वलभी (फ-ल-पी)—ईसा की सातवीं शताब्दी में यह एक प्रसिद्ध राज्य था। वलभी मैत्रक वंशीय राजाओं की राजधानी थी जिसकी पहचान वल (वड़ नामक) नगर से की गई है जो भावनगर से १८ मील उत्तर-पश्चिम

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

में स्थित है। इसकी खुदाई से वलभी के प्राचीन अवशेष मिले हैं। आज कल उसे फिर वलभीपुर के नाम से पुकारते हैं। यह सौराष्ट्र की राजधानी थी जैसा कि संस्कृत साहित्य और अभिलेखों से सिद्ध होता है। युअनच्वांग के समय यहाँ ध्रुवपट (=ध्रुवसेन II) राज्य करता था। यह उत्तर में आबू पर्वत से लेकर दक्षिण में ताप्ती नदी तक (२८० मील) और पश्चिम में अरब सागर से लेकर पूर्व में अवन्ति की सीमा तक (४८० मील) फैला हुआ था (ऐ० हि० सौ०, पृ० २९२)। चीनी यात्री के अनुसार वलभी को उत्तरी लो-लो या उत्तरी लार (लाट) भी कहते थे। यहाँ एक विशाल संघाराम था।

सुराष्ट्र (सु-ल-च)—सुलच, सुरथ या सुराष्ट्र वलभी का अधीनस्थ राज्य था। इसकी राजधानी गिरिनगर (सोरथ नगर=सौराष्ट्र नगर) यु-चेन्-त (उज्जयंत) पर्वत के नीचे स्थित (आधुनिक जूनागढ़) थी।

भरुकच्छ (पो-लु-किय-चे-पो) प्रान्त का मुख्य नगर भरुकच्छ (भड़ोच) नर्मदा (नै-म-थो) नदी के मुहाने पर स्थित प्रसिद्ध बन्दरगाह था।

मध्यदेश

यह प्राचीन भारत का महत्वपूर्ण क्षेत्र और पवित्र देश (धर्म देश) था। चीनी यात्री के अनुसार मध्यदेश का विस्तार सतलज नदी से लेकर गंगा के डेल्टा के शीर्ष भाग (सिरे) तक और हिमालय से लेकर नर्मदा तथा महानदी तक था (ऐ०जा०, पृ० २७५-२७६)। सातवीं शताब्दी के ७० राज्यों में कम से कम ३७ राज्य मध्यदेश में स्थित थे। ये निम्नलिखित राज्य थे—

(१) स्थानेश्वर, (२) बैराट, (३) स्रुघ्न, (४) मंडावर, (५) ब्रह्मपुर, (६) गोविसन, (७) अहिच्छत्र, (८) पिलोसन, (९) संकिस (१०) मथुरा, (११) कनौज, (१२) अयुतो, (१३) हयमुख, (१४) प्रयाग, (१५) कौशाम्बी, (१६) कुसपुर, (१७) वैसाख, (१८) श्रावस्ती, (१९) कपिल, (२०) कुशीनगर, (२१) वाराणसी, (२२) योधपतिपुर, (२३) वैसाल, (२४) वृजि, (२५) नैपाल, (२६) मगध, (२७) हिरण्यपर्वत, (२८) चम्पा, (२९) कजंगल, (३०) पौंड्रवर्धन, (३१) जजहोति, (३२) माहेश्वरपुर, (३३) उजैन, (३४) मालवा, (३५) खेड (खेटक=केरा) (३६) आनन्दपुर (३७) वदरी या ईडर।

स-ता-नी-शि-फ-लो (स्थाण्वीश्वर)—**स्थाणु+ईश्वर=स्थाण्वेश्वर** या स्थानेश्वर श्रीकण्ठ देश की राजधानी थी जहाँ हर्ष के पूर्वज, पुष्यभूति आदि

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

राजा राज्य करते थे। कुमारिका खंड की देश तालिका में इसका नाम नहीं है। यह कुरु देश के समीप ही सरस्वती नदी के किनारे वर्तमान हरियाणा प्रदेश के कर्नाल प्रान्त में स्थित थानेश्वर था। शिव का प्रियस्थान यह राज्य स्थाणु-वन में स्थित था (स्क० पु० अ० पृ० ७०)। ७वीं शताब्दी में यह कान्यकुब्ज साम्राज्य के अधीन हो गया था। कनिंघम के अनुसार यह प्रदेश सतलज से गंगा नदी तक विस्तृत था। देवीभागवत पुराण (७।३०।६१) में स्थानेश्वर पीठ का उल्लेख है जहां देवी, भवानी का पवित्र स्थान था।

पृथूदक (पिहोआ)—यह कुरुक्षेत्र के निकट प्रसिद्ध तीर्थ स्थान था जिसे आजकल पिहोआ कहते हैं।

बैराट (पो-लि-ये-तो-लो)—युअनच्वांग द्वारा उल्लिखित पो-लि-ये-तो-लो या पारियात्र देश की राजधानी मथुरा से ५०० ली या लगभग ८४ मील दूर स्थित थी। यह शतद्रु राज्य से पश्चिम की ओर ८०० ली या १३४ मील दूर स्थित था। दूरी और दिशा को ध्यान में रखते हुए कनिंघम ने इसकी पहचान बैराट से की है जो प्राचीन मत्स्य देश की राजधानी थी। परन्तु हम पोलियेतोलो की पहचान पारियात्र-पर्वत से करेंगे जिसका उल्लेख एक जनपद—पारियात्रनिवासिनः—के रूप में (मार्कण्डेय पु० ५५-८) हुआ है। पारियात्र-जनपद भी मध्यदेश में स्थित था (मार्क० पु० ५५-८; वृ० सं० १४-४) अश्वघोष पारियात्र पर्वत को मध्य देश की दक्षिणी सीमा मानते हैं।

स्रुघ्न (सु-लु-कि-न्न)—स्थानेश्वर से उत्तर-पूर्व ४०० ली या लगभग ६७ मील चलने के बाद सुलुकिन्न या स्रुघ्न देश में आया। इस देश के पूर्व में गंगा नदी बहती थी; उत्तर में पहाड़ थे और यमुना (चेन-मुना) नदी भी इसकी सीमाओं से होकर बहती थी। इसकी राजधानी भी स्रुघ्न ही थी जिसके पूर्व में यमुना बहती थी। इसकी पहचान सुघ से की गई है जो जगाधरी (अम्बाला प्रान्त) से ३ मील पश्चिम में स्थित है। इसके आसपास चांदी के चौकोर पंच-मार्क सिक्के भी मिले हैं जिससे इसकी प्राचीनता सिद्ध होती है। यह मेरठ-सहारनपुर-अम्बाला के महामार्ग पर स्थित था।

मा-ती-पु-लो (मातीपुर)—स्रुघ्न से चलकर चीनी यात्री मातीपुर (आधुनिक मंडावर, जिला बिजनौर) में आया। ऐसा ज्ञात होता है कि गंगा के पश्चिम स्रुघ्न राज्य था और इसके पूर्व (बालावली के पूर्व) मातीपुर राज्य था। कुमारिका खंड के अनुसार माचीपुर या मातीपुर राज्य में ९ लाख ग्राम थे। इसके आधुनिक नाम, मंडावर से ज्ञात होता है कि यह

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मांडव्य राज्य था जिसे मध्य देश में भी स्थित बताया गया है। इसकी राजधानी मातृपुर (देवी भागवत, ९।३४।८६) एक तीर्थ था। इसे ही 'मातुः पुरं' (देवी भागवत ७।३८।५) भी कहा गया है जहाँ रेणुका देवी का स्थान था। संभवतः यहीं मांडव पीठ (देवी भागवत ७।३०।७२) भी था जहाँ मांडवी देवी प्रसिद्ध थी। इसी कारण इसके नाम मातृपुर, मातीपुर तथा मान्डव्यपुर या मंडावर प्रसिद्ध हो गये। यहाँ सातवीं शताब्दी में शूद्र राजा राज्य करता था।

मो-यु-लो (मायापुर)—मातीपुर राज्य के उत्तर-पश्चिम में मायापुर (हरिद्वार) स्थित है जिसे गंगा द्वार भी कहते हैं।

ब्रह्मपुर (पो-लो-कि-मो-पु-लो)—मंडावर से ३०० ली या ५० मील चलकर चीनी यात्री पोलोकिमोपुलो या ब्रह्मपुर में आया जिसकी पहचान गढवाल कमायूँ क्षेत्र से की गई है। कनिंघम के अनुसार ब्रह्मपुर की पहचान वैराटपट्टन या लखनपुर से की गई है जो इसकी प्राचीन राजधानी थी।

गोविषाण (कु-पि-संग-न)—यह देश चारों ओर झीलों और फल-फूलों से भरा हुआ था। अतः स्पष्ट है कि यह नैनीताल का काशीपुर क्षेत्र ही था जहाँ बहुत-सी प्राचीन मूर्तियाँ और अवशिष्ट प्राप्त हुए हैं। यहाँ के लोग सज्जन और सच्चरित्र थे। काशीपुर के पास उजैन नामक गाँव के निकट पुराना किला है। यहीं द्रोण-सागर भी प्रसिद्ध तीर्थ है। कनिंघम के अनुसार इस राज्य में काशीपुर, रामपुर और पीलीभीत सम्मिलित थे।

अहि-चि-त-लो (अहिछत्र)—गोविषाण से दक्षिण पूर्व की ओर चलकर चीनी यात्री अहिछत्र पहुँचा। अहिछत्र (रामनगर, बरेली प्रान्त में आंवला के निकट) पांचाल की राजधानी थी। यह एक राज्य (अहिछत्र राज्य, पृ० ८०-८१) था। इसका विस्तार ३००० ली या ५०० मील था जिसमें रुहेलखंड का पूर्वी भाग—पश्चिम में पीलीभीत से लेकर पूर्व में घाघरा के निकट खैराबाद (जिला सीतापुर) तक—सम्मिलित था।

पिलोशन (पि-लो-शन-न)—कनिंघम ने इसकी पहचान गंगा-तट पर स्थित सोरों (जिला एटा, उ० प्र०) से की है। इसके पास ही अतरंजी खेड़ा में प्राचीन पुरातात्विक अवशिष्ट प्राप्त हुए हैं। पहचान निश्चित नहीं है।

संकिश (सेंग-किअ-शे)—पिलोशन और कनौज के बीच संकिश स्थित था। यह काली (इक्षु) नदी के किनारे स्थित पांचाल जनपद का प्रसिद्ध

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नगर था। इक्षुमती के किनारे स्थित पवित्र सांकाश्या जनक के भाई कुस-
ध्वज की राजधानी थी (बालकांड ७०।३)। फाहियान भी संग-क-शि
(सांकस्य) आया था। यह प्रसिद्ध बौद्ध तीर्थ था। यहीं भगवान बुद्ध का
पृथ्वी पर हस्ति रूप में अवतरण हुआ था। इसीलिए यहाँ अशोकीय स्तम्भ
के शीर्ष पर हस्ति विराजमान है। इस समय संकिसा फरुखाबाद जिले में
स्थित है। यहीं एक ऊँचा टीला इसकी प्राचीनता का साक्षी है।

मो-तु-लो (मथुरा)—सातवीं शताब्दी में यह एक राज्य की राजधानी
थी। मोतुलो राज्य का विस्तार ७००० ली था। यह शूरसेन की राजधानी
थी। इस राज्य के पूर्व में जजहोति राज्य था और दक्षिण में मालवा था।

कान्यकुब्ज (क-नो-कू-शे)—यह गंगा तट पर स्थित सुदृढ़ राज्य था।
कनौज संकिश से ३३ मील दूर पश्चिमोत्तर में बसा था। यह उत्तरी भारत
का प्रमुख नगर था। यहाँ हर्षवर्धन राज्य करते थे। कुमारिका खंड के
अनुसार कान्यकुब्ज देश में ३६ लाख ग्राम थे। इससे सिद्ध होता है कि
उत्तरी भारत में यह एक प्रमुख राज्य था। कान्यकुब्ज या कनौज को कुसुम-
पुर (क्यु-सु-मो-पुलो) भी कहते थे।

अयुतो (अयोध्या)—युअनच्वांग कनौज से ६०० ली दक्षिण पूर्व चलकर
अयोध्या आया। मार्ग में नवदेवकुल (नपोतीप कुलो) नामक नगर (आधु-
निक नेवल) होता हुआ आया था। कनिंघम अयुत की पहचान कानपुर
जिले में शिवराजपुर से १ मील दूर काकूपुर से करते हैं। परन्तु इसकी पह-
चान अयोध्या से ही ठीक है।

हयमुख (अ-ये-मु-क)—चीनी यात्री अयुतो से चलकर अयमुख या हय-
मुख नामक देश में आया। इसकी राजधानी गंगा के किनारे स्थित थी।
जुलियन ने इसे अयमुख=हयमुख (या अश्वमुख) माना है। अयमुक का
तादात्म्य कुमारिका खंड में उल्लिखित अश्वमुख देश से होनी चाहिए। अश्व-
मुख प्रदेश में १० हजार ग्राम सम्मिलित थे। बृहत्संहिता (१४-६) में अश्व-
वदन नामक देश का उल्लेख है। कनिंघम ने हयमुख की पहचान डौंडिया-
खेड़ा से की है जो गंगा के किनारे स्थित था। डा० स्मिथ के अनुसार हयमुख
देश वर्तमान प्रतापगढ़, रायबरेली में स्थित था। डा० मीराशी भी इससे
सहमत हैं।

पो-लो-ये-किअ (प्रयाग)—प्रयाग प्रसिद्ध तीर्थ स्थान है जिसे चीनी यात्री
ने देखा था।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

किऔ-शांग-मी (कौशाम्बी)—यह वत्स देश की राजधानी तथा बौद्ध केन्द्र था। यह इलाहाबाद के पास कोसम गांव है।

किअ-शे-पु-लो (कुशपुर)—कौशाम्बी से चलकर युअनच्वांग कुशपुर आया था जिसकी पहचान गोमती के किनारे स्थित सुल्तानपुर से की गई है।

विसाखा, साकेत या अयोध्या—कनिंघम के अनुसार विसाखा, साकेत या अयोध्या और फ़ाहियान का 'शची' एक ही हैं। परन्तु राइजडेविड्स विसाखा या साकेत को अयोध्या से भिन्न मानते हैं। उनके अनुसार साकेत सई नदी के किनारे स्थित संचानकोट (उन्नाव जिले में बांगरमऊ के पास) है।

श्रावस्ती (शिह-लो-फ-सी-ती)—यह प्रसिद्ध बौद्ध केन्द्र कोसल की राजधानी थी।

किय-पि-लो-फ-सु-तु (कपिलवस्तु)—यह शाक्यों की राजधानी थी। इस समय नैपाल की तराई में शोहरत गढ़ के आगे तौलिहवा ही प्राचीन कपिलवस्तु था। पास ही एक वन कपिलवस्तु वन कहलाता है। इससे थोड़ी दूर पर ही निगली सागर के निकट कनक मुनि बुद्ध का स्तूप था जिसके पास अशोकीय स्तम्भ के टुकड़े पड़े हुए हैं। इसी राज्य के लुम्बिनि ग्राम में बुद्ध का जन्म हुआ था।

(लैन्-मो) रामग्राम—यह कोलियों की राजधानी थी। युअनच्वांग के समय यह उजड़ी हुई हालत में थी। यह गोरखपुर का रामगढ़ (ताल) ही था।

कौ-शिह-नकलो (कुशीनगर)—रामग्राम या रामगढ़ से ही सीधी सड़क कुशीनगर को जाती है। यह मल्लों की राजधानी थी और यहीं बुद्ध का निर्वाण हुआ था। इस समय यहां एक स्तूप के पास मन्दिर में उनकी शयन-मुद्रा में रखी हुई मूर्ति है और यहाँ से कुछ दूर हिरण्णा नदी के किनारे, एक अन्य स्तूप के खंडहर हैं जहाँ उनका निर्वाण और दाह हुआ था। मठों और बिहारों के खंडहर भी मौजूद हैं।

पोलोनसी (वाराणसी)—सातवीं शताब्दी में वाराणसी राज्य का विस्तार ४००० ली या ६६७ मील था। इसके पास ही ऋषिपत्तन के मृगदाव वन (सारनाथ) में बुद्ध ने धर्म-चक्र का प्रवर्तन किया था। मंजुश्री मूलकल्प (४९६।१२-१३) के अनुसार राजा सोम (शशांक) ने गंगा तीर वाराणसी तक अपना राज्य स्थापित किया था।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चंचु देश—वाराणसी से चलकर चीनी यात्री चंचु देश में आया। कनिंघम ने इसकी पहचान गाजीपुर प्रान्त से की है।

फे-शे-ली (वैशाली)—चीनी यात्री चंचु देश से वैशाली गया जो बिहार प्रदेश में मुजफ्फरपुर से लगभग २२ मील दूर स्थित है। यहाँ प्राचीन, विशाल किले के खंडहर, अशोकीय स्तम्भ, पुष्करणी, अम्वपाली-बाटिका आदि प्राचीन स्थान और उनके अवशिष्ट मिलते हैं। यह लिच्छवियों की राजधानी थी।

फु-लि-चि (वृजि)—यह प्राचीन वज्जि राज्य था। यह वैशाली के उत्तर नैपाली तराई का भाग था जहाँ अब भी वजिया लोग रहते हैं। इसमें मोतीहारी और दरभंगा के प्रान्त भी सम्मिलित थे। संभवतः इसी राज्य में रामपुरवा का अशोकीय स्तम्भ स्थित था।

नि-पो-लो (नैपाल)—वज्जि राज्य से आगे ही स्थित नैपाल देश में भी चीनी यात्री गया था। नैपाल को गुप्त युग में प्रत्यन्त राज्य कहा गया था। इसका विस्तार ६६७ मील था। कुमारिकाखंड के अनुसार नैपाल में एक लाख ग्राम थे। मंजुश्री मूल कल्प (III, ६२१।११-१२) के अनुसार हिमाद्रि की कुक्षि में नेपाल मंडल स्थित था। यहाँ कई जातियाँ—नेवार, किरात, गुरुंग, आदि—बसी हैं।

मगध (मॉं-किय-टो)—वैशाली से आगे गंगा पार कर चीनी यात्री मगध को गया। इसका विस्तार ५००० ली या ८३३ मील था। यह एक विशेष प्रकार के चावल की उत्पत्ति के लिए प्रसिद्ध था। इसकी राजधानी पाटलिपुत्र को कुसुमपुर भी कहते थे। इस राज्य के उत्तर में गंगा, पश्चिम में बनारस प्रान्त, पूर्व में हिरण्यपर्वत या मुंगेर और दक्षिण में कर्णसुवर्ण या सिंघभूमि थी। बुद्ध गया, कुक्कुट पद, राजगृह, नालन्दा आदि यहाँ के प्रसिद्ध बौद्ध स्थान थे।

कुशाग्रपुर मगध की प्राचीन राजधानी थी जिसे राजगृह कहते थे। इसे ही गिरिव्रज भी कहते थे। युअनच्वांग ने भी इसे पर्वतों से घिरी हुई घाटी में स्थित बताया है। यहाँ गर्म पानी के सोते थे। पाली ग्रन्थों में इन पाँच पहाड़ियों के नाम—गिज्झकूट, इसिगिलि, वेभार, वेपुल्ल, और पांडव—हैं। महाभारत में इनके नाम—वैहार, वराह, वृषभ, ऋषिगिरि, और चैत्यक—हैं। इस समय ये नाम—बैभारगिरि, विपुलगिरि, रत्नगिरि, उदयगिरि और सोनगिरि—हैं (ऐ० जा०, पृ० ३९०)।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इस समय नालन्दा अपने विश्वविद्यालय के लिए प्रसिद्ध था।

हिरण्यपर्वत (इ-लन्न-पफ़त)—कनिंघम ने इसकी पहचान मुंगेर (मोदगिरि) से की है। इसकी उत्तरी सीमा पर गंगा बहती थी। दक्षिण में जंगलों से ढकी हुई पहाड़ियाँ थीं। सम्भवतः दक्षिण में यह पारसनाथ की पहाड़ियों तक फैला होगा।

चम्पा (चेन-पो)—हिरण्यपर्वत से चलकर चीनी यात्री चम्पा आया जिसकी पहचान भागलपुर से की गई है। चम्पा प्राचीन अंग राज्य की राजधानी थी।

कजंगल (किय-चिंग-किय-लो)—यह मध्यदेश (मज्झिम देश) की पूर्वी सीमा पर स्थित सीमान्त प्रदेश था। यहाँ एक सुवेणुवन था। अवदानशतक में कजंगल को कचंगला कहा गया है। इसकी पहचान राजमहल से १८ मील दूर कंकजोल से की गई है जो बिहार प्रदेश के संथाल परगना में है।

पुन्न-फ़तन (पुण्यवर्धन, पुंड्रवर्धन)—चीनी यात्री कजंगल से पुण्यवर्धन (पुंड्रवर्धन) आया। 'पुन्न' का संस्कृत रूप 'पुण्य' ही है और पुराणों में पुण्यवर्धन तथा पुंड्रवर्धन दोनों ही पाठ मिलते हैं यथा 'पाटला पुंड्रवर्धने' अथवा पाटला पुण्यवर्धने। पुण्यवर्धन या पुंड्रवर्धन एक ही हैं। वृहत्संहिता (१४-७) में पौंड्र और मार्कण्डेय पु० (५७-४५) में पुंड्र एक ही है। दिव्यादान के अनुसार पुंड्रवर्धन मध्यदेश की पूर्वी सीमा पर स्थित था। पुंड्रवर्धन आधुनिक महास्थान है। पार्जिटर के अनुसार इसे मालदा जिले में कोसी नदी के पूर्व में पूर्णिया के एक भाग तथा दीनाजपुर और राजशाही जिलों के कुछ भागों को पुंड्र में सम्मिलित बताया है।

चि-चि-तो (जजहोति)—चिचितो की पहचान जजहोति या जझोति राज्य से की गयी है। यह बुन्देलखंड का चन्देल राज्य था जिसकी राजधानी खजुराहो थी। कुमारिका खंड के अनुसार जहाहुति राज्य में ४२ हजार ग्राम थे। वाटर्स ने इसकी पहचान चित्तौड़ से की है। सम्भवतः यह चेति (चेदि) राज्य था।

माहेश्वरपुर (मोहिस्सु-फलो-पुलो)—कनिंघम ने इसकी पहचान 'मंडल' से की है। मंडल को चेदि भी कहते थे। कनिंघम के अनुसार इसे माहिष्मतीपुर भी कहते थे और इसे बाद में त्रिपुरी (तेवर, जिला जबलपुर) कहने लगे। माहेश्वरपुर नर्मदा तट पर स्थित महेश्वर है (स्क० पु० अ०, पृ० १२३)। इसका विस्तार ३००० ली या ५०० मील बताया गया है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उजैन (उ-शे-येन्-न)—यह उज्जयिनी जनपद (अवन्ति) अथवा पश्चिमी मालवा था। इसके पश्चिम में चम्बल नदी, उत्तर में मथुरा और जझोति, पूर्व में माहेश्वरपुर तथा दक्षिण में सतपुड़ा पहाड़ था।

मालवा (मोलापो)—यह माही नदी के पूर्व दक्षिण में स्थित था। यह प्रसिद्ध मालवा देश था, जिसमें ही उज्जयिनी भी स्थित थी।

खेड (किय-च)—जुलियन ने इसकी पहचान कच्छ से की है। परन्तु कनिंघम ने इसकी पहचान खेड से की है। संस्कृत में इसका नाम खेटक था जिसकी पहचान केरा से की गई है। यह अहमदाबाद और खम्भात के बीच स्थित था। यह राज्य पश्चिम में साभरमती से लेकर उत्तर पूर्व में माही नदी तक फैला था।

आनर्त्तपुर (आ-नन्तो-पुलो)—आनन्तपुलो, आनर्त्तपुर अथबा आनन्दपुर ही है। आनन्दपुर (आधुनिक वडनगर) आनर्त्त देश का प्रसिद्ध नगर था। यह उत्तरी काठियावाड़ राज्य था।

ईडर (ओचली)—इसकी पहचान कुमारिकाखंड के इड विषय से की जा सकती है। यह राजस्थान का ईडर राज्य था।

यहाँ मध्यदेश के वर्णन में सम्मिलित उज्जैन, मालवा, खेड, व आनन्दपुर राज्य पश्चिम देश में सम्मिलित थे।

पूर्व देश

सातवीं शताब्दी में पूर्वी भारत में आसाम, बंगाल, सम्भलपुर और गंजाम सम्मिलित थे। युअनच्वांग के अनुसार इसमें ६ राज्य सम्मिलित थे—कामरूप, समतट, ताम्रलिप्ति, किरन सुवर्ण, ओड्र और गंजाम। इनमें कामरूप, समतट, ताम्रलिप्ति और ओड्र के नाम पुराणों, रामायण, महाभारत तथा वृहत्संहिता में मिलते हैं।

किरणसुवर्ण गौड की राजधानी थी और गौड का नाम भी देश-तालिकाओं में मिलता है। कुमारिकाखंड में गौड़ देश का उल्लेख है। गंजाम आधुनिक नाम है।

कामरूप (किअ-मो-ल्यु-पो)—यह आसाम का प्राचीन नाम है। इसका विस्तार १०,००० ली या १६६९ मील था। कुमारिका खंड के अनुसार इसमें ९ करोड़ ग्राम थे। इस विस्तार से सिद्ध होता है कि इसमें सम्पूर्ण ब्रह्मपुत्र नदी की घाटी—लौहित्य और प्राग्ज्योतिष—सम्मिलित थे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

समतट (सं-मो-तच)—यह कामरूप के दक्षिण १२-१३ सौ ली या २००-२१७ मील दूर स्थित था। ताम्रलिप्ति से ९०० ली या १५० मील दूर पूर्व में स्थित था। कनिंघम के अनुसार यह सुन्दरबन का डेल्टा क्षेत्र था। इसमें जसोर नगर स्थित था। समुद्रगुप्त के प्रयाग स्तम्भ लेख में भी इसका उल्लेख प्रत्यन्त राज्य के रूप में हुआ है।

ताम्रलिप्ति (तं-मो-लि-ति)—इसका घेरा १४०० या १५०० ली या लगभग २५० मील था। यह समुद्र तट के निकट स्थित था। इसका उल्लेख पुराणों और महाभारत में मिलता है। ताम्रलिप्ति आधुनिक तामलुक (जिला मिदनापुर) है।

कर्णसुवर्ण (किय-लन-सु-फलन)—ताम्रलिप्ति के उत्तर पश्चिम में ७०० ली या ११७ मील दूर स्थित किरणसुवर्ण (कर्णसुवर्ण), आधुनिक रांगामाटी (मुर्शिदाबाद से ११ मील दक्षिण) गौड देश की सातवीं शताब्दी में राजधानी थी। यह गंगा के तट पर स्थित थी।

ओड्र—यह उड़ीसा का प्राचीन नाम है। यह ताम्रलिप्ति के दक्षिण स्थित था। वृहत्संहिता (१४।६) भी इसे पूर्व में स्थित बताती है। इसमें उत्कल क्षेत्र, पुरुषोत्तम क्षेत्र (जगन्नाथपुरी), और एकाम्रवन (भुवनेश्वर) के प्रसिद्ध क्षेत्र सम्मिलित थे। चीनी यात्री के ओड्र से बालासोर-कटक-पुरी क्षेत्र की पहचान हो सकती है।

कोंगद (कोंग-यु-तो)—गंजाम और पुरी की सीमाओं के निकट स्थित कोंगद पर शशांक का अधिकार था। आगे चलकर यहाँ हर्ष का अधिकार हो गया था। इसकी पहचान पुरी-गंजाम क्षेत्र से की गई है।

दक्षिण भारत)

युअनच्वांग दक्षिण भारत और इसके आगे सिंहल तक जाना चाहता था। दक्षिण भारत की यात्रा तो उसने की थी। परन्तु वह सिंहल स्वयं न जा सका। उसके अनुसार दक्षिण भारत में पश्चिम में नासिक से लेकर पूर्व में गंजाम तक तथा ताप्ती और महानदी के दक्षिण का भूखंड सम्मिलित था। यह नौ राज्यों में विभक्त था। वह कलिंग, कोसल, अन्ध्र होता हुआ धनकटक, चोल, द्रविड, मलकूट, कोंकण व महाराष्ट्र में गया था। इनमें अधिकांश—कलिंग, कोसल (दक्षिण), अन्ध्र, चोल, द्रविड, कोंकण और महाराष्ट्र प्रसिद्ध तथा परिचित देश थे। धनकटक आन्ध्रभृत्य राजाओं की राजधानी थी

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जिसका उल्लेख कन्हेरी के अभिलेखों में हुआ है। मलकूट भी दक्षिण का प्रसिद्ध मलयकूट (कनिंघम) अथवा पांड्य राज्य था।

कलिंग (किय-लिंग-किय)—यह गंजाम के दक्षिण पश्चिम में स्थित था। इसकी मूल राजधानी श्री ककोल या चिकाकोल थी जो कलिंगपट्टम के बीस मील दक्षिण पश्चिम में स्थित था। दक्षिण में गोदावरी नदी इसकी सीमा थी। महेंद्र पर्वत यहाँ का मुख्य पर्वत था। बौद्ध साहित्य में इसकी राजधानी दन्तपुर (आधुनिक राजमहेंद्री) बतायी गयी है जो गोदावरी के उत्तर-पूर्वी तट पर स्थित है।

कनिंघम कहते हैं कि कलचुरी अभिलेखों में त्रि-कलिंग पाठ मिलता है जिसका अर्थ है, तीन कलिंग—

१—धनक या अमरावती जो कृष्णा नदी के तट पर स्थित था,

२—अन्ध्र या वारंगल और

३—कलिंग या राजामहेंद्री।

इस प्रकार कनिंघम के अनुसार त्रि-कलिंग और तेलिंगान एक ही हैं। (मार्कंडेय पु० ५५-२८) में भी तिलंग देश का उल्लेख है।

दक्षिण कोसल (किओ-स-लो)—देश-तालिकाओं में कलिंग और कोसल का उल्लेख एक साथ मिलता है। इससे इन दोनों देशों की समीपता सिद्ध होती है। कुछ पुराणों (ब्रह्म पु० २७-६०; वायु ११४५।१३३; ब्रह्मांड, पू०, १६-६४) में इसे विन्ध्य पर्वत पर तोषल (तोषली=धौली या कलिंग प्रान्त) के निकट स्थित कहा गया है। यहाँ, विन्ध्य पर्वत पर, राम के पुत्र ने कोशला पुरी को बसाया था जो कुशावती कहलाती थी (रामायण, उत्तर कांड १०८।४)। दक्षिण कोसल में जबलपुर, रायपुर, विलासपुर, रीवां और सतना प्रान्त सम्मिलित थे। यहीं हीरे की खानें भी थीं (गरुड़ ११६८।१८)। चीनी यात्री के अनुसार इस राज्य के ही एक पर्वत पर प्रसिद्ध बौद्ध दार्शनिक नागार्जुन रहता था। उस समय सातवाहन राजा राज्य करता था। यह बरार या विदर्भ देश नहीं था। यह आधुनिक छत्तीस गढ़ था।

आन्ध्र (अन्तलो)—यह प्राचीन प्रसिद्ध राज्य था जिसकी कनिंघम द्वारा तेलिंगाना से पहचान की गयी है। इसकी राजधानी पिंग-कि-लो थी जिसकी पहचान कठिन है। कनिंघम ने इसकी पहचान एलंगदेल से करते हैं।

धनकटक (तोनकटक)—कन्हेरी अभिलेखों में धनकटक का उल्लेख मिलता है। यह कृष्णा नदी के किनारे अमरावती से एक मील पश्चिम स्थित था। यहाँ आन्ध्रभृत्य या सातवाहन राजाओं का राज्य था।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चोलिय (चू-लि-ये)—इसकी पहचान जुलियन द्वारा चोल मंडल से की गई है और यह ठीक ही है। कनिंघम इससे सहमत नहीं है। वे इसकी कर्नूल प्रान्त से पहचान करने के पक्ष में हैं। उनको आपत्ति इस बात में है कि चोल और द्रविड दोनों देशों का उल्लेख हुआ है वृहत्संहिता में चोल (१४-१३) और द्रविड (१४-१९) को क्रमशः दक्षिण और दक्षिण-पश्चिम में स्थित बताया गया है। युअनच्वांग की यात्रा के समय कांची पल्लवों की राजधानी थी और टोंडमंडल में स्थित थी। चोलों की राजधानी तंजोर थी।

द्रविड—यह दक्षिण का प्रसिद्ध भूखंड था। भागवत पु० (११।५।३९-४०) के अनुसार द्रविड क्षेत्र में ताम्रपर्णी, कृतमाला, पयस्विनी, कावेरी और प्रतीची नामक नदियाँ बहती थीं। द्रविड क्षेत्र में ही वेंकटाचल, कामकोष्णी, कांचीपुरी, कावेरी, श्रीरंग, ऋषभाद्रि, दक्षिण मथुरा, कृतमाला, ताम्रपर्णी, मलय, अगस्त्य तीर्थ, कन्याकुमारी और सामुद्र सेतु सम्मिलित थे (भागवत, १०।७९।१३-१७)। इस प्रकार वेंकटाद्रि से लेकर दक्षिण में सेतुबन्ध तक का क्षेत्र द्रविड कहलाता था। इसमें ही चोल, पांडय और केरल राज्य स्थित थे। पांडय नरेश इन्द्रद्युम्न को द्रविड-श्रेष्ठ कहा गया है (भागवत ८।४।७)।

मलकूट (मो-लो-क्यू-च)—इसमें तंजोर और मदुरा के प्रान्त सम्मिलित होंगे। कुमारिका खंड में मल विषय का उल्लेख है जिसमें १ लाख ग्राम सम्मिलित थे।

कोंकण—यह दक्षिण का प्रसिद्ध देश है जिसका उल्लेख कुमारिका खंड की देश तालिका में है। इसमें ३६ हजार ग्राम थे। इसी देश तालिका में कोंकण के अतिरिक्त लघुकोंकण (१४२२ ग्राम) का भी उल्लेख मिलता है। इस प्रकार कोंकण के दो भाग थे—उत्तर कोंकण और दक्षिण कोंकण। उत्तर कोंकण ही लघु कोंकण भी था। कोंकण देश पश्चिम समुद्र और पश्चिमी घाट के बीच में स्थित था।

महाराष्ट्र—कुमारिका खंड का रट राज्य (सात लाख ग्राम) ही महाराष्ट्र (मोहो-लच) था। वृहत्संहिता (१०-८) में भी महाराष्ट्र का उल्लेख है। यह प्रसिद्ध राष्ट्रकूट राज्य था। कनिंघम के अनुसार इसकी राजधानी प्रतिष्ठान या पैठान थी जो गोदावरी के तट पर स्थित थी।

सिंहल—सिंहल की अव्यवस्था और अशान्ति के कारण युअनच्वांग सिंहल नहीं गया था। कनिंघम का यह विचार है कि सिंहल भारत का राज्य

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नहीं माना जाना था। परन्तु यह असत्य है। काव्यमीमांसा (९४।२५-२८) में दक्षिणापथ के राज्यों के साथ ही सिंहल द्वीप (१० हजार ग्राम) को भारत का एक देश बताया गया है। बृहत्संहिता १४-१५) में भी सिंहल को दक्षिण का एक देश बताया गया है।

इस प्रकार स्पष्ट ही युअनच्वांग की भारत यात्रा का विवरण भारतीय इतिहास, भूगोल और संस्कृति पर महत्वपूर्ण प्रकाश डालता है।

पाठ्य ग्रन्थ

कनिंघम —ऐन्शेन्ट जाग्रफ़ी ऑफ इंडिया (=ऐ०जा०)

सैमुअल बील —ट्रेवेल्स ऑफ़ ह्वेनसांग।

वार्टस —ऑन युअनच्वांग्स ट्रेवेल्स इन इंडिया।

सेंट हिलेरी —ह्वेनसांग इन इण्डिया।

ए० बी० यल० अवस्थी —स्टडीज़ इन स्कन्द पुराण पार्ट वन (कुमारिका खंड देश-तालिका)

" —प्राचीन भारत का भौगोलिक स्वरूप।

भरतसिंह उपाध्याय —बुद्ध कालीन भूगोल।

यन० यल० डे —जाग्रफ़िकल डिक्शनरी ऑफ़ ऐंशेंट ऐन्ड मेडिवल इण्डिया।

डी० सी० सरकार —जाग्रफ़ी ऑफ़ ऐंशेंट ऐंड मेडिवल इण्डिया।

बी० सी० ला —हिस्टारिकल जाग्रफ़ी ऑफ़ ऐंशेंट इंडिया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

परिशिष्ट १

भारतीयों की देश-विदेश यात्रा

खुद्दकनिकाय के महानिद्देस (Vol. IV, Part I, नालन्दा सं०, पृ० १२९-३०) में कहा गया है कि मनुष्य काम-तृष्णा के वशीभूत होकर अनेक संकटों को सहता हुआ भी नावों द्वारा महासमुद्र में भी उतरता था (नावाय महासमुद्दं पक्खन्दति)। इसी प्रकार सर्दी-गर्मी तथा भूख-प्यास आदि कष्टों को सहता हुआ मनुष्य विभिन्न देशों को जाता था—

तिगुम्बं गच्छति, **तक्कोलं** गच्छति, **तक्कसीलं** गच्छति, **कालमुखं** गच्छति, पुरपूरं (परंपारं) गच्छति, **वेसुंगं** गच्छति, **वेरापथं** गच्छति, **जवं** गच्छति, तामलिं गच्छति, **वंगं** गच्छति, एलबन्धनं गच्छति, **सुवण्णकूटं** गच्छति, **सुवण्णभूमिं** गच्छति, **तम्बपण्णि** गच्छति, **सुप्पारकं** गच्छति, **भारुकच्छं** गच्छति, **सुरट्ठं** गच्छति, **भंगलोकं** गच्छति, तंगणं गच्छति, परतंगणं गच्छति, **योनं** गच्छति, **परमयोनं** गच्छति, विनकं गच्छति, **मूलपदं** गच्छति, **मरुकान्तारं** गच्छति, जण्णुपथं गच्छति, अजपथं गच्छति, मेण्डपथं गच्छति, संकुपथं गच्छति, छत्तपथं गच्छति, वंसपथं गच्छति, सकुण पथं गच्छति, मूसिकपथं गच्छति, दरिपथं गच्छति, वेत्ताचारं गच्छति।

इस विवरण से भारत के बाहर मध्य एशिया, सीलोन, बर्मा, मलाया और जावा आदि देशों में भारत के लोगों का आना-जाना सिद्ध होता है। ये मार्ग पर्वतों और समुद्रों द्वारा जाते थे।

—: ● :—

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

राज्य संग्रहालय पुस्तकालय
प्रो० बी० एन० पुरी
संग्रह
लखनऊ

State Museum Library
7599
Lucknow

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh